॥ शंभवे नमः ॥

महादेव मणिमाला

(दसवीं माला से बीसवीं माला तक)
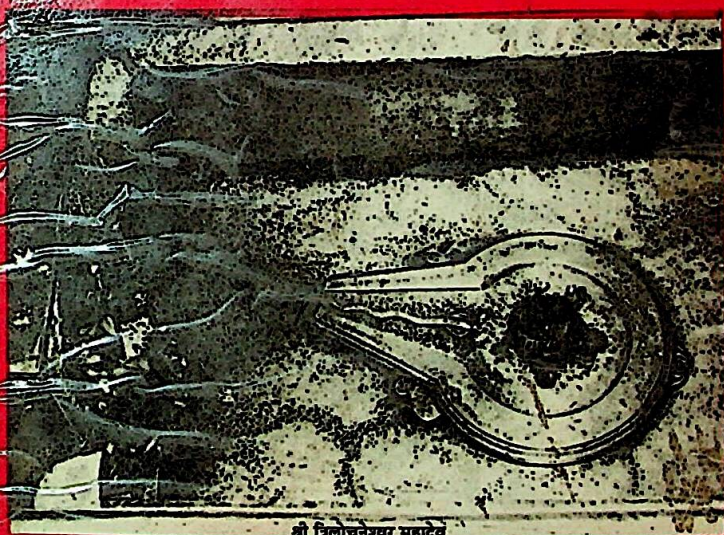
श्री त्रिलोचनेश्वर महादेव

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवे नमः *

महादेव मणिमाला

(दसवीं से बीसवीं माला तक)

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैलाशवासी पूज्य पं० चन्द्रशेखर जी शुक्ल को पुत्री
श्रद्धेया आनन्दमयी अवस्थी 'रन्नो बहिन जी' का

शुभाशीष

मेरे आराध्य बाबा श्री शिवशरणेश्वर महादेव जी की असीम अनुकम्पा से पूज्य बाबू (पं० चन्द्रशेखर जी शुक्ल) रचित 'महादेव मणिमाला' के अप्रकाशित बाइस भाग में से ग्यारह भाग (दसवीं माला से बीसवीं माला तक) का प्रकाशन पूज्य बाबू के भक्तों एवं श्रद्धालुजनों की सहायता से हो रहा है।

इस अवसर पर मैं अपने सुहृद भाइयों एवं श्रद्धालुजनों को अपना हार्दिक शुभाशीष प्रदान करती हुई श्री त्रिलोचनेश्वर महादेव जी से उनके मंगल की कामना करती हूँ।

महादेव मणिमाला के शेष बचे ग्यारह भाग (एकीसवीं माला से एकतीसवीं माला तक) का भी प्रकाशन भगवद्कृपा एवं भक्तों के सहयोग से होने की आशा करती हूँ।

वृन्दावन संकीर्तन भवन
गनेशगंज, मीरजापुर
श्रावण कृष्ण, १४ सं. २०५१ वि०

श्री भगवद्कृपा भिखारिनी
बहिन आनन्दमयी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छप्पय

पुस्तक शैवप्रमोद कहो शिव भजननि माला ।
महादेव मणि माल पृथक् शंकर यश शाला ।।
भक्ति युक्त ये ग्रन्थ चन्द्रशेखर पद महिमा ।
पद-पद में अनुरक्ति सरसता व्यापै इहिमा ।।
शैवभक्त जबतक रहैं, अजर अमर हरपद रहैं ।
शिव महिमा गाओ सतत, वेद शास्त्र पुनि-पुनि कहैं ।।

ब्रह्मलीन
संत प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवे नमः *

भूमिका

हमारे देश में वेदों का सर्वोपरि स्थान है। वेद भगवान के निःश्वास-भूत अपौरुषेय हैं। वेदमंत्रों का दर्शन सर्वप्रथम ऋषियों को हुआ है, जो मंत्रद्रष्टा कहे जाते हैं। वेदों के कर्म एवं ज्ञान दो भाग हैं। ज्ञान उपनिषदों के रूप में प्रसिद्ध हैं। उपनिषदों में ऋषियों ने परमात्मा के स्वरूप पर गहन विचार करके उनको जाना। ये उपनिषद् क्लिष्ट संस्कृत भाषा में हैं, जिन्हें पूर्ण विद्वान् ही समझ सकते हैं। पुराण-इतिहासादि ग्रंथ भी संस्कृत में ही हैं, जिनमें वेदों की व्याख्या की गयी है।

कालचक्रान्तर्गत संस्कृत शास्त्र ग्रन्थों का ज्ञान लुप्त होने लगा। ऐसी स्थिति में सनातन धर्म के रक्षार्थ परमकारुणिक ईश्वर ने समय-समय पर ऐसे महापुरुषों को भेजा जिन्होंने प्रचलित भाषा में धर्मग्रन्थों का अनुवाद-सार-तत्व प्रस्तुत कर जनता को धर्म में स्थित रखा।

घोर कलिकालीय अंधकार के विनाश हेतु विन्ध्य क्षेत्र विप्रवेश के ज्ञान भास्कर श्रीगुरुदेव (पं. चन्द्रशेखर शुक्लजी) ने 'करालं महाकाल कालं कृपालं' भगवान देवाधिदेव महादेव महेश्वर की कीर्तनमयी इस 'महादेव मणिमाला' ग्रन्थ की रचना की जिसे धारण कर मानव हृदय प्रकाश पूरित हो पाप ताप से मुक्त हो निजानन्द मग्न हो सकता है।

गुरुदेव ने राष्ट्रभाषा हिन्दी में महादेव मणिमाला की रचना की है जिसे 'महादेवोपनिषद्' कहा जा सकता है। यह एक ऐसा उपनिषद् है जिसका पठन, पाठन, अनुशीलन करती हुई साधारण जनता उस आत्मरूप भगवान को प्राप्त कर सकती है। जिस आत्मतत्व की प्राप्ति ऋषि मुनि घोर साधना के बाद करते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामायण उत्तरकाण्ड में काकभुसुण्डी-गरुण संवाद में ज्ञान एवं भक्ति की तात्विक व्याख्या की गई है। ज्ञान अत्यन्त पुरुषार्थ तथा सावधानी से सिद्ध होनेवाला कहा गया है, जबकि भक्ति को वेदों, पुराणों तथा तत्त्वज्ञ महापुरुषों के सश्रद्ध सेवन से प्राप्त मणि कहा गया है।

राम भगति चिन्ता मनि सुन्दर। बसइ गरुड़ जाके उर अंतर।
परम प्रकाश रूप दिन राती। नहिं कछु चहिअ दिया घृत बाती॥

मणि से स्वाभाविक प्रकाश निकलता रहता है, इसीलिए गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है—भगवान के नामरूपी मणि को जीहरूपी द्वार की देहरी पर रखने से वाह्याभ्यन्तर प्रकाश हो जाता है। इस प्रकाश में जड़ चेतन की ग्रन्थि खुल जाती है जिसमें जीव उलझा हुआ है। महादेव चेतनों के चेतन हैं। भक्त जब उनसे सत्यस्वरूपेण सम्बन्धित हो जाता है तब उसकी सभी शारीरिक-मानसिक जड़ क्रियायें महादेव के लिए, महादेव की प्रेरणा से होती हुई महादेव को समर्पित होती हैं। इस प्रकार जीव मोक्ष को प्राप्त करता है।

भगवान ने गीता में कहा है:—

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते माया मेतां तरन्तिते॥ (७—१४)

अर्थात् महादेव की दैवी गुणमयी माया से छुटकारा पाना महान दुष्कर है, जो उनकी शरण होते हैं वे माया से छूट जाते हैं।

इस ग्रन्थ में 'महादेव' शब्द अद्वैत ब्रह्म का बोधक है जिसके उपास्य स्वरूप विष्णु, गणेश, सूर्य सभी हैं। 'महादेव सबमेंहि समाने, महादेव में सभी समाना' के अनुसार अनन्यता इस ग्रन्थ की भित्ति है। महादेव के सिवा दूसरे तत्त्व का अस्तित्व ही नहीं है। इसमें भक्ति एवं परा भक्ति के विभिन्न भावों का आनन्द भरा है। ज्ञानबोध एवं प्रेम की त्रिवेणी सर्वत्र प्रवाहित है।

इस मणिमाला में भगवान महादेव के मिलन, विरह, वार्तालाप दैनिक क्रिया-कलाप, आशुतोषता, पतितपावनता, शक्ति की महत्ता, महादेव जीव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभेदता, महादेव का साकार दर्शन आदि-आदि दिव्य भावों की अभिव्यक्ति है। महादेव जीव के अन्तरात्मा हैं जो हर काल, हर परिस्थिति में उसके साथ रहते हैं। जीव के दैनिक क्रिया-कलापों में महादेव की अभिन्नता होने से जीव आत्मस्वरूप में पहुँच जाता है। इसमें सगुण और निर्गुण दोनों उपासनाओं का अद्भुत वर्णन है।

प्रत्येक मणि के प्रकाश दूसरे मणि के प्रकाश से भिन्न हैं फिर भी प्रत्येक मणि का प्रकाश अपने में पूर्ण है।

वर्तमान काल में 'महादेव' शब्द एवं महादेव भक्ति को समाज में लाना आवश्यक है। शास्त्रकारों ने कहा है। 'कलौदेवो महेश्वरः' 'कलौ लिंगार्चन श्रेष्ठं'। पुराणों में कहा गया है:—

महादेव महादेव महादेवेति यो वदेत् ।
वत्सं गौरिव गौरीशो धावन्ति मनुधावति ॥

अर्थात जो व्यक्ति भक्तिपूर्वक महादेव-महादेव कहा करता है उसके पीछे गौरीपति महादेव इस प्रकार दौड़ते हैं जिस प्रकार गाय अपने बच्चे के पीछे दौड़ती है।

इस प्रकार श्रीगुरुदेव ने महादेव भक्ति के बगीचे की रंगविरंगी सुन्दर पुष्पों की माला रचकर संसार पस्त-त्रस्त जीवों को पहना रहे हैं जिसे धारण कर उनको परम शान्ति की प्राप्ति निश्चित है।

मैं भी ग्रन्थ के रचयिता पूज्यपाद नरदेहधारी महादेव श्रीगुरुदेव के चरणकमलों में प्रणाम करता हुआ यही याचना करता हूँ कि जन समाज में 'महादेव मणिमाला' के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो और सभी इस ग्रन्थ से लाभान्वित हो अपूर्व आनन्द को प्राप्त करें।

श्री महादेव मणिमाला विद्यायैनमः ।

महामृत्युञ्जय—वाराणसी
गुरुपूर्णिमा, वि० सं० २०५१

गुरु चरणों का दासानुदास
त्र्यम्बकनाथ दीक्षित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ शंभवेनमः ॥

नम्र निवेदन

कैलाशवासी पूज्य पं० चन्द्रशेखरजी शुक्ल ने शैव प्रमोद आठ भाग एवं महादेव मणिमाला एकतिस भाग की रचना की थी। शैव प्रमोद एवं महादेव मणिमाला की उनकी हस्तलिखित कापियाँ काशी नागरीप्रचारिणी सभा के हस्तलिखित ग्रन्थ विभाग में उनके जीवनकाल में ही जमा करा दी गयीं थीं। जिसका विवरण 'हस्तलिखित ग्रन्थ सूची' भाग ३ प्रथम संस्करण सं० २०४८ के क्रमांक ३३७३ से ३३७८ एवं ४२६५ पृष्ठ सं० १११६-१११८ एवं १४१६ में प्रकाशित हैं।

पूज्य गुरुदेव के ग्रन्थों में शैवप्रमोद (१-८ भाग) महादेव मणिमाला से (१-९ भाग) तथा शिवपार्वती विवाह नाटक प्रकाशित हैं। महादेव मणिमाला के २२ भाग (१०-३१) अर्थाभाव के कारण अप्रकाशित रहे।

स्थानीय मुमुक्षभवन में वानप्रस्थी जीवन व्यतीत कर रहे हर्ष विहार पीतमपुर, नई दिल्ली के श्रीरामप्रकाशजी शर्मा को श्रीत्रिलोचनेश्वर के पूर्व पुजारी स्वामी जागेश्वरानन्द तीर्थ के मुख से शैव प्रमोद के भजन सुनने को मिले। भजनों के प्रति आकर्षण एवं श्रद्धा के कारण उन्होंने गुरुदेव के प्रकाशित ग्रन्थों को खरीद लिया। उन्हें जब ज्ञात हुआ कि अर्थाभाव के कारण महादेव मणिमाला के २२ भाग अप्रकाशित पड़े हैं; तब उन्होंने १०,०००) रुपया प्रदान कर उसके प्रकाशन का आग्रह किया। इस धनराशि से पूरे ग्रन्थ का प्रकाशन संभव नहीं था। इसलिए हम लोगों ने भार्गव भूषण प्रेस के संचालक धर्मप्राण श्री सुरेन्द्र भार्गवजी के समक्ष उतनी धनराशि में जितने भाग प्रकाशित हो सकें उसके प्रकाशन का आग्रह किया। श्री भार्गवजी ने सुझाव दिया कि २२ भाग को दो खण्डों में प्रकाशित करें। जो धनराशि है उसे और कापियाँ जमा कर दें ताकि उसपर कार्यारम्भ हो। आप लोग धनसंग्रह का प्रयत्न करें भगवान् पूरा करेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थाभाव की विवशता के कारण ११ भाग की कापियाँ ही जमा की गयीं। इस कार्य के लिए श्री वसन्तलाल खन्नाजी ने पूज्य गुरुदेव द्वारा संशोधित अपनी हस्तलिखित कापियाँ प्रदान कीं जिससे प्रकाशन का कार्यारम्भ हुआ। श्री विश्वनाथ खत्री (विस्सू बाबू) ने चित्र प्रदान किया।

श्रद्धालु भक्तों को जब यह बात विदित हुई तो उन्होंने इस कार्य के निमित्त आर्थिक सहायता प्रदान किया। उनके द्वारा प्रदत्त धनराशि एवं नाम की सूची पुस्तक में प्रकाशित है। महादेव मणिमाला के ११ भाग (१०-२०) प्रकाशित हो जाने के बाद (२१-३१ तक) ११ भाग का प्रकाशन शेष रह जाता है। आशा है श्रद्धालु भक्तगण इसी प्रकार आर्थिक सहायता प्रदान कर शेष बचे (२१-३१) ११ भाग के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। इसके प्रकाशन के बाद गुरुदेव की समस्त कृतियाँ प्रकाश में आ जायेंगी। शैव प्रमोद (१-४ भाग) समाप्त हो चुका है उसका पुनर्मुद्रण भी नितान्त आवश्यक है।

परमादरणीया श्री बहिनजी (आनन्दमयी अवस्थी) की आज्ञानुसार एवं उन्हीं के शुभ आशीर्वाद से यह कार्य सपन्न हुआ है। हम उनकी कृपा के लिए उनके चरणों में नतमस्तक हैं।

हम आर्थिक सहायता प्रदान करनेवाले भक्तों, श्रीराम प्रकाश शर्मा श्री बसन्तलाल खन्ना, श्री लक्ष्मणजी कपूर एवं श्री सुरेन्द्र भार्गवजी के प्रति कृतज्ञ हैं जिनके सहयोग से यह प्रकाशन संभव हो सका। भार्गव भूषण प्रेस के कम्पोजिंग विभाग के कर्मचारियों ने जिस श्रद्धा के साथ इस कार्य को किया उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

विशेष सावधानी रखने पर भी मुद्रण सम्बन्धी भूलों का होना संभव है। श्रद्धालु पाठकों द्वारा ध्यान दिलाने पर अगले संस्करण में उसका परिमार्जन कर दिया जायगा।

कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद के साथ।

वाराणसी
गुरुपूर्णिमा, वि. सं. २०५१

विनीत
बद्रीनारायण धवन
मुन्नालाल मालवीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महादेव मणिमाला दस से बीस माला तक के प्रकाशनार्थ आर्थिक सहयोग प्रदान करने वालों की सूची

धनराशि	नाम
१०,०००)	श्री रामप्रकाश शर्मा, हर्ष विहार, पीतमपुरा, नई दिल्ली
५०००)	श्री हंसराज भल्ला, जयपुरिया बिल्डिंग दिल्ली
५०००)	श्री त्र्यम्बकनाथ दीक्षित, महामृत्युञ्जय, वाराणसी
५०००)	स्व० पं० श्रीराम उपाध्याय, हस्ते लक्ष्मणजी कपूर वाराणसी
५०००)	स्व० कैलाशनाथ मेहरोत्रा की पत्नी सरला मेहरोत्रा, काशी
२५००)	स्व० गौरीशंकर सर्राफ के पुत्र भरतजी सर्राफ, काशी
११००)	श्रद्धेय पं० श्रीकान्तजी शर्मा (बाल व्यास) कलकत्ता
११००)	श्री हरिश्चन्द्र, श्री पवन, शास्त्रीनगर, दिल्ली
११००)	श्री श्यामलाल प्रभाकर,, लाजपतनगर, दिल्ली
१०००)	श्री शिवनन्दन व्यास, मणिकर्णिका रामलीला वाराणसी
१०००)	स्व० पं. भोलानाथ सारस्वत, त्रिलोचन वाराणसी
५०१)	श्री देशराज अनेजा, शास्त्रीनगर, दिल्ली
५०१)	श्री रमेश अग्रवाल, लहरतारा, वाराणसी
५०१)	स्व० श्री गंगाप्रसाद कपूर, हस्ते लक्ष्मणजी कपूर, वाराणसी
५०१)	श्री प्रेमनाथ कपूर, जतनवर, वाराणसी
५०१)	श्री सूरजप्रसाद कुशवाहा, चौहट्टा लालखाँ वाराणसी
५०१)	श्री जगदीश प्रसाद, दीवानगंज, वाराणसी
५००)	श्री अशोककुमार, राजीवकुमार शर्मा, हर्ष विहार, नई दिल्ली
५००)	श्री राजकिशोर (बचानु साव) वाराणसी
२५१)	श्री ज्वाला प्रसाद अग्रहरि भदऊँ वाराणसी
२५१)	श्री मुरलीमनोहर गुप्त (छगन साव), गायघाट वाराणसी
२५०)	श्री पशौरीलाल शर्मा, भारत नगर, दिल्ली
१५१)	श्री स्वामी जागेश्वरानन्द तीर्थजो (पूर्व पुजारी श्री त्रिलोचनेश्वर)
१५१)	श्री शिवशंकर शर्मा, मुमुक्षभवन वाराणसी
१५१)	श्री शिवचरण साव, मुकीमगंज वाराणसी
१११)	श्री ईश्वर स्वरूप ब्रह्मचारी, मुमुक्ष भवन वाराणसी
१०१)	श्री प्रेमशंकर केसरी, प्रह्लादघाट वाराणसी
१०१)	श्री कन्हैया लाल, प्रह्लादघाट, वाराणसी
१०१)	श्री गुरुचरणदास अग्रवाल, गायघाट वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महादेव मणिमाला
(दसवीं से बीसवीं माला तक)
भजनों की वर्णानुक्रमणिका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीर्षक		पृष्ठ	शीर्षक		पृष्ठ
महादेव :—			महादेव :—		
देते सुख लूटो	...	४०८	ने मिटा दिया सब	...	४००
देते सुख लेता	...	४०९	ने हद कर डाला	...	३९५
देते सो ले लो	...	२२९	पग धैली तोहरै	...	४५५
देते सो ले लो	...	२२९	पग पर खुब खुश हूँ	...	२०९
दें दाना पानी	...	२७३	पग परना भाया	...	२५५
देने पर तुल गए	...	४६	पग पर पाते ही	...	४४६
देने में हातिम	...	७९	पग पर सिर धरना	...	१६०
देलन पाईला	...	६१	पग परा रहूँ बस	...	३०४
देलन पाईला	...	२३१	पग परूँ प्यार से	...	३८३
देवत्व मुझे दो	...	४६०	पग परे परम सुख	...	४५१
दो मजा मजे में	...	३३५	पद का अभिलाषी	...	३२३
ध्यैबै सुख पैबै	...	२७१	पद का हि सहारा	...	२४८
ध्वज वन्दन करता	...	४६	पद कैसे कोमल	...	१९४
नहिं आये अबतक	...	७०	पद कंज अमोले	...	१७६
नहिं पा क्या पाया	...	३८	पद कंज हैं मोले	...	१९५
निक लागैं लल्ली	...	३६४	पद कंज पियारे	...	३७७
निज चरन दिखा दो	...	३३१	पद कंज की लाली	...	३७०
निज प्रेम दान दो	...	८१	पद गहूँ अहू जी	...	३४४
निधि दिया अजब ही	...	४५८	पद जो मन लागे	...	३७३
निंदक निक राखो	...	४३२	पद नख तो देखो	...	४१०
निंदक सुख पावें	...	४३३	पद नख निक लागैं	...	१४९
निर्मल मन करदी	...	२०६	पद नख मन भाये	...	१५०
ने की अनुकम्पा	...	७२	पद निर्भय भाई	...	३९८
ने ढाँचा बदला	...	४२९	पद पकरि जो पाई	...	२०१
ने पद गहि पटका	...	७४	पद पंकज गहबै	...	२०१
ने प्यार किया खुब	...	६४	पद पंकज प्यारा	...	३८९
ने भर दी मस्ती	...	३६४	पद पंकज प्यारे	...	१६४
ने भर दी मस्ती	...	४१८	पद पंकज में पर	...	१९६
ने भाग्य जगाया	...	३७			

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पं० चन्द्रशेखरजी शुक्ल

जन्म संवत् १९५३ वि०　　　　मृत्यु संवत् २०२७ वि०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ शंभवे नमः ॥

महादेव मणिमाला

दसवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

धावें आप आगे आगे पीछे पछिआये रहें,
तुमसे बताऊँ सत्य कौन-महादेव ये ।
समझो इतना ही नहीं बात ये पते की प्यारे,
दीखता जहान बीच जौन महादेव ये ।
कल्पना में लाते जिन्हें हम चकराते यार,
वेद हैं बताते सब तौन महादेव ये ।
"शुक्ल" मुसकाते रोम-रोम हरषाते मेरा,
संतत सुहाते उर भौन-महादेव ये ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दसवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मुद मंगलदाता ।।

इनका नाम धाम-गुन ग्रामहु मंगलमय सब माना जाता ।
लेता नाम धाम में बसता वह भी मंगलमय बन जाता ।।
गाता जो गुन ग्राम प्रेमभर सद्यः मंगलमय हो जाता ।
सेवा सुलभ हुई जिसको वह मंगलमूर्ति महान दिखाता ।।
मंगल की कामना जिसे हो वह इनकी शरणागत आता ।
मंगलमयी प्राप्ति से बिन श्रम आशुहिं इह परलोक अघाता ।।
मैं इनका हो करके मित्रो पूछो मत क्या-क्या हूँ पाता ।
"शुक्ल" सभी कुछ पाकर इनसे प्रतिपल पुलकाता हुलसाता ।।

मणि २

महादेव के चरण मेरे धन ।।

कोमलता दें टार कमल की ललित लालवर वरन मेरे धन ।
निरखत ही नीके पत्याइये महामोद मन करन मेरे धन ।।
ढर जाते अहेतु जिस तिस पर ऐसे अवढर ढरन मेरे धन ।
आशुहिं कृपा बारि बरसाकर मिटा देंय जिय जरन मेरे धन ।।
अनुकम्पा कर अनायास ही दुरित दोष द्रुत दरन मेरे धन ।
करि कुभाव कुल दूर दयावश सुभग भाव भल भरन मेरे धन ।।
योगक्षेम आश्रित अधीन के लिये झटाझट झरन मेरे धन ।
मुझ साधन सर्वथा हीन हित चारु चारि फल फरन मेरे धन ।।
बने रहें हर जन्म देव ये मेरे उर आभरन मेरे धन ।
"शुक्ल" सश्रद्ध धरे सिर इनपर चाहूँ मैं निज मरन मेरे धन ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव ही महादेव मय ॥
यह तो महादेव दिखलाते महादेव ही वह भी तो हय ।
गीध और गोमायु महादेव महादेव, ही हैं हय औ गय ॥
महादेव ही श्याम सुरभि शुचि, महादेव तृण महादेव पय ।
महादेव घमसान युद्ध हैं, महादेव परिणाम हैं जय-क्षय ॥
कोह-मोह महादेव मान लो, महादेव शुभ शांति महाभय ।
महादेव से "शुक्ल" सृष्टि भइ महादेव में ही होगी लय ॥

मणि ४

महादेव अब रहा न जाता ॥
तुम मानो मत मानो प्रिय पर मेरा जी बहुतहि घबराता ।
देख रहा हूँ मुँह फैलाये सम्मुख काल चला है आता ॥
वह यह शील लगा करने क्यों तुम मिल जाते तब ले जाता ।
हैं गिन रहा श्वाँस चुप बैठा पूरा हुआ कि लिया बिधाता ॥
रहा यही हौसला हृदय में जीते जी तुमको पा जाता ।
फिर क्या पता बाद मरने के कर्म विपाक कहाँ ले जाता ॥
मरना है अनिवार्य मरूँगा, उससे क्या डरना जगत्राता ।
यही समस्या जटिल सामने "शुक्ल" आप बिन को सुलझाता ॥

मणि ५

महादेव तुम जौन कराओ ॥
कर पाता हूँ वही मित्र मैं सच या इसको झूठ बताओ ।
क्यों जी तुम्हरी सत्ता के बिन मैंने कहाँ प्रेरणा पाओ ॥
उर प्रेरक शुभ सदगुण सारे औ अवगुण को कौन बनाओ ।
थे तुमही तब कहाँ से आये कोह मोह को नाम धराओ ॥
पूछूँ सभी पुछाये तुम्हरे क्यों मेरे ऊपर झल्लाओ ।
इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं जो तरजनी देखत मरि जाओ ॥
भिड़ा काठ से काठ आज है समझ बूझ के रौब दिखाओ ।
नहीं सूझता है उत्तर तो "शुक्ल" न शरमाओ सकुचाओ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६

महादेव मैं समझ न पाया ॥

जाता चला राह अपनी मैं कैसे इधर गौर फरमाया ।
क्या देखा क्या समझा मुझको किस आशा से निकट बुलाया ॥
किसी और को तो नहिं तुमने किया इशारा मैं घुस आया ।
ऐसा होता तो कह देते तुरत आपको नहीं बुलाया ॥
मगर आपने तो जी मुझको अपनों से बढ़कर अपनाया ।
देखूँ जैसा नहीं किसी का ऐसा मम सम्मान बढ़ाया ॥
किसी कामका नहीं देखते दरजा दिन प्रति दुगुन चढ़ाया ।
है चढ़ गयी भंग गहरी या मेरी धूर्तता ने भरमाया ॥
जन्म-जन्म जो जानि बिगारा सो सब तुमने बेगि बनाया ।
किये सुकृत कोई नहिं तो भी भलिविधि पुण्य भँडार भराया ॥
गया बितापन भूल हमारा हँसि-हँसि हमको गले लगाया ।
"शुक्ल" न जग पा सके किसी का ऐसा मेरा भाग्य जगाया ॥

मणि ७

महादेव तुम कितने अच्छे ॥

कर नहिं सकूँ कल्पना मैं तो देवेश्वर तुम तितने अच्छे ।
कभी सोच ही नहीं सका मैं की होगे तुम इतने अच्छे ॥
जँचते ही अब नहीं नजर में इस दुनियाँ के जितने अच्छे ।
वैसे "शुक्ल" भले लगते हैं बिने हुए जो छितने अच्छे ॥

मणि ८

महादेव तक ही गति मेरी ॥

करती ही प्रवेश नहिं किंचित किसी क्षेत्र में है मति मेरी ।
उपजि परी परतीति प्रीतिसह इनके चरनों के प्रति मेरी ॥
इनके कर कमलों में सब विधि सदा सुरक्षित है पति मेरी ।
होती ही नहिं किये किसी के किसी भाँति कोई छति मेरी ॥
भोला है स्वभाव इनका सो लग जाती सबही घति मेरी ।
होती रहती है हितैषिणी इन कृति अनचाही कति मेरी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनी रहे अक्षुण्ण विधाता इनके पद पंकज रति मेरी ।
"शुक्ल" करें स्वीकार सहस्त्रों देवेश्वर सश्रद्ध नति मेरी ।।

मणि ९

महादेव मति मेरी मारी ।।

एक तरफ देखो देवेश्वर चलने की कर रहा तयारी ।
दूजी तरफ देखिये खुद ही वृत्ति भोग में सनी हमारी ।।
पाया कुछ अवकाश एक से बनी भूमिका दूजी सारी ।
मेरे आप चतुर्दिक देखें भोगमयी वह रही बयारी ।।
इसका मजा ले चुका जी भर अब उसकी आई है बारी ।
इस उधेड़ बुन में ही मेरी बीत रही जिंदगी बिकारी ।।
बैठे आप सुचित हैं कैसे मेरी ऐसी दशा निहारी ।
"शुक्ल" भरोसा एक आपका सुनलो कान लगाय पुरारी ।।

मणि १०

महादेव के के गोहराई ।।

अपने से फुरसत नाहीं तब सुनी भला के पीर पराई ।
गरज मंद यह सारी दुनियाँ के के आपन गरज सुनाई ।।
गरजी के लखतै वह गरजी हम हरजी जे के ढिक जाई ।
ताकतवर है कौन जगत में टाल जो सके मुसीबत आई ।।
तुमही हौ समर्थ इसमें तुम सारी बिगरी सको बनाई ।
अनहोनी कर सको देव तुम होनी को तुम सको मिटाई ।।
जानो तुम सब बिनहिं जनाये तुमसे का कहि कहो जनाई ।
"शुक्ल" तुम्हारी शरणागत हो सचमुच सकल पदारथ पाई ।।

मणि ११

महादेव मम करो यातना ।।

इसका ही हूँ पात्र देव मैं मेरो मत कम करो यातना ।
किये हुये अपराध हमारे कोई नहीं छम करो यातना ।।
शील नहीं संकोच नहीं कुछ होकर बेगम करो यातना ।
पाल रखा जिनको इसके हित कह दो की यम करो यातना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साँस नहीं लेने दो हमको हर दम पर दम करो यातना ।
टूटे नहीं सिलसिला इसका जरा नहीं थम करो यातना ॥
मेरे रोम रोम में प्यारे आप रहो रम करो यातना ।
"शुक्ल" पड़े मस्ती में फर्क नहि दृष्टि रखे सम करो यातना ॥

मणि १२

महादेव की कृपा पला मैं ॥

इन्हें रिझाने की सच मानो जानूँ ही नहि कोइ कला मैं ।
हूँ दुर्बुद्धि दुराचारी तउ किंचित् भी नहि इन्हें खला मैं ॥
जब से होश सम्हाला तब से कभी न सीधी चाल चला मैं ।
विधना के भी टाले अबतक दुष्पथ से नहि रंच टला मैं ॥
फलस्वरूप त्रयताप ज्वाल से जी भरके जुग जुगन जला मैं ।
अनुकम्पा लहिके अहैतुकी इनकी साँचे नये ढला मैं ॥
करनी कोरी ठूँठ तो भि तो दिव्य चारिहू फलनि फला मैं ।
पा जब गया "शुक्ल" इनको ही तब क्या पाया नहीं भला मैं ॥

मणि १३

महादेव की कृपा प्रान है ॥

इस अहैतुकी अनुकंपा के बिना न मम आधार आन है ।
इसी नीव पर सत्य मान लो खड़ा ये शत मँजिला मकान है ॥
इसकी दृढ़ता पर निर्भर है इसकी ऊँची बड़ी शान है ।
यही टिकाये है इसका यह बढ़ा हुआ आत्माभिमान है ॥
यही सम्हाले है उसको जो फहराता ऊँचा निशान है ।
कभी नहीं होनी जर्जर ये इसका बल अतिशय महान है ॥
प्राप्त जिन्हें अवलम्ब है इसका होता नित्यहि नव बिहान है ।
"शुक्ल" मेरा सर्वस्व यही है मेरा जीवन मेरी जान है ॥

मणि १४

महादेव अभिमान कुचल दो ॥

होते तुच्छ सर्वथा बनता जो व्यक्तित्व महान कुचल दो ।
किसी अर्थ का नहि होते भी बहु बघारता शान कुचल दो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुन कोई भी नहिं काया में करता वृथा गुमान कुचल दो ।
भ्रमित जनों द्वारा अनर्थंकर होता जग सम्मान कुचल दो ॥
चापलूस की चापलूसियाँ सुन मन का बहकान कुचल दो ।
अर्थ कामियों की अत्युक्तियों से उर का उमगान कुचल दो ॥
तुमसे रिक्त त्रिलोकाधिप पद मम हित बना विधान कुचल दो ।
तुम बिन "शुक्ल" रखा चाहूँ तो वन निर्दय यह प्रान कुचल दो ॥

मणि १५

महादेव मैं नरपशु पूरा ॥
छोड़ रखा है मुझे मानिये उर वृत्तिन ने कर पशु पूरा ।
काया लिये मानवी डोलूँ भीतर से हूँ खर पशु पूरा ॥
होता बुरा न कुछ देते वे बना विधाता गर पशु पूरा ।
सिद्ध हो रहा हूँ हि सर्वथा नेत्र बंदकर चर पशु पूरा ॥
बना हुआ हूँ बीसो बिस्वा विधि निषेध से टर पशु पूरा ।
चला जा रहा था द्रुतगति से पतन पथों को धर पशु पूरा ॥
पहुँच गया घूमते घामते कैसे तुम्हरे घर पशु पूरा ।
दुर्लभ देव प्रसाद आपका "शुक्ल" पा गया पर पशु पूरा ॥

मणि १६

महादेव हौ पागल देवा ॥
रतन बाँटि लेहलेन कुल मिलिके, आप हलाहल खागल देवा ।
भस्मासुर दौड़ौलेस जब तब दुम दबाय के भागल देवा ॥
नाचेला अलमस्त मजे में पहिरि पाँव में छागल देवा ।
चढ़ना करे पसंद वही पर बूढ़ सांड़ जो दागल देवा ॥
बैठेला जब छानि घोंटि के बाँटेला मुँह माँगल देवा ।
देला मजा खूब यारन के आजु काल्हि हौ जागल देवा ॥
लखिकै बौरहपन तोहार ई तोहसे नेहिया लागल देवा ।
"शुक्ल" चरन पंकज पर तोहरे मम परान हौ टाँगल देवा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १७

महादेव संग सोना भाता ॥

दूल्हा ये बेजोड़ विश्व में दूल्हन इनकी होना भाता ।
बैठूँ इनके साथ पालकी जल्द कराना गोना भाता ॥
आकर्षित करने को इनको विधि विधि करना चोना भाता ।
पाकर प्रिय आलिंगन इनका आशुहिं तन सुधि खोना भाता ॥
आकर्षक व्यक्तित्व आपका कोई बतावे को ना भाता ।
जाना ही इनको नहिं किंचित् वह अजान जन जो ना भाता ॥
हतभागी पापात्मा कोई होगा या तो तो ना भाता ।
"शुक्ल" मुझे तो छन वियोग में इनके केवल रोना भाता ॥

मणि १८

महादेव सा दानी जग में ॥

दीख पड़े नहिं मुझे कोई भी दाता इनकी शानी जग में ।
आँख बंद दिल खोले देनेवाला इनको जानी जग में ॥
भूखे को दें अन्न पिआसे को देते हैं पानी जग में ।
रंक बनादें राव, रंकिनी को महलों की रानी जग में ॥
सुर दुर्लभ गति देंय देव ये जो हो नरक निशानी जग में ।
संत महंत पुराण शास्त्र श्रुति इनकी विरद बखानी जग में ॥
कवि कोविद गुन गाय आपका सुफल करें निज वानी जग में ।
हम तो "शुक्ल" हितैषि लोक द्वय इनको ही पहचानी जग में ॥

मणि १९

महादेव मेरे वश में हैं ॥

हिल नहिं सकें स्वेच्छया किंचित् ऐसे ये मेरे कस में हैं ।
रखना मैं चाहूँ जस इनको राजी से रहते तस में हैं ॥
रोते रखूँ तो बैठे रोवें हँसते रखूँ तो खुश हँस में हैं ।
दूँ मैं शक्ल बिगाड़ प्रसन्नहि वैसे ही नखशिख लस में हैं ॥
राख पोत दूँ रंज न होते खुशी इत्र लागे खस में हैं ।
मिलना चहूँ इकंत आ मिलें रहें साथ घुसकर दस में हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मधुर सख्य वात्सल्य दास्य ये तुष्ट मेरे सब ही रस में हैं ।
हूँ वश कर्ता कौन "शुक्ल" मैं रमें यही मम नस नस में हैं ॥

मणि २०

महादेव मैं क्या कहलाता ॥
किसके पास कहाँ जाऊँ जो इसकी परिभाषा बतलाता ।
तैं के सिवा न हस्ति और की, मैं बेचारा कहाँ से आता ॥
तैं-याँ, तैं-वाँ, तैं-सबही ठाँ, मैं किसका को नाम धराता ।
तैं से तिलभर जगह न खाली मैं यह ठौर कहाँ है पाता ॥
बाहर-तैं, भीतर-तैं, मेरे, कौन वो जो मैं-मैं चिल्लाता ।
तैं से हूँ सन्तुष्ट सब तरह मैं से मेरा जी घबराता ॥
किसकी दऊँ दुहाई दैया मैं से मेरी जान बचाता ।
"शुक्ल" लिया पहचान तुझे-तैं, मैं-बन-तैं ही है भरमाता ॥

मणि २१

महादेव सुख पर सुख देते ॥
जैसे मघा बरसता होवे तैसे झर झर झर सुख देते ।
बाहर कहीं न जाना पड़ता बैठे ही निजघर सुख देते ॥
करना कुछ प्रयत्न नहिं वैसेहि ला हाथों पर धर सुख देते ।
खट्टा मीठा और चरपरा रंग बिरंगा हर सुख देते ॥
साधारण साधारण ही नहिं एक एक से वर सुख देते ।
दुख का उठा पहाड़ जो होता उसको सागर कर सुख देते ॥
रिक्त न रह पाता रत्तीभर रोम रोम में भर सुख देने ।
मेरे लिये "शुक्ल" अपनी वे कृपाबेलि में फर सुख देते ॥

मणि २२

महादेव रखते तस रहता ॥
उनकी दी वाणी वे ही जो कहने को कहते सो कहता ।
भले बुरे का ठीक ज्ञान नहिं पथ वे गहवाते सो गहता ॥
रही न कोई चाह आपनी वे ही चहवाते सो चहता ।
अचल हिमालय सा कर देते वर्ना बन तिनके सा बहता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाँस न हो बरदाश्त न चाहें वज्रपात हँसता ही सहता ।
गोखुर में बूड़ूँ बोरें तो भवसागर गोखुर सा थहता ।।
मिलनानन्द देंय मिलकर या मैं वियोर्ग पावक में दहता ।
अपना "शुक्ल" सदा से इनके सभी लहान लहाये लहता ।।

मणि २३

महादेव रस डूबा डूबा ।।

रहता हूँ दिन रैन बताऊँ मैं तुमको कस डूबा डूबा ।
जैसे सुधासिंधु में कोई होवे हो तस डूबा डूबा ।।
गहरा गोता खोर यथा हो सच मानो अस डूबा डूबा ।
वन सा गया हुँ इस जल का तो मैं जलचर जस डूबा डूबा ।।
करता हूँ सब काम मगर मैं यह समझो बस डूबा डूबा ।
गाया करता प्रेम मगन हो इनके ही यश डूबा डूबा ।।
भूरि भाग्य मानता चरण में इनके सिर घस डूबा डूबा ।
चाहूँ "शुक्ल" तहे दिल से यह मैं जाऊँ चस डूबा डूबा ।।

मणि २४

महादेव का नाम जपो खुब ।।

वड़े भोर दोपहर जपो औ भये सुनहरी शाम जपो खुब ।
चलते फिरते खाते पीते करते सारे काम जपो खुब ।।
आये थे बजार करने अब जाते अपने गाम जपो खुब ।
जपो भींगते अति वर्षा में सहत घोर सिर घाम जपो खुब ।।
भटक रहे इत उत क्यों भकुअे बैठे अपने धाम जपो खुब ।
कटती हो कंगाली से जप, भरा भँडारे दाम जपो खुब ।।
वंचित रखो न इनको भी तुम सहित सुता सुत वाम जपो खुब ।
"शुक्ल" सनेह सुधा शुचि साने, अहनिशि आठो याम जपो खुब ।।

मणि २५

महादेव हमको धर पटको ।।

उछल कूद हो जाय बंद सब इसको निरालुंज कर पटको ।
फिर सिर उठा सके नहि कबहीं ऐसा तुम पटको गर पटको ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आने को जो हो मत बैठे घुस करके इसके घर पटको ।
पनप सके नहिं फिर से जिसमें उखड़ जाय इसकी जर पटको ।।
है निर्जीव सर्वथा यह तो इससे बिलकुल मत उर पटको ।
निर्बल होते भी ये शत्रु हैं इससे कहता हूँ पर पटको ।।
दया दिखाने का न पात्र ये अजी रोष उर में भर पटको ।
त्वम् में परिवर्तित कर दो हम "शुक्ल" ये जावे बस मर पटको ।।

मणि २६

महादेव भोला वैरागी ।।

मुझ फूहर लौधर को लख क्या ले आया डोला वैरागी ।
सुघर परी गुनवन्ती बैठीं, भाग्य मेरा खोला वैरागी ।।
मैं जानूँ ही मरम न-मुझमें, प्रेम सुधा घोला वैरागी ।
अखिल लोक संपदा देखलो, भरे है निज झोला वैरागी ।।
चाहूँ जो चित में किंचित् मैं, धर दे उसको ला वैरागी ।
सदा बनाये रहता मेरा, अपना भी चोला वैरागी ।।
निज में लख अनुराग अत्यधिक कह दूँ मैं पोला वैरागी ।
करता रमण निरंतर मुझ में जाता जो वोला वैरागी ।।
रंचक कृपाकटाक्ष कि जिस पर करदे वह होला वैरागी ।
"शुक्ल" निजी व्यवहार विशद से मेरा मन मोला वैरागी ।।

मणि २७

महादेव की मैं वैरागिन ।।

मेरे अनचाहे ही इसने डाला मुझको कै वैरागिन ।
इस वैरागी की मत पूछो की कितनी सी हैं वैरागिन ।।
मिल जावे टुक नजर जो तुझसे बन जावे बस तैं वैरागिन ।
मरती हैं जी जान से इस पर हैं जितनी भी जै वैरागिन ।।
व्यवहारों से इनके हाथों हो जातीं सब बै वैरागिन ।
"शुक्ल" इसी से तो सचमानो यहू छुलाछन भै वैरागिन ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २८

महादेव कर कंकन धारे ।।

लगते हैं मरकत-मणि से वे हैं परन्तु वह फणिवर कारे ।
मणि संयुक्त फणों से सुन्दर वे ही हैं सिर मुकुट सँवारे ।।
जटाजूट में ब्रह्मद्रव के छूट रहे हैं फबत फुहारे ।
कलामात्र से कलित कलाधर भाल विशाल स्वज्योति पसारे ।।
रहित कलंक मयंक वदन लखि मदन आपु कहँ रंक निहारे ।
रस भरे नैन बैन गुन दस भरे जस भरे काज आपके सारे ।।
लाये अंग अभंग प्यार से भस्म अनंग जिसे थे जारे ।
परम अमल पद कमल "सुकुल" नख लखत नखतगन लजत विचारे ।।

मणि २९

महादेव मेरे घट बैठे ।।

मेरे माने मेरे ही नहिं हैं ये सब केरे घट बैठे ।
तुझे खबर हो न हो बला से हैं सचमुच तेरे घट बैठे ।।
पता नहीं कितनों को इसका डाले ये डेरे घट बैठे ।
करनी गुप्त-गुप्त भी मेरी लखा करें नेरे घट बैठे ।।
गर्बीले होते हम करके हो इनके प्रेरे घट बैठे ।
दानव मानव देव सभी को किये हैं निज चेरे घट बैठे ।।
घुस पाता नहिं और दूसरा सबके ही घेरे घट बैठे ।
"शुक्ल" खोज मिट गई तभी से जबसे इन हेरे घट बैठे ।।

मणि ३०

महादेव बिन छिन-छिन भारी ।।

जीवन के आधार यही हैं तब बोलो होवें किन भारी ।
कोई करे प्रतीति मत करे जीने से मुझको घिन भारी ।।
कुछ भी तो है नहीं सुहाता ऐसा रहता हूँ खिन भारी ।
कट जाती है रात ऊँघते पर हो जाता है दिन भारी ।।
किसी तरह बित रहीं उम्र की एक-एक घड़ियाँ गिन भारी ।
समझ सकें यह मरम करम गति से होती जिंदगी जिन भारी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लग जाता दिल जासु किसी से हो जाता जीना तिन भारी ।
"शुक्ल" विकल इनके अभाव में रहे यथा जल हिन मिन भारी ।।

मणि ३१

महादेव तुम आय मिले नहिं ।।

कहे सुने ही बिना यकायक आ मुझको चकराय मिले नहिं ।
मिलनेच्छुक गत धीर जानते क्यों मुझसे तुम धाय मिले नहिं ।।
चिर वियोग की जलन मिटाने को क्यों हृदय लगाय मिले नहिं ।
जैसे प्राण मेरे आकुल हैं वैसे क्यों अकुलाय मिले नहिं ।
अति आतुर से बने हुलसते दोनों बाँह बढ़ाय मिले नहिं ।।
ज्यों मिलते दो दोस्त हो बिछुड़े त्यों तुम उर उमगाय मिलें नहिं ।।
चितहारी चितवन से चितवत मंद मंद-मुसकाय मिले नहिं ।
जीवन "शुक्ल" समाप्त हो रहा तुम से हाय अघाय मिले नहिं ।।

मणि ३२

महादेव सव मोर चलावें ।।

कारण और कोई किंचित् नहिं करके कृपा कि कोर चलावें ।
बेमन का बेगार सरिस नहिं प्रेम सुधा रस घोर चलावें ।।
प्रगति क्षेत्र में मंद-मंद नहिं गाड़ी मेरी जोर चलावें ।
बड़ी सावधानी से संतत सच प्रमाद को छोर चलावें ।।
चलने वाले काम शाम के लखूँ बड़े ही भोर चलावें ।
कुछ को इकदम चुपके-चुपके कुछक मचाके शोर चलावें ।।
अखिल विश्व का यही चलाते तू चाहे तो तोर चलावें ।
"शुक्ल" चला सकता को ऐसा जैसा मम चित चोर चलावें ।।

मणि ३३

महादेव की कीरति गैबै ।।

अद्वितीय अनुमानि विश्व में विरदावलि उर अंतर छैबै ।
सुनबै सुयश सुहावन संतत श्रवणेच्छुक जन पाय सुनैबै ।।
सुमिरन नाम सनेह सहित नित साधन अन्य न हम चित दैबै ।
उलझन सबको ही समाप्त कर इनसे ही निज उर उरझैबै ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धवै नहिं हरिद्वार द्वारका पुलकि पदारविंद प्रभु ध्यैबै ।
शरणागति परित्यागि आपकी और कहीं नहिं कबहीं जैबै ।।
निज कल्याण मानि सब विधि सिर चरनन नमित निरंतर नैबै ।
"शुक्ल" उनहिं को इसी तरह हम नेश्रम पुरस्कार में पैबै ।।

मणि ३४

महादेव क्या जात तुम्हारी ।।

किस दिन पैदा हुए आप थे कौन पिता को मात तुम्हारी ।
क्या कह तुम्हें पुकारा जावे क्या संज्ञा है तात तुम्हारी ।।
फिरते हो सब अंग उघारे है इतनिहिं अवकात तुम्हारी ।
दानवीर विश्वेश्वर ऐसी विरद विश्व विख्यात तुम्हारी ।।
है कुछ दम्भ दिलासा या यह लंबी चौड़ी वात तुम्हारी ।
बीते कहाँ बसंत आपका कहँ बीते वरसात तुम्हारी ।।
दिन कट जाता कटते छनते कटती है कस रात तुम्हारी ।
"शुक्ल" और कुछ नहीं परिस्थिति हो जाती वस ज्ञात तुम्हारी ।।

मणि ३५

महादेव से लगी टक टकी ।।

पाकर रूप प्रकाश आपका सोते से जनु जगी टकटकी ।
करते ही दृग विषय आपको टँगी सो इनँ पर टँगी टकटकी ।।
गड़ सी गई इन्हीं पर मानों फिर नहिं तिलभर डगी टकटकी ।
खो बैठी शक्ति ही टरन की रूप मोहिनी ठगी टकटकी ।।
स्वाति विंदु सौंदर्य आपका बन गइ चातकि खगी टकटकी ।
हो निहाल सी गई दीखती रूप सुधा रस पगी टकटकी ।।
भल गई अस्तित्व आपना उसी रंग में रँगी टकटकी ।
"शुक्ल" हो गई यह उनही की रही न मेरी सगी टकटकी ।।

मणि ३६

महादेव से आज मिलूँगा ।।

कल की गुंजायश न रही अब छोड़ सभी मैं काज मिलूँगा ।
जितनी बाधा विघ्न जिते हैं डाल सभी पर गाज मिलूँगा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोकें जो संबंध जगत के उन सबसे आ बाज मिलूँगा ।
डाल रहा हो रंच रुकावट ठुकराकर वह राज मिलूँगा ।।
करता हो जो दूर आपसे डार भार सर ताज मिलूँगा ।
पोजीशन पर थूक बेहिचक बनकर मैं गत लाज मिलूँगा ।।
बंधन छिन्न-भिन्न करके सब भरके ताकत भाज मिलूँगा ।
आवश्यक होंगे जितने भी "शुक्ल" साज सब साज मिलूँगा ।।

मणि ३७

महादेव बहकाव ऽल तूँऽ ।।

मुल्लह मानिके हमके दादा बहुतै बात बनाव ऽल ऽ तूँ ।
तोहरे अस केतनन के चराइं हमके तवन चराव ऽल ऽ तूँ ।।
जैसन तूँ तैसेन हई हमहूँ तबहूँ शान जनावऽल ऽ तूँ ।
मारा मारा फिर ऽ गाँव भर हमरे घर नहिं आवऽल ऽ तूँ ।।
मरीला हम तोह पर तौने से मिलहूँ के तरसाव ऽल ऽ तूँ ।
आइब आज अछा कल आइब कहि कहि के टरकावऽल ऽ तूँ ।।
फँसिगा हई जाल में तोहरे तौने से न ऽ छकावऽल ऽ तूँ ।
"सुकुल" खूब पछितैव ऽ पाछे हमके जवन मुआवऽल ऽ तूँ ।।

मणि ३८

महादेव सुखदाता सचमुच ।।

सुख निधान ये ही हैं-इनसे अखिल विश्व सुखपाता सचमुच ।
सुख सागर सुख मूल किसीको इन बिन सुख न दिखाता सचमुच ।।
सेवक सुख पा विविध आपसे इनके हाथ बिकाता सचमुच ।
गाता गुन-सुखखान आप बन अहनिशि उर उमगाता सचमुच ।।
शरणागत बन सुख स्वरूप ही अति आनंद अघाता सचमुच ।
सुख तलाश में इन्हें त्यागकर मूढ़हि इत उत धाता सचमुच ।।
सुख की झलक दिखाती पर नहिं पैदा हो मरजाता सचमुच ।
इन्हें प्राप्तकर "शुक्ल" सुजन जन सुख में सद्य समाता सचमुच ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३९

महादेव जो देंय कौन दे ।।

नामप्रसाद लेते ही अपना दोष दुरित खो देंय कौन दे ।
चिंतन मात्र करे जो अपना अन्तर मल धो देंय कौन दे ।।
शुद्ध हृदय शुभ क्षेत्र समझ निज प्रेम बीज बो देंय कौन दे ।
अपने जन का अपने सर पर भार सभी ढो देंय कौन दे ।।
आश्रित नर को बे प्रयास ही भुक्ति मुक्ति दो देंय कौन दे ।
पाने का अधिकारी हो नहिं ये तो भी तो देंय कौन दे ।।
पाते जो नहिं ज्ञानी योगी मुझसों को सो देंय कौन दे ।
रोता "शुक्ल" यादकर इनको उसे सुमिर रो देंय कौन दे ।।

मणि ४०

महादेव मत क्रोध कराओ ।।

नाहक जिगर जलाता है यह इससे मुझको यार बचाओ ।
दोनों पक्षों का दुखदायी इस दुश्मन को दूर भगाओ ।।
हैं सब रूप आपके इनमें भले बुरे का भेद भुलाओ ।
सुनलूँ भले मगर हरगिज नहिं किसी को भी दुर्वचन कहाओ ।।
करलें पीड़ित मुझे किसी को मुझसे पीड़ा मत पहुँचाओ ।
मेरे द्वारा हे देवेश्वर सबको ही प्रिय वचन सुनाओ ।।
अधिकाधिक सेवा हो सबकी सब मुझसे सत्कृत करवाओ ।
सद्यः "शुक्ल" बुद्धिगत संतत शुचि सुन्दर सद्भाव भराओ ।।

मणि ४१

महादेव की रस भरी अँखियाँ ।।

छलकाती रहती रस-रस ही अहनिशि हैं ये अस भरी अँखियाँ ।
बरसा करें रिक्त होवे नहिं कौन बतावे कस भरी अँखियाँ ।।
परती पोल कभी भी तो नहिं ऐसी हैं ये ठस भरी अँखियाँ ।
कर नहिं सके कल्पना कोई सचमानो हैं तस भरी अँखियाँ ।।
लगा कौन अनुमान सके जी हैं जितनी या जस भरी अँखियाँ ।
सोच सके अधिकाधिक जितना उससे हैं गुन दस भरी अँखियाँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चितवनि ताप हारिणी त्रयविधि मानहुँ चंदन घस भरी अँखियाँ ।
"शक्ल" दया दरसातीं हम पर हरषातीं हिय यश भरी अँखियाँ ।।

मणि ४२

महादेव के नाक का कही ।।

लखा है जब से सचमानो तुम लगती हैं सब नाक खाक ही ।
लख सुडौलता इनकी शुक तो गया है लुक बन बीच जा कहीं ।।
संशय होता है जिय में वह बेचारा विष ले न खा कहीं ।
और नाक वाले जितने हैं इसकी सुखमा लखत छाकहीं ।।
ताका ही चाहे इसको जो एकबार यह नाक ताक ही ।
हटती ही नहिं नजर हटाये इसकी शोभा देख थाकहीं ।।
कोई और नहीं दुनिया में इससी है बस यही नाक ही ।
नीके निरख परख सब बिधि से नाक महातम "शुक्ल" गा कही ।।

मणि ४३

महादेव सा दानी दुर्लभ ।।

मैं कहता हूँ देनेवाला जग में इनकी शानी दुर्लभ ।
बिन माँगे ही भक्त भवन में भरदे जो मनमानी दुर्लभ ।।
तुम्हरा हूँ कहते ले अपना बना ठान यह ठानी दुर्लभ ।
दीन हीन भी निज सेवक का इनसा जग सनमानी दुर्लभ ।।
अवगुन पर न दृष्टि जन के गुन शतगुन मानि बखानी दुर्लभ ।
करता जो निज ध्यान हो, उसका करनेवाला ध्यानी दुर्लभ ।।
पानी मात्र चढ़ावे उसका भरनेवाला पानी दुर्लभ ।
कहें "शुक्ल" सब संत जगत में अस अनंत गुनखानी दुर्लभ ।।

मणि ४४

महादेव होता है यह क्यों ।।

मैं जानूँ ही नहीं आपको मुझको दिया स्वजन तुम कह क्यों ।
भटक रहा था भवाटवी में मेरी लिया बँह तुम गह क्यों ।।
मैंने कभी न चाहा तुमको तुमने लिया मुझे ही चह क्यों ।
रखा सुरक्षित जन्म-जन्म से दिया वासना तरु को ढह क्यों ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किये कराये कब कबके सब दुरित दलों को दिया है दह क्यों ।
आये सभी दुःख द्वंदों को हँसते ही लेता मैं सह क्यों ।।
निपट बहेतू होते भी मैं रहा प्रेम सरिता में बह क्यों ।
लहता जो न "शुक्ल" बहुतों का मेरा गया अचानक लह क्यों ।।

मणि ४५

महादेव की अनुकम्पा से ।।

जाचें देव जिसे पावें नहिं मिली देह ई अनुकम्पा से ।
शुचि सहवास सुवास शुभस्थल मिला है यह भी अनुकम्पा से ।।
कुपथी कुबुधि कुतरकी कामी रहा हूँ मैं जी अनुकम्पा से ।
अनुगामिनि अनुकूल सहिष्णू मिली सुमति ती अनुकम्पा से ।।
धवल चरित्र सेविका शिव की प्राप्त धन्य धी अनुकम्पा से ।
मैं अनजान अबोध अग्यानी ताक शरण ली अनुकम्पा से ।।
अपराधी जानते अभागी ठाँव देव दी अनुकंपा से ।
"शुक्ल" बना मैं मस्त विचरता प्रेम सुधा पी अनुकंपा से ।।

मणि ४६

महादेव गुन गाता बंदा ।।

झूठ सरीखा और पाप नहिं सच-सच बात बताता बंदा ।
मरता कभी न भूखों, भरहिक दे देते सो खाता बंदा ।।
गंगा, गोदावरी, गोमती, तिरबेनी नहिं न्हाता बंदा ।
बदरीनाथ, केदारनाथ या जगन्नाथ नहिं जाता बंदा ।।
या कुछ अन्य अन्य विधियों से तनको नहीं तपाता बंदा ।
मगर आप समझें की इनसे बड़ी बड़ी निधि पाता बंदा ।।
अद्भुत एक एक सें लखकर देन दिव्य चकराता बंदा ।
"शुक्ल" बना निर्द्वंद लोक द्वय मुसरन ढोल बजाता बंदा ।।

मणि ४७

महादेव की शानी दानी ।।

देखा सुना न मैंने जग में कहती थीं अस उस दिन नानी ।
मैंने भी तो नहीं सुना, सिर हिला हिला बोली पर नानी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दादी ने खाँसते, खाँसते, जस तस दुहरा दी यह बानी ।
सुनकर यह संवाद आपसी पर दादी अतिशय उमगानी ।।
शास्त्र संत ने ऊँचे स्वर से इनकी ही कलकीर्ति बखानी ।
कोई भी कुछ भी माँगे ये करते कभी न आना कानी ।।
ब्रह्मा, विष्णु, फणीन्द्र, इन्द्र को देते यही विश्व वरदानी ।
पाते पाते देन देवकी मेरी "शुक्ल" बुद्धि बौरानी ।।

मणि ४८

महादेव बस बैठे राई ।।
तुम्हरे विरह व्यथा में निशिदिन हम आँसुन कै माला पोई ।
खोया जन्म हजारों तुम बिन तैसे ही यह जीवन खोई ।।
छिन छिन है भारी तुम्हरे विन कैसे भार जिंदगी ढोई ।
कैसे दिन बीतें वियोग के बतलाता उपाय नहि कोई ।।
देता बस कोरा आश्वासन मिल जाता है जब तब जोई ।
कर दूँ अब समाप्त यह लीला कौनौ दिन बिष खाय के सोई ।।
कल के बदले क्यों न आज ही जल्दहि हाथ जान से धोई ।
मिलन सिवाय "शुक्ल" जीने का निश्चित है अवलंब न कोई ।।

मणि ४९

महादेव को हेरूँ (खोजूँ) हा हा ।।
खोज रहा हूँ उसे विकल बन किये जो निजउर डेरूँ हा हा ।
कन-कन में जो व्याप्त उसे ही लखूँ न मैं निज नेरूँ हा हा ।।
घेरे जो सब सृष्टि उसे कुछ सीमित भू में घेरूँ हा हा ।
दो है नहीं, तो भि बन बैठे एक स्वामि एक चेरूँ हा हा ।।
रूप हीन का नाम कहाँ से मैं नित माला फेरूँ हा हा ।
वाक्य शक्ति दाता जो उसको ऊँचे स्वर कर टेरूँ हा हा ।।
अपन आप की अपन आप ही विनय करूँ बहु बेरूँ हा हा ।
"शुक्ल" एक में ही कह बैठूँ प्रभु मेरूँ मैं तेरूँ हा हा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५०

महादेव सुधि आया करती ॥

दम पर दम आने से मुझको सचमुच बहुत सुहाया करती ।
मर जाऊँ मैं तो इसके बिन ये ही मुझे जिलाया करती ॥
जाता सूख कलेजा अबतक अगर न यह हरि आया करती ।
पड़ जाता उत्साह मंद सब यह नहिं उर उमगाया करती ॥
मनहूसी से भर जाता मैं यह नहिं हिय हुलसाया करती ।
पागल सा हो जाता, यह नहिं प्रेम पियूष पिलाया करती ॥
प्राणेश्वर की अनुपस्थिति में मेरे प्राण लुभाया करती ।
मिलनानंदहि सरिस "शुक्ल" को परमानंद दिलाया करती ॥

मणि ५१

महादेव सुधि आती रहती ॥

संजीवनी शक्ति से संतत मृत मम मनहिं जिलाती रहती ।
आ आकर हर समय याद सच मेरा मन बहलाती रहती ॥
विरह वेदना बढ़ पाती नहिं प्रतिपल मोद भराती रहती ।
बढ़ता अंतर्दाह नहीं जो शुचि दृग सलिल सिंचाती रहती ॥
होता हिय हताश नहिं हरदम हर विधि से हुलसाती रहती ।
उदासीनता आ नहिं पाती अहनिशि उर उमगाती रहती ॥
रहता हरा भरा मन उपवन अनुपम रस बरसाती रहती ।
मिलनानन्द "शुक्ल" जैसा ही परमानंद दिलाती रहती ॥

मणि ५२

महादेव बिन ठौर न पाना ॥

उठना और बैठना इनमें, इनमें ही हो आना जाना ।
गोते लगा-लगा के गहरे इनमें ही हो सविधि नहाना ॥
तिलक लगा माला धारनकर इनमें ही हो नाक दबाना ।
पलथी मार परोसे व्यंजन इनमें ही हो डटकर खाना ॥
गहरी छान भरे मस्ती में इनमें ही हो गाना-गाना ।
हम तुम और सभी साथी भी इनमें खेल करें विधि नाना ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आलस लगने पर सोने को इनमें हो बिस्तरा बिछाना ।
चादर तान पाँव फैलाये इनमें ही तो परूँ उताना ।।
नौक नकार सभी हो इनमें यह मैं निर्भ्रम बात बखाना ।
यह ध्रुव सत्य "शुक्ल" सुनलो की करने वाला भी नहिं आना ।।

मणि ५३

महादेव जग विदित विरागी ।।
खोजे कहीं नहीं मिलना है इनसा और तत्वतः त्यागी ।
अखिल लोक संपति का स्वामी फिरता देह लिये निज नाँगी ।।
दानव देव नाग नर सबको देता सभी वस्तु मुँह माँगी ।
उदासीन सा वेष बनाये रसिक स्वभाव वृत्ति अनुरागी ।।
चितवनि चारु चित्त हारिनि चट वर बतरानि सुधारस पागी ।
चाहूँ "शुक्ल" चरण में इनके अहनिशि रहे मेरी लव लागी ।।

मणि ५४

महादेव इंगित पर नाचूँ ।।
बड़ी शौक से बड़े मजे में ताथेइ ताताथेइ कर नाचूँ ।
जो-जो वेष धराते खुश-खुश उन-उन वेषों को धर नाचूँ ।।
भद्दा भला जो स्वाँग भराते बिना हिचक सो-सो भर नाचूँ ।
दानव देव बना दें नाचूँ बन करके बानंर नर नाचूँ ।।
गो गज महिष शृगाल सिंह या बन कूकर शूकर खर नाचूँ ।
संत महंत पुजारी पंडित बन या ऐबों का घर नाचूँ ।।
सुख स्वर्गीय भोगते नाचूँ या नरकों में पर जर नाचूँ ।
नाचूँ "शुक्ल" हमेशा हँसते नैनन नीर नहीं झर नाचूँ ।।

मणि ५५

महादेव हम कब अस रैहैं ।।
रहता यथा वियोगी तुमको सुमिरि-सुमिरि दृग आँस बहै हैं ।
खान पान बिसराय सुपोषित विरह दाह से देह सुखै हैं ।।
द्वार ओर मुख किये तुम्हारी राह देखते दिवसु बितै हैं ।
तुम बिन नींद हराम तुम्हारी करत प्रतिक्षा रैनि सिरै हैं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिकर और की नहीं किसी से चरचा तुम्हरी चारु चलै हैं ।
फिकर लोक परलोक सभी की तुम्हरे चिंतन माहिं भुले हैं ।।
तुम्हरी आश तलाश तुम्हारी तुम बिन रंच न और सुहै हैं ।
"शुक्ल" यथा जलहीन मीन की तुम बिन प्राण दशा मम ह्वै हैं ।।

मणि ५६

महादेव की मस्ती देखो ।।

आदि काल से आज तलक है कायम इनकी हस्ती देखो ।
बनी जवाँ मर्दी ज्यों की त्यों आई जरा न पश्ती देखो ।।
जारी रहे रातदिन इनकी काररवाई गश्ती देखो ।
होता है तामील वक्त से वारंट इनका दस्ती देखो ।।
इनका आश्रय लेनेवाले की फस्ती नहिं कश्ती देखो ।
अनुकम्पा से इनकी छन में अलाबला सब नश्ती देखो ।।
बात-बात में उसकी सचमुच उजरी वस्ती-वस्ती देखो ।
"शुक्ल" परम कल्याणकारिणी मिली चीज यह सस्ती देखो ।।

मणि ५७

महादेव के चरन जो चापा ।।

लेकर बड़ा हजारा माला उसने भले नहीं जप जापा ।
शीतकाल जल शयन किया नहिं गीषम में तपनी नहिं तापा ।।
बदरीनाथ केदारनाथ की खड़ बीहड़ राहें नहिं नापा ।
सब दिन भरा प्रसाद प्रभू का जर बुखार बिन कभी न टापा ।।
धारा देवदत्त वस्त्रों को नंगे तन रह के नहिं कापा ।
पर प्रयास के बिना वेग ही जनम-जनम के कट गये पापा ।।
मिला दिव्य वरदान देव का मिटा किये कर्मों का शापा ।
"शुक्ल" समर्पित हो उसका सच इनमें सपदि समाया आपा ।।

मणि ५८

महादेव का नाम जो लिया ।।

जप तप तीरथ व्रत दानादिक कर साधन समुदाय को लिया ।
जुग-जुग जन्म-जन्म के जोरे दोष दुरित वे श्रमहि खो लिया ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कबका मलिन परा सो सद्यः अपना अंतःकरन धो लिया।
आगम निगम पुरान आदि का सही-सही सो मरम टो लिया।।
मरा न भूखों कभी और नहिं थका यहाँ से वहाँ डोलिया।
त्यागा नहिं घर द्वार बदल कर वेष न बाबा बना झोलिया।।
गृह बैठे-बैठे ही उसने बना लोक परलोक दो लिया।
"शुक्ल" हुआ निर्द्वन्द विचरता अपनी धुन अलमस्त ओलिया।।

मणि ५९

महादेव के गाय के लेबै।।

करना धरना कुछ नहिं हम तौ केवल गाल बजाय के लेबै।
बनउब और कुछौ नहिं सचमुच बातै बात बनाय के लेबै।।
सत्यसार श्रुति मधुर सर्व प्रिय शुभ कल कीर्ति सुनाय के लेबै।
होंगे दंग देखने वाले ऐसन ढंग दिखाय के लेबै।।
डर किसका भय किसका बोलो लाखों में गोहराय के लेबै।
घर बैठे-बैठे कोठरी के बाहेर कतौं न जाय के लैबै।।
सुख स्वरूप को सुखपूर्वक ही सुखमय साज सजाय के लेबै।
इतने उतने में संतोष नहिं हम तो "शुक्ल" अघाय के लेबै।।

मणि ६०

महादेव के कैसों पाइत।।

मिलतेन कौनौ गुनी जोतिषी लखिकै नीक बतौतेन साइत।
होइत सफल मनोरथ जौने भली घरी से ऐसन जाइत।।
होतेन कतौं एकंत-पहुँचतै सीस चरन में ओनके नाइत।
मनतेन जौनी तरह प्राणधन तब हम तौनी तरह मनाइत।।
करि सौ बार चिरौरी बिनती जस तस अपने घरे लिआइत।
पलकन से पग धूरि झारि कै अँखियन के जल पाँव धोआइत।।
केसर डारि बदाम मलाई पहिले गहिरी भाँग छनाइत।
नहवाइत जल काढ़ि परोसित रुचिकर व्यंजन जवन बनाइत।।
मगही पान पुरान मसाला डारि बनारसि चक्क चभाइत।
सोइत सुखद सेज दूनौजन "शुक्ल" अतिहि आनन्द अघाइत्।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६१

महादेव हर हर दम पर दम ॥
करता रह सस्नेह सतत तू और नहीं कुछ कर दम पर दम ।
करना सभी सिद्ध होगा सच करता रहा थे गर दम पर दम ॥
करते हुये सप्रेम इसे ही नयन नीर नित झर दम पर दम ।
चलती इस चाकी से चौकस दोष दुरित दल दर दम पर दम ॥
चारु चार फल प्राप्त इसी से हो प्रतीति दृढ़ भर दम पर दम ।
परमानन्द "शुक्ल" लेता मैं प्रभु चरणों पर पर दम पर दम ॥

मणि ६२

महादेव के गाल गजब हैं ॥
भरे-भरे-उभरे-उभरे से फुली कचौरी चाल अजब हैं ।
कुंद कपूर कांति काया भल भस्म विभूषित भाल गजब हैं ॥
जटाजूट बिच गंग तरंगित जनु मालति की माल अजब हैं ।
छिटकाये चंद्रिका मनोहर शिरसि इन्दुवर वाल गजब हैं ॥
अति विचित्र सा वेष बनाये धारे करि हरि खाल अजब हैं ।
कोमलचित करुणा के सागर महाकाल के काल गजब हैं ॥
निकल न पाता निज जन के बिन फैलाये जग जाल अजब हैं ।
हो आनन्दविभोर नाचते देते बहु विधि ताल गजब हैं ॥
चकराती बुधि देख देख के इनके हर इक हाल अजब हैं ।
"शुक्ल" परम आराध्य परमप्रिय प्रभु के पगतल लाल गजब हैं ॥

मणि ६३

महादेव मिल गये मुफत में ॥
मिलने से ही इनके मानो उर विकार किल गये मुफत में ।
किये बसेरा थे बहु जुग से छोड़ सभी दिल गये मुफत में ॥
ध्वंस हुआ वासस्थल दृढ़तर खड़े खंभ हिल गये मुफत में ।
दिखते थे पहाड़ से सो सब रहे नहीं तिल गये मुफत में ॥
भरे छिद्र व्यक्तित्व में जो थे सबके सब सिल गये मुफत में ।
हिय पंकज के पत्र पत्र सब "शुक्ल" सद्य खिल गये मुफत में ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६४

महादेव वैराग्य न आया ।।

बचपन बिता ज़वानी ढल गई काल आय सर पर मड़राया ।
पर इन विषयों का आकर्षण कुछ भी कम होता नहिं पाया ।।
कभी काम कौतुक दिखलाता कभी क्रोध ने जिगर जलाया ।
कभी लोभ अपने प्रभाव से कौड़ी कौड़ी को ललचाया ।।
कभी मोह महिमा प्रकाशि निज इन उनको चिंता करवाया ।
ममता मतिभ्रम पैदाकर यह वह मेरा मेरा कहलाया ।।
इसी तरह से देख रहा हूँ जीवन मेरा सभी सिराया ।
"शुक्ल" हाय हृदयेश हमारे तुमसे रंच न नेह लगाया ।।

मणि ६५

महादेव देते खुश होते ।।

आया देख दीन द्वारे पर कौन कहे केते खुश होते ।
क्या कर सके कल्पना कोई जीवनधन जेते खुश होते ।।
अधिकाधिक जितना ही देते सचमानो तेते खुश होते ।
कैसे नाप तौलकर कोई कह सकता येते खुश होते ।।
अपने जन की अपने हाथों किश्ती को खेते खुश होते ।
सेवक को कछुआ अंडा ज्यों सावधान सेते खुश होते ।।
भक्तजनों के दिये हुए वे पत्र पुष्प लेते खुश होते ।
"शुक्ल" भरोसे इनके बैठा देख मूँछ टेते खुश होते ।।

मणि ६६

महादेव हम अस कब रैहैं ।।

रहता यथा उपासक कोई सोई सुखद रहनि अपनैहैं ।
अमित, अखंड अछिद्र सुकोमल निजकर तोरि विल्वदल लैहैं ।।
सुन्दर शुभ सुगंधयुत संकुल सुमन किये शुचि सुमन लिअैहैं ।
ब्रह्म मुहूर्त त्यागि निद्रा नित उर उमगित सुर सरित नहैहैं ।।
करि धारण रुद्राक्ष भस्म भलि हो सश्रद्ध शिव मंदिर जैहैं ।
पंचामृत नहवाय लिंगवर लै गुलाब खश इत्र लगैहैं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केशरयुक्त मलय मंजुल लै पत्र पुष्प रचि रुचिर चढ़ैहैं ।
धूप दिखाय सहस्रवर्तियुत आरति कै अत्यंत अघैहैं ॥
व्यंजन विविध लगाय भोग भल रितुफल सौंपि परमसुख पैहैं ।
पान पुरान लवँग लायचि युत मुख सुवास दै देव रिझै हैं ॥
गैहैं गुन उमगैहैं नाचत प्रभु सम्मुख तन भान भुलैहैं ।
किये कराये भान उन्हीं के "शुक्ल" कर्मफल सौंपि सिरैहैं ॥

मणि ६७

महादेव सँग सोता सुख से ॥

आलिंगन करते ही इनका सद्य अपन पौ खोता सुख से ।
होते ही अलगाव आपसे धार बाँधकर रोता सुख से ॥
कर कर याद इन्हीं को छन-छन मुख आँसों से धोता सुख से ।
मिलन कभी विरहानँद सागर "शुक्ल" लगाता गोता सुख से ॥

मणि ६८

महादेव को सावन भावे ॥

उत्साहित विशेष हो जाते जब यह मास सुहावन आवे ।
वैसे तो हर समयहि इनका आराधक मनवांछित पावे ॥
इस अवसर पर पूजन करके वह अधिकाधिक लाभ उठावे ।
प्रति सोमवार करे सादर व्रत संभव हो सुरसरित नहावे ॥
दूध दही घृत गव्य शर्करा मधुले पंचामृत नहलावे ।
लगा इत्र चंदन केसरिया लेय ललित सर्वांग लगावे ॥
निजकर की लाई अति कोमल छिद्र रहित दल बिल्व चढ़ावे ।
सुमन किये शुभ सुमन सुगंधित लेइ रुचिर शृंगार रचावे ॥
धूप दशांगयुक्त गमकावे घी की बाती बारि दिखावे ।
व्यंजन विविध लगाय भोग भल रितुफल पान समर्पि सुहावे ॥
गावे गुन नाचे शिव सन्निधि प्रेम मगन तन भान भुलावे ।
करि अर्चन सानंद "शुक्ल" इमि सौंपि कर्मफल अतिहि अघावे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६९

महादेव क्या मुए मिलोगे ।।
विरह व्यथा से अकुला करके कूद पड़ूँ जब कुए मिलोगे ।
जान बूझकर इस कारण ही वर विषधर के छुए मिलोगे ।।
अथवा किसी अन्य विधि से ही जीवन से कर धुए मिलोगे ।
या बतलाओ "शुक्ल" हृदयधन देह अंत बिन हुए मिलोगे ।।

मणि ७०

महादेव अब लुक नहिं पै हौ ।।
देखलिये अड्डे सब तुम्हरे लेजा निजको कहाँ छिपैहौ ।
नाच रहे नजरों हर कोने तजबीजहि लूँगा जहँ जैहौ ।।
मच्छ कच्छ बाराह सिंह या चाहे जो भी वेष बनैहौ ।
संभव नहीं अरे बहुरुपिये या बनि अन्य शक्ल बह कैहौ ।।
जरा देर नहिं हो पहिचानत चाहे जिस भी रूप दिखैहौ ।
कालिख मुँह में पोत के अैहौ टीका चन्दन खूब लगैहौ ।।
मुझे चीन्हते देर न होगी तजबीजी कह चीन्ह दुरैहौ ।
भूल जाव यह बात "शुक्ल" को कभी किसी भी भाँति भुलैहौ ।।

मणि ७१

महादेव सुधि बिन जग सूना ।।
विस्मृति हुई जहाँ यत्किंचित् हो जाता मैं खिन जग सूना ।
हैं येही सर्वस्व हमारे तब होवे नहिं किन जग सूना ।।
इसीलिए तो इन्हें भूलते लेता हूँ मैं गिन जग सूना ।
याद है तो आबाद जगत है भूले की वहि छिन जग सूना ।।
रात जनाती कालराति सी महाप्रलय सा दिन जग सूना ।
भू पाताल स्वर्ग भी सचमुच लगता हमको तिन जग सूना ।।
हमतो अपनी कहते भैया तुमको होवे जिन जग सूना ।
इनकी ही स्मृति "शुक्ल" स्वजीवन मौत निजी स्मृति हिन जग सूना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ७२

महादेव के सेवक प्यारे ॥
इनसे ही संबंध हमारा संबंधी रहें दूर बिचारे ।
नाता एक निवाहूँ इनसे नातेदार बिसारे सारे ॥
दीखें यही सगे से-सग की रोवे खड़ी सगाई द्वारे ।
रहा सिर्फ व्यववहार इन्हीं से व्यवहरिया नहिं अन्य हमारे ॥
इनसे बात इन्हीं से चरचा कौन और की ओर निहारे ।
कटती छनती संग में इनके इन सँग करता सैर पहारे ॥
भोजन करूँ संग में इनके इन सँग शयन किये सुख भारे ।
छुऐं लाश नहिं अन्य हमारी "शुक्ल" न कोई कंधे धारे ॥

मणि ७३

महादेव की सेवा कर कर ॥
खाते मालपुआ सब घी के प्रतिदिन खूब कचौड़ी खर खर ।
होता नृत्य नित्य उसके गृह बजती अनँद बधैया घर घर ॥
बन जाते निर्दोष भक्तजन अवगुण अपराधों से टर टर ।
सुजन शिरोमणि से दिखलाते शुभ सुंदर सद्गुण उर भर भर ॥
हो जाते निर्भय लोकद्वय इनसे इनके जन से डर डर ।
अति आनंद अघाते रहते प्रभु पादारविन्द में पर पर ॥
कहते प्रेम विभोर सदा ही हर हर बम् बम् बम् बम् हर हर ।
अनायास ही "शुक्ल" इस तरह पहुँचें परमधाम वे तर तर ॥

मणि ७४

महादेव अपने में उनका ॥
जान गये जब इस रहस्य को लगे दोश कपने में उनका ।
अपने आप मानलो यह सच कितने ही खपने में उनका ॥
वड़े लगाने वाले निज को लखूँ चुप्प चपने में उनका ।
समाचार पत्रों में लग गया समाचार छपने में उनका ॥
बन बैठा हूँ सभी जानते बिन हीं जप जपने में उनका ।
इसी तरह नहिं कौन जानता गया न तप तपने में उनका ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भली भाँति उनकी लीला को लगा हूँ अब भपने में उनका ।
"शुक्ल" सत्य होने वाले हैं सद्यहि शुभ सपने में उनका ॥

मणि ७५

महादेव मैं से जी छूटा ॥

बस इस मैं के ही कारण मैं कल्पों से बैठा सिर कूटा ।
कल्प बिते जुग बिते पै इसका उखड़ा नहीं जो गाड़ा खूटा ॥
बरबस आह घुटाये इसके मैंने घूँट जहर के घूटा ।
नर्क स्वर्ग लाचार बना मैं इसने जहाँ जुटाया जूटा ॥
दे देकर यातना अनेकों इसने भूना जैसे भूटा ।
हा दुर्दैव इसी के कारण तुमसे भी तो नाता टूटा ॥
इससे अधिक और क्या बोलो होगा भाग्य किसी का फूटा ।
मिलते ही छुटकारा इससे "शुक्ल" अनंत अनंद है लूटा ॥

मणि ७६

महादेव-मैं-मरा-मैं-तरा ॥

जब तक था जिंदा बंदे को परीशान यह करा खुब करा ।
समझूँ चाहे और किसी को था मेरा मुद्दई यह खरा ॥
बनकर इसकी भेंड़ हाय मैं जहाँ चराया तहाँ चुप चरा ।
इसके ही तो जुगन जराये त्रयतापों झख मार के जरा ॥
जिस जिस घाट जहाँ से पानी भरवाया हो विवश मैं भरा ।
जो जो वेष बनाये सो बन जो जो स्वाँग धराय सो धरा ॥
भेजा स्वर्ग मजा लूटा खुब पठवा नर्क वे उज्र जा परा ।
"शुक्ल" हरन इसका करके तुम मेरी सभी बलाय हर हरा ॥

मणि ७७

महादेव हमको लगें प्यारे ॥

सुन्दरता सुन्दर स्वभाव के कारण दिल के अतिहिं दुलारे ।
चितवन बड़ी चुटीली इनकी बोल वचन इनके हिय हारे ॥
निरखत रूप अनूप आपका कौन नहीं तन दशा बिसारे ।
मन हरनी मुसकान आपकी दयादृष्टि टरनी दुख सारे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढरनी की तुलना न विश्व में भरनी तीनि लोक से न्यारे ।
करनी को करि और दिखावें कीरति भव तरनी विस्तारे ॥
समुझत सुनत गुणावलि इनकी आँखों से बह चलें पनारे ।
मेरे जीवन प्राण "शुक्ल" ये येही हैं सर्वस्व हमारे ॥

मणि ७८

महादेव दीनों के साथी ॥

माने हुये महान विश्व के हैं ये हम हीनों के साथी ।
भीमकाय होते भि देववर निश्चित तन छीनों के साथी ॥
रहते सदा प्रसन्न वदन प्रभु खीनों गमखीनों के साथी ।
सुकृत स्वरूप सर्वथा होते हमसे अघ लीनों के साथी ॥
निज नितान्त निष्पाप होते हू किये पाप पीनों के साथी ।
कर्ता स्वयं पवित्र कार्य के दोष दुरित कीनों के साथी ॥
अर्वाचीन दुरात्मा के ही नहिं हम प्राचीनों के साथी ।
"शुक्ल" हमारे तिनि काल के और लोक तीनों के साथी ॥

मणि ७९

महादेव की कौन चलावे ॥

अल्हड़ सा स्वभाव ऊपर से नित्यहिं गहरी भंग जमावे ।
तितलौकी ज्यों चढ़ी नीम पर और विशेष तिक्तता लावे ॥
आवे जब तरंग इसको हो तवका कौन ढंग बतलावे ।
देखनहार दंग हो जाते ऐसे ऐसे रंग दिखावे ॥
एकी हाथ लुटाते सब पर यह तो दोनों हाथ लुटावे ।
हमसे पकरि पुराने पापी शुभ सुन्दर सी सुगति सजावे ॥
जिसको मिले न ठौर नरक में उसको परम धाम पहुँचावे ।
"शुक्ल" बिगारु बैठा मैं तो यह बेचारा सभी बनावे ॥

मणि ८०

महादेव बेजोड़ जगत में ॥

गुण में रूप रंग में कोई जचे न इनको छोड़ जगत में ।
किसी बात में भी कोई भी है नहिं इनकी होड़ जगत में ॥
ये सुन्दर सर्वांग दिखाते और सभी हैं खोड़ जगत में ।
भरी जो इनमें हैं विशेषता औरों में नहिं थोड़ जगत में ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभी क्षेत्र में दिये हैं देखूँ ये रेकर्ड को तोड़ जगत में।
ये पशुपति ही सबै चराते शेष सभी हैं ढोड़ जगत में॥
दुर्भागी सिरमौर वही जो इनसे ले मुँह मोड़ जगत में।
मेरे परमाराध्य परमप्रिय "शुक्ल" इन्हीं के गोड़ जगत में॥

मणि ८१

महादेव बलवान बड़े हैं॥

एकबार में त्रिपुर दाह किय ऐसे इनके बान बड़े हैं।
चूके नहीं लक्ष्य इनका ये बेधनहार निशान बड़े हैं॥
सर्वमान्य सर्वेश्वर साथहि सचमुच आप सुजान बड़े हैं।
दीन पुकार सदा सुनने को तत्पर इनके कान बड़े हैं॥
देने को उद्यत देखूँ मैं हर छन वर वरदान बड़े हैं।
कौन गिना सकता बतलाओ ये तो गुण की खान बड़े हैं॥
मुझ लेंड़ी बूची को छोड़ो सकते नहीं बखान बड़े हैं।
मान न मान "शुक्ल" मेरे तो बन बैठे मेहमान बड़े हैं॥

मणि ८२

महादेव सुमिरत दिन बीते॥

इनसे ही है लगन लगी जब तब बोलो तुम नहिं किन बीते।
पहरबिते घंटा बीते ही चिंतन में ही छिन-छिन बीते॥
विस्मृति भई जहाँ सचमानो बस पल-पल जुग सा गिन बीते।
जीता रहूँ भले सौ वर्षों पर जिन्दगी बनी घिन बीते॥
शत आदर के पात्र हमारे सुमिरन में ही वय जिन बीते।
परम कृपा के पात्र देव के अस धनि धनि जीवन तिन बीते॥
उन्हीं सुकृतशाली सुजनों का जन्म हुआ इनमें लिन बीते।
"शुक्ल" सहस्र प्रणाम तासु पद स्मृति सागर मन बन मिन बीते॥

मणि ८३

महादेव मम दायें बायें॥

हटते नहीं हटाये हरगिज चाहे जितना इन्हें हटायें।
बड़ी हँसी आती हैं हमको जब कोइ कहता कैसे पायें॥
जब से हुआ है दृढ़ गठबन्धन बड़ी मौज और मजा दिखायें।
मानो मत मानो किस गिनती की हम खायें आग अघायें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये तो कभी रूटते ही नहिं हम रूठें हो विवश मनायें।
इनके ही हित जन्म लेंय हम, इनके ही हित हम मर जायें॥
इनपर ही हम होंय निछावर इनपर ही हम बलि बलि जायें।
पायें "शुक्ल" सहस्र प्राण तो ललकि ललकि इनपर हि लुटायें॥

मणि ८४

महादेव का रस लेता मैं॥
बतलाओ बतलाऊँ कैसे यह तुमको की कस लेता मैं।
लेने में हि लीन हो जाता तुम समझो की अस लेता मैं॥
शब्दहि नहीं व्यक्त करने को सही-सही की जस लेता मैं।
जस-जस लगता रस मुँह मेरे सचमानो तस-तस लेता मैं॥
खुशी-खुशी दें खुशी-खुशी लूँ न तरु नाक पद घस लेता मैं।
निर्जन में दें निर्जन में लूँ वर्ना भीड़ में धस लेता मैं॥
तृप्ति कहाँ होती है इससे बार भले दस-दस लेता मैं।
लेता हो रो रोकर कोई "शुक्ल" सदा हँस-हँस लेता मैं॥

मणि ८५

महादेव रसमय हे रसिको॥
प्रामाणिक यह बात आपसे कहूँ प्रतिज्ञा कय हे रसिको।
हैं येही रसखान रसेश्वर बात सर्वथा तय हे रसिको॥
इस रस सागर में उछाल है मार रहा रस पय हे रसिको।
और कहीं सूझता जिसे रस उसकी बुद्धी गय हे रसिको॥
मंद भाग्य उसका सच मानो पुण्य हो गया क्षय हे रसिको।
रस की हो तलाश तो याँ वाँ व्यर्थ न खोओ वय हे रसिको॥
आओ खूब अघाकर पाओ भरा यहीं रस हय हे रसिको।
"शुक्ल" कहो शतबार सहस मुख रसिक राज की जय हे रसिको॥

मणि ८६

महादेव मेरे प्यारे मुन्ना॥
कौन कल्प किस युग के हैं ये किस विधि कौन निकारे मुन्ना।
गया नहीं बचपन ही अब तक फिरते अंग उघारे मुन्ना॥
होंगे जवाँ मर्द ये कबतक हम समझन में हारे मुन्ना।
चलेंगे कब ये कमर झुकाकर को यह व्यर्थ विचारे मुन्ना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राम नाम सत कब हो इस पर मूढ़हि माथा मारे मुन्ना।
बैठे दूध बतासा पीवें दिलके मेरे दुलारे मुन्ना।
"शुक्ल" जिऊँ मैं इनके ही हित मेरे प्राण अधारे मुन्ना।।

मणि ८७

महादेव सब तन में विहरैं ।।
विविध वेष धारे जगदीश्वर ये ही तौ जन-जन में विहरैं।
शतशः स्वाँग बनाये देखो गननायक गन-गन में विहरैं।।
वाष्प बनें विद्युत बन करके आनंद घन ही घन में विहरैं।
काल बने ये महाकाल ही वर्ष मास दिन छन में विहरैं।।
सद्य जात शिशु पोषक पय वन जग पोषक ही घन में विहरैं।
आकर्षक अत्यंत बने ये धन्य धनाधिप धन में विहरैं।।
बन पशु विविध विहंग वन्यतरु बने विश्वपति बन में विहरैं।
"शुक्ल" बने रज रूप आप ही प्राणेश्वर कन-कन में विहरैं।।

मणि ८८

महादेव सेवक से नाता ।।
सेवा से वंचित सग अपना हरगिज मेरा प्यार न पाता।
सेवा में संलग्न गैर से गैर को भी मैं पा पुलकाता।।
सेवक ही इनका सच मानो लगता मुझे सहोदर भ्राता।
सेवक में हो दोष जो इनके मेरी आँखों नहीं दिखाता।।
गुन को देख गौर से गौरव देकर गली-गली मैं गाता।
उनकी संनिधि पा सचमानो मैं अत्यंत सुखी हो जाता।।
बाँसों लगे उछलने तव जी जव कहुँ उनके पाँव दबाता।
होता तब संतोष "शुक्ल" को उन पर प्राण हजार लुटाता।।

मणि ८९

महादेव का सुमिरन कर जी ।।
हित की बात बताता तेरे जी से अपने इसको धर जी।
इस या उसी लोक में दुख तू पाना नहीं चाहता गर जी।।
जरा चूक होने से तुझको होना पड़ सकता है खर जी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी चूक से जरा वितापों खूब और तो मत तू जर जी ॥
क्या लिपटा है जड़ विषयों से मैं कहता हूँ टर झट टर जी ।
होजा बस निर्भय इतने में बला डरे तू मत कुछ डर जी ॥
केवल सुमिर और सुमिरा के कितनों को हि तारकर तर जी ।
"शुक्ल" सफल हो सच तिहारी पायी हुई ये काया नर जी ॥

मणि ९०

महादेव की सुधि जब आती ॥
तब की दशा कही किमि जाती फूली नहीं समाती छाती ।
बतलाई जा सकती कैसे प्रतिछन रंगत नये दिखाती ॥
यह बहार बरसा कर यह लो अब है वह बहार बरसाती ।
मूसलधार कभी औ कबहीं रिमझिम-रिमझिम झरी लगाती ॥
तर करके आनन्द वृष्टि से मेरे रोम-रोम हरषाती ।
भीतर नहीं समाता जब सुख तब है वाहर धार बहाती ॥
बह चलता हूँ विवश बना मैं जब यह कभी बाढ़ है लाती ।
चाहूँ "शुक्ल" जन्म जन्मान्तर ऐसेहि रहे दया दरसाती ॥

मणि ९१

महादेव गुन गाव गरीबो ॥
कोई सुननेवाला है नहिं पास किसी के जाव गरीबो ।
सभी मुसीबत में हैं तुम मत कान किसी के खाव गरीबो ॥
बड़े समझते हो जिनको यह उनका देख दिखाव गरीबो ।
ढला लगी उनको भारी है बात मेरी पतिआव गरीबो ॥
बुला रहे सम्मान सहित ये शरण इन्हीं के आव गरीबो ।
उत्साहित विशेष हैं इस छन इनसे लाभ उठाव गरीबो ॥
धन ले धर्म काम मुक्ती ले भक्ति ले जो तोहिं भाव गरीबो ।
कर आवाज बुलंद "शुक्ल" कह धाव-धाव झट धाव गरीबो ॥

मणि ९२

महादेव गुनगाव सुकुलवा ॥
जगा भाग वा खूब तोर तैं लहरा लूट लुटाव सुकुलवा ।
हुये सहायक हैं सर्वेश्वर सुख की नदी वहाव सुकुलवा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह लहाव वह भी लहाव तू बेश्रम सभी लहाव सुकुलवा ।
पाँचों उँगली घी में तेरी मूछों में मुसकाव सुकुलवा ।।
अनुकंपा का उसकी तुझपर दिखता दिव्य प्रभाव सुकुलवा ।
नितकी दई देन दुर्लभ को पा-पा कर पुलकाव सुकुलवा ।।
बन गई बात तिहारी बेशक भरहिक हिय हुलसाव सुकुलवा ।
फट जाने की फिक्र छोड़कर मुसरन ढोल बजाव सुकुलवा ।।

मणि ९३

महादेव अपनवले बाट ऽ ।
जहिया से तहिया से देखीं अतिशय कृपा जनवले बाट ऽ ।
अपनी ओरी जोरि दयावश दृढ़ संबंध घनवले बाट ऽ ।।
गयल बितल जनलेव पर हमके गन में निजी गनवले बाट ऽ ।
चित दै चितै वृत्ति चित कै मन सुरस सनेह सनवले बाट ऽ ।।
उतरै कबौं का करै तूं वह प्रेमिल भंग छनवले बाट ऽ ।
जवने में हित होय हर तरह तवनै ठान ठनवले बाट ऽ ।।
फरै शुभै शुभ जवन फलाने फनवन तवन फनवले बाट ऽ ।
"शुक्ल" बनल तू हय ऽ मदारी बन्नर हमैं बनवले बाट ऽ ।।

मणि ९४

महादेव के चरनन धर सिर ।।
हो जाता निहाल सा मैं तो इनके केवल अभिमुख कर सिर ।
परा नहीं जो इन चरनों पर समझूँ उसको मैं तो खर सिर ।।
नवता नहि सश्रद्ध जो इन पद समझाता वह पाप का घर सिर ।
परवा करूँ न रंचमात्र भी जावें कहीं अभी गिर गर सर ।।
बड़ी खुशी हो हमको सचमुच जाय अभी ही धड़ से टर सिर ।
कल के बदले आजहि क्यों नहि जाना क्यों नहि अबहीं जर सिर ।।
सफल होय तबहीं सच मानो पाना प्रियवर सुन्दर नर सिर ।
प्रेमपूर्ण करि हृदय "शुक्ल" बस परा रहे पद पंकज पर सिर ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९५

महादेव ने भाग्य जगाया ।।

हतभागी मैं जनम जनम का बिलकुल साफ साफ समझाया ।
यह देखा वह भी तो देखा देखा करे जो दुरित निकाया ।।
अचरज से यह भी देखा तउ अनायास इन दृष्टि फिराया ।
अतिशय मलिन अदृष्ट मेरे को शुभ्र सितारे सा चमकाया ।।
संभव कभी नहीं था जो जो सो सो सुन्दर दृश्य दिखाया ।
दुर्लभ जो सौभाग्यशालि को वह बहार बरबस बरसाया ।।
लाई बाढ़ अनंद सिन्धु में मुझको विवश बनाय बहाया ।
किसी तरह भी "शुक्ल" समझ लो आगे का नहिं जाय बताया ।।

मणि ९६

महादेव मिलि भाग्य जगाओ ।।

आदर सहित बुलाता हूँ मैं आओ मेरे बंधुवर आओ ।
द्योतक जो दुर्भागीपन का दुर्लक्षण को दूर भगाओ ।।
शोक वियोग हानि भय रुज से व्याकुल सबके सबहि दिखाओ ।
जाते नैनीताल मसूरी देखूँ कहीं चैन नहिं पाओ ।।
एयर पर या चलो कार पर दुर्दिन लखूँ साथ ही धाओ ।
सब करते सब भोग भोगते इनसे भी संबंध बढ़ाओ ।।
आदरणीय मेरे जीवन में सद्यः सुखद शांति सरसाओ ।
सुफल होय जिंदगी तुम्हारी "शुक्ल" शपथ करि कहूँ पत्याओ ।।

मणि ९७

महादेव से पटी खुब पटी ।।

इनसे असम्बद्ध जग जन से मिलनेच्छा भी घटी खुब घटी ।
संबंधित होने से इनसे दिव्य जिंदगी कटी खुब कटी ।।
दुर्वृति भरी परी थी कबकी सो सब सद्यः छटी खुब छटी ।
तद् विपरीत सुवृत्ति सुहावनि देख रहा हूँ डटी खुब डटी ।।
घिरी रही बदरी अग्यान की सो सबकी सब फटी खुब फटी ।
आये थे जिस दिन उस दिन तो बनी छनी औ बटी खुब बटी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसी रंग में रँगे दुनोजन की छाती जो सटी खूब सटी ।
जै जै कार सरकार कि हो यह "शुक्ल" जीह तब रटी खुब रटी ।।

मणि ९८

महादेव नहिं पा क्या पाया ।

जन्मे मरे बार बहु तेरे वैसे यह भी जन्म गँवाया ।
गौरवर्ण द्विज देव क्षत्रिवर की पाई अस्थूल सी काया ।।
विद्या पढ़ी विनीत भी हुये बढ़ी प्रतिष्ठा सुयश सुहाया ।
बच्चे पैदा किये भाग्यवश थोड़ा नहिं वहु द्रव्य कमाया ।।
बिल्डिग बनी, सजे फर्नीचर पंखे लाइट खूब लगाया ।
लगा रेडियो पार्क सजीला अव्वल नंबर कार मगाया ।।
देख हुआ संतोष मुझे पर तुमने भी कुछ तृषा बुझाया ।
या बढ़ता ही मर्ज गया है "शुक्ल" शांति की दिखी न छाया ।।

मणि ९९

महादेव शिव हर हर बम् बम् ।।

हतभागी बनते बड़भागी एकमात्र यह कर कर बम् बम् ।
दुर्लभ जिन्हें चबेना उनको देय कचौड़ी खर खर बम् बम् ।।
मोहन भोग मालपूआ नित देता घी से तर तर बम् बम् ।
उसके दोष दुरित के दलको दाल बनाता दर दर बम् बम् ।।
सद्‌गुण से सम्पन्न तासु उर कर देता है भर भर बम् बम् ।
चारो फल करि सुलभ सद्य दे कृपाबेलि निज फर-फर बम् बम् ।।
रचता विविध विधान सुखद तेहि नित्य नये अरु वर वर बम् बम् ।
चाहूँ "शुक्ल" देश में मेरे मचे मोदमय घर घर बम् बम् ।।

मणि १००

महादेव गुन गाय सुकुलवा ।

पावन करता निज वाणी को इनका सुयश सुनाय सुकुलवा ।
पाता परम प्रमोद इन्हीं की चरचा चारु चलाय सुकुलवा ।।
छिड़ता जहाँ प्रसंग हो इनका हिय हुलसित तहँ जाय सुकुलवा ।
किसी और की नहीं इन्हीं की कीरति सुने अघाय सुकुलवा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनके अनुरागी सुजनों को पाकर अति पुलकाय सुकुलवा ।
प्रतिनिधि सी प्रतिमा को इनकी हेरत ही हरषाय सुकुलवा ।।
इनके चतुर्वर्ग सेवा का जो सुयोग पा जाय सुकुलवा ।
इनमें निरखि उन्हीं को ततछन परमानंद समाय "सुकुलवा" ।।

मणि १०१

महादेव मुख बोलो बहना ।
दूजी कोई बात बकन को कभी नहीं मुँह खोलो बहना ।
लेकर नाम निरंतर सजनी उस अंतर को धोलो बहना ।।
बीता चला जा रहा द्रुतगति यह जीवन अनमोलो बहना ।
मारी मारी फिरो न इत उत प्रेम गली बिच डोलो बहना ।।
हुलसि हुलसि हिय पात्र मधुर वर नेह सुधारस घोलो बहना ।
केवल गाल बजाय तुष्ट कर देव निपट ही भोलो बहना ।।
शरणागत हो सखि शंकर के सुफल करो यह चोलो बहना ।
"शुक्ल" छत्रछाया में इनकी परम शांति से सोलो बहना ।।

मणि १०२

महादेव मुख बोलो बहना ।
कहती हित की बात तुम्हारे मानो सखी हमारा कहना ।
ठुकरा दो इन आभूषण को पहनो शुचि सद्‌गुण के गहना ।।
डाहे कोई कर्मवश तुमको तुम मत कभी किसी को डहना ।
आये अन्य द्वंद जीवन में सब सहेलि सह हर्षहि सहना ।।
इस या उसी लोक की कोई वस्तु न जगनायक से चहना ।
लेकर नाम सप्रेम निरंतर दुरित दलों को अतिद्रुत दहना ।।
सब संभव उपायकर सजनी प्रभुपद पंकज प्रति रति लहना ।
होगा "शुक्ल" सुलभ सब ही कुछ परी देव शरणागत रहना ।।

मणि १०३

महादेव खुश हुये सो कैसे ।
जबसे होश सम्हाला हमने कोई काम किये नहिं ऐसे ।
चले राह मनमानी कोई पूछनवाला हो नहिं जैसे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोड़े नहिं दुष्कर्म एक भी इन इनके गुण्डों के भैसे ।
किये पूर्ण अपराध यज्ञ बहु सांगोपांग सविधि हो तैसे ।।
रहे रहनि वह निंद्य निपट ही रहते जगत यथा मति गैसे ।
इनके लिये न हाय-हाय की करते रहे हाय हा पैसे ।।
लिए नाम नहिं प्रेमपूर्ण बनि गाये गुण न ताल स्वर लैसे ।
हो निहाल अनयास रंक पर धनद "शुक्ल" पर हुए ये वैसे ।।

मणि १०४

महादेव विषयों ने लूटा ।
जबरदस्त बट पार मेरा सब माल लिया ऊपर से कूटा ।
जमकर बैठे हैं छाती पर मजबूती से गाड़ के खूटा ।।
इसके हाय घुटाये हमनें कितने घूंट जहर के घूटा ।
विवश बना बेतरह इन्होंने जब भी जहाँ जुटाया जूटा ।।
आदिकाल से आजतलक भी इनसे नहीं दैव जी छूटा ।
नाकों दम कर रक्खा इनने करता मैं फरयाद न झूटा ।।
इनके ही कारण सच मानो तुमसे भी संबंध है टूटा ।
"शुक्ल" हुये संयुक्त न तुमसे भलिविधि तभी भाग्य है फूटा ।।

मणि १०५

महादेव अति दिल उदार कर ।।
मलिन परा कितने हि कल्प का मेरा वह उज्वल कपार कर ।
है तो है ही कृपा अहैतुकि उसे बढ़ा करके अपार कर ।।
किये कराये जन्म जन्म के मेरे पापों को बिसार कर ।
होती जो नित नई शरारत उनपर बिल्कुल धूल डार कर ।।
अपने अति लाड़ले लाल सा मुझको निज मनमें बिचार कर ।
जो जो बात कहूँ मैं जब जब ज्यों, की त्यों सबको स्विकार कर ।।
पैदा इस भूपर कम से कम मुझको और हजार वार कर ।
सेवा "शुक्ल" स्वजन की, निजकी-कराके मुझपर प्रभु अभार कर ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०६

महादेव गुन गारी तारा ॥

बुला रहा आदर समेत मैं आ सुभागिनी आ री तारा ।
महादेव के गुनगाने सें बनती सभी बिगारी तारा ॥
महादेव के गुन गा गा के बन जा अति अविकारी तारा ।
महादेव का पा प्रसाद तू उर विच खूब अघारी तारा ॥
महादेव की कृपा बिना नहिं गा सके कोई बिचारी तारा ।
महादेव गुन गातीं जो नहिं होतीं वही दुखारी तारा ॥
तू इसमें हरगिज प्रमाद मत कर मम पौत्री प्यारी तारा ।
जन्म-जन्म जुग-जुग के हित तू बन जा "शुक्ल" सुखारी तारा ॥

मणि १०७

महादेव किन सुमिर सुमित्रा ॥

सब साधन सिरमौर इसे ही निज मन में गिन सुमिर सुमित्रा ।
और सभी सुमिरन से सत्वर करके अतिघिन सुमिर सुमित्रा ॥
सुमिरन से खाली कोई भी बीतें नहिं छिन सुमिर सुमित्रा ।
पातीं नहीं चैन लोकद्वय सुमिरें नहिं जिन सुमिर सुमित्रा ॥
पछतातीं प्रति जन्म-जन्म वे अकुलातीं तिन सुमिर सुमित्रा ।
सहते संकट सहस बीतते हैं उनके दिन सुमिर सुमित्रा ॥
है तू निज प्रपौत्रि इससे ही कहता फिन फिन सुमिर सुमित्रा ।
जावे "शुक्ल" नहीं जीवन यह प्रभु सुमिरन बिन सुमिर सुमित्रा ॥

मणि १०८

महादेव को पाजा राजा ॥

जीवन सफल होय तेरा तब बन जावे सब काजा राजा ।
फिर क्यों चना चबेना बेटा खावे नितप्रति खाजा राजा ॥
ले मुरचंग-मृदंग-चंग-बनि मस्त बजावे बाजा राजा ।
तीनि लोक का वैभव दीखे राम कुटी में गाजा राजा ॥
दुर्गुण दोष निहारे सारे फुके मसान में जा जा राजा ।
दुर्गति से दुःखित षट् रिपुगन भगेंढके मुँह लाजा राजा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ वहाँ का अनायास ही सज जावे सब साजा राजा ।
"शुक्ल" लूट वह मजा जो लूटे हों नहिं बाप न आजा राजा ॥

मणि १०९

महादेव मणिमाल हृदय धर ॥

होना नहीं सविधि संपादन अन्य कर्म तू कर या मत कर ।
हों तन-दाहक सिद्ध फकत-मत ग्रीष्म तापि पंचाग्नि नहक जर ॥
वर्षा वहिर्वास करके यूँ शीतकाल जल शयन कै नहिं ठर ।
होगा श्रम कोरा सब तोरा हाथ नहीं लगना कोई फर ॥
ज्ञान मानवर्धक सिध होगा योग रोग का दायक ही भर ।
मणिमाला धारण करने से अंधकार उर का जावे टर ॥
बात बात में बात मान ले अवढर ढरन जाँय सहजहि ढर ।
"शुक्ल" बाप-दादा-परदादा तेरे सात पुश्त जावें तर ॥

दोहा

काया माया आपकी करें करावें आप ।
कर्तापन का सर मेरे क्यों मढ़ते हैं पाप ॥
की थी किसने प्रेरणा कौन चलाया हाथ ।
पूछ रहा मैं आपसे बोलो भोलानाथ ॥
करवाना यदि चाहते रस्म अदाई आप ।
वह भी करवा लीजिये मुझसे मेरे बाप ॥
रचना साथहि साथ वह रचने का जो गर्व ।
"शुक्ल" समर्पण कर रहा सादर तुमको सर्व ॥

आश्विन कृष्ण १ भौम सं० २०१७ वि०

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशीधरात्मज शुक्ल चन्द्रशेखर
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
दसवीं माला समाप्त ।

--०--

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवे नमः *

महादेव मणिमाला

ग्यारहवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

आओ सामने तो जरा और शरमाओ नहीं,
मदन लुभावन वो वदन दिखाओ तो ।
एक बार को ही सही विनती हमारी सुनो,
आनँद के कंद मंद-मंद मुसकाओ तो ।।
जलता हृदय है मेरा विरह तुम्हारे यार,
एहो हियहार आय इसको जुड़ाओ तो ।
'शुक्ल' यश छाओ पुण्य पूरण कमाओ धाओ,
जाते इस बाभन के प्राण को बचाओ तो ।।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्यारहवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मंगल मन माना ।।
इनकी ही सेवा हो जिससे वह मैंने मंगल तन माना ।
मुक्तहस्त जो लुटे इन्हीं पर उसको ही मंगल धन माना ।।
सुमिरन में इनके व्यतीत हो वह जाता मंगल छन माना ।
मनसा-वाचा और कर्मणा शरण हुआ मंगल जन माना ।।
टरना नहिं देवेश्वर दर से इसको ही मंगल पन माना ।
विहरें जहाँ निरंतर प्रभुवर जाय वही मंगल वन माना ।।
इन मय ही रस वर बरसे जो मैं उसको मंगल घन माना ।
संबंधित हों कार्य जो इनसे "शुक्ल" उसे मंगल गन माना ।।

मणि २

महादेव पर मरत बना नहिं ।।
जीवन खतम हो रहा देखूँ करना था सो करत बना नहिं ।
दिल की दुर्बलता के कारण दुष्कर्मों को टरत बना नहिं ।।
करते हुये कुकर्म सोचकर परिणामों को डरत बना नहिं ।
होने से कठोर हिय हमसे दीनजनों पर ढरत बना नहिं ।।
कर व्यवहार सुचारु-सुभाषण, जग जनका मन हरत बना नहिं ।
भरे कुभाव करोर हिये में शुचि सद्भावन भरत बना नहिं ।।
यह वह धरे जोरि उर अंतर प्रभुपद पंकज धरत बना नहिं ।
नरक परे सब योनि जा परे देव चरण पर परत बना नहिं ।।
सुन्दर निरुज नीक सब विधि से नर शरीर पा तरत बना नहिं ।
"शुक्ल" जरे मर मरके हा हम हर वियोग में जरत बना नहिं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव देने पर तुल गये ।।

जुग-जुग की दीनता दरिदता मेरी हर लेने पर तुल गये ।
जर्जर बोझीली लख मेरी किश्ती खुद खेने पर तुल गये ।।
अपने सुधा सनेह सुहावन मेरी मति भेने पर तुल गये ।
निजी जान थाली पर डट के बिना कहे जेने पर तुल गये ।।
मेरी मूँछ हाथ से अपने तावदार टेने पर तुल गये ।
"शुक्ल" गये गुजरे को ये ज्यों कमठ अंड सेने पर तुल गये ।।

मणि ४

महादेव ने प्यार किया खुब ।।

मेरी सही सही हालत को जानत दिली दुलार किया खुब ।
प्रेम वारि की वर्षा मुझपर सचमुच इनने यार किया खुब ।।
वर व्यवहार निजी से मेरे मन पर है अधिकार किया खुब ।
अनुकम्पा यत्किंचित करके मम अंतस अविकार किया खुब ।।
और सुनो बस उसी तरह से शुभ सद्गुण आगार किया खुब ।
विधि विधि देन मुझे देने को अपना हृदय उदार किया खुब ।।
ज्योतिर्मय निज झलक दिखाकर मेरा उर उजियार किया खुब ।
"शुक्ल" बसे अहनिशि प्रमुदित मन हिय हियहार विहार किया खुब ।।

मणि ५

महादेव ध्वज वंदन करता ।।

पापी होय सुरापी ही हो कभी नहीं नरकों में परता ।
होता जूड़ जहाँ जी जाता वह नहि त्रयतापों से जरता ।।
होती सदा उर्ध्वगति उसकी निम्न योनि कबहीं नहि धरता ।
कर नहि सकें बाल बाँका ये नहि यम यमदूतों से डरता ।।
आशुतोष की कृपा आशुहीं उसके लिये चारिफल फरता ।
औरों को साधन पाधन हैं उसका काम यूँहिं सब सरता ।।
होने से निर्द्वंद लोकद्वय बड़ी मौज से है वह मरता ।
"शुक्ल" तरा वह आप क्या तरा उसका सात पुश्त है तरता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६

महादेव बहकाव ऽ ल ऽ तू ।।

मुल्लह मानि महेश मजे में हमके तौ समझाव ऽ ल ऽ तू ।
चाहीं हम तोहके पर हमके ई-ऊ-दै फुसलाव ऽ ल ऽ तू ।।
कबौं मीठ-नमकीन कबौं इमि प्रिय पदार्थ परसाव ऽ ल ऽ तू ।
देकर खूब खेलवना खुब-खुब खुब-खुब खेल खेलावल ऽ ल ऽ तू ।।
अपुआ के बड़ चत्तु र मान ऽ चोन्हर हमैं बनाव ऽ ल ऽ तू ।
तोहरै चेला हईं त ऽ काहे हमसे ढेर लगाव ऽ ल तू ।।
पूँछत हईं आजु कुलि खुलि कै काहे न ऽ बतलाव ऽ ल ऽ तू ।
मरत हईं तोहपर ई जानत "शुक्ल" हमैं तरसाव ऽ ल ऽ तू ।।

मणि ७

महादेव सँग रहना चाहूँ ।।

जिस पथ चले प्राप्ति हो प्रिय की केवल वह पथ गहना चाहूँ ।
आवे जो आपत्ति कर्मवश हँसी खुशी से सहना चाहूँ ।।
जो जो वे चाहें बस वो ही सचमानो मैं चहना चाहूँ ।
कौन करे बकवास और बम् हर हर हर बम् कहना चाहूँ ।।
लेकर नाम रात दिन उनका दोष दुरित सब दहना चाहूँ ।
भूषण और नहीं विभूति भलि अक्षमाल भल पहना चाहूँ ।।
बढ़े प्रेम नद में उनके मैं बन कर बेसुध बहना चाहूँ ।
उनका शुभ सान्निध्य "शुक्ल" तजि और नहीं कुछ लहना चाहूँ ।।

मणि ८

महादेव कल्याण करेंगे ।।

हैं कल्याण स्वरूप आप यह जब हम मन में भान करेंगे ।
तब होता कल्याण आपसे हर छन हम अनुमान करेंगे ।।
पा पा करके दिव्य देन बहु विस्तर सहित बखान करेंगे ।
प्रेमाधिक इनकीहि कीर्तिवर काहि गान उमगान करेंगे ।।
एक एक बातों का वर्णन उर में अतिहि अघान करेंगे ।
मनसा वाचा और कर्मणा इनका ही सनमान करेंगे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तन-मन-धन इन पर ही अपना खुश होकर कुर्बान करेंगे।
"शुक्ल" प्राप्त अनुकम्पा इनकी कर प्रमुदित प्रस्थान करेंगे॥

मणि ९

महादेव की महान महिमा॥

कौन वेद वह शास्त्र कौन सा जिसने इनकी कहा न महिमा।
शास्त्र नहीं वह तो अशास्त्र है जिसने इनकी गहा न महिमा॥
हारे शेष शारदा श्रुतिगण सके कोई भी थहा न महिमा।
रही नहीं वह व्यक्त तभी जब कहने वाला रहा न महिमा॥
कौन देव दानव को ऋषिमुनि कौन संत जो चहा न महिमा।
स्वर्ग पाताल विश्व का कोना कौन व्याप्त हो जहाँ न महिमा॥
बसते नास्तिक वृन्द जहाँ हों हो सकता हो तहाँ न महिमा।
बेश्रम "शुक्ल" यहाँ की वँ हँ की मेरी लहा दी लहा न महिमा॥

मणि १०

महादेव बिन अब कस जी जै॥

कोई कहे बतावे कोई जौन जतन करके जस जी जै।
प्राप्ति उपाय जतावे जो कोइ उसके चरणों सिर घस जी जै॥
सेवा करूँ कर सकूँ जो मैं गाते ही उसका यश जी जै।
जिस भी भाँति रखे वह वस रहि हो करके उसके वश जी जै॥
जैसे भी बतलावे जीना सच कहता हूँ हम तस जी जै।
अबतक तो थीं खुली दौरती अब बोले इन्द्रिन कस जी जै॥
मन बटोर सब ओर जगत से जीते जी ही हम चस जी जै।
मिल जाते वे "शुक्ल" प्राणधन साथ उन्हीं के दिन दस जी जै॥

मणि ११

महादेव गुन गायेन भल बा॥

जाब ऽ कहाँ न ठौर कहीं बा शरण इन्हीं के आयेन भल बा।
ललचाओ मत चकाचक्क को जौन खिआवैं खायेन भल बा॥
कुछ एहर कुछ ओहर नाहीं वहि में अतिहिं अघायेन भल बा।
ऐसौ एके समुझिल ऽ अबकी हर हालत हरषायेन भल बा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैसे चल ऽ जौनि मन मानै राह-कुराह बचायेन भल बा ।
चरचा चारु चले जहँ एनकी बस वहि ठौरै जायेन भल बा ॥
उलझन सब सुलझाकर जग की इनसे उर उलझायेन भल बा ।
जैसे मिलैं "शुक्ल" सच तैसे देव देव के पायेन भल बा ॥

मणि १२

महादेव गुन गाव गवैया ॥
देव-देव के गुन गन गाकर जीवन सफल बनाव गवैया ।
जन्म-जन्म के किये कराये दुर्गुन दुरित दुराव गवैया ॥
काम क्रोध षट रिपुगन से भी हो अनयास बचाव गवैया ।
दैहिक-दैविक-भौतिक तापों का भी लगे न ताव गवैया ॥
मलिन पड़ा कितने हि कल्प का अंतःकरण धुलाव गवैया ।
साधन अन्य बिना ही कीन्हें शांति सुलभ करि पाव गवैया ॥
मन रंजन परलोक सँवारन करि यह सिद्ध दिखाव गवैया ।
यह वह "शुक्ल" बजाते गाते दोनों लोक लहाव गवैया ॥

मणि १३

महादेव के लिये काय है ॥
सेवा करे सुरक्षित रहकर बंदा बस इसलिए खाय है ।
नेत्रों को नीके राखूँ जो कर इनका दर्शन अघाय है ॥
वाणी का सत्कार इसी से जो इनके गुण-नाम गाय है ।
सुन हर्षित हों कीर्ति तभी तो कानों को बहुविधि बचाय है ॥
कर की करूँ कद्र इससे जो परिचर्या में नित लगाय है ।
चरणों की है चाह तभी जो प्राप्ति हेतु इनके सो धाय है ॥
चित चाहूँ जो इत उत से हट इनका ही चिंतन कराय है ।
मनको "शुक्ल" मान्यता दूँ जो हृदयेश्वर को ही बसाय है ॥

मणि १४

महादेव की गोद सुहानी ॥
कितनी सुखद मनोरम कैसी कैसे बतला सकती बानी ।
उदाहरण दे करके कोई बतलाओ कस जाय बखानी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणि-पदार्थ परिस्थिति कोई हो सकती क्या इसकी शानी ।
इसके पास पहुँचते ही सच मेरी वृत्ति बड़ी उमगानी ॥
होते ही आरूढ़ मानलो अत्यंतहिं आतमा जुड़ानी ।
तुमको भी यदि चाह हो तो तुम कहता हूँ उसको सचमानी ॥
आशान्वित हो बढ़ो वेग से करो जरा मत आनाकानी ।
है अधिकार सभी का इस पर "शुक्ल" जगत के जितने प्रानी ॥

मणि १५

महादेव बिन बड़ी दुर्दशा ॥

जबसे अलग हुआ हूँ उनसे तबसे पीछे पड़ी दुर्दशा ।
जाता जहाँ देखता हूँ यह है मुँह बाये खड़ी दुर्दशा ॥
आदि काल से आज तलक-क्या खूब लगी है झड़ी दुर्दशा ।
तबसे ही तो किसी तरह भी टूट रही नहिं लड़ी दुर्दशा ॥
साधारण साधारण ही नहिं एक एक से कड़ी दुर्दशा ।
दीख रही नहिं सही आपको रोम रोम है जड़ी दुर्दशा ॥
उनने ही जब यार तड़ाया तब मैंने यह तड़ी दुर्दशा ।
"शुक्ल" मिलेंगे जब जीवन धन तब समाप्त हो घड़ी दुर्दशा ॥

मणि १६

महादेव सा भल भल मनई ॥

देखा नहीं सुना ही मैंने कहीं किसी भी थल भल मनई ।
इनका तो सम्पर्क लेश भी पा बन जाते खल भल मनई ॥
आते ही निहाल हो जाता शरण छोड़ सब छल भल मनई ।
पाता है क्या नहीं-चढ़ाता है जो गंगाजल भल मनई ॥
कर लेता संतुष्ट सच ही-सिरधरि बिल्व त्रिदल भल मनई ।
अनुकम्पा पा आशु आपकी जा दोषों से टल भल मनई ॥
बन जाता है क्या से क्या वह नव साँचे में ढल भल मनई ।
रहता सदा सुरक्षित सब दर इनके द्वारा पल भल मनई ॥
लेता बढ़ा बात बातों में अपना-आतम बल भल मनई ।
"शुक्ल" समस्या सारी यूँही कर लेता वह हल भल मनई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १७

महादेव हम राजी रखते ॥
अपने इनके बीच हम नहीं बना किसी को काजी रखते ।
रुचिकर भाव जो इनके केवल वह ही हिय में गाजी रखते ॥
कुत्सित-कुटिल-कुभाव कभी नहिं करि संग्रह इन पाजी रखते ।
प्रेमिल बात सुनाकर संतत तबियत इनकी ताजी रखते ॥
अपनी हार मानकर हरदम सर इनकी ही बाजी रखते ।
रखने को संतुष्ट इन्हें हम "शुक्ल" साज सब साजी रखते ॥

मणि १८

महादेव खुब फले फलाने ॥
जहिया से एन मिलेन मानिलऽ सूतीला हम कले फलाने ।
नहिं तौ कौनि दुर्दशा जेके हम न लगावा गले फलाने ॥
जुग-जुग, जन्म-जन्म ई जानऽ परि नरकन में जले फलाने ।
लाल-लाल तावा पर धरि के गये सविधि हम तले फलाने ॥
रोअे-पछिताने-कसि-कसि के दूनौ हाथौं मले फलाने ।
तब्बौं तोहैं बताई संघी दोधन से नहिं टले फलाने ॥
ई तौ भै अनुकम्पा अेनकर तव नव साँचे ढले फलाने ।
जैसे दाल दराय की तैसे धरि दोधन दल दले फलाने ॥
जैसे कछुआ से निज अंडा तैसै एनसे पले फलाने ।
"शुक्ल" अघाने हम सहजहिं में परमानन्द से भले फलाने ॥

मणि १९

महादेव मोहिं राजी रखते ॥
अपने मेरे बीच कभी भी ये नहिं कोई काजी रखते ।
जिसकी मुझे जरूरत जब-जब सो सब तब-तब गाजी रखते ॥
हैं जो तत्व अहित कर मेरे दूर सभी उन पाजी रखते ।
अगर उलझ जाती इनसे तो सर मेरी ही बाजी रखते ॥
कर प्रेमिल व्यवहार सदा ही तबियत मेरी ताजी रखते ।
वेश्रम "शुक्ल" लोक दोनों के सजग साज सब साजी रखते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २०

महादेव की रीति अनोखी ।।

कौन नहीं जानता जगत का की हुइ इनकी कीति अनोखी ।
सब ऋषि मुनि द्वारा तब ही तो गायी जाती गीति अनोखी ।।
कीर्ति क्षेत्र में विश्व बीच बस है इनकी ही जीति अनोखी ।
मुझ जैसे भी प्यारे लगते प्राणेश्वर की नीति अनोखी ।।
हम कर देखी तुम कर देखो प्रेम सिन्धु की प्रीति अनोखी ।
गौरवमयी महान महत्तम महामहिम की मीति अनोखी ।।
भाग जाय भव भीति भयानक भय हारन की भीति अनोखी ।
संबंधित होने से इनसे "शुक्ल" हमारी वीति अनोखी ।।

मणि २१

महादेव खुब नाच नचाते ।।

बंदर जीव मदारी खुद बन ले हाथों में डमरु बजाते ।
तब फिर तुम्हें बताऊँ कैसे जैसे-जैसे खेल खेलाते ।।
मनुज बनाकर बड़े मजे में तरह-तरह के कर्म कराते ।
भला बने पर भली जगह में भेज भली विधि भोग भोगाते ।।
जरा चूकते ही सचमानो डाल नरक में जुगन जलाते ।
बन जाता कोइ इनका तब तो उसको बहु विधि लाड़ लड़ाते ।।
जितनी जानि बिगारी उसने अपने हाथों सभी बनाते ।
"शुक्ल" मिटा रोना सब उसका रहते हैं हर समय हँसाते ।।

मणि २२

महादेव का नन्दी वंदूँ ।।

दर्शनीय वपु दिव्य धरे जो पूरन परमानन्दी वंदूँ ।
बल अपार अवतार धर्म के अतिशय आनँद कन्दी वंदूँ ।।
निज गुण गरिमा के कारण सब पशु समाज सिर चंदी वंदूँ ।
करते भार वहन भोला का बने प्रेमवश बँदी वंदूँ ।।
विश्व भार वाहक को लेकर चले चाल निर्द्वन्दी वंदूँ ।
यथा स्वामि की तथा आपकी प्रकृति परी स्वच्छंदो वंदूँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने आश्रित जन का जल्दहि फाड़ देंय भव फंदी वंदूं ।
अनायास इस "शुक्ल" दास पर रखते कृपा अमंदी वंदूं ।।

मणि २३

महादेव अब सबहि जुड़ाओ ।।

चरणों की शरणों में तुम्हरे जो-जो आश लगाये आओ ।
फिरे बहुत वे मारे मारे कतहूँ नहीं शांति तिन पाओ ।।
किये इन्हीं के कर्म इन्हीं को आह विविध विधि भोग भोगाओ ।
सुखाभास ही मात्र भेज तहँ इनको सब्ज वाग दिखलाओ ।।
उठा वहाँ से डाल नरक में बड़ी बड़ी यातना सहाओ ।
शूकर कूकर गधा लोमड़ी गीदड़ बंदर भालु बनाओ ।।
यह तो हुई खैर अनुकम्पा करके इनको आप बुलाओ ।
"शुक्ल" करो कृतकृत्य सद्य ही आशा इनकी देव पुराओ ।।

मणि २४

महादेव पर भैली पागल ।।

बहकल जात रहे बौरायल गोहरौलन तव ऐली पागल ।
तौनौ सीधे सीधेन नाहीं बहुतक झंझट कैली पागल ।।
बौरहपन में तो हैं बताइं कहाँ-कहाँ नहिं गैली पागल ।
जहाँ जहाँ गैली तहँ तहँ ही जवर जातना पैली पागल ।।
भद्दा भोंड़ा घिन गंधैला सबै स्वांग हम धैली पागल ।
मानि मानि अमरित जी भरके हाय जहर हम खैली पागल ।।
सौ सौ साँसत सहीं तबौ नहिं तजी वासना मैली पागल ।
"शुक्ल" सहायक भइल देवके भोलापन कै शैली पागल ।।

मणि २५

महादेव बिन कौन उबारै ।।

मुझसे अधमाधम पामर औ पतित सिरोमनि पाप पहारै ।
जबसे होश सम्हारा जिसने किये करोरन कार बेकारै ।।
आज नहीं जी जो हतभागी जनम-जनम से जानि बिगारै ।
जिसकी बिगरी लिखते-लिखते चित्रगुप्त बेचारा हारै ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसकी देख भयानकता को जम जमसेना त्राहि पुकारै ।
सुनकर कथा नारकी जिसकी अपनी करनी सभी बिसारै ।।
तारनहार आन सबके सब चरचा सुने कान कर धारै ।
"शुक्ल" देव यह तो ऐसों को पकरि नये साँचे में ढारै ।।

मणि २६

महादेव के बन जाओ जी ।।

इनका उनका बनना यारो भूल अभी इस छन जाओ जी ।
इनके बन करके इस छन ही गन इसके ही गन जाओ जी ।।
संबंधित हो जीवनधन से जग में हो तुम धन जाओ जी ।
जीवन सफल होय सद्यः ही जब बन इनके जन जाओ जी ।।
होते ही संसर्ग आपका हो तुम आनँदघन जाओ जी ।
घुस न सके दुर्गुण तन में कोइ बल पर इनके तन जाओ जी ।।
सने रहो मत विषय रसों में प्रेमसुधा रस सन जाओ जी ।
मन सर्वथा सौंपकर इनको "शुक्ल" हो तुम अनमन जाओ जी ।।

मणि २७

महादेव छवि निधि दिखलाने ।।

हैं छबिवान और भी पर वे हमको सब नगण्य समझाने ।
एकाकी तो कुछ जच जाते पर सनमुख लगते शरमाने ।।
दूँ क्या उदाहरण मुझको तो रवि समक्ष जिमि दीप दिखाने ।
इनकी छबि को कहे तो कोई को समर्थ जो उसे बखाने ।।
शारद चलीं कथन करने को सो बस बुद्धि लगी चकराने ।
नारद लगे गान करने सो जीवन में अवकाश न पाने ।।
लख लेते जो भक्त सुभागी हो जाते वे तुरत दिवाने ।
मेरी "शुक्ल" न पूछो कोई हम फिरते इन परहि बिकाने ।।

मणि २८

महादेव में मोह न माया ।।

ज्योति पुंज के मध्य बताओ रह सकता किमि तिमिर समाया ।
रह जाता अज्ञान लेश नहिं करते जिस पर किंचित दाया ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह भी खूब समझलो इनकी हाड़ मास की बनी न काया ।
भूलो मत इसको कि मोह मद को भी है इनने उपजाया ॥
जिसका रचा शेर मिट्टी का सुना कोई उसको हो खाया ।
सुना किसी ने कभी चन्द्र को हो चन्द्रिका निगल कहिं पाया ॥
माया को ये बना नर्तकी भरी सभा में करें नचाया ।
"शुक्ल" इसीसे तो भक्तों के पास नहीं वह आती भाया ॥

मणि २९

महादेव में स्वाद भरा है ॥

चक्खे रक्खे याद जायका इनमें बे तादाद भरा है ।
पर चख पाता कहाँ अभागा जिसमें महाप्रमाद भरा है ॥
जिसको चखता फिरता उसमें तो परिणाम विषाद भरा है ।
भावी दुःख यंत्रणादिक का निश्चित आरतनाद भरा है ॥
इनकी चरचा में सुमिरन में अनुपम अति अहलाद भरा है ।
सुख का तो समुद्र सच मानो इनमें ही उस्ताद भरा है ॥
भुला द्वन्द निर्द्वन्द बना दे वह उत्तम उन्माद भरा है ।
करता वर्णन "शुक्ल" यथारथ यहँ न वितण्डावाद भरा है ॥

मणि ३०

महादेव रस माता डोलूँ ॥

पूछ रहे हो सही मगर कस बतलाऊँ कस माता डोलूँ ।
संभव ही नहिं किसी तरह भी बतलाना जस माता डोलूँ ॥
संज्ञा रहित ससंज्ञ कभी ये जस रखते तस माता डोलूँ ।
रोता कभी विपत्ति बिना ही कभी विहँस हँस माता डोलूँ ॥
उसके सिवा और कोई की रही न सुधि अस माता डोलूँ ।
प्रेम रंग के ही उमंग निज रोम-रोम लस माता डोलूँ ॥
भूतकाल से वर्तमान में हुआ गुनित दस माता डोलूँ ।
चाहूँ "शुक्ल" अनंत जन्म ले बना विवश बस माता डोलूँ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३१

महादेव सा देव न कोई ।।

कहलाते भर भले देवता हम तो सबहिं लेवता जोई ।
सबको सेवा पूजा चहिये भोग राग बिन तुष्ट न होई ।।
निःस्वारथि दिखते भि भरी हम सब में स्वार्थ भावना टोई ।
नाम बड़ा पद बड़ा भये से जाती परम्परा सी ढोई ।।
ये तो गाल बजाते केवल देते दोष दुरित दुख खोई ।
गंगाजल दल बिल्व चढ़ाते अन्तःकरन मैल दें धोई ।।
बेड़ा पार लगा दें उसका विवशहुं नाम ले बारक जोई ।
हम हो शरणागतहि मात्र बस "शुक्ल" कहूँ सच सुख से सोई ।।

मणि ३२

महादेव आधार हमारे ।।

अक्षरशः है सत्य शब्द ये खड़ा हुँ मैं इनके हि सहारे ।
सतमंजिली इमारत को इस नीव बने एही हैं धारे ।।
भसक पड़ूँ बालू कि भीत सा मैं तो ये नहिं होय सम्हारे ।
खिसक जाय धरती नीचे से मेरे यदि हो जाँय किनारे ।।
बनती इनसे बात बात में बिगरी जितनी मेरे बिगारे ।
जनम-जनम जो जानि नसाये देखूँ सब हैं परे सँवारे ।।
होती जो नित नई शरारत रहते साथहि साथ सुधारे ।
निर्भर "शुक्ल" इन्हीं पर प्रतिशत इह परलोक हमारे सारे ।।

मणि ३३

महादेव ही आय बजाये ।।

जैसे किया इशारा उनको तैसे ही वे तुरतहि धाये ।
डमरू हाथ थमाये मेरे जाते हैं सब हाथ दिखाये ।।
मैं तो विवश बना यह समझो जाता हूँ बस हाथ हिलाये ।
रख संज्ञा संयुक्त आपने संज्ञाहीन से काम कराये ।।
लखि वादन की कला आपकी मेरी बुद्धि बड़ी चकराये ।
मेरे सिवा किस तरह कोई मेरी बात समझ यह पाये ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे समझने में दिक्कत क्या जिसको वह खुद ही समझाये ।
"शुक्ल" विनय यह देव देव से ऐसेहि मुझे रहें अपनाये ।।

मणि ३४

महादेव कृतकृत्य कर दिया ।।

अनायास आ सर पर मेरे वरदायक वर हस्त धर दिया ।
अपनों सा अपना कर मुझको चरण शरण में देव दर दिया ।।
गंदे गुनहगार को इनने गोद बीच रहने को घर दिया ।
दृष्टिपात करते ही रंचक धर्मवृषभ सा बना खर दिया ।।
जैसे झरी मघा की लगती दिव्य गुणों को झटिति झर दिया ।
मेरे हित निज कृपाबेलि में चारों फल चौचक्क फर दिया ।।
जिसकी रही चाह जुग-जुग से हो प्रसन्न वह श्रेष्ठ वर दिया ।
"शुक्ल" और बतलाऊँ अब क्या रोम-रोम आनन्द भर दिया ।।

मणि ३५

महादेव के नाते नाता ।।

संबंधित जन इनसे है जो वह ही है अपना समझाता ।
असम्बद्ध इनसे अपना भी अपने को है नहीं सुहाता ।।
इनके सेवक को पाते ही अपना रोम-रोम पुलकाता ।
बड़ा बाप सा-समवयस्क है लगता यथा सहोदर भ्राता ।।
उससे ही व्यवहार रखूँ मैं करके बंद सभी से खाता ।
बड़े प्रेम श्रद्धा से संतत सच मानो उसके गुन गाता ।।
भरे परे हों भले दोष भी मेरी नजरों नहीं सुझाता ।
"शुक्ल" लगाता सिर आँखों में उसकी चरन धूरि जो पाता ।।

मणि ३६

महादेव से मन बहलाता ।।

मन बहलाने लायक मानो मैं तो बस इनको ही पाता ।
ऐसा वैसा सभी तरह का मजा मुझे इनमें दिखलाता ।।
तुम्हीं बताओ मजा जगत का कौन वो जिसके घर से आता ।
ये ही उत्पादक हैं उसके ये ही उसके आश्रयदाता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलता इनसे प्राणिमात्र को वर वितरक हैं यही विधाता ।
इनसे उनसे प्राप्ति मानते सो तो कोरा भ्रम है भ्राता ।।
इनका अवलम्बन लेते ही मिलना सद्य सुलभ हो जाता ।
परमानंद प्राप्तकर इनसे "शुक्ल" सतत रहता पुलकाता ।।

मणि ३७

महादेव अति सहन शक्ति दो ।।

भार डार भारी से भारी भली भाँति तेहि वहन शक्ति दो ।
सुखकी रुचि करि दूरि दुःख को सुख शतगुन सम चहन शक्ति दो ।।
जमा जुगों का वृक्ष वासना अवशि अभी ही दहन शक्ति दो ।
दूर करो द्रुत ही दुर्गुण सब शुभ सद्‌गुण गन गहन शक्ति दो ।।
जोरे जन्म-जन्म के जितने दुरित दलों को दहन शक्ति दो ।
सुनने का अवसर अधिकाधिक दो कल कीरति कहन शक्ति दो ।।
रक्खो हो सचेष्ट संतों की रहनि हमें भी रहन शक्ति दो ।
लहता नहिं हरेक का सो दो लहा "शुक्ल" का लहन शक्ति दो ।।

मणि ३८

महादेव मम सहज सँघाती ।।

इसीलिए तो सबसे ज्यादा इनसे मेरी पटरी खाती ।
इनका नाममात्र सुनते ही मेरी अति उमगाती छाती ।।
इनकी कलित कीर्ति प्रेमाधिक रहती जीह निरंतर गाती ।
इनके गुनगन याद आते ही चितवृति मेरि परम पुलकाती ।।
इनको सुमिर सुमिर कर संतत आँख रहे प्रेमाश्रु बहाती ।
इनकी झलक जरा दिखते ही तबियत फूली नहीं समाती ।।
आलिंगन का अवसर पाकर काया हदभर है हुलसाती ।
तन्मय वृत्ति "शुक्ल" बन जाती तब उनमय ही सृष्टि लखाती ।।

मणि ३९

महादेव यह पागल आया ।।

क्या बैठे हो मनहूसों सा उठो करो कुछ कद्र तो भाया ।
जिसके तुम कंगाल वही सब देखो तो है क्या क्या लाया ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने को ही तुम्हें समर्पण पूरी गाड़ी पाप लदाया ।
रंग विरंगे तरह तरह के दोषों से है उसे सजाया ।।
कमी बोध हो नहीं इसलिए अवगुण का अंबार लगाया ।
सुकृत स्वरूप स्वयं ही हो तुम धर्म बना बाहन बैठाया ।।
इन्हें निरर्थक मान इसी से यह सब ला नहिं तुम्हें उबाया ।
कैसे हो तुम "शुक्ल" जो तुम्हरा इतने पर नहिं हिय हुलसाया ।।

मणि ४०

महादेव को सुमिरत सुमिरत ।।
आसानी से अंतर्मल सब जाता है धो सुमिरत सुमिरत ।
तन्मयता का तुम्हें बताऊँ जाय बीज वो सुमिरत सुमिरत ।।
सुमिरन का आनन्द मिले जब देय व्यक्ति रो सुमिरत सुमिरत ।
खाता पीता गाता रोता हँसता मैं हो सुमिरत सुमिरत ।।
यह वह सब कर फुरसत पाता तब जाता सो सुमिरत सुमिरत ।
अन्य कीट हो जाय भृंग भल निज निजत्व खो सुमिरत सुमिरत ।।
कोई महादेव हो जावे क्या अचरज तो सुमिरत सुमिरत ।
क्यों चकराते हो, हो बैठा "शुक्ल" वही जो सुमिरत सुमिरत ।।

मणि ४१

महादेव बैठे चढ़ि गोदी ।।
सो यह नहीं शांति संयुत हो रहते करते खोदा खोदी ।
कभी तोंद को थप थप करते कबहीं सहलाते हैं तोंदी ।।
लगे गुरू इकरोज नाचने मैंने भी ऐसी नस टो दी ।
मैं कुछ मखा गया धीरे से कान कनेठी इनने जो दी ।।
माना तब था कहाँ भला मैं इनने एक तो मैंने दो दी ।
रोते देख मया के मारे आँखों को निज हाथों धो दी ।।
मैं उससे हूँ लाभ उठाता इनकी प्रकृति बड़ी जो बो दी ।
"शुक्ल" स्वामि मेरे जुग जीवें मस्त रहें मम दाता मोदी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४२

महादेव की कीर्ति सुनाओ ।।

श्रवणेच्छुक हैं श्रवण हमारे कोई इनकी तृप्ति कराओ ।
बड़ी तृषा हैं बढ़ी सुनन की सच मानो सुजनों पतिआओ ।।
बंदनीय सम्माननीय कोइ आओ मेरी प्यास बुझाओ ।
जन्म जन्म की साध भरी यह कोई तो इस जन्म पुराओ ।।
सुख कारिनि दुख दारिनि तारिनि इनकी दिव्य गुणावलि गाओ ।
भूल जाय तन भान तनक में ऐसा उत्तम रस बरसाओ ।।
उदासीन सा हुआ परा जो उस मेरे मनको पुलकाओ ।
"शुक्ल" वंदना श्रेष्ठ स्विकारें अन्य मेरी उर आशिष पाओ ।।

मणि ४३

महादेव का त्रिशूल वंदन ।।

करने से सश्रद्ध सचमानो देता मिटा कारुणिक क्रंदन ।
देता बना महान महत्तम निश्चित महा महा मति मंदन ।।
कर दे गुण गौरव गरिष्ठ युत मुझसे अधम गधाधी गंदन ।
हो जाता असाधु अधमाधिप सद्यः ही सुसाधु सिर चंदन ।।
अनुकंपा से आशुतोष की देता छोड़ सभी छल छंदन ।
निर्द्वन्दता सहज हो उसको गिनता वो न बाल दुख द्वंदन ।।
जाय निकल बेलाग वेग से फरसे फार भूरि भव फंदन ।
करता "शुक्ल" विहार जहाँ वह थल लखि लजित होय वन नंदन ।।

मणि ४४

महादेव कितने उदार हौ ।।

इस उदारता गुण के क्या तुम बतलाओ अंबुधि अपार हौ ।
दीख रहे इस विग्रह में सच याकि उक्त गुण ही सकार हौ ।।
मंद भाग्य मुझसे का देखूं दिये चट्ट चमका कपार हौ ।
मलिन गये बीते कितनों का कर देते सब विधि सुधार हौ ।।
होते ही प्रपन्न उस जन का लेते सब शिर उठा भार हौ ।
लोक बना देते उसका झट देते परलोकहु संवार हौ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जर्जर बोझीला भी उसका देते बेड़ा लगा पार हौ ।
मूर्तिमान सौभाग्य हमारे "शुक्ल" मेरे सर्वस्व सार हौ ॥

मणि ४५

महादेव देलन पाईला ॥

तोहके कवन बताऊँ खिअवले एनके बड़ा माल खाईला ।
खाईला जेकर तेही कऽ हिय हुलसत गुनगन गाईला ॥
बिसराईला जग जन वैभव एनकर उर विभूति छाईला ।
जहाँ जिकर एनकर बस उहहीं सुनै साध दौरल जाईला ॥
मन बटोर सब ओर जगत से एनमें ओके अरुझाईला ।
भावऽलेन भलिभाँति हमैं ये हम एनके भलिविधि भाईला ॥
एनकर दिव्य देन लहि लहि के उमगाईला हुलसाईला ।
"शुक्ल" चरण पंकज में एनके शीश नमित अति नित नाईला ॥

मणि ४६

महादेव सबको हि प्रकाशें ॥

ज्योतिष्पुंज जगत के जितने सबमें ये बनि ज्योति निवासें ।
शशि में समा कुमुदिनी पोषें रवि में घुस बन कमल विकासें ॥
निशि सुन्दरी सिंगारे भलि विधि नखतन में घुसि नभहि नकासें ।
"शुक्ल" घुसे घट घट में सबके आत्मरूप ये ही तो भासें ॥

मणि ४७

महादेव इस बार मिलेंगे ॥

वीते जन्म कितेक आप यह किये थे जब इकरार मिलेंगे ।
वह अवसर आ गया इसे है करता दिल स्वीकार मिलेंगे ॥
शुभ लक्षण दिखलाते शतशः होते शकुन हजार मिलेंगे ।
सप्रमाण कह चुके इसे हैं योगेश्वर कै बार मिलेंगे ॥
कहें आपही तब फिर क्यों नहिं होवे अब एतबार मिलेंगे ।
बड़ी पुरानी मान मुहब्बत करते जी भर प्यार मिलेंगे ॥
है कह सकता कौन लुटाते क्या-क्या यार बहार मिलेंगे ।
कितना सुखद मो होगा दिन जी जब मेरे दिलदार मिलेंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मभोज जिवनार मित्र को करूँगा जब सरकार मिलेंगे ।
बायन वटें बजेंगे वाजन जब वें प्रेमागार मिलेंगे ॥
रसिया होगी भजन कीर्तन होंगे जब सुखसार मिलेंगे ।
"शुक्ल" हँसें पुलकें हुलसें जव हिय हुलसे हियहार मिलेंगे ॥

मणि ४८

महादेव सव पर सहाय हैं ॥

तब क्यों ये जग जन सवके सव करते रहते हाय-हाय हैं ।
खवर नहीं इसकी इससे ही इतना शोरोगुल मचाय हैं ॥
बतलाते सब संत शास्त्र सब किन्तु कहाँ कोइ समझ पाय हैं ।
हर छन खड़े पास ही तो भी हम अंधों को नहिं दिखाय हैं ॥
बस इस ही कारण से केवल महाकष्ट हम सब उठाय हैं ।
जन्मान्तरी पाप ही मेरे नहिं प्रतीति इस पर कराय हैं ॥
जिस पर परम अनुग्रह करते यह रहस्य उसको सुझाय हैं ।
"शुक्ल" समझ पाते ही इसको शोक मोह सब ही नशाय हैं ॥

मणि ४९

महादेव चरणों की शोभा ॥

चाहत बने सराहत सो नहिं ललित लाल वरनों की शोभा ।
कोमलता की सींव सुहावन महामोद करनों की शोभा ॥
नखदुति निखिल अग्यान जन्य जन हृदय तिमिर टरनों की शोभा ।
मुझसे अधम असाधु अपावन पर अवढर ढरनों की शोभा ॥
शरणागत होते हि स्वजन के दोष दुरित दरनों की शोभा ।
आश्रित नरन निमित्त सद्य फल चारु चारि फरनों की शोभा ॥
शुभ सद्‌गुण शुचि भाव भलीविधि उर अंतर भरनों की शोभा ।
"शुक्ल" निरंतर रहूँ निरखता हुलसित हिय हरनों की शोभा ॥

मणि ५०

महादेव हितकारी हदभर ॥

बना करें कोई विरोध क्या पर ये पर उपकारी हदभर ।
देते बना बात बातों में जनकी जानि बिगारी हदभर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहने दे नहिं शेष लेश भी उसके अघन अघारी हृदभर ।
कुसंस्कार सब जुरे जुगन के देंय मूलतः टारी हृदभर ।।
मिटा घोर अज्ञान तिमिर को भर दें ज्ञान उज्यारी हृदभर ।
नख से शिखतक ये तो उसको देते सद्य सँवारी हृदभर ।।
देते जिता खेल खेलहि में उसकी बाजी हारी हृदभर ।
मेरी "शुक्ल" जन्म जन्मनि की जी की कसक निकारी हृदभर ।।

मणि ५१

महादेव के चलूँ इशारे ।।

जैसे ड्राइव कार ड्राइवर करे ये वैसे बने हमारे ।
जिस रफ्तार जिधर ले जाते चलता रहता हूँ झखमारे ।।
आगे बढ़ा मोड़ दें पीछे यूँ ही दक्षिण वाम किनारे ।
इनके ही इंगित पर अपने जाते काम बिचारे सारे ।।
इनसे ही प्रेरित हो करके भों भों भोपू शब्द उचारे ।
रखें सुरक्षित हूँ जब चाहे चकनाचूर इसे कर डारे ।।
करें विकाश-विनाश यथारुचि उसकी वस्तु को उसे निवारे ।
भरे यथार्थ भाव यह हिय में सोऊँ "शुक्ल" मैं पाँव पसारे ।।

मणि ५२

महादेव काहे अपनौलऽ ।।

कवन कवन गुन गनलऽ हममें निज गन में तूँ जवन गनौलऽ ।
हम निर्दयी निठुन निःशंकी हम पर काहे दया जनौलऽ ।।
जीभर जानि बिगरली जब हम काहे विगरी मोर बनौलऽ ।
बिलकुल गयल बितल जनलेव पर हमसे का संबंध घनौलऽ ।।
मादक द्रव्य छनैया जानत प्रेमामृत का हमें छनौलऽ ।।
रसिक विषय रसकर हृदभर हम मममति सुरस सनेह सनौलऽ ।
लगै न तनिक त्रिताप ताव मोहिं ऐसन कृपा बितान तनौलऽ ।।
भल भकुआ तूँ पकरि "शुक्ल" के कल कीरति भलिभाँति भनौलऽ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५३

महादेव इक दीन उबारो ॥
देखो जातो नहिं देवेश्वर बेगिहि इनकी दशा सुधारो।
इस उस किसी जन्म की भी हो भूल चूक अब सभी बिसारो॥
देख अतिहि दयनीय परिस्थिति देव दयालु दया उर धारो।
बिसरि अन्य सारी बातों को गति अनन्य निज दास बिचारो॥
करत करत संघर्ष अदिन से मित्र हमारो हिम्मत हारो।
शक्ति इन्हें दो बुद्धि इन्हें दो इनके भीतर भरो उज्यारो॥
और जो जिसकी इन्हें जरूरत इनके कारज सभी सँवारो।
सादर "शुक्ल" विनम्र विनवता विनती मेरी सद्य स्विकारो॥

मणि ५४

महादेव हे महादेव हो ॥
महादेव इत महादेव उत जित देखूँ तित महादेव को।
तुम भी यदि चाहते देखना डालो झट पट अंतर मल धो॥
शेष यही बच रहेंगे केवल दिया जहाँ तुम निज निजत्व खो।
तब दीखेंगे महादेव ही देखोगे जब जौन जहाँ जो॥
महादेव ही व्याप्त विश्व में दीखेगा तब कौन कहो तो।
समा न सकता अन्य म्यान में रहती नहिं तलवार यथा दो॥
शुभ सिद्धांत अद्वैत सुहावन पावन उर अपने में भर लो।
"शुक्ल" खुदी खोते ही खुद की महादेव तुम होजाओ हो॥

मणि ५५

महादेव से मिलो मलीनों ॥
करने को हैं दया विकल ये इनकी ओरी दौड़ो दीनों।
अघनाशन को तुले हुये हैं नाश करालो हे अघकीनों॥
पावन करना चाहें सबको हो जाओ हे पापी पीनों।
करना बुद्धि चाहते वितरण लो इनसे माँगो मतिहीनों॥
काया मस्त बनाना चाहें कहाँ लुके फिरते तन छीनों।
खुशहाली फैलाना चाहें हो खुशहाल सभी गमगीनों॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े ताव में हैं रहने नहिं देना चहें ताप ये तीनों ।
"शुक्ल" सद्य शरणागत प्रभु के हो आनन्द सुधारस भीनों ॥

मणि ५६

महादेव आने को उत्सुक ॥

भल मेरी दीनता हीनता हमको अपनाने को उत्सुक ।
प्रेम भाव से रूखा सूखा रख दूँ सो खाने को उत्सुक ॥
अपनी राग त्याग सबकी सब मेरे गान गाने को उत्सुक ।
इस आतंक से ही मेरे ये दोष दुरित जाने को उत्सुक ॥
आकर्षण पा-चित्तवृत्ति मम इनसे उलझाने को उत्सुक ।
समझ इन्हें सौंदर्य राशि सच मन मेरा ध्याने को उत्सुक ॥
अनुपम अद्‌भुत अति अलभ्य वह प्रिय प्रसाद पाने को उत्सुक ।
पद पंकज में प्राणेश्वर के "शुक्ल" शीश नाने को उत्सुक ॥

मणि ५७

महादेव रस बहा जा रहा ॥

दौड़ो दौड़ो पीनेवालो शुभ अवसर यह अहा जा रहा ।
फिर मौका मिलना मुश्किल है तब तुमसे यह कहा जा रहा ॥
इस अनभुल में ही जस चहिये तुमसे यह नहिं चहा जा रहा ।
देख रहा हूँ तुम्हरे द्वारा जी जाँ से नहिं गहा जा रहा ॥
इसके ही अभाव में कब से जीवात्मा यह दहा जा रहा ।
दैहिक-दैविक-भौतिक भलिविधि ताप तीनिहूँ सहा जा रहा ॥
हा ! दुर्दैव दुआरे बहते दरया में नहिं नहा जा रहा ।
"शुक्ल" मिटा संताप सभी दे ललित लाभ नहिं लहा जा रहा ॥

मणि ५८

महादेव अति गोर मोर दिदिया ॥

कुंद इन्दु कर्पूर गौरता लागे सब मोहिं थोर मोर दिदिया ।
वदन मंजु शुभ सदन विलोकत लेय मदन मद छोर मोर दिदिया ॥
भाल विशाल बाल शशि शोभत चर्चित चंदन खोर मोर दिदिया ।
नीके नैन भरे रस से बहु चितवत लें चितचोर मोर दिदिया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधर अरुण रद माल मुक्ति का नाम सुआ कै ठोर मोर दिदिया ।
वाणी मधुर सुरीली सुन्दर बोलैं अमृत घोर मोर दिदिया ।।
मुसकानै केहि भाँति बखानै टानै जिउ बर जोर मोर दिदिया ।
करत विनोद स्वभाव विनोदी दें प्रेमामृत बोर मोर दिदिया ।।
देखि जो पाव एक दाईं तौ हाल बिगरि जाय तोर मोर दिदिया ।
चलु तौ चली "शुक्ल" दर्शन हित काल्हि बड़े ही भोर मोर दिदिया ।।

मणि ५९

महादेव सबको सब दे दो ।।

पूछ रहे हो मुझसे यह क्यों मै क्या बतलाऊँ कब दे दो ।
साइत घड़ी देखना कैसा देना है चाहे जब दे दो ।।
मैं कहता जल्दी से जल्दी जब भी लग जाये ढब दे दो ।
जब प्रेरित करदे उदारता हिय हुलास में हो तब दे दो ।।
दानवृत्ति अपना करके दो या दबाव में पड़ दब दे दो ।
देने बाद "शुक्ल" सबको सब बचा खुचा मुझको अब दे दो ।।

मणि ६०

महादेव रस में जो बहता ।।

सुखानुभूति सतत करने से छन-छन वाह-वाह वह कहता ।
ले जाती जब धार जिधर को तब वह वही राह है गहता ।।
दें उछाल तब उछल पड़े वह बोरें घुसि गहराई थहता ।
जो जो रंग दिखाँय तरंगें हँसते ही हँसते सब सहता ।।
अपनी ही जब खबर उसे नहिं तब मैं उधर जाउँ क्यों चहता ।
रहने से रस सिन्धु निरंतर उसको ताप तीनि नहिं सहता ।।
पश्ती पास फटकती ही नहिं हर हालत मस्ती में रहता ।
तरसा करें "शुक्ल" कितने ही वह अलभ्य पद है वह लहता ।।

मणि ६१

महादेव बिन कौन जगत में ।।

बकता है वह झूठ सरासर बनता है जो जौन जगत में ।
ये ही विविध रूप धारण कर करते आवा गौन जगत में ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूरज बन तपते हैं ये ही बहते बनकर पौन जगत में ।
यही मसाला व्याप्त दूसरा नहीं मिर्च नहिं नौन जगत में ॥
है ही नहिं अस्तित्व और का यही मुख्य यहि गौन जगत में ।
ये ही हैं कहते सुनते औ लखते हौ तुम तौन जगत में ॥
कनकन में कमाल यह समझो इनका ही है भौन जगत में ।
लख इनकी विशेषता में क्या "शुक्ल" वेद हैं मौन जगत में ॥

मणि ६२

महादेव सुमिरे सुखपाई ॥
कैसा क्या यह किसी तरह भी कहकर तुमसे कौन बताई ।
सुख का साधन ही नहिं दूजा यह भी खूब समझलो भाई ॥
तीनि लोक चौदहो भुवन में खोजै चहै जहाँ जो जाई ।
जिसको सुख समझे बैठे हो वह परिणाम महा दुखदाई ॥
इसमें सुख समुद्र लहराता गोता हम दिनरात लगाई ।
तेहरी लगी आग जुग-जुग की बात-बात में विहँसि बुताई ॥
अति अद्भुत अति अनुपम अतिशय उर अंतर शीतलता छाई ।
"शुक्ल" सतत पुलकाई प्रतिपल हरछन हरषाई हुलसाई ॥

मणि ६३

महादेव मोर तोर बनैहैं ॥
मुख की मिटा कालिमा सारी अपने अस मुँह गोर बनैहैं ।
दिन चढ़ने देंगे न देखना काल बड़े ही भोर बनैहैं ॥
लगे बनाने तब जस तस क्या मनमाना घनघोर बनैहैं ।
अपनैहैं अनुपम उदारता अन उदारता छोर बनैहैं ॥
बड़े बनाने वाले होकर मोर तोर का थोर बनैहैं ।
कुछ चुपके चुपके हि बनैहैं कुछक मचाकर शोर बनैहैं ॥
ढरिहैं दिव्य दिव्य साँचे में प्रेमामृत रसबोर बनैहैं ।
"शुक्ल" सुचित बैठें बस हम तुम चितदे सब चितचोर बनैहैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६४

महादेव बानी फुर कर दो ।।

अपनी कही हमारी बक्की दोनों शिवदानी फुर कर दो ।
इससे वह उससे यह बढ़कर दोनों हि सुखखानी फुर कर दो ।।
कही गईं तुमसे हमसे भी-तब हीं सचमानी फुर कर दो ।
जो जानी दुनिया उसको जो नहिं दुनिया जानी फुर कर दो ।।
अपने औ मेरे भी कबसे उर में उरझानी फुर कर दो ।
जिसकी सुधि आते ही मेरी चितवृति उमगानी फुर कर दो ।।
पद पदार्थ प्राणी कोई भी जिसकी नहिं शानी फुर कर दो ।
हर हालत हर समय हर तरह मम मन बहलानी फुर कर दो ।।
जिसकी पूर्ति अवशि करने को तुम दिल में ठानी फुर कर दो ।
"शुक्ल" भरी मस्ती-मस्ताने बात वो मस्तानी फुर कर दो ।।

मणि ६५

महादेव की करूँ प्रतिच्छा ।।

और किसी से सचमानो यह मिलने की होती नहिं इच्छा ।
वड़े काम की सिद्धि भई वह दी जो इन गुरुवर ने दिच्छा ।।
रखती सावधान संतत है दे रक्खी जो इनने सिच्छा ।
कर सा दिया अयाच्य विश्व से देकर अपनी भलि सी भिच्छा ।।
हो जावे तब क्यों न और से रखने से संबंध अनिच्छा ।
मिल जाते प्राणेश "शुक्ल" के चिर संचित चित शेष सदिच्छा ।।

मणि ६६

महादेव का करके चिन्तन ।।

हो जाता निहाल सा मैं तो हरषा हुलसा करके चिन्तन ।
पा सा गया पदार्थ सभी मैं पर पदार्थ पा करके चिन्तन ।।
करता रहता हूँ हर हालत उमगा उमगा करके चिन्तन ।
भूखा रहा किया भूखे ही फिर करता खा करके चिन्तन ।।
आती रही रुलाई रोते मस्ती में गा करके चिन्तन ।
जाता रहा राह में करते मंजिल पर जा करके चिन्तन ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर विकार उठतेहि शांत मैं रहता करता करके चिन्तन ।
"शुक्ल" कहूँ किस तरह यथा मैं मन मुद भरता करके चिन्तन ॥

मणि ६७

महादेव दुनिया दुखियारी ॥
बैल बना खट रहा हाय नर दुर्गति भोग रही हैं नारी ।
बालक बेचारे बिललाते वृद्धन की है दशा दुखारी ॥
अधिकतया मानव दानव वन करता है लीला खूँखारी ।
हत्यारे विभाग जीवों के पालन नाम परा सरकारी ॥
पंछी बने हैं साग सलोने जातीं दीन मछलियाँ मारी ।
गौओं की दुर्दशा न पूछो जीते जाती खाल उतारी ॥
क्या इस ढंग से ही देवेश्वर होगा यह संसार सुखारी ।
होकर "शुक्ल" हताश हर तरह परता मैं प्रभु पाहि पुकारी ॥

मणि ६८

महादेव सुमिरे न अघाऊँ ॥
बढ़ती ही जा रही भूख है मैं जितना हि सुमिरता जाऊँ ।
आता सुमिरूँ जाता सुमिरूँ खाता गाता सुमिरूँ नाऊँ ॥
हंसता सुमिरूँ रोता सुमिरूं सोता बिन सुमिरे न जुड़ाऊँ ।
यह करता वह करता सुमिरूँ सुमिर सुमिर मैं धरता पाऊँ ॥
दिन सुमिरूँ गिन गिन घड़ि सुमिरूँ सुमिरन बिन मैं छिन न बिताऊँ ।
सुमिरूँ रात प्रभात प्रेम से सुमिरि सँझात परम सुख पाऊँ ॥
अस सुमिरूँ रस से लस सुमिरूँ जस पाऊं तस सुमिरि सुहाऊँ ।
चाऊँ "शुक्ल" बताऊँ तुमसे सुमिरत सुमिरत ही मरजाऊं ॥

मणि ६९

महादेव मैं ध्यान न जानूँ ॥
साक्षात् करना हृदयस्थित का मैं मूढ़ विधान न जानूँ ।
ज्ञाता जो सबका जगत्राता उसी ज्ञेय का ज्ञान न जानूँ ॥
जो व्यापक चर अचर जगत में उसको ही पहचान न जानूँ ।
महामहिम उस विश्वमान्य का करना मैं सनमान न जानूँ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुणातीत गुणराशि गुणार्णव का करना गुणगान न जानूँ ।
सर्व सुहृद सर्वेश सर्वप्रद की कल-कीर्ति बखान न जानूँ ॥
दी जो देह दयाकर उसपर हा होना बलिदान न जानूँ ।
पाहि पाहि प्रभु पाहि "शुक्ल" तजि मैं कुछ आन अजान न जानूँ ॥

मणि ७०

महादेव नहिं आये अबतक ।।
है क्या हेतु जानने के हित कोइ भी जन नहिं धाये अबतक ।
हो नहिं सकता कभी अकारण पहुँच यहाँ नहिं पाये अबतक ॥
भरे धरे सब पात्र भंग के छाने नहीं छनाये अबतक ।
परे परोसे विधि विधि व्यंजन खाये नहीं खवाये अबतक ॥
मगही पान सूखते हैं सब चाभे नहीं चभाये अबतक ।
रूह गुलाब और खश के भीगे नहिं अंग लगाये अबतक ॥
वीणा वेणु मृदंग कोई भी तो नहिं गये बजाये अबतक ।
मनरंजन के "शुक्ल" सहस्रों साधन ये नहिं भाये अबतक ॥

मणि ७१

महादेव के गुन गा-गा के ॥
होता रहता हूँ हरषित मैं सुन-सुन श्रवण सुयश का का के ।
होती जहाँ जिकर है इनकी खुश होता तहँ तहँ जा जा के ॥
शारद नारद शेष गनेशहु सके नहीं कह यश दा दा के ।
बना साँड़ बिचरूँ देखो तो इनका ही उच्छिष्ट खा खा के ॥
होता नहिं औरों से प्रभावित इनका उर प्रभाव छा छा के ।
भरते रहते हैं अंतस्तल में मेरे शुभ गुण ला ला के ॥
होता हूँ प्रतिपल पुलकित मैं इनकी दिव्य देन पा पा के ।
तभी अघाता नहीं "शुक्ल" सच इनके चरण शीश ना ना के ॥

मणि ७२

महादेव का चिंतन कर चित ॥
हित की बात बताता तेरे कर प्रमाद मत जी से धर चित ।
साधन सफल आन इस जुग में आता है नहिं मान नजर चित ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहते यही संत सबके सब शास्त्र सभी हो एकहि स्वर चित ।
लाभ उठाना है यथार्थ तो इसपर उर प्रतीति भल भर चित ।।
जला बहुत यह वह चिंतन करि अब हक नाहक ही मत जर चित ।
जैसा रहा रहा, अबतक अब नीक नये साँचे में ढर चित ।।
जनमा मरा अनंत बार तू हो जा अमर बार इस मर चित ।
परना नहीं चाहता फिर भव "शुक्ल" तो भव चरणों पर पर चित ।।

मणि ७३

महादेव सा भोला ढूँढ़ो ।।

सुन्दर गौर मनोहर काया ज्यों बदाम हो छोला ढूँढ़ो ।
एक साथ दो चीज गले में विष-मुँह अमृत घोला ढूँढ़ो ।।
कोटि अनंत विश्व का ईश्वर यूँ अंगों को खोला ढूँढ़ो ।
करता विशद व्यवस्था जग की रखता गहरा गोला ढूँढ़ो ।।
बिचरे बन निर्द्वंद जगत में मस्त बनाये चोला ढूँढ़ो ।
फिरे बाँटता गली गली भर चार पदारथ झोला ढूँढ़ो ।।
मुक्ति लगाती झाड़ू फिरती जिसके जन के टोला ढूँढ़ो ।
"शुक्ल" बड़ी कीमत दे करके हो हमको जो मोला ढूँढ़ो ।।

मणि ७४

महादेव बा कटत ठाठ से ।।

तोहरे अनुकंपा से अबहीं ई शरीर बा खटत ठाठ से ।
तोहरेन सत्य घटाये देखी द्रुत दुर्गुण बा घटत ठाठ से ।।
शुभ सद्‌गुण सुशीलता सुन्दर उर अंतर बा डटत ठाठ से ।
तोहरेन देव रटाये जिभिया नाम सतत बा रटत ठाठ से ।।
औ बा मिलत सुसंग सुहावन कुल कुसंग बा छटत ठाठ से ।
तोहरे भगतन से सचमानऽ भली भाँति बा पटत ठाठ से ।।
पाई जौन प्रसाद आपसे जन-जन में बा बटत ठाठ से ।
देखित "शुक्ल" उहौ दिन जहिया हिया हिया से सटत ठाठ से ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ७५

महादेव ने की अनुकम्पा ॥

जबसे तबसे तुम्हें बताऊँ बहुत फली मोहिं ई अनुकम्पा ।
बना रहा व्यक्तित्व छिद्रमय दी सबको ही सी अनुकम्पा ॥
विषयों की तो ओर ताकते करवाती है छी अनुकम्पा ।
रहने देती चाह न कोई दिल के अन्दर जी अनुकम्पा ॥
मिटा दिया अस्तित्व सा मेरा बनकर प्रेरक धी अनुकम्पा ।
फेर नहीं सकती रूख अब यह जो कि इधर कर ली अनुकम्पा ॥
रोना मिटा सभी हँसवाती हर दम हा हा ही अनुकम्पा ।
यह दी लहा बात बातों में "शुक्ल" लहा वह दी अनुकम्पा ॥

मणि ७६

महादेव की ओर चलाचल ॥

किस ढँग से यह भी बतलाऊँ हो सक जितना जोर चलाचल ।
लगा पाँव में ले मशीन रे तेजी से खुब दोर चलाचल ॥
पूरी शक्ति लगाय झटक के सब बंधन को तोर चलाचल ।
चलना सोचा है जो शाम को मैं कहता उठ भोर चलाचल ॥
कपट बोझ दे पटक यहीं झट छलछिद्रों को छोर चलाचल ।
क्या चलता है मनहूसों सा उर प्रेमामृत घोर चलाचल ॥
राह बहारदार बन जावे निजको रस में बोर चलाचल ।
हाथ जोड़ पाँ परूँ "शुक्ल" मैं कहता भैया मोर चलाचल ॥

मणि ७७

महादेव गुन कहो व्यास जी ॥

कहन सुनन का विषय एक यह है नहिं दूजा अहो व्यास जी ।
कर सयुक्ति प्रतिपादन इनका सुपथ गहाओ गहो व्यास जी ॥
त्यागि ईषणा तीनि देवपद सुरति चहाओ चहो व्यास जी ।
जमा जुगों का कुतरु वासना वेगि ढहाओ ढहो व्यास जी ॥
निज का श्रोतागण का भी द्रुत दुरित दहाओ दहो व्यास जी ।
करके प्रकट प्रेम सरिता मन मगन बहाओ बहो व्यास जी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आश्रित हो देवाधिदेव के सबहिं रहाओ रहो व्यास जी ।
"शुक्ल" बात ही बात परम पद सपदि लहाओ लहो व्यास जी ।।

मणि ७८

महादेव का ज्ञान वेदाँती ।।

होना ही तो है यथार्थत: सचमुच ब्रह्मज्ञान वेदाँती ।
ब्रह्मसूत्र जिसका प्रतिपादन करता वह नहिं आन वेदाँती ।।
नेति-नेति करके सब श्रुतिगन इनका करे बखान वेदाँती ।
श्री विग्रह इनका है सतचित अरु आनन्द निधान वेदाँती ।।
निर्गुण निराकार भक्तन हित बन जाते गुणवान वेदाँती ।
हो जाता कृतकृत्य वही जो इनको ले पहचान वेदाँती ।।
जीवन सफल सद्य करना हो कर कल कीरति गान वेदाँती ।
निज निजत्व खो तो निज में ही "शुक्ल" हो इनका भान वेदाँती ।।

मणि ७९

महादेव मुसकान निरखते ।।

जो कोई इकबार कभी भी वे नहिं फिर कुछ आन निरखते ।
हो जाती हालत खराब सी तुरतहि यह सुखखान निरखते ।।
रह जाता ही नहीं उन्हें तो कुछ शरीर का भान निरखते ।
सुधि बुधि खोये सभी बिचारे हो प्रमुदित पगलान निरखते ।।
हो रुचि रहित अन्य बस बैठे इसको उर उमगान निरखते ।
मन-मन चाह निरखते कबहीं विधि-विधि कबहिं बखान निरखते ।।
जाती साध नहीं निरखन की भर जीवन भगवान निरखते ।
चाहूँ यह वरदान "शुक्ल" मम करते प्रान पयान निरखते ।।

मणि ८०

महादेव छबिवान छबीली ।।

देखे गये और भी कितने दिखा न इनसा आन छबीली ।
है इनसा नहिं वर्ण किसी का देह दिव्य द्युतिमान छबीली ।।
इनसा मुख नहिं नैन किसी के दिखी नाक नहिं कान छबीली ।
जिनने भी देखी तिनने ही इनका किया बखान छबीली ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरल स्वभाव भला भोला सा मंजु मधुर बतरान छबीलो।
विश्वमान्य होते दीनों का करते बहु सनमान छबीली॥
देते रहें अहर्निशि तो भी थकें न देते दान छबीली।
पाने की नहिं साध शेष पा ऐसा "शुक्ल" अघान छबीली॥

मणि ८१

महादेव बढ़ चले बराती॥
जबसे बात भई है निश्चित बैठे ये नहिं कले बराती।
जितना भी संभव है इनसे दोषों से ये टले बराती॥
नाम गुणों को गाय आपके दुरित दलहिं द्रुत दले बराती।
तुम्हरी अनुकंपा पा कितने नव साँचे में ढले बराती॥
करतहि आश्रय ग्रहण आपके द्वारा प्रतिपल पले बराती।
तुम्हरे ही प्रसाद से बनते जाँय भाँति भल भले बराती॥
भाग्यहीन अवसर खो करके पछताये कर मले बराती।
"शुक्ल" पुकार रहा ऊँचे चढ़ि हले बराती हले बराती॥

मणि ८२

महादेव ने पद गहि पटका॥
मुझे नहीं मेरे अरिगन को दे दे के झटके पर झटका।
एकबार झटका खाया तो फिर न पास मेरे वह फटका॥
करता था खुब तंग सो उस दिन गला दबोचा था उस भटका।
इक्का लिया निकाल कचूमर कलका हाल बताऊँ टटका॥
करते थे बेतरह मरम्मत इकदिन इक को उलटा लटका।
इनसे हो भयभीत आंतरिक मेरा प्रबल शत्रु दल सटका॥
खूब चिढ़ाया करता हूँ मैं उन निर्दय को मटका मटका।
बिचरूँ बन निर्द्वन्द "शुक्ल" मैं इनने दिया मिटा सब खटका॥

मणि ८३

महादेव आये यह ले अब॥
दौड़ देखता क्या है भोंदू सद्यहि पद पंकज गह्ने अत्र।
खिले हुये इस हृदय कमल पर दे आसन इनको पहले अब॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहले खूब भरी कबकी सब खोल भीतरी भी तहले अब।
जैसा चाहा जा न किसी को वैसा ही चित से चहले अब।।
लाकर बाढ़ नेह सरिता में बनकर विसुध विवश बहले अब।
पाया है जब प्राणेश्वर को लेकर साथ मुक्त टहले अब।।
ले जाकर निर्जन बन में कहुँ करले रमण संग रहले अब।
रह न जाय अरमान "शुक्ल" कुछ लहना हो सो सब लहले अब।।

मणि ८४

महादेव को कोई जानो।।
शर्त सरल या कड़ी जरूरी अपने को जो परे भुलानो।
यह हो अनायास ही जो तुम प्रेम भंग खुब गहरी छानो।।
तब संभव यह होय कि जब तुम इनकी कीर्ति सुने सुख मानो।
भर उर पूर्ण प्रतीति निरंतर हो सश्रद्ध शुभ सुयश बखानो।।
इनका जन मिल जाय भाग्यवश इनसे अधिक उसे सनमानो।
हिचको मत हे हिम्मतवालो उस पर परे जो प्रान लुटानो।।
उसकी सन्निधि से सचमानो तुम सद्यः सनेह शुचि सानो।
"शुक्ल" महज लगती कुछ वैसी है यह बात सहज मरदानो।।

मणि ८५

महादेव तोहैं जोहत बाई।।
निरखीं बाट तोहार रात-दिन हरदम होले राह तकाई।
अँबऽकी नाहीं हृदयेश्वर केसे पूँछीं केधौं बताई।।
देय बताय सटीक ठीक से अैसन गुनिजन कहाँ से पाई।
मैं अनारि मैं मूढ़ महा ही कौनौ जुगुति न जानि जनाई।।
कौनि भाँति कस कसक भरा हिय लैकस कै तोहके गोहराई।
कैसे करीं चिरौरी विनती कैसे कै मनुहार मनाई।।
तोहसे मिले बिना जीवनधन का ई जिअरा अैसे जाई।
औतऽप्रान बचौतऽहाली "शुक्ल" ई बाभन मरत बा भाई।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८६

महादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।।

कहा चहूँ गुन नाम अन्य कुछ कहादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।
गहना प्रिय पथ प्रीति-कुटिल मन गहादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।।
रहना रुचे रीति भलि-जस तुम रहादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।
चाहूँ चितसे तुम्हें जगत तुम चहादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।।
हूँ तटस्थ-मझधार अगर तुम वहादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।
निज विधान अनुसार सु सुख दुख सहादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।।
नर्क स्वर्ग अपवर्ग भेज तुम जहादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।
जो हो "शुक्ल" लहाना तुमको लहादेव कुछ हर्ष न विस्मय ।।

मणि ८७

महादेव आये यह आये ।।

चिर करने के बाद प्रतिक्षा प्राणेश्वर मम प्राण जुड़ाये ।
विरह जन्य वेदना भूल सब पुलकित हूँ मैं इनको पाये ।।
सूख गई दुख की नदिया वह सुख सरिता हृदयेश बहाये ।
झुलस रहा था उर उपवन सो उसमें नई बहार हैं लाये ।।
रग-रग की क्यारी में मेरी रोम रोम ज्यों सुमन खिलाये ।
भरे उमंग अंग अंगों में जो बरबस बहिरंग भुलाये ।।
तनका भान नहीं तब कैसे कोई आन व्यवहार निभाये ।
"शुक्ल" कहो हम इस धंधे में पाये या निज को हि गँवाये ।।

मणि ८८

महादेव सच्चिदानंद घन ।।

पंचभूत मय नहीं सत्य ही दिव्य ज्योतिमय है इनका तन ।
इनके ही प्रकाश से सचमुच पाते हैं रवि शशि प्रकाश पन ।
इनसे ज्योतिष्मान होय नित शोभित करते गगन नखत गन ।
इनकी ही चैतन्यशक्ति से चेतन सब दिखलाँय जगत जन ।।
इनसे ही प्रेरित हो विधि हरि करते विश्व व्यवस्था प्रतिछन ।
चार वेद षट् शास्त्र एक स्वर इनका वर्णन कर विलच्छन ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दानव देव नागनर ऋषि मुनि आराधें इनको हि मुदित मन ।
हूँ निहाल हो गया "शुक्ल" मैं पा करके इनका पद रज कन ॥

मणि ८९

महादेव मिल गये वाह वा ॥

अनुकम्पा करके पथ अपना गहादेव मिल गये वाह वा ।
मुझसे गये बिते को निज जन कहादेव मिल गये वाह वा ॥
मेरे दोष दुरित दुर्गुण दल दहादेव मिल गये वाह वा ।
जमा कुतरु वासना मूल सह ढहादेव मिल गये वाह वा ॥
कृपा वारि बरसाय भलीविधि नहादेव मिल गये वाह वा ।
लाकर बाढ़ प्रेम गंगा में बहादेव मिल गये वाह वा ॥
जनम जनम से जिसको चितने चहादेव मिल गये वाह वा ।
मेरा "शुक्ल" लहान चकाचक लहादेव मिल गये वाह वा ॥

मणि ९०

महादेव चरनों सिर धर कर ॥

हो जाता कृतकृत्य सद्य मैं इनके प्रिय पावों पर पर कर ।
पाता पुरस्कार अद्भुत सा इनकी किंचित सेवा कर कर ॥
अचरज सा कर दिया देव ने मुझसे गये विते पर ढर कर ।
मेरे दोष दुरित दल को तो कर दिया ढेर दाल सा दर कर ॥
भस्म सभी हो गई वासना इनके वियोगाग्नि में जर कर ।
होते नहिं संतुष्ट-ससद्गुण मेरे उर अंतर में भर कर ॥
मेरे बिना प्रयत्न पहुँच गये परले पार पितर मम तर कर ।
नहलाते रहते हरदम ये कृपावारि मुझपर झर झर कर ॥
रखते मेरी बात सदा ही अपनी बातों से टर टर कर ।
मुझे निडर कर दिया बेतरह मुझसे आप स्वयं ही डर कर ॥
हैं धर दिये निमित्त हमारे कृपाबेलि चारों फल फर कर ।
बैठे रहते हैं निचिंत्त से मेरे दिल अंदर निज घर कर ॥
महाप्रकाश बिखेर रहे हिय अंधकार अज्ञानहिं हर कर ।
हारी हुई हजार जनम की बाजी रख दी मेरी सर कर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जाना चाहता अमर मैं इनको सुमिरन करते मर कर।
"शुक्ल" निहाल हो गये दोनों ये मुझको मैं इनको बर कर॥

मणि ९१

महादेव का प्यार कन्हैया॥

प्राप्त करो जल्दी से जल्दी इनका दिली दुलार कन्हैया।
बड़े तुष्ट तुझ पर हैं ये तो कर इसपर इतबार कन्हैया॥
इनकी इस प्रसन्नता से तब होगा अति उपकार कन्हैया॥
इनका मिला प्रसाद तुझे है तू खुब लूट बहार कन्हैया।
तूने निज कल्याण कर लिया शरणागति स्वीकार कन्हैया।
जीत लिया बाजी जीवन की रही थी कबसे हार कन्हैया॥
बना लिया जस बनना चहिए बनाके इनको यार कन्हैया।
कर अब "शुक्ल" संग में इनके अवशि अखंड विहार कन्हैया॥

मणि ९२

महादेव हैं लहरी भैया॥

तब तो और मस्त बन जाते रख लेते जब गहरी भैया।
अमृत बचन निरीक्षण इनका समझें कितने जहरी भैया॥
पर्वतीय कोइ वन्य कहें ये बसे बनारस शहरी भैया।
जब देखो तब यहाँ वहाँ खुब हम इनके सँग टहरी भैया॥
ठनी एक दिन छनना इन सँग छन पर छन अठपहरी भैया।
हार गये हम इनसे जिसदिन छननी गहरी ठहरी भैया॥
सब दिन घंटा घहरा यश का सब दिन ऐसै घहरी भैया।
"शुक्ल" मुबारक मोक्ष और को हमको इनकर डहरी भैया॥

मणि ९३

महादेव हरषाते रहते॥

मुझ पर और सभी मुझसों पर दयादृष्टि दरसाते रहते।
हो जाते प्रपन्न उनके हिय नेह नवल सरसाते रहते॥
उन पर हर हमेश हरषित हो कृपावारि बरसाते रहते।
अति प्रसन्न होने से "शुक्ल" को पद पंकज परसाते रहते॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९४

महादेव के नाते सब प्रिय ।।

हैं इनका निवास सबही में इससे मुझे दिखाते सब प्रिय ।
इनकी किंचित् सेवा करते वे हैं अतिहि सुहाते सब प्रिय ।।
लाकर सुमन सुगंधित इन हित जो हैं हार बनाते सब प्रिय ।
हो इनमें तल्लीन भलीविधि जो शृंगार सजाते सब प्रिय ।।
घंटा शंख नगारा डमरू आरति काल बजाते सब प्रिय ।
पहनें बस्त्र चढ़ाकर इनको भोग लगाकर खाते सब प्रिय ।।
प्रेम भाव उर भरे जो कोई इनका गुनगन गाते सब प्रिय ।
दर्शन कर इनके विग्रह का जो नर नहीं अघाते सब प्रिय ।।
बैठे कहुँ एकांत स्वस्थचित नित जो इनको ध्याते सब प्रिय ।
इनके जनको निरखि नेह सर जो चरनन सिर नाते सब प्रिय ।।
सेवक इनके इनके ही सम हैं जिनको की भाते सब प्रिय ।
रहते हैं जो "शुक्ल" निरंतर इनके मद में माते सब प्रिय ।।

मणि ९५

महादेव देने में हातिम ।।

टूटी छिद्रमयी निज जन की नैया को खेने में हातिम ।
आश्रित नर का अपने हाथों ऐंठि मूछ टेने में हातिम ।।
शरणागत में पड़े जीव ज्यों कमठ अंड सेने में हातिम ।
रूखा सूखा दिया स्वजन का भलि रुचि से जेने में हातिम ।।
अनुकम्पा करके स्वभक्त की सुमति भक्ति भेने में हातिम ।
वर व्यवहार निजी से मम चित "शुक्ल" चुरा लेने में हातिम ।।

मणि ९६

महादेव चित चंचल बाटै ।।

चाहीं तोहरे ओर चलै के तबई पैड़ा बीचहि काटै ।
उठा चहीं बड़ भोर कहै की अबहीं ओलरा रहऽ तू खाटै ।।
अेकर सुनी हमार मगर ई सुनै न एकौ यही बा घाटै ।
अच्छी बात सुझाई तब खुब चतुराई से काटै छाटै ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी प्रबल पंडिताई से तुरतहि देय उलटि सब ठाटै ।
हम तौ करी मुहब्बत पर ई जब देखऽ तब हमके डाटै ।।
लागै सरम न अेके जबई आन क जूठी पतरी चाटै ।
कहा कि पेट भरी नाहीं रे इन विषयन से केतनौ पाटै ।।
मारा मारा फिरै रात दिन गली गली हर हाटै बाटै ।
"शुक्ल" जात की शरण आपके दहिनाती कै छाती फाटै ।।

मणि ९७

महादेव कहते सो करता ।।

दी है करके दया इन्हीं ने दुर्लभ देव नीक यह नरता ।
वर्ना धारन कर कूकरता शूकरता खरता कहुँ चरता ।।
अथवा तृण तरुवर हो करके यथाकाल कहुँ फरता झरता ।
या रौरव अति रौ रव आदिक नरकों में जा जाकर जरता ।।
अनुकंपावश पा मानवता अब क्यों नहिं दोषों से टरता ।
दशा देख दयनीय दीन की दर्दीला बन क्यों नहिं ढरता ।।
हरता क्यों नहिं क्लेश किसी के करते पीड़ित क्यों नहिं डरता ।
पा इनसे प्रसाद में सद्‌गुण भले भाव उर अंतर भरता ।।
प्रत्यह पुलकि-पुलकि पल-पल मैं इनके पद पंकज पर परता ।
हो जाता कृतकृत्य "शुक्ल" सच इनका नाम जो लेते मरता ।।

मणि ९८

महादेव मतलब के निकले ।।

इस ढब के साथहि उस ढब के यह समझो सब ढब के निकले ।
यह कह सकता कौन पूछते हो जो तुम की कबके निकले ।।
मतलब निकला जब निकालनेवाले भी ये तब के निकले ।
भद्देपन भोड़े पन से नहिं मतलब इनसे फब के निकले ।।
जो भी जब चाहा निकालना मतलब सबदिन सबके निकले ।
"शक्ल" उदारों का उदार से दबे दिलों का दब के निकले ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९९

महादेव के के का देबऽ ॥

अलबेले का अलिफ के देबऽ बेचारे बे के का देबऽ ।
थोर बार लेके का देबऽ औ मन भर लेके का देबऽ ॥
माँगी करि विनती तोहसे जे चलत राह छेके का देबऽ ।
अकड़ बेग हम से के का जे चरन शीश टेके का देबऽ ॥
नमक हराम हमें सा के का जे सेवक तेके का देबऽ ।
हँसत हंसत माँगी तेके जे आँसुन मुँह भेके का देबऽ ॥
माँगी आन कोई तोहसे तब सब हमके देके का देबऽ ।
बतिआवेला बात "सुकुल" बस बतलावऽ एके का देबऽ ॥

मणि १००

महादेव से होत बातबा ॥

जीरो औ अनंत नम्बर कै फोन अबहिं फौरन मिलातबा ।
हलो हलो इधरौं उधरौ से प्रारंभिक इंगित करातबा ॥
भाषा मौन प्रयोग होतबा बतिआवै तेके सुनातबा ।
जैसे पास कोई बैठा हो दूरी कुछ नाहीं बुझातबा ॥
एक-एक बानी उनकै सच सुन-सुन के अति जी जुड़ातबा ।
लागत बा जानौ की जैसे काने में अमृत घोरातबा ॥
जे नगचाय भनक सुनि पावै ओहू के सुखमय सुहातबा ।
आपन "शुक्ल" वताई कैसे भीतर अब नाहीं अमातबा ॥

मणि १०१

महादेव निज प्रेम दान दो ॥

पहले संभव नहीं माँगना माँगू यदि मुझको न आन दो ।
जो तुमको खरीद ले वोही वस्तु मुझे अति मूल्यवान दो ॥
अविरल दो अहैतुकी दो प्रभु अनुपम दो अतिशय महान दो ।
अद्वितीय दो अनिर्वाच्य दो अति अद्भुत दो वो अमान दो ॥
स्वर्ग और अपवर्ग आदि सब जिसकी कोई हो न शान दो ।
सुख की चाह समूल मिटा दे आत्यंतिक सुख की सो खान दो ॥
पाने बाद जिसे पाना कुछ रहे शेष नहिं वह निधान दो ।
"शुक्ल" देन दे दिव्य अलौकिक भुला जल्द ही देहभान दो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०२

महादेव से लगन लगी बा ।।

अनुकम्पा से इनकी ही सच चितवृति इनके रंग रँगीबा ।
इनकी ही अत्यंत दया से मति इनके प्रिय प्रेम पगीबा ।।
तनकी धनकी पुर परिजन की आत्यंतिक आसक्ति डगीबा ।
लोक और परलोक सभी की दुम दबाय के चाह भगीबा ।।
समुद्रीय पद कंज पोत तजि जात नहीं धी कतहुँ कगीबा ।
जगा दिया झकझोर इन्हीं ने तब ऐसन तकदीर जगीबा ।।
जिनकी हुई नहीं संबंधित इनसे उनकर बुद्धि ठगीबा ।
"शुक्ल" मजा आवत मिलि जातेन तबियत उनके चरन टँगीबा ।।

मणि १०३

महादेव देखे बिन बहना ।।

कैसे बतलाऊँ यह तुमको किस विधि बीत रहे दिन बहना ।
रुचता नहीं खान पानादिक रहती सदा बनी खिन बहना ।।
भोग विलास ओर लखते ही लगता है अति ही घिन बहना ।
अकुला अकुला उठता है जी रह रहकर छिन ही छिन बहना ।।
निज प्राणेश्वर के वियोग में बेचैनी होवे किन बहना ।
हो जातीं सहजहिं दयार्द्र मम दीन दशा देखी जिन बहना ।।
सकतीं नहिं मिलाय केवल बस धीरज धरवातीं तिन बहना ।
कारुणीक हो कोई "शुक्ल" पर दिखलादे आँखिन इन बहना ।।

मणि १०४

महादेव देखे बिन बहना ।।

कहती हूँ सचमान सहेली जीवन का रुचता नहिं रहना ।
रखना अपने ही तक आली मत यह वात किसी से कहना ।।
लगते केवल भार भामिनी लादे जो फिरती हूँ गहना ।
वेही नहीं उपस्थित तब फिर किनके लिये जाय यह पहना ।।
निरखन हार हारहिय का नहिं किस हित चटक चूनरी चहना ।
उन विन कैसी होली होनी लाकर धरे अरी यह वह ना ।।
लूटें सुख सँयोगिनी सब मिलि मुझको विरह दाह बिच दहना ।
लहना भाग्य लहावे सोई "शुक्ल" जो दैव सहावे सहना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०५

महादेव कै पाइत पनहीं ॥

ई-हाऊ-एकवा-हा ओहू-जवन जवन मिल बैरी बनहीं ।
उहै देखाय डराइत सबके ठेंगऊ तब दऽकेके गनहीं ॥
जेतना मिला भरा हयें भीतर खोजि खोजि हम ठक-ठक ठनहीं ।
सोझ करित ओही से भलिविधि जौ कौनौ कुछ रगरा फनहीं ॥
तबका तनिकौ दवब भला हम लेव मनाय जे जैसे मनहीं ।
कौनौ जहाँ उठायेन की बस सिरै ताकि सोझै हम हनहीं ॥
किहेन जहाँ कुछ टिरं पिरं की ओनकर तौ सोरै हम खनहीं ।
आपन जिउ बहलाइत बैठा "शुक्ल" चूमि ओनके छन छनहीं ॥

मणि १०६

महादेव कै पनहीं पावा ॥

श्रद्धा सहित सनेह भरे उर अति आदर से माथ चढ़ावा ।
चुम्बन किहा करोरन कसि कसि हँसि हँसि के हम हृदय लगावा ॥
समुझा निज सर्वस्व वही कर शिरस्त्राण शुचि सुदृढ़ बनावा ।
बोलवावा सोहागिनी ओन से मनभर मंगल-चार गवावा ॥
बीन बेनु शहनाई आदिक बजवावा आनन्द बधावा ।
पिस्ता और बदाम डारिकै मित्रन के भलि भंग छनावा ॥
धोआ चरन भक्त-विप्रन कै भलि विधि ब्रह्म भोज करवावा ।
"शुक्ल" यथा संभव सामूहिक उत्सव पनही प्राप्त मनावा ॥

मणि १०७

महादेव कै पनहीं पावा ॥

समझा जन्म जन्म के सुकृतों का सचमुच फल सम्मुख आवा ।
इक दो नहीं न दश शत समझो बार सहस लै शीश चढ़ावा ॥
भरे साध भल भाग सराहत शुभ सिंहासन पर पधरावा ।
छके सनेह देह सुधि भूले फूले छविनिधि छत्र लगावा ॥
खोकर खुदी खुशीभर उर में चमर चारु फिर फेर फिरावा ।
करके सुमन सुमन सुरभित लै सुन्दर हार बनाय सजावा ॥
प्रेम अग्नि प्रज्वलित पुनः करि दोषन कर दशांग गमकावा ।
जुरे जुगन के दुरित तूल की बाती वारि सुजोति जगावा ॥
भले भले भावों के व्यंजन विविध सरस लै भोग लगावा ।
निर्द्वंदता लोक दोनों की पा प्रिय "शुक्ल" प्रसाद अघावा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०८

महादेव ऐसे भी मिलते ॥
कुछ दो चार बतौर नमूने बतलाता कैसे भी मिलते।
मिलने के कानून से मिलते जी चाहे जैसे भी मिलते॥
मिलना संभव ही नहिं जैसे मैं कहता तैसे भी मिलते।
निज रुचि के अनुकूल से मिलते तुम चाहो वैसे भी मिलते॥
निर्भयता से मिलो तो मिलते सबहिं किये भैसें भी मिलते।
"शुक्ल" खरीद मुझे भी मिलते आप हुये वैसे भी मिलते॥

मणि १०९

महादेव मणिमाला धरि हौ ॥
तौ तुम बड़ी सुगमता से सच एक पंथ बहु काजहिं करि हौ।
शोभा कंठ सँवरि हौ साथहि उर अंतर प्रकाश भल भरि हौ॥
सहजहिं सद्य जन्म जन्मो के अंधकार अज्ञानहिं टरि हौ।
सबमें व्याप्ति समझकर उनकी किंचित पीड़ित करते डरि हौ॥
दीन हीन लख दशा किसी की हो करके दयार्द्र द्रुत ढरि हौ।
तुम तरिहौ पितरन का तरिहौ पता नहीं केतनन का तरिहौ॥
बदले वस्त्र नवीन शौक से अस भल भाव भरे हिय मरिहौ।
"शुक्ल" सपदि सानंद असंशय जीवन केर लक्ष्य सब सरि हौ॥

दोहा

मेरी गलियों में सदा आप लगाते गश्त।
तभी इधर आते सभी दुश्मन होते त्रस्त॥
दिली दुश्मनों का किया खूब हौसला पश्त।
और मुझे यूँ आपने बना दिया है मस्त॥
बनी आपके संग में तरह तरह की भंग।
छनी न पर जिसका कभी रंग न होवे भंग॥
गहरी ऐसी दो छना भूल जाय बहिरंग।
"शुक्ल" लूट लो साथ सब फिर फिर करो न तंग॥
(फाल्गुन कृ० ७ मंगल सं. २०१७ दि. ७-२-६१)

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशी रात्मज शुक्ल चन्द्रशेखर
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
ग्यारहवीं माला समाप्त।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवे नमः *

महादेव मणिमाला

बारहवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

होता दंग सा मैं देख बात बतलाता सत्य,
ढंग की अनोखे रीति नीति दरबार की,
दीन मतिहीन अघलीन आश्रितों के लिये,
बनी है विचित्र सी व्यवस्था सत्कार की,
पाते पुलकाते हुलसाते दिखलाते यार,
झरी सी लगी वे लखे विविध बहार की,
"शुक्ल" बार-बार रोम-रोम ये पुकार उठें,
होके बलिहार जै जैकार सरकार की ॥

•

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारहवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मुद मंगल दाता ।।
सत्य इसे सर्वथा समझकर खोला इनसे मंगल खाता ।
होते हैं ये सार हमारे जुरा जुगों से मंगल नाता ।।
मिलनसार मृदु योग्य मिलन के मंगलमय स्वभाव भल भाता ।
वर व्यवहार बढ़ाने के हित इनके मंगल द्वारे जाता ।।
इनका उर प्रभाव भरने को इनका मंगल वैभव छाता ।
इन्हें तुष्ट करने को केवल मंगल नाम गुनों को गाता ।।
इनका प्रेम सुरा शुभ छाने रहता हूँ मंगल मदमाता ।
इनसे "शुक्ल परम मंगल में परमानन्द प्रतिक्षण पाता ।।

मणि २

महादेव का ध्यान करूँ कस ।।
कुछ भी समझ न पाया अबतक मनमाना अनुमान करूँ कस ।
करना जब अनुमान न संभव तव फिर विशद बखान करूँ कस ।।
हो सकता बखान ही जब नहिं क्या लेकर गुन गान करूँ कस ।
बिना किये गुनगान आपका निज उर का उमगान करूँ कस ।।
जरिया कोई नहीं सूझता इनसे जान पिछान करूँ कस ।
जान पिछान भये बिन इनसे मनको मोद निधान करूँ कस ।।
मनः प्रसाद प्राप्ति बिन सुखमय जीवन बने विधान करूँ कस ।
बहती "शुक्ल" प्रेम गंगा में डूब डूब अस्नान करूँ कस ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव तोहके कहाँ पाई ।।

उत्तर दक्खिन पूरब पश्चिम कौनी दिशा कहाँ हम जाई ।
केसे-कैसे पूछी हा हम केधौं पता सटीक बताई ।।
जेसे मिलन शीघ्र संभव हो ऐसन करिये कौन उपाई ।
बीत गये दिन बहुतक तुम बिन अब कैसे हे राम बिताई ।।
समुझावा अबतक ई मन के कबतक हम एके समुझाई ।
बिना भये निज पाँव बेवाई का केहु जाने पीर पराई ।।
कोई जान बचाओ जग जन बभन गोहार सुनावत बाई ।
देय मिलाय "शुक्ल" जीवन भर ओके सदा असीसब भाई ।।

मणि ४

महादेव भरदेव सरलता ।।

मेरे हर व्यवहार में ही हर अधिकाधिक कर देव सरलता ।
चिर निवास जहँ करे स्वस्थ हो मेरे उर घर देव सरलता ।।
जैसे धरे कृपण धन हिय मम मंजूषा धर देव सरलता ।
संभव हो जितनी भी जल्दी रोम-रोम जर देव सरलता ।।
मघा नखत सी झरी लगाकर झर-झर-झर-झर देव सरलता ।
फल दायिनी निज कृपा बेलि में ममहित नित फर देव सरलता ।।
दो वंचनाहीन देवेश्वर मुझको तुम गर देव सरलता ।
माँगूँ "शुक्ल" दयालु दानिवर देव देव वर देव सरलता ।।

मणि ५

महादेव पर मरे परी रे ।।

आना-कानी लगी न एकौ करवै हैं सो करे परी रे ।
सींग पूँछ बेकार हिलाना चरवैहैं चुप चरे परी रे ।।
फल इच्छुक बनबे तौ बेशक पाप पुण्य तव गरे परी रे ।
किहें मटरगश्ती जौ तनिकौ जाय नरक में जरे परी रे ।।
चहबे अगर भलाई आपन तौ दोषन से टरे परी रे ।
बदले में सद्भाव सुसद्गुण उर अंतर भल भरे परी रे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहे जितना भटक चैन पर जाये उनके घरे परी रे।
ओकरे बदे "शुक्ल" सचमानऽ प्रभु पद पंकज परे परी रे।।

मणि ६

महादेव मैं क्या जग जन्मा ।।'

होता लेना जन्म सार्थक सका न सो कै क्या जग जन्मा ।
खान पान सम्मान आदि में उम्र बीत गै क्या जग जन्मा ।।
जिससे मिली देह सो केवल किया सुकृत छै क्या जग जन्मा ।
विचरें जो स्वच्छंद सो इन्द्रिय किया नहीं जै क्या जग जन्मा ।।
अन्तकाल आ गया भोगमय वृत्ति बनी है क्या जग जन्मा ।
बेढंगी रफ्तार पुरानी चलता हूँ धै क्या जग जन्मा ।।
घटने के बजाय बढ़ते ही जाते हैं पै क्या जग जन्मा ।
लखकर मुझे विचारशीलगन कहते हैं तै क्या जग जन्मा ।।
कर देता अनसुनी श्रवण जुग में अंगुलि दै क्या जग जन्मा ।
"शुक्ल" आत्मकल्याण हो जिससे तब न भक्ति भै क्या जग जन्मा ।।

मणि ७

महादेव बस कर अब बस कर ।।

रह नहिं गई और गुंजायश मैं कहता हूँ रे तव बस कर ।
ऐसा नहिं होता तो सोचो मैं कहने वाला कब बस कर ।।
यह दे चुका देचुका वह भी पा तो चुका हूँ मैं सब बस कर ।
देने की क्यों पड़ी तुम्हें तब मैं ही कहता हूँ जब बस कर ।।
कितना बोझ सम्हालूँ बोलो मैं अब जाऊँगा दब बस कर ।
"शुक्ल" समाता नहीं है अन्दर तृप्त हूँ या मेरे रब बस कर ।।

मणि ८

महादेव सुमिरे सुख पैब्यू ।।

तोहके टोटा परे न कबहूँ दुऔ जून जूड़े जिउ खैब्यू ।
रोअे बला तोहार-तूँ अपने घर बैठे नित मंगल गैब्यू ।।
लागी ताप न तीनौं तोहके ऐसन कृपा छानि सिर छैब्यू ।
होअे सबल सहायक सुमिरन जौनी-जोनि लोक जेहि जैब्यू ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धाइउ बहुत सुलोक कुलोकहु अब नाहीं कहुँ काह्यो धैव्यू ।
भले भाव भरि भजव्यू भव के तौ ओनके तूँ भलिविधि भैव्यू ॥
करि नहिं जाय कल्पना कैसहु ऐसन पाय प्रसाद अघैव्यू ।
सुन्दर लोक सिधरव्यू शिव के "शुक्ल" जहाँ नहिं जाय के अैव्यू ॥

मणि ९

महादेव विषयों ने नाशा ॥
खूब नचाते हैं तुम देखो मुझको रक्खा बना तमाशा ।
नाचूँ मैं भी बड़ी शौक से इनके ही इंगित पर खासा ॥
कभी ढोल पिटवाते मुझसे कबहीं बजवाते हैं तासा ।
स्वामी सुहृद बने मेरे ये स्वामिभक्त मैं इनका दासा ॥
इनका रंग अभंग मेरे सिर चढ़ा देख सब करते हासा ।
उम्र गई सब बीत पलटता अब तक नहीं दीखता पासा ॥
लगती है मम युक्ति न कोई ऐसा है निज जाल में फाँसा ।
"शुक्ल" ताकता हूँ मुँह तुम्हरा उर में भरे भलीविधि आशा ॥

मणि १०

महादेव मन भावैं गोइयाँ ॥
जागि जाय तव भाग्य जनौ की जब मेरे घर आवैं गोइयाँ ।
अपने रूप अनूप सुहावन से अत्यंत सुहावैं गोइयाँ ॥
प्राण टानने लगते जबई मंद मंद मुसकावैं गोइयाँ ।
अपने शुभ सुभाव मिठ बोलनि से मन मोर लुभावैं गोइयाँ ॥
जौनै कुछ धरि देव सामने बड़े प्रेम से खावैं गोइयाँ ।
गाई हम जौ गीत बताई तुमसे बैठि गवावैं गोइयाँ ॥
हम सकुचाई तौ अपना खुलि नाचैं संग नचावैं गोइयाँ ।
पावैं "शुक्ल" हजार प्राण तौ इनपर ललकि लुटावैं गोइयाँ ॥

मणि ११

महादेव मेरे में कुछ नहिं ॥
धर्म कर्म विद्या बल वैभव मेरे तन हेरे में कुछ नहिं ।
सुकृत शून्य सर्वथा अजी मैं पुण्य पूर्व केरे में कुछ नहिं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औरों में अनगिन विशेषता आती निज नेरे में कुछ नहिं ।
फैले सद्गुण विविध विश्व में मेरे उर घेरे में कुछ नहिं ।।
भरा परा सद्भाव सब जगह देखो मम डेरे में कुछ नहिं ।
आसानी से कह देते सब देख मुझे तेरे में कुछ नहिं ।।
देनेवाले दिखें किसी से पाता मैं टेरे में कुछ नहिं ।
"शुक्ल" शर्म से गड़ते होंगे लख मेरे चेरे में कुछ नहिं ।।

मणि १२

महादेव मेरी विशेषता ।।

सुनते ही चकरा जाओगे सचमुच मुझ केरी विशेषता ।
लखते त्यों घबरा सकते हो लगी ढेर ढेरी विशेषता ।।
दशो दिशा से देख न लो खुद मुझको जो घेरी विशेषता ।
मैं मैं करती रहती अंदर पाली मम छेरी विशेषता ।।
जाती कहीं नहीं तज मुझको यह मेरी चेरी विशेषता ।
हार मान जाये तो मानो मुझको सब तेरी विशेषता ।।
मेरा दिखे न जोड़ विश्व में यह वर वर देरी विशेषता ।
"शुक्ल" कहूँ मैं बैठी भीतर गर्ज-गर्ज एरी विशेषता ।।

मणि १३

महादेव सुख से सोता हूँ ।।

सुख तरुवर का हूँ मैं पंछी सुख में बसा बना खोता हूँ ।
सुख की बोली बोलूँ केवल सुख का पाठ पढ़ा तोता हूँ ।।
सुख की दरया में दिल खोले मल मल हाथ सदा धोता हूँ ।
सुख सरिता में बहता संतत सुख में लगा लगा गोता हूँ ।।
सुख की खेती करूँ खुशी से सुख के बीज फकत बोता हूँ ।
सुख में ही मैं हँसूँ निरंतर सुख में शौक भरे रोता हूँ ।।
सुखानुभूति करत सचमानो खुद की सद्य खुदी खोता हूँ ।
चिर निवास करि "शुक्ल" सुसुख में सुख से मैं सुखमय होता हूँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १४

महादेव चरनों तक पहुँचा ॥
इनकी अनुकम्पा से ही मैं इनहिय के हरनों तक पहुँचा ।
कोमल कमल तिरस्कृत करते ललित लाल वरनों तक पहुँचा ॥
जन्म-जन्म की लिये बुभुक्षा चारि सुफल फरनों तक पहुँचा ।
जुग-जुग का अतिशय तृषार्त मैं जुगलामृत झरनों तक पहुँचा ॥
अंधकार में भूरि भटकता भल प्रकाश भरनों तक पहुँचा ।
दीन कृपा अधिकार हीन जस तस अबढ़र दरनों तक पहुँचा ॥
मुझसों को अपनाने का जो बैठे कर परनों तक पहुँचा ।
निज प्रभाव से ही निज जनके दुरित दलहिं दरनों तक पहुँचा ॥
महाभाग्य के उदय भये से महामोद करनों तक पहुँचा ।
सानुकूल होने से "शुक्ल" सच मैं असरन सरनों तक पहुँचा ॥

मणि १५

महादेव ऐसा भी करते ॥
जनहित की कामना भरे जिय चाहे जो जैसा भी करते ।
हो केवल कल्याण तभी तो ये कुछ भी कैसा भी करते ॥
लोकदृष्टि से हीन-लोक प्रिय चाहें तो तैसा भी करते ।
देते हैं सर्वस्व सौंप ये मेरा सब छैसा भी करते ॥
मेरी रुचि से भिन्न सर्वथा हम चाहें वैसा भी करते ।
"शुक्ल" खरीद मुझे सहजहिं लें निज को ये बैसा भी करते ॥

मणि १६

महादेव तोहके कस पाई ॥
धर्म कर्म हमरे में कुछ नहिं साधन नाम सुने थरांई ।
कही सही हम बात आपसे काहे बदे झूठ बतिआई ॥
जौ करि लेंय प्रतीति आप तौ हक नाहक हम कसम न खाई ।
कौनौ राह देखाय न हमके तब हम तोहसे पूछत बाई ॥
जौ नहिं आप बतावें तौ फिर हम ही तोहैं बताई भाई ।
सबसे सहज सरल सुविधामय तोहसे कही तोहार सुझाई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लने को ज्यों अंक रंक को धावे धनद परो तुम धाई ।
"शुक्ल" सहर्ष आयकर सद्यः लेव ललकि निज कंठ लगाई ।।

मणि १७

महादेव के पाइत तब तौ ।।

लोक और परलोक संपदा पाइ जनौ सब जाइत तब तौ ।
पितरन के संतुष्ट करित खुब देवतन मुदित मनाइत तब तौ ।।
द्विज देवन कै दल बटोरि कै पूजित पाँव धोआइत तब तौ ।
व्यंजन सरस बनाय विविध विधि श्रद्धा सहित जेवाइत तब तौ ।।
नेवतित दरिद नरायन सादर मित्रन बहुरि बोलाइत तब तौ ।
पिस्त बदाम मलाई मिश्री मिश्रित भंग छनाइत तब तौ ।।
संभव जितना हो उतना प्रिय उत्सव मिलन मनाइत तब तौ ।
जबले जीव कहाइत तब ले सचमुच "शुक्ल" अघाइत तब तौ ।।

मणि १८

महादेव सुमिरो सुखिया जी ।।

पाते जिसके फलस्वरूप सुख संचित सुकृत करो सुखिया जी ।
ऐसा न हो कि आगे चलकर दुख गड्ढे में परो सुखिया जी ।।
या प्रमाद कर हद से बाहर जाकर नरक जरो सुखिया जी ।
थोड़े सजग भये से केवल दिव्य समृद्धि भरो सुखिया जी ।।
निरासक्त बन रहो जगत में ज्यौं जल कमल धरो सुखिया जी ।
शरणागत हो आशुतोष के शुभ फल चारि फरो सुखिया जी ।।
पुरजन परिजन जाति बंधु जन बहुजन तारि तरो सुखिया जी ।
धारे "शुक्ल" नवीन वस्त्र ज्यों त्यों मन मुदित मरो सुखिया जी ।।

मणि १९

महादेव सब सुखी दिखाते ।।

बड़ी साध है भरी हृदय में कोई दुखी नहीं दिखलाते ।
दुखी देखते ही जग-जन को मेरे रोम रोम कँप जाते ।।
अकुला उठते प्राण हमारे लख बालक को पीड़ा पाते ।
वृद्धों की दयनीय दशा को देखे व्यथित विशेष हो जाते ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारिवर्ग का कष्ट देखकर मेरे हाल बिगड़ से जाते ।
तद्विपरीत सुखी कोई को लखते ही हम हैं हरषाते ॥
निज सुख के ही लिये सभी को सुखी करो हम देव मनाते ।
हो जाते अत्यंत सुखी हम "शुक्ल" सुखी सब देख जो पाते ॥

मणि २०

महादेव के जे नहि जानी ॥
कोई नहि अंदाज सके सच इतना आपन करी ऊ हानी ।
लेना कुछ नहि देना उनसे हमका करै के झूठ बखानी ॥
कभी गधा बन ढोई लादी कभी बैल बन पेरी घानी ।
कहुँ ठेलहा बन ठेली ठेला कहुँ जुलहा बन ताना-तानी ॥
लोक नहीं परलोक चैन तेहि रहती मरी सदा ही नानी ।
जानि लेय भर इन्हें जतन करि फिरि सुरेश नहि उसकी शानी ॥
और वस्तु की कौन कथा है मुक्ति भरै जब उसका पानी ।
"शुक्ल" कहूँ अनुभव अपना मैं सुनी हुई नहि कहूँ कहानी ॥

मणि २१

महादेव सुमिरो दुखिया जी ॥
चाहो जो दुख हो न कभी तो प्रबल प्रयत्न करो दुखिया जी ।
श्रम या व्यय होने के भय से मनमें नहीं डरो दुखिया जी ॥
हों जो दोष दुर्व्यसन तुममें उनसे अवशि टरो दुखिया जी ।
कर दो दूर दीनता दिल से दृढ़तर धैर्य धरो दुखिया जी ॥
हों जो दीन दीखते उनपर होकर द्रवित ढरो दुखिया जी ।
जितना भी संभव हो तुमसे परके दुःख हरो दुखिया जी ॥
फिर क्यों दिखे निराशा जो जिय देव भरोस भरो दुखिया जी ।
शरणागत हो "शुक्ल" शंभु के शुभ फल चारि फरो दुखिया जी ॥

मणि २२

महादेव के चरन हरन मन ॥
सुन्दरता की सींव कमल की कोमलता रद करन हरन मन ।
जनहित शुभ फल फलित दलित दुख ललित लाल वर वरन हरन मन ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पात्र-अपात्र विभेद त्यागि जो सहजहि सब पर ढरन हरन मन ।
अनुकंपा करके अहैतुकी मेटत जिवकी जरन हरन मन ।।
पहुँचावत परधाम प्रतिक्षण निपट नारकी नरन हरन मन ।
होकर द्रुत दयार्द्र दासन के दोष दुरित दल दरन हरन मन ।।
शुचि सद्गुण सद्भाव भक्तहिय भवन भाँति भल भरन हरन मन ।
सब बिधि सबल समर्थ "शुक्ल" सच धनि असरन के सरन हरन मन ।।

मणि २३

महादेव हम तुमसे हारे ।।
हार मानना जानें क्या हम तुमसे हारे कहूँ लचारे ।
तुमने कलित कला से अपनी मेरे छक्के छुड़ा जो डारे ।।
तुम चलते हो पात पात जी मैं चलता जब डारे डारे ।
मैं पक्का बदमाश पटककर तुमने भल साँचे में ढारे ।।
पकडूँ मैं जी जाँ से जिनको देते उन दोषों को टारे ।
ला ला करके दिव्य-दिव्य गुण भीतर भरते जाव हमारे ।।
हम जैसों का तरना कैसा पर तुम मानो नहिं विन तारे ।
जो जैसा भी करो देव तुम "शुक्ल" सभी को हैं शिर धारे ।।

मणि २४

महादेव हे हई हो आवऽ ।।
अबकी आउब तब की आउब कहऽ बार तू कई हो आवऽ ।
जोहत जोहत वाट आपकै होइगै हमके छई हो आवऽ ।।
रोवत राह निहारत तोहरै आँखौ समुझऽ गई हो आवऽ ।
शक्ति नहीं सोचै समुझै की सचमति गति अति झई हो आवऽ ।।
जीतै जी हो मुर्दा जैसी हालत हमरी भई हो आवऽ ।
रह रह करी पुकारा बैठा हाय दई हे दई हो आवऽ ।।
आयऽ मिल्य हजारन से तू बात न होई नई हो आवऽ ।
चिंतन तोहरै करत "शुक्ल" अब दीखत तोहरै मई हो आवऽ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २५

महादेव यह मंत्र हमारा ॥
हाय महादेव-हाय महादेव-हाय महादेव करूँ उचारा।
धीरे-धीरे इसको कहता जोर जोर से इसे पुकारा॥
अनुष्ठान इसका ही करता पुरश्चरन इसका ही प्यारा।
दृढ़ निष्ठा इसपर है मेरी यही मात्र विश्वास अधारा॥
शास्त्र ज्ञान हमारा ये ही ये ही मेरा विशद बिचारा।
संभव नहिं आवश्यकता नहिं ध्यान और पर जाय क्यों डारा॥
हूँ मैं आश लगाये होगी प्राप्ति आपकी इसके द्वारा।
"शुक्ल" दिया जो दगा आपने गुड़ गोबर हो जावे सारा॥

मणि २६

महादेव का नाम निरामय ॥
आज नहीं जी आदिकाल से होता इनका काम निरामय।
बसते हैं जिस जगह आप वह नगर गली वह गाम निरामय॥
दानव देव आदि जिसका लें कर स्वीकृत वह चाम निरामय।
किया जाय निवछावर इनपर धन्य-धन्य वह दाम निरामय॥
होती अर्चा चर्चा इनकी वही सुबह वह शाम निरामय।
होता हो गुनगान सुचिंतन वह घटि पल वह याम निरामय॥
अधमाधम भी जन इनका बन पाता है परधाम निरामय।
लोक और परलोक "शुक्ल" सच किया इन्होंने माम निरामय॥

मणि २७

महादेव का नाम सुहाता ॥
जो जैसा करते मेरे प्रति किया हुआ सब काम सुहाता।
बिचरन को गलियाँ रहने को इनका गुनमय ग्राम सुहाता॥
लगे जो कुछ सेवा में इनकी तो शरीर का चाम सुहाता।
होता जो निवछावर इनपर सत्पथ आया दाम सुहाता॥
इनका ही गुनगान हमें तो करना सुबहो शाम सुहाता।
इनके ही चिंतन में बीते वह घटि पल वह याम सुहाता॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनकी अर्चा इनकी चर्चा लगा हो इसका लाम सुहाता ।
"शुक्ल" थूकता यहाँ वहाँ पर जाना इनके धाम सुहाता ॥

मणि २८

महादेव का नाम सम्हारे ॥

वर्ना पतन होगया होता खड़ा हूँ मैं कब काहि कगारे ।
फिसलन बड़ी हवा के झोंके रहते प्रतिछन पाँव उखारे ॥
झटका एक झटक जोरों से हुआ शांत तब तक मुँह फारे ।
आता अपर दीखता देखो मेरे नाकों दम कर डारे ॥
पर नहिं रंच फिसलने देता लखूँ प्रलोभन हारे सारे ।
अचल हिमालय सा सुमेरु सा सुस्थिर हूँ इसकेहि सहारे ॥
सुनिये जगत निवासी सज्जन साधन पथके पथिक पियारे ।
संशय "शुक्ल" त्यागकर सबही बढ़ो वेखटक नाम अधारे ॥

मणि २९

महादेव मैं का भ्रम भागा ॥

जो शश-शृंग बाल बंध्या या मृगतृष्णा जल सा भ्रम भागा ।
अबतक का जो नहीं सत्य ही आदि काल से था भ्रम भागा ॥
शास्त्र आप्त गुरु संत वचन के बड़ी मार को खा भ्रम भागा ।
तदुपरि भई देव अनुकम्पा तब समझो यह गा भ्रम भागा ॥
भगता यथा तिमिर तत्क्षण ही त्यों प्रकाश को पाभ्रम भागा ।
तैं केसिवा त्रिकाल न कोई मैं यह कहाँ से आ भ्रम भागा ॥
तैं का बोध यथार्थ रीतया जबहिं तत्वतः भा भ्रम भागा ।
"शुक्ल" मिटा रोना जुग-जुग का अब हँसता हा हा भ्रम भागा ॥

मणि ३०

महादेव में खोदे निजको ॥

जी का पाप भया है तेरे मैं कहता ये खोदे निजको ।
जितने दोष भरे हैं तुझमें समझ उन्हें गे खोदे निजको ॥
फैले शुचि सद्गुण उर तेरे भर जावें ते खोदे निजको ।
हो जावें झट भस्म शुभाशुभ कर्म सभी वे खोदे निजको ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नैया तव मझधार उसे दें वे खुद ही खे खोदे निजको।
उनके परम प्रेम के रस में तन मन को भे खोदे निजको॥
यूँ बेशक बेजोड़ बेखुदी का सुस्वाद ले खोदे निजको।
"शुक्ल" न कुछ कर धर दोनों कर बस मूँछें टे खोदे निजको॥

मणि ३१

महादेव अकबाली तुम हो॥

बढ़ा चढ़ा अकबाल और का सचमुच सिरजन शाली तुम हो।
दूजे से खाली यह दुनियाँ भरे पूर्णतः खाली तुम हो॥
गुल गुलशन गुल गंध आप ही इस गुलशन के माली तुम हो।
बने कोई कोइ कहे किसी को मायाचक्र के चाली तुम हो॥
अनहोनी कर सको आप औ होनहार के टाली तुम हो।
हम हम कर जब कोइ गरजता खूब बजाते ताली तुम हो॥
फिरते भले अंग सब खोले पर पूरे जंजाली तुम हो।
चारि पदारथ लिये "शुक्ल" के फिरो साथ ले थाली तुम हो॥

मणि ३२

महादेव जी से सब पाते॥

पता लगा पाते नहिं कोई कौन आपसे हैं कब पाते।
तुम जानो तो जानो कैसे खुद ही नहिं जाने जब पाते॥
ऐसे पाते वैसे पाते कौन कहे किस किस ढब पाते।
कोईकर जन्मान्तर बहुविधि साधन भार से हैं दब पाते॥
कोई रगड़े नाक चिरौरी विनती करते हैं तब पाते।
कोई जीवन भर पाते नहिं प्राण आ लगें जब लब पाते॥
मैं तो अघा सा गया हूँ जी सचमुच या मेरे रब पाते।
रखने को नहिं ठौर लुटाते बैठे "शुक्ल" जो हैं अब पाते॥

मणि ३३

महादेव हम विषयी बन गये॥

सनना था सुन्दर सनेह शुचि पर हम तो भोगों में सन गये।
गनना तव गनमें होनी थी किन्तु विषय लंपट में गन गये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उधर गये हम बड़ी शौक से जिधर मित्रवर मेरे मन गये ।
पहले जितने थे उससे सच हो हम और प्रमादी घन गये ।।
खनता गर्त भयानक बैठा जैसा वहु तेरे हैं खन गये ।
खेल-केलि में ही मैं देखूँ बीत मेरे ये चारों पन गये ।।
बड़े कीमती जीवन के वे खोय हमारे अनगिन छन गये ।
धन्य कृपा के पात्र "शुक्ल" तव किसी तरह बन तेरे जन गये ।।

मणि ३४

महादेव अैहैं बौरहिया ।।
आउब आउब बार अनेकन का झूठै कै हैं बौरहिया ।
माथेपर धर हाथ बता तो झूठ कसम खै हैं बौरहिया ।।
नगर नगर पुर गाँव गाँव गलि गलि अपयश छै हैं बौरहिया ।
मरि हैं सब मेहना दें ताना जौनि ओरि जै हैं बौरहिया ।।
अैहैं उर उमगैहैं सबकर बड़ि बहार दै हैं बौरहिया ।
अब आये तब गये नहीं अस सच कुछ दिन रै हैं बौरहिया ।।
प्यारी वस्तु हमारी सारी वे अबकी लै हैं बौरहिया ।
पै हैं "शुक्ल" जुड़ै हैं निजजी मुदमंगल गै हैं बौरहिया ।।

मणि ३५

महादेव अब आते होंगे ।।
देखो तो चढ़ ऊँचे कोई दिव्य प्रकाश दिखाते होंगे ।
हर हर महादेव के मनहर सुखकर शब्द सुनाते होंगे ।।
डमरू शंख दिव्य बाजे वहु हरगन हुलसि बजाते होंगे ।
ऐरावत झख मारे ऐसे नंदी उनको लाते होंगे ।।
मेरी सुधि आतेहि और भी वेग से बैल बढ़ाते होंगे ।
मुझसे मिलने के हित मेरे प्राणेश्वर अकुलाते होंगे ।।
उनकी इस आकुलता को तो कोई समझ न पाते होंगे ।
चंद मिनट के बाद "शुक्ल" को देखो कंठ लगाते होंगे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३६

महादेव आयेन ई भल भा ।।

क्लपा नहिं जा सकता जितना इनके हित बेकल मैं कल भा ।
कल्प सी रात दिवस युग सदृश घटि शतवर्ष वर्षसम पल भा ।।
बह जो चली धार आँखों से सो मानो निर्झर कर जल भा ।
जलता रहा अवाँसा सो कुछ शीतल इससे अंतस्तल भा ।।
आना अवशि कहा था सो सच जीवन पथ कर भल संबल भा ।
आये कई बार नहि कहके सुधि आतेहि प्राणतौ चल भा ।।
बड़े पुण्य थे बड़ी कृपा थी जो इस बार न किंचित छल भा ।
हम पावा सुख मिलन "शुक्ल" ओन बाभन जान नचायेन फल भा ।।

मणि ३७

महादेव आयेन ई भल भा ।।

देख दशा दयनीय हमारी बन अधीर धायेन ई भल भा ।
बड़ी व्यथा थी बढ़ी बेगि ही आ उर उमगायेन ई भल भा ।।
थी हो चुकी समाप्त जीवनी शक्ति सो उपजायेन ई भल भा ।
कौनौ और चहैया में नहिं जौ जिय अरुझायेन ई भल भा ।।
मरि जाइत तौ हत्या लागत जिअत हमैं पायेन ई भल भा ।
बड़े पाप से बचेन आपई तनिक तरस खायेन ई भल भा ।।
भरी चाह थी आह मिलन की नीके अघवायेन ई भल भा ।
"शुक्ल" सु हुलसायेन हिय भलकै हमके हरषायेन ई भल भा ।

मणि ३८

महादेव का जो बन जाता ।।

कहकर कौन बता सकता है जो जो वह बहार है पाता ।
सुख में सभी अलापें देखूँ बढ़े दुःख में भी वह गाता ।।
अपने संकट तृण सम उसको औरों को इससे है बचाता ।
फटके पास दीनता नहिं जी होते भी दरिद्र वह दाता ।।
ज्ञानी नहिं समझें सुरेश को मानी नहिं किंचित भी भ्राता ।
लेता नाम गुनावलि गाता रहता यूँ हर समय अघाता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुद मस्ती में मस्त सदा वह रमता प्रेम नशे में माता ।
जाता जब उस दिव्य धाम तब "शुक्ल" भला फिर क्यों कर आता ।।

मणि ३९

महादेव बिन प्रान न रैहैं ।।

इक दो दस की कथा कौन सी कोटि जतन किये जान न रैहैं ।
पाली पोसी बड़े प्यार से काया कोइ विधान न रैहैं ।।
भोग राग सब परें भार में इन्द्रिय सुख का भान न रैहैं ।
रहता था हर समय हर्षमय मन का वह उमगान न रैहैं ।।
रहती थीं खेलती अधर पर मुख की मृदु मुसकान न रैहैं ।
गये सँजोये जो जुग जुग से उर के वे अरमान न रैहैं ।।
तुच्छ समझते थे त्रिभुवन को वह आनन्द अघान न रैहैं ।
विरह दाह हो दग्ध देह यह "शुक्ल" मिला वरदान न रैहैं ।।

मणि ४०

महादेव कहँ रह गये अटके ।।

कबसे तुम्हें बुलाता हूँ मैं तुम फिरते हो छटके छटके ।
वैसे बात आपकी हमको रंचक मात्र न कोई खटके ।।
पर घुस जाते जब परोस में तब मैं रह जाता हूँ कटके ।
भूले नहीं अभी हैं क्योंकि ऐसे उदाहरन हैं टटके ।।
जाना कहीं निषेध नहीं यह खलता हम रह जाते लटके ।
झूठी बात बनाता मैं नहिं जानन हार आप घट घटके ।।
जीवन के दिन चंद शेष हैं ऐसा करो मजालूँ डटके ।
"शुक्ल" जुड़ाओ जल्द मेरा जी मेरे सीनेसे झट सटके ।।

मणि ४१

महादेव के पावा पंडित ।।

कैसे जैसे अंक रंक को भरै धनद हो धावा पंडित ।
आपन जानि आपसे सचमुच हम ई बात बतावा पंडित ।।
उनकर कृपा अहैतुकि हीतो यह दिन दिव्य दिखावा पंडित ।
दयामयी निजवृत्ति से प्रेरित हो इन दृष्टि फिरावा पंडित ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनायास अनुकम्पा करके विगरी बहुत बनावा पंडित ।
अचरज सा लगता लख जिसको अस शुभ साज सजावा पंडित ॥
विरले को अपनाते जैसा ऐसा मोहिं अपनावा पंडित ।
"शुक्ल" सहस विधि से जीवनधन जी भर हमहिं अघावा पंडित ॥

मणि ४२

महादेव के साथ साथ ही ॥ -
होता है व्यवहार आपना सब इनको लें साथ साथ ही ।
दल बटोर कर गया वहाँ तो लखा आपथे साथ साथ ही ॥
नजर बचा चुपके से सरका मगर रहे ये साथ साथ ही ।
पड़ी नाव मझधार विकल मैं लखूँ रहे खे साथ साथ ही ॥
पीऊँ पय या भंग देखता हूँ पीते ये साथ साथ ही ।
व्यंजन बना सुस्वादु जीमता रहे आप जे साथ साथ ही ॥
कमरा बँद किये मैं सोऊँ सोते ये हे साथ साथ ही ।
"शुक्ल" न मानें किसी तरह भी आप रहे बे साथ साथ ही ॥

मणि ४३

महादेव ही ब्रह्म कहाते ॥
यही सगुण साकार और हैं निर्गुण निराकार कहलाते ।
चारों वेद उपनिषद सारे वर्णन इनका कर न अघाते ॥
कोई शास्त्र यथार्थ निरूपण किसी तरह भी कर नहिं पाते ।
नेति नेति करने लगते हैं बेचारे जब हैं थक जाते ॥
ज्योतिर्मय विग्रह इनका है मूर्तिमान जो बने दिखाते ।
मनवाणी से परे योगिजन अनुभवगम्य इन्हें बतलाते ॥
रहते सदा सन्निकट उनके सानुराग जो गुणगन गाते ।
स्वाश्रित जन पर "शुक्ल" सत्य ही लिये चारिफल रहें लुटाते ॥

मणि ४४

महादेव तज ब्रह्म बौरहा ॥
हो सकता है और भला को वह अनादि अज ब्रह्म बौरहा ।
देता जो संकल्प मात्र से सकल सृष्टिसज ब्रह्म बौरहा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया से निज लगे भासने सुर नर गो गज ब्रह्म बौरहा ।
गर्वोन्नत शिर ऊँचा कर औ चले मार्ग लज ब्रह्म बौरहा ।।
अपराधी करबद्ध दिखे वह न्याय कार जज ब्रह्म बौरहा ।
ब्रह्मा से लेकर इस जग में व्यापक कण रज ब्रह्म बौरहा ।।
एक छत्र साम्राज्य भोगता फहराता ध्वज ब्रह्म बौरहा ।
स्वयं ब्रह्म हो करके ही तू "शुक्ल" सदा भज ब्रह्म बौरहा ।।

मणि ४५

महादेव तजि कहाँ जा रहे ।।
है भी ठौर कहीं दुनिया में यहाँ वहाँ क्यों नहक धा रहे ।
इस आवा जाही में केवल तुम तो हो संताप पा रहे ।।
भवसागर में परे अरे तुम गोते पर गोतेहि खा रहे ।
रोते ही देखूँ बहुधा यदि गाते तो बेसुरा गा रहे ।।
होते सजग पता नहिं फिर क्यों रोज जुल्म पर जुल्म ढा रहे ।
हो जाता कल्याण सहज ही देव देव की शरण आ रहे ।।
कहते तो तवास्मि प्रभुवर को मेरे वे भलि-भाँति भा रहे ।
"शुक्ल" बने निर्द्वन्द विचरते शोक मोह संदेह ना रहे ।।

मणि ४६

महादेव तुम भूले रहते ।।
छनभर के भी लिये कभी भी तुम्हें भूलना हम नहिं चहते ।
भलीभाँति जानते आप हैं हम इसमें कुछ झूठ न कहते ।।
पर दुर्दैववशात् भूलकर तुमको कुबुधि कुपथ हम गहते ।
फलस्वरूप देखता देववर खुब त्रिताप दावानल दहते ।।
तुमसे दूर जानकरके ही षड्रिपु भी भलि भाँति हैं डहते ।
सुर तन धरूँ असुरतन धारूँ नरतन धारि शांति नहिं लहते ।।
परीशान हो गया मानिये विविध यातना सहते सहते ।
"शुक्ल" वहा भवधार यार बहु अब तव कृपा सुखद नद बहते ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४७

महादेव मय जीवन बन गया ।।

बड़ी सरलता से सहजहि में मैं जो प्रेम सुधारस सन गया ।
यह संभव तब हुआ जो मुझपर बरबस बरस कृपाघन घन गया ।।
अनायाश कस कहूँ क्या कहूँ मैं जो यार गनों में गन गया ।
सेवा पूजा किये बिना ही जी से जान लिया मैं जन गया ।।
होना विमुख कभी नहिं इनसे इनके ठान ठनाये ठन गया ।
इन प्रियलोक प्रिय कामों का फन वन सफल फनाये फन गया ।।
करते हर छन याद ये इससे याद से रिक्त न कोई छन गया ।
"शुक्ल" बनाये जीवनधन के बन निश्चित यह जीवनधन गया ।।

मणि ४८

महादेव मय संसृति सारी ।।

जैसे कंचन मय कंचन के कंकन कुंडल झुमका बारी ।
जैसे बने धातुके हंडा गगरा बटुआ लोटा थारी ।।
यथा तंतुमय कुरता टोपी लँहगा ओढ़नी धोती सारी ।
मृदमय जैसे घड़ा कसोरा गगरी पुरवा परई हाँरी ।।
तैसे इनमय समझो सचमुच मूर्ति दिखे जो गोरी कारी ।
इनसे व्याप्त समझ संस्तुति को इनमय समझो सारी गारी ।।
जितनी हो अनुकूल उतन ही हो प्रतिकूल परिस्थिति प्यारी ।
वस्तु एक मम भाव भेद से "शुक्ल" दीखती न्यारी न्यारी ।।

मणि ४९

महादेव का प्यार प्राप्त है ।।

अनधिकारि होते भी हमको इनका दिली दुलार प्राप्त है ।
गनती में मैं नहीं किसी भी पर गन सा सत्कार प्राप्त है ।।
बिना किये किंचित सेवा भी इनका कोषागार प्राप्त है ।
अनुकंपा अहैतुकी से सच बेश्रम ही फलचार प्राप्त है ।।
उर अंतर में शुचि सद्गुण का विधिवत् बसा बजार प्राप्त है ।
जितना कोई सोचे समझे उससे गुना हजार प्राप्त है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भव सरिता की सैर स्वजन सँग करूँ सो सभी सुतार प्राप्त है ।
किन-किन गिन-गिन "शुक्ल" बताऊँ दिन दिन नई बहार प्राप्त है ।।

मणि ५०

महादेव बिन जीता कैसे ।।

जीवन मूल बिना जीवन को रखता मेरे मीता कैसे ।
रख पाता है दिवस सुरक्षित कोई भी रवि रीता कैसे ।।
वाक्शक्ति विरहित हो करके गाता है तू गीता कैसे ।
इन बिन इस जीवन को रखते होता नहिं तू भीता कैसे ।।
कैसे खाता खाद्य कोई भी पेय कोई तू पीता कैसे ।
दुनिया के कामों को बतला है करता मन चीता कैसे ।।
तन सुख धन सुख जन सुख कह तो लगता तुझे न तीता कैसे ।
जीता है जी लेय "शुक्ल" पर हाथ राम दिन बीता कैसे ।।

मणि ५१

महादेव को जानो मानो ।।

भरकर परम हितैषि भाव यह कहता हूँ उर आनो मानो ।
जानूँगा जैसे भी होगा अभी ठान यह ठानो मानो ।।
जानकार को खोज कपट तजि सेवो अति सनमानो मानो ।
पूछो पगपरि परि विनम्र बन संशय वृत्ति बिहानो मानो ।।
श्रद्धा संयुत सुनो कहें सो समझो वेद प्रमानो मानो ।
प्रभु से करो प्रार्थना उनकी कीरति कलित बखानो मानो ।।
सुमिरो नाम मनहि मन अहनिशि अति उमंग उमगानो मानो ।
"शुक्ल" सुलभ इस रीति सभी को प्राणेश्वर को पानो मानो ।।

मणि ५२

महादेव के जनब्यू तब तौ ।।

जनब्यू जौ नहि तौ तू बहिनी नहिं ओनके पहिचनब्यू तब तौ ।
पहिचनब्यू नहिं जौ तू ओनके सग आपन नहिं मनब्यू तब तौ ।।
सग आपन बिन माने जी से हरगिज नहिं सनमनब्यू तब तौ ।
जनब्यू जब ओनके मोर दीदी सग से सग निज गनब्यू तब तौ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओन तौ हथेन तोहार सदा से तोहऊ ओनकर बनब्यू तब तौ ।
होई अलग न कबहीं अेनसे इहै ठान दिल ठनब्यू तब तौ ॥
जौने में खुश होंय प्राणधन फनवन उहै तू फनब्यू तब तौ ।
"शुक्ल" न तन सुधि रहै तनिक अस प्रेम सुधारस सनब्यू तब तौ ॥

मणि ५३

महादेव कै सब निक लागैं ॥

निक लगते हैं आदि काल से ऐसा नहिं की अब निक लागैं ।
लगते सो लगते ही आते यह भी नहिं जब कब निक लागैं ॥
लागैं सो लागै अस लागैं यह समझो ई जब निक लागैं ।
ऐसी है विशेषता इनमें सचमानो की तब निक लागैं ॥
चन्द्र वदन मुसकान मनोहर ललित लाल भल लब निक लागैं ।
एक एक को कहें कहाँतक नखशिख इनकर छब निक लागैं ॥
बोलनि मिलनि बैपरनि विधि विधि इनकर हर इक ढब निक लागैं ।
निक लागैं नहिं और विश्व के "शुक्ल" ई ऐसन रब निक लागैं ॥

मणि ५४

महादेव से महादेव हैं ॥

इस दुनिया में अपने जैसे महादेव थे महादेव हैं ।
जिसके कोई नहीं विश्वमें समझो उसके महादेव हैं ॥
देता नहिं कोइ टूक उसे ही ऋद्धि रहे दे महादेव हैं ।
नैया हो मझधार स्वजन की लखो रहे खे महादेव हैं ॥
जिसके ये अवलम्ब कमठ से रहे उसे से महादेव हैं ।
स्वाश्रित की बिगरी बहु जुग की बेगि बनाते महादेव हैं ॥
प्रेमीजन को प्रेमामृत से सतत रहे भे महादेव हैं ।
"शुक्ल" मेरे बस एक लोकत्रय में सचमुच ये महादेव हैं ॥

मणि ५५

महादेव को पाकर खुश हूँ ॥

खूब भटकने बाद यार अब दर पर इनके आकर खुश हूँ ।
जाना कहीं चाहता मैं नहिं शरण में इनकी जाकर खुश हूँ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या ? तुम कौन पूछनेवाले दे देते सो खाकर खुश हूँ ।
लाना चहूँ न वस्तु व्यक्ति कोइ दिल में इनको लाकर खुश हूँ ।।
तुलती नहीं तिलोक संपदा इन वैभव उर छाकर खुश हूँ ।
गाना और न चाहूँ कुछ भी गुनगन इनके गाकर खुश हूँ ।।
गनूँ न कुछ इन्द्रत्व विधित्वहिं बनकर इनका चाकर खुश हूँ ।
नाना "शुक्ल" न शेष और को इन चरनन सिर नाकर खुश हूँ ।।

मणि ५६

महादेव में ही बस रस है ।।

होता है अन्यत्र बोध जो सो समझो केवल भ्रम बस है ।
उदाहरण के लिये बताता कुछ तुमको की वह सब कस है ।।
मृग मरीचिका में दिखता है झूठे ही जैसे जल तस है ।
जाती नहीं तृषा किंचित् भी मृग तलाश में जाता चस है ।।
वस्तु व्यक्ति में होनेवाला रसाभास बिलकुल ही अस है ।
होने से अनित्य कुछ घटिपल या कोई रहता दिन दस है ।।
ये रसमय ही हैं रस से ही इनका ओतप्रोत नस नस है ।
संबंधित हो रसागार से "शुक्ल" सभी जाता रस लस है ।।

मणि ५७

महादेव बिन रस कहँ पैहौ ।।

मेरी बात उपेक्षित करके जौ तुम जहँ तहँ खोजन जैहौ ।
तौ सचमानो मेरे प्रियवर हकनाहक बस ठोकर खैहौ ।।
रस की आश लगाये केवल विवश बने दश हूँ दिशि धैहौ ।
इन सागर से रस तुमको उतना मिलि है जितना चैहौ ।।
आओ तो सन्निकट आपके मैं कहता सो तुमहीं कैहौ ।
पा पाकर रस पुलकि हुलसि हिय इनकी गुनद गुनावलि गैहौ ।।
आभारी बनकरके इनके प्रतिछन चरन शीश नत नैहौ ।
"शुक्ल" मुक्ति ठुकराय मजे में परे शरण में इनके रैहौ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५८

महादेव से ले रस जी भर ॥

यह क्या लगे पूछने मुझसे की लेऊँ मैं जी कस जी भर ।
भरा अगाध सिन्धु लहराता ले जितना चाहे जस जी भर ॥
जैसे भी भरजाय तेरा जी निसंकोच होकर तस जी भर ।
रह जावे नहिं पोल जरा भी ठोंक ठोंक कर खुब ठस जी भर ॥
कमी वहाँ जब है ही कुछ नहिं एक नहीं तबले दस जी भर ।
भरनेवाले भरे परे हैं भरी भीर में भी धस जी भर ॥
भरजावे जो जनम-जनम को अवसर चूक नहीं अस जी भर ।
"शुक्ल" बला रोये अब तेरी तू हर हाल सदा हँस जी भर ॥

मणि ५९

महादेव में अस रस है हो ॥

खुद क्यों नहीं देखते घुसकर पूछ रहे जो कस रस है हो ।
कौन भला बतला सकता है यथातथ्य की जस रस है हो ॥
कर नहिं सके कल्पना कोई सचमानो यह तस रस है हो ।
अनुमाने अनुमानी जितना उससे गुनित सहस रस है हो ॥
मूर्तिमान रस हैं ही ये तो देखो तो नस नस रस है हो ।
है ही और नहीं कुछ इनमें बाहर भीतर बस रस है हो ॥
ले लेते रस रसिक पूर्णतः भरा पूर्णतः रस रस है हो ॥
बने "शुक्ल" सम्पर्की इनका रसमय इनसे लस रस है हो ॥

मणि ६०

महादेव में घुस रस पीता ॥

बतलाने में मैं समर्थ नहिं यथातथ्य तुमसे कस पीता ।
जैसे आप पिलाना चाहें थोड़े में समझो तस पीता ॥
एकबार दो बार नहीं जी अवसर मिले बार दस पीता ।
रह जाती है जगह शेष नहिं अपने जान हूँ मैं अस पीता ॥
पर मन भरता नहिं पीने से मैं भरसक भर नस नस पीता ।
बढ़ती जाय पिपासा प्रतिछन सचमानो मैं जस जस पीता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोनी सूरत बना कभी नहिं पीता तभो विहँस हँस पीता ।
चाहूँ कथा विसर्जन सबकर "शुक्ल" रहूँ केवल बस पीता ।।

मणि ६१

महादेव की रसमयी बानी ।।

सुन पाओ तो जानो प्रियवर निज कानों ई रसमयी बानी ।
लगती है श्रवणों में जाकर सुधा घोल सी रसमयी बानी ।।
कर्ण छिद्र में घुसते ही बस मोह लेंय जी रसमयी बानी ।
हृदयवान हर इक का हठकर हरलेती ही रसमयी बानी ।।
कोकिल कोकिलकंठ अन्य को इसने ही दी रसमयी बानी ।
इन्हीं दिनों ऐसा नहिं इनकी सब दिन से थी रसमयी बानी ।।
मतवाला बन झूमा करता मैं मादक पी रसमयी बानी ।
"शुक्ल" मेरी सुधि-बुधि को सत्वर अपहृत करली रसमयी बानी ।।

मणि ६२

महादेव में हे अस बा रस ।।

कौनी तरह बताई तोहके अब ई यार मेरे कस बा रस ।
लेनेवाला भी नित रस का कह नहिं सकता है जस बा रस ।।
कितना भी कोइ लेवे लूटे परता पोल नहीं ठस बा रस ।
जितना कोइ अन्दाज लगावे उससे गुना सहस दस बा रस ।।
तुलना में तुलसके सुधा नहिं सचमानों मित्रों तस बा रस ।
इससे ले उस छोर विश्व में फैलाये इनकर यश बा रस ।
पर अनुकम्पा बिन किंचित् भी पा जावे के कर बस बा रस ।
"शुक्ल" प्रफुल्लित किये हमें है परम कृपा नस नस धस बा रस ।।

मणि ६३

महादेव के नाम की जय-जय ।।

जन हितकारी होता केवल बोलो इनके काम की जय-जय ।
बसते हैं विश्वेश्वर जिसमें कहते सब उस गाम की जय-जय ।।
छनभर भी विश्राम करें जहँ मै कहता उस ठाम की जय जय ।
सेवा में इनके हो समर्पंग सत्पथ आये दाम की जय जय ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती अर्चा चर्चा इनकी उसी सुबह उस शाम की जय जय ।
तन भूले मन करता चिन्तन उस घटि पल उस याम की जय जय ॥
जाकर जन जहँ से नहिं आते अविनाशी उस धाम की जय जय ।
"शुक्ल" शरण स्वीकार किया निज कहता अपने राम की जय जय ।

मणि ६४

महादेव से लाभ उठाओ ॥

भोली भली प्रकृति है इनकी केवल गाल बजाय रिझाओ ।
बड़े पते की बात बताता आओ सुनो मित्र मम आओ ॥
तुम पर तुष्ट विशेष हैं तिसमें मैं कहता उसको पतिआओ ।
पड़ी मुझे क्या झूठ कहूँ जो नहिं प्रतीति हो तो हट जाओ ॥
करना है कल्याण जो अपना दृढ़ विश्वास बात पर लाओ ।
इनके बनकरके ततछन ही इनको अपना अभी बनाओ ॥
नाचो तुरत इशारे इनके मनमाना फिर इन्हें नचाओ ।
लह पाता जो कभी किसीका अपना "शुक्ल" लहान लहाओ ॥

मणि ६५

महादेव सुधि आवत हरसी ॥

आई सुधिकी अन्तःपुर में मानों सुधाधार सी बरसी ।
लगता है सन्निकट नयन के तीनि तिलोक संपदा दरसी ॥
पीछे पड़ी दीनता सारी ततछन गई हीनता टर सी ।
आती नहीं बुलाये से भी जीको लगी बला गई डर सी ॥
इन्द्रिय सुख की साध सिरानी जरसे गई वासना जर सी ।
शीतलता छाई उर अन्तर ही तल मनहुँ शिला हिम परसी ॥
बे प्रयास अनयाश लायदी चारि पदारथ कर पर धर सी ।
सर्व सुलभ जो "शुक्ल" सर्वथा हाय राम ते का हम तरसी ॥

मणि ६६

महादेव इन रूप में दीखें ॥

अच्छा सुनो बताता हूँ कुछ अब तुमको किन रूप में दीखें ।
वैसे मस्त मूर्ति सब इनकी पर बहुधा खिनरूप में दीखें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फरहारी बाबा भी ये ही निश्चय ये घिन रूप में दीखें ।
त्यागी परम विरागी मुझसे विषय भोग लिन रूप में दीखें ।।
महामहन्त, महाजन ये ही यही महाहिन रूप में दीखें ।
मगरमच्छ, घड़ियाल व कच्छप ये मेढ़क मिन रूप में दीखें ।।
कारी अँधियारी कि चाँदनी रात और दिन रूप में दीखें ।
कल्प और युग, वर्ष, मास, तिथि, ये ही घटि छिन रूप में दीखें ।।
कहकर कौन बतावे कितने जब ये अनगिन रूप में दीखें ।
पहचाने पहचनवा दें तो जब चाहे जिन रूप में दीखें ।।
मेरी मत पूछो मुझको तो मैं चाहूँ तिन रूप में दीखें ।
"शुक्ल" सभी हैं रूप इन्हींका यही नाम बिन रूप में दीखें ।।

मणि ६७

महादेव वट तरु वर बैठे ।।

स्वस्वरूप अनुभव करनेको आसन सुदृढ़ लगाकर बैठे ।
पुजवाते पद सब समर्थ से अखिलेश्वर वर निज घर बैठे ।।
करते अगनित विश्व व्यवस्था अति विचित्र सुन्दर दर बैठे ।
ढर देते अनयाश "शुक्ल" पर अहनिशि हिय विहरें हर बैठे ।।

मणि ६८

महादेव के गुन जब जनि हौ ।।

कहना नहिं होगा बेदाम के तब गुलाम तुम इनके बनि हौ ।
बना करे कोई कितना भी इन समक्ष तुम किनका गनिहौ ।।
होवें नहिं विरक्त इनसे हम किसी जन्म उर ठानई ठनि हौ ।
सब बकवास बन्द कर केवल अहनिशि इनकी कीरति भनि हौ ।।
इनके प्रिय जो कार्य उन्हें तजि कौनौ और न फनवन फनि हौ ।
तकि हौ ओर न और फूटे दृग इनका परम इष्ट मन मनि हौ ।।
सुधि न रहै परलोक लोक की इनके अस सनेह रस सनि हौ ।
धनि होइ जै हौ "शुक्ल" आप औ कहत इन्हैं रहि हौ धनि-धनि हौ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६९

महादेव अब सनमुख आओ ।।

हम निर्लज्ज बने तुम्हरे हित तुम हमसे अब तलक लजाओ ।
अरे यार बेकार हो लादें सब संकोच को दूर भगाओ ॥
हममें तुममें भेद कहाँ है जो हकनाहक ही शरमाओ ।
पर्दा होता सदा गैर से अब भी तो बे पर्द हो जाओ ॥
नाहक नहिं अब नादानी कर मजा किरकिरा करो कराओ ।
थोड़े दिन की और जिन्दगी लुत्फ दो खुद तुम लुत्फ उठाओ ॥
क्यों जाने दो मुझे लिये ही क्यों तुम साथ लिये ही जाओ ।
"शुक्ल" न छनभर देर करो अब आओ हँस-हँस कंठ लगाओ ॥

मणि ७०

महादेव चरणों पर लोटी ।।

यह तो सभी जानते ही हैं मेरी बुद्धि महा है खोटी ।
नाचा करती थिरक-थिरक कर चढ़ उच्छृंखलता की चोटी ॥
समझावे कोइ लाख समझती एक नहीं मेरी मति मोटी ।
अपने सन्मुख आप समझिये समझे अकल सभी की छोटी ॥
ब्रह्मा की ब्रह्माणी की भी धी को नहिं समझे निज जोटी ।
थोड़ा ही होगा सबका सब अपनी बात लें जितना ओटी ॥
पर कहता हूँ धन्य उसे मैं मुझसों को जो देता रोटी ॥
"शुक्ल" सराहूँ सहस मुखों से मेरी लाल कर दिया गोटी ॥

मणि ७१

महादेव को कस खुश करता ।।

कहता हूँ समास में तुमसे सुनो गौर से जस खुश करता ।
खुश मिजाज होने से इनको मैं भि खुशी से लस खुश करता ॥
सरल हंसोर स्वभाव है इनका मैं भी विहँस-विहँस खुश करता ।
जैसे भी खुश होंय देववर शत प्रयत्न कर तस खुश करता ॥
स्वेच्छाचारी इन्हें नहीं प्रिय मैं निज मन कर वश खुश करता ।
मनमाना दौड़ें इन्द्रिय नहिं स्वाधिकार कर दश खुश करता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परमानन्द प्रदाता प्रतिदिन गाकर इनका यश खुश करता ।
हो श्रद्धा संयुक्त "शुक्ल" प्रिय प्रभु चरणों शिर घस खुश करता ।।

मणि ७२

महादेव सँग खाना खाता ।।

भोंड़ा-भला-सुरीला-बेसुर संग इन्हें ले गाना गाता ।
यहाँ वहाँ ले साथ इन्हीं को जहाँ भी होता जाना जाता ।।
रुकूँ कहीं इनको लेकर ही इनको ले जब आना आता ।
इनकी अनरुचि से ही अनरुचि इनके भाये भाना भाता ।।
इनसे ही सम्बन्ध सकल विधि इनको लेकर नाना नाता ।
है ही और कौन जो देता इनसे ही जो पाना पाता ।।
है भी नहिं कोइ रुचता भी बस इनके पद शिर नाना नाता ।
"शुक्ल" मोटाँय जिऐं सुख संयुत सपरिवार मम दाना दाता ।।

मणि ७३

महादेव मन शान्त दीखता ।।

होने से मन शान्त देववर स्वाभाविक तन शान्त दीखता ।
तन होने से शान्त तन-स्थित सब हृषीकगन शान्त दीखता ।।
आता जो सम्पर्क निजीमें सभी जगत जन शान्त दीखता ।
कोलाहल से पूर्ण विश्वका मुझे सभी छन शान्त दीखता ।।
गर्जन तर्जन करता प्रतिछन प्रलयान्तक घन शान्त दीखता ।
दावानल से दग्ध हो रहा मुझे महाबन शान्त दीखता ।।
होता नर संहार दो तरफा जिसमें वह रन शान्त दीखता ।
"शुक्ल" शान्ति मन की मिलते ही जग का कन-कन शान्त दीखता ।।

मणि ७४

महादेव गुन गाओ साथी ।।

सबकी सुनते हो मेरी भी सुनो यहाँ तो आओ साथी ।
बतलाता दिलचस्प बात इक गौर जरा तुम लाओ साथी ।।
महादेव के नाम-गुनों को गाकर मन बहलाओ साथी ।
मनरञ्जन परलोक सँवारन निक नुस्खा अपनाओ साथी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और मिलें अनुरागी जन जो सादर उन्हें बुलाओ साथी।
अपने ढँग का अजब-अनोखा मेला मञ्जु लगाओ साथी॥
यूँ गुन गाते-गाते तत् पद को पहुँचो पहुँचाओ साथी।
"शुक्ल" सुदुर्लभ योगिन को सो ललित लहान लहाओ साथी॥

मणि ७५

महादेव के हम कहलाते॥
जब विशेष चाहें विशेष तब कम चाहें तब कम कहलाते।
बना दें तो बेगम बन जाऊँ नतरु ग्रसे हम गम कहलाते॥
भर दें दया दयार्द्र हो जाऊँ क्रोधित हो हम यम कहलाते।
कर दें तो धर्मावतार हम नहिं तो अधमाधम कहलाते॥
दे दें दिव्य प्रकाश तो ज्ञानी मूर्तिमान नहिं तम कहलाते।
नहिं चाहें डूबूँ उतराऊँ रखें दृष्टि के सम कहलाते॥
निर्मम कर दें कुछ मेरा नहिं वर्ना धन जन मम कहलाते।
बकूँ "शुक्ल" बकवाते यह-वह कहूँ जो हर-हर बम कहलाते॥

मणि ७६

महादेव गुन गावै लागौ॥
सुनी-सुनाई, सोची-समझी कीरति कलित सुनावै लागौ।
टूटी फूटी निज भाषा में जस-त्तस गाल बजावै लागौ॥
कहते-सुनते सुयश देव के चित विशेष उमगावै लागौ।
लोक जनों का नहिं इनका ही वर वैभव हिय छावैलागौ॥
धन से जन से मन बटोर कर उर उनसे उरझावै लागौ।
भले भाव भर लेव हृदय में बस उनका तुम भावै लागौ॥
तब तुम देखौ तौ उनसे फिर नित बहार नइ पावै लागौ।
"शुक्ल" वनावै लागौ निज पर पदपंकज शिर नावै लागौ॥

मणि ७७

महादेव मुँह मत लटकाओ॥
अच्छा कसा हुआ है डमरू देखो जरा तो हाथ लगाओ।
कर धरते ही लगे बाजने जी भर डिमिक-डिमिक डिमकाओ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमको इसका शौक है तो लो चाहे जितना आज बजाओ ।
इसके बड़े गुनी हौ तुम तो अनुपम अपनी कला दिखाओ ।।
इससे ही कर सूक्ष्म इशारे सब समर्थ को आप नचाओ ।
विद्वज्जन जानते बजाकर इसको आप शास्त्र प्रकटाओ ।।
बनने को तैयार हुँ मैं जो मुझको चेला आप बनाओ ।
मिलना गुरू न "शुक्ल" आपसा मुझसा चेला तुम कहँ पाओ ।।

मणि ७८

महादेव मय हय यह दुनिया ।।
वे ही बाभन-बिस्नू बनते उनको जानो जुलहा-धुनिया ।
वे ही बने बनारस के हैं अति प्रसिद्ध वह खटकिन चुनिया ।।
वे ही बीर अहीर अनोखे वे ही नीक कहारन पुनिया ।
वे ही बने बिसेसरवारी वे झंझट ही नाउन झुनिया ।।
वे ही मस्त मोतिया कुत्ता वे ही प्यारी बिल्ली मुनिया ।
समझो उनके रूप "शुक्ल" सब जो दीखें गुनिया निरगुनिया ।।

मणि ७९

महादेव सुमिरे सुख उपजे ।।
देव देव की यत्किंचित् भी सेवा टहल करे सुख उपजे ।
इनका चढ़ा प्रसाद मात्र भल सादर डाल गरे सुख उपजे ।।
इनके अप्रिय कार्य मात्र से दृढ़ता सहित टरे सुख उपजे ।
दीन हीन कोई जग जन पर होकर द्रवित ढरे सुख उपजे ।।
निरालम्ब बन विश्व जनों से इनके गरे परे सुख उपजे ।
अनुपस्थिति अनुभव करि प्रियकी इनके विरह जरे सुख उपजे ।।
कर-कर इनको याद अहर्निशि झर-झर नयन झरे सुख उपजे ।
शत प्रयत्न करके उर अंतर भलि भव भक्ति भरे सुख उपजे ।।
पुलकि-पुलकि जिय हुलसि-हुलसि हिय प्रभुपद शीशधरेसुख उपजे ।
इकले तरना "शुक्ल" भला क्या, साथिन साथ तरे सुख उपजे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८०

महादेव को क्या न कहा हम ॥
आओ बैठो बड़े प्यार से उठ बस यहाँ से जा न कहा हम ।
भोजन करिये के साथहि क्या डाँट-डपट कर खा न कहा हम ॥
कुछ सुनाइये कृपया औ क्या बड़े ताव से गा न कहा हम ।
कहाँ गये भैयाजी आओ, कहाँ गया झट आ न कहा हम ॥
ले आना नाश्ता जरा कुछ, ले आ चटपट चा न कहा हम ।
कहाँ जा रहे भला धूप में, जाकर छानी छा न कहा हम ॥
प्रेमिल के साथहि कठोर क्या प्राणेश्वर को हा न कहा हम ।
नाया शिर शतवार "शुक्ल" क्या मम चरणों शिर ना न कहा हम ॥

मणि ८१

महादेव का नाता सुन्दर ॥
हम तो इन्हें बनाते बेटा, बाप, ज्येष्ठ, लघु भ्राता सुन्दर ।
बन्धनकारी है जग जन का खोलूँ इनसे खाता सुन्दर ॥
गुनकारी, गुनमय, गुननिधि का गुनगन में मुद गाता सुन्दर ।
तृण समान गन आन स्व उर बस वैभव इनका छाता सुन्दर ॥
जाना नहीं सुहाय सत्यपुर शरण इन्हीं के जाता सुन्दर ।
बन करके इनका बस केवल, मैं इनको हूँ भाता सुन्दर ॥
अनुकम्पा अहैतुकी प्रेषित फलाँ-फलाँ फल पाता सुन्दर ।
"शुक्ल" अहर्निशि रहूँ इन्हीं के समुद प्रेम मद माता सुन्दर ॥

मणि ८२

महादेव चरणों पर लुटता ॥
अखिल विश्व का विस्तृत वैभव ललित लाल वरनों पर लुटता ।
आकर्षक पदार्थ सब जग का इन हिय के हरनों पर लुटता ॥
सागर सुधा नहान-निवारक इन जिय के जरनों पर लुटता ।
तंत्र मंत्र साधन, ग्रह-पूजा विधि कुलेख टरनों पर लुटता ॥
कामदता सब कामदतरु की झट मनोर्थ झरनों पर लुटता ।
वरदातापन सब देवों का सुफल चारि फरनों पर लुटता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोलापन सब ही भोला का इन अवढर ढरनों पर लुटता ।
ब्रह्मानन्द महान "शुक्ल" सच महामोद करनों पर लुटता ॥

मणि ८३

महादेव के चरन अनोखे ॥

सुन्दरता की सींव कमल की कोमलता रद करन अनोखे ।
लखत लगत ललचाय अधिक मन ललित लाल वर वरन अनोखे ॥
शुचि सुस्पर्श सुहावन शीतल मेटत जन जिय जरन अनोखे ।
अनायाश ढर जात दास पर हैं ये अवढर ढरन अनोखे ॥
दुख-दारिद्र दोष दारुण दल दुरित आदि द्रुत दरन अनोखे ।
रिद्धि-सिद्धि सौभाग्य सुकृत शुभ भक्त भवन भल भरन अनोखे ॥
आश्रित नर के लिये आशुहीं चारु चारि फल फरन अनोखे ।
मेरे सब विधि सरन "शुक्ल" सच मेरे हिय के हरन अनोखे ॥

मणि ८४

महादेव के चरन परेंगे ॥

लेना देना कुछ नहिं उनसे करवावें सो करम करेंगे ।
जिसमें करें नियुक्त होंयगे, टारे उससे तुरत टरेंगे ॥
सद्भावों से शून्य हृदय मम, भरवावें ले खूब भरेंगे ।
डरना क्या दूतों से यम से इनसे इनके जनसे डरेंगे ॥
बनकर पाला साँड़ आपका जहाँ चरावें तहाँ चरेंगे ।
विहरेंगे कैलास कहेंगे भेजेंगे जा नरक जरेंगे ॥
कर देंगे जो हैं हो जावै वर्ना योनि-कुयोनि धरेंगे ।
मिलें तो मिलनानन्द "शुक्ल" लें नहिं तो करते याद मरेंगे ॥

मणि ८५

महादेव आवेंगे जी हाँ ॥

अति प्रेमाकुल हो करके बस जब हम गुहरावेंगे जी हाँ ।
आतुरता हममें हो उतनी आतुरता लावेंगे जी हाँ ॥
अपनाया कितनों को वैसे हमको अपनावेंगे जी हाँ ।
यदि हम चाहेंगे औरोंसे बढ़कर भी भावेंगे जी हाँ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसा पाया हो न प्यार कोइ वैसा हम पावेंगे जी हाँ।
लख मेरा सौभाग्य लोकपति-दिगपति ललचावेंगे जी हाँ॥
नित नवरस नित प्रति बहार नइ प्रियवर बरसावेंगे जी हाँ।
तरसावेंगे नहीं और अब "शुक्ल" सुहरषावेंगे जी हाँ॥

मणि ८६

महादेव गुन गाई केकर ?

सब विधि लखी बड़प्पन तुममें झूठहि करी बड़ाई केकर।
भरी परी नस-नस विशेषता तुममें उर बिच छाई केकर॥
बरनी आत्मविभोर होय अस उज्ज्वल कीरति पाई केकर।
जन हितकारी हों नहिं केवल तब करनी भल भाई केकर॥
दौड़े दीन गोहार सुनेको देई देव दोहाई केकर।
दाता कौन उदार आपसा दरवाजा खटकाई केकर॥
रक्षक कौन समर्थ स्वजन का और शरण अपनाई केकर।
"शुक्ल" सश्रद्ध हृदयकर संतत सुन्दर सुयश सुनाई केकर॥

मणि ८७

महादेव की रसमई बानी ॥

कहलाती रसमई जगत में सुनी गई हैं अस कई बानी।
रुचती होंगी औरों को पर मुझको लगती हैं गई बानी॥
एकाकी गुन प्रकट करें कुछ आते सम्मुख हों छई बानी।
माना कुछ विशेषता उनमें है तो इनकी ही दई बानी॥
आदिकाल से ही ऐसी है सीखी नहिं इनने नई बानी।
सुननेवाले भी कितनों की सचमानो ऐसी भई बानी॥
परते ही बस कर्ण-पुटों में मम मन मोहित कर लई बानी।
बरवस "शुक्ल" निकलता मुख से जुग-जुग जिये जगत जई बानी॥

मणि ८८

महादेव का बना लाड़ला ॥

साधारण सामान्य नहीं जी बना मैं इनका घना लाड़ला।
शायद कोई गना गया हो गया मैं जैसा गना लाड़ला॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुकम्पा अहैतुकी इनकी मुझे जन्मतः जना लाड़ला ।
उसमें कर अभिवृद्धि आप दी प्रेम भंग निज छना लाड़ला ।।
बना लिया अद्भुत अनुपम सा नेह सुधा में सना लाड़ला ।
महा-महा सौभाग्य "शुक्ल" का शत सहस्र में भना लाड़ला ।।

मणि ८९

महादेव भज अरे लाड़ला ।।
करतो चुका खूब निज मन का मैं कहता सो करे लाड़ला ।
टरा नहीं अबतक कुपंथ से अब जल्दी ही टरे लाड़ला ।।
सुख दे अधिकाधिक सबको ही दुख देते हिय डरे लाड़ला ।
हुई देव अनुकम्पा तुझपर नव साँचे झट ढरे लाड़ला ।।
शंभु प्रसाद प्राप्त करके बहु भले भाव उर भरे लाड़ला ।
पहुँचा दे सत्वर प्रभु पद तक शुभ सुपंथ वह धरे लाड़ला ।।
जरा बहुत ही तू त्रिताप से अब नाहक क्यूँ जरे लाड़ला ।
इकले तरने का मुँह काला कितनों को ले तरे लाड़ला ।।
दोनों हाथ लुटाते मोदक मंजु-मुदित मन मरे लाड़ला ।
"शुक्ल" सश्रद्ध हृदयकर सादर शिव चरणों पर परे लाड़ला ।।

मणि ९०

महादेव भज अरी लाड़ली ।।
करे भजन में जौन रुकावट सो कारन तज अरी लाड़ली ।
आत्म निरीक्षण करके हरदम बन अपना जज अरी लाड़ली ।।
होजा झट निर्दोष सर्वथा रहे न कुछ कज अरी लाड़ली ।
लोक निंद्य कामों को करते तू सदैव लज अरी लाड़ली ।।
बन जावे बेजोड़ विश्व में शुभ सद्गुण सज अरी लाड़ली ।
भू से ले द्यू लोक कीर्ति का फहरावे ध्वज अरी लाड़ली ।।
मनसा वाचा और कर्मणा देव देव यज अरी लाड़ली ।
"शुक्ल" सुलभ हो सहज सबहि शिर धर प्रभु पद रज अरी लाड़ली ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९१

महादेव सब कारन कारन ।।
बीज रूप ये अखिल सृष्टि के हैं परन्तु स्वयमेव अकारन ।
करना सृष्टि सविधि संरक्षण आये काल सकल संहारन ॥
यह नित का है खेल आपका नगर बसाय बहोरि उजारन ।
क्यों ? सकता को पूछ आपसे सकता है करि कौन निवारन ॥
अपराधिन अनन्त अनुकम्पा. करि अहैतुकी प्रतिदिन तारन ।
अमिट कुअंक निशंक लिखित विधि स्वजनन के निज करन सँवारन ॥
आश्रित नर की अवशि आशु ही अनगिन आई आपति टारन ।
"शुक्ल" सुधारन, मम हिय हारन, मन मन्दिर सानन्द विहारन ॥

मणि ९२

महादेव तोहके जौ पाई ।।
कौने मुँह, कौनी विधि से हम तबकै तोहसे बात बताई ।
तीनि तिलोक सम्पदा सचमुच हँसि हम कन्दुक सा ठुकराई ॥
पाकर तुम्हें झूठ नहिं तुम पर खुदकी खुदी तुरन्त लुटाई ।
देव-दनुज-नर-नाग-सिद्धगन करें भाग्य की मेरे बड़ाई ॥
जोगी-जती-तपस्वी-ग्यानी लख मेरा सौभाग्य सिहाई ।
पहुँचें झट कैलास आपके मेरे पूज्य पिता औ माई ॥
और मातृकुल-पितृकुलहु के ततछन तरें पितर समुदाई ।
जैसा हो न मनाया कोई मिलन महोत्सव मुदित मनाई ॥
उस दिन से ले जन्म-जन्म फिर बजतीं रहे अनन्द वधाई ।
लूटी सदा बहार "शुक्ल" सँग बैठे मुसरन ढोल बजाई ॥

मणि ९३

महादेव जी के ही बूते ।।
मेरे नैन तरेरे केवल चंचल काम विचारा मूते ।
जरा उठाया सीस क्रोधबस लगता हूँ बरसाने जूते ॥
लोभ-मोह-मद आदि दाँव पर आते ही जमीन हैं छूते ।
आते हैं भय खाते सनमुख सचमानो दहिजरा के पूते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पोता रहता हूँ अन्दर ही अन्दर हैं रस-बूंद जो चूते ।
माता उसी नशे में निशिदिन सुख की नींद "शुक्ल" यह सूते ॥

मणि ९४

महादेव यह प्यार तुम्हारा ॥

अनुकम्पा अहैतुकी से ही मिला ये दिली दुलार तुम्हारा ।
अहोभाग्य सूचक मेरा है बन पाया जो यार तुम्हारा ॥
भरा हुआ अत्यन्त प्रेम से होता हर व्यवहार तुम्हारा ।
मेरे परम हितों के हित ही होता है कुलकार तुम्हारा ॥
आदर और बढ़ाना मेरा होता बिदित बिचार तुम्हारा ।
प्राप्त हुआ सा लगता मुझको सचमुच कोषागार तुम्हारा ॥
प्रेमिल सुभग-सुखद मुझको प्रिय है शासन स्वीकार तुम्हारा ।
लोक और परलोक में मुझे एकमात्र आधार तुम्हारा ॥
आदिकाल से आदि देव है शिर सवार आभार तुम्हारा ।
मैं अपराधी कर नहिं पाता कुछ सेवा-सत्कार तुम्हारा ॥
गुनगन भी गाता गँवार नहिं हिय हरषित हियहार तुम्हारा ।
"शुक्ल" प्राप्त सद्भाव प्रतिक्षण होता प्राण अधार तुम्हारा ॥

मणि ९५

महादेव इक झलक दिखादो ॥

तरस रहा हूँ जुग-जुग से मैं प्रेमामृत निक नेक चिखादो ।
समित्पाणि हो शिष्य बना हूँ प्राप्त करी निज युक्ति सिखादो ॥
माँगूं तो पाऊँ न और बस मुझ बाभन को एक भिखादो ।
जन्म-जन्म दासता सुलभ हो "शुक्ल" शीश यह ईश लिखा दो ॥

मणि ९६

महादेव की रस भरी बानी ॥

सुनते सरस होय ततछन ही कैसा भी कोइ नीरस प्रानी ।
हो सकता नहिं किसी तरह से अमृत कभी भी इसकी शानी ॥
उपमा दी जा सकती किसकी है यह अनुपम सुख की खानी ।
मेरी तो सच मानो मित्रों श्रवणेन्द्रिय सुन इसे अघानी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनना और चाहती ही नहिं बानी अन्य अमिय रस सानी ।
लख ऐसी विशेषता सब ही जगजन इसे जगत-जयी जानी ॥
मानी विश्व प्रमुख बानी में सब प्रकार सादर सनमानी ।
"शुक्ल" सुनाओ सतत मुझे वह मुद दानी भोला वरदानी ॥

मणि ९७

महादेव बिन कुछ न सुहाता ॥

अहनिशि उनके ही अभाव में रहता मैं खिन कुछ न सुहाता ।
बड़े कष्ट से कटते हैं ये आह मेरे दिन कुछ न सुहाता ॥
दिवस बीतता युग सहस्र सम युग समान छिन कुछ न सुहाता ।
समझ सके वह व्यथा हमारी भोगा है जिन कुछ न सुहाता ॥
भुक्त भोगि जो प्रिय वियोग के अनुमानें तिन कुछ न सुहाता ।
भोग रोग से लगें लखत इन लगता है घिन कुछ न सुहाता ॥
इनकी जिकर-फिकर इनकी ही जो इनसे भिन कुछ न सुहाता ।
"शुक्ल" सुहावन आवन के वे रहा हूँ दिन गिन कुछ न सुहाता ॥

मणि ९८

महादेव अब जल्द बुलाओ ॥

अपनी व्यथा व्यथित करती नहिं व्यथितों को लख मैं घबराओ ।
जग की दशा देखते ही सब फिर कहते क्यों मुझे सुनाओ ॥
आघातिनी आपदाओं का क्यों मुझसे बरनन करवाओ ।
दुर्बल बाल अशिक्षित दीखत युवा उछृंखलता अपनाओ ॥
गृहासक्त बहु बृद्ध कुटुम्बी धन विहीन अति दीन दिखाओ ।
सधवा रुग्णा दुखी दीखतीं, विधवा नारि महादुख पाओ ॥
नौजवान-बूढ़ा बैठा है, बाप-पुत्र परलोक सिधाओ ।
जीवन करो समाप्त "शुक्ल" या विश्व बीच सुख शांति भराओ ॥

मणि ९९

महादेव क्यों नहीं बुलाते ॥

कहा आपसे बहुत मगर जब किसी तरह नहिं आप हैं आते ।
तब फिर और कहें ही क्या हम खुद ही क्यों नहिं आप बताते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शर्मीला स्वभाव है शायद इससे आने में शरमाते ।
हम निलज्ज को लाज कहाँ जी पहुँचूँ जरा इशारा पाते ।।
आने में है शर्म-बुलाने में भी आप जो हैं सकुचाते ।
तव तो मिलने के मुझको वे दिन नजदीक नहीं दिखलाते ।।
मैंने सोची युक्ति एक है आप भस्म निज अंग लगाते ।
विरह ज्वाल में जला देह निज "शुक्ल" लगाने योग्य बनाते ।।

मणि १००

महादेव से अव कल कहबै ।।

पहले भी कह चुका हूँ वैसे कल दिल खोलि भाँतिभल कहबै ।
कहा नहीं जा सकता कितना-हमसे बहुत हुआ छल कहबै ।।
कई बार आने की बातें कहकर आप गये टल कहबै ।
इंतजार में ही तुम्हरे सच मेरी उम्र गई ढल कहबै ।।
बिरह आपके ही में निशिदिन मैं बेतरह रहा जल कहबै ।
बढ़ी जात वेदना दिनों दिन जुग समबीत रहा पल कहबै ।।
आने सिवा आपके सत्वर और न कोई है हल कहबै ।
मर जो गये "शुक्ल" ऐसे ही बहुत बुरा होई फल कहबै ।।

मणि १०१

महादेव रस घोलो पीओ ।।

भरा हुआ घट में ही तुम्हरे झट ढक्कन को खोलो पीओ ।
मिलता नहीं पास में तो कुछ यहाँ वहाँ भी डोलो पीओ ।।
सस्ता ही समझो मैं कहता शिर देकर भी मोलो पीओ ।
बेतादात पिओ फिर पीओ मत नापो मत तोलो पीओ ।।
दहलो मत-भागो मत कोई मेरे भाई भोलो पीओ ।
बाहर ज्यों का त्यों भीतर का बदल जाय चट चोलो पीओ ।।
माते उसके ही शुरूर में सुख की निंदिया सोलो पीओ ।
"शुक्ल" पिलानेवाले पीनेवाले की जय बोलो पीओ ।।

मणि १०२

महादेव गुन गना न जावे ।।

संख्या की इति हो जाती है इनकी इति क्यों होने पावे ।
करे वेद को मौन शारदा श्रमित सहस मुख को हु थकावे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई और समर्थ शक्ति नहिं कहकर इनको जौन बतावे।
अधिकाधिक रस पावे गायक जितना ही वह गाता जावे॥
यह जीवन वह जीवन बीता गाते किन्तु ऊब नहिं आवे।
चमत्कार करके दिखलावे बिगरी बेहद बेगि बनावे॥
इनके ही भरोस यह बन्दा बैठा मुद मुरचंग बजावे।
"शुक्ल" लोक-परलोक लहावे साधन को उपहास उड़ावे॥

मणि १०३

महादेव को दोस्त बनाओ ॥

इन मक्कार दोस्तों में तुम तबियत अपनी मत उलझाओ।
स्वारथ के पुतलों से मानो मत विशेष व्यवहार बढ़ाओ॥
तुमसेहि जो चाहे उठावना उससे क्या तुम लाभ उठाओ।
हो नहिं तुम आसक्त और में निज प्रति नहिं आसक्त बनाओ॥
करो नष्ट नहिं वक्त किसीका अपना भी मत समय नशाओ।
रखो मयत्री प्राणिमात्र से सबका ही कल्याण मनाओ॥
स्वारथ रहित मीत सबके ये इन प्रति प्रीति प्रतीति दृढ़ाओ।
"शुक्ल" प्राप्तकर प्यार आपका मैं कहता निहाल हो जाओ॥

मणि १०४

महादेव अब रहा न जाता ॥

कहता हूँ सो कान खोलकर सुनो गौर से विश्व विधाता।
करते हो तुम सृजन सृष्टि का कहलाते तुम हो जगत्राता॥
मैं भी छुद्रजीव संसृतिका मेरे भी तुम रक्षक ताता।
अपने ही निर्मित संरक्षित को कोई क्या यूँ कलपाता॥
तुम्हरे ही वियोग में प्रियवर जैसा मैं कलपाया जाता।
होता पल-पल विकल आप बिन कभी एक पल नहिं कलपाता॥
प्रान आनकर लगें कंठ में दरस आस वह निकल न जाता।
"शुक्ल" अधीन दीन विनती निज अति विनीत बन तुम्हें सुनाता।

मणि १०५

महादेव को भारी चिन्ता ॥

अपनी कौन फिकर इनको है रहती ग्रसे हमारी चिन्ता।
करते भी निषेध इनके जो हमने जानि बिगारी चिन्ता॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अघभाजन बन रहे हैं हम जो इसकी करें अघारी चिन्ता ।
पतन हुआ प्रारम्भ हमारा तब से हुई ये जारी चिन्ता ॥
सिद्ध हो रही पर सब विधि से मेरे हित हितकारी चिन्ता ।
जनम जनम की बिगरी सारी मेरी सद्य सुधारी चिन्ता ॥
सुख सुविधा के साथ देखता शुभ साँचे में ढारी चिन्ता ।
लोक और परलोक विषयिनी "शुक्ल" मेरी सब ढारी चिन्ता ॥

मणि १०६

महादेव का प्यार बरसता ॥

आओ तो मैदान में देखो कैसा है धुआँधार बरसता ।
अब बरसा-तब बरसा फिर-फिर उमड़ घुमड़ कर यार बरसता ॥
यह बरसा-वह बरसा छन-छन मघा वृष्टि को टार बरसता ।
रुक-रुक करके कभी-कभी तो लगा झड़ी इकतार बरसता ॥
कभी कृपणता लिए कुछ हि कुछ बनकर कभी उदार बरसता ।
कर रक्खा आवरण उसे नहिं फरियाता बहु बार बरसता ॥
वह दर-वह नर वन्दनीय है जिस पर यह शुभ सार बरसता ।
"शुक्ल" सराहूँ कितना निजको मुझपर यार अपार बरसता ॥

मणि १०७

महादेव का भजन करो नर ॥

बुरा हुआ अब तलक टरे नहिं अब दोषों से जल्द टरो नर ।
डरो न शेरे बबर काल से अनहित पर का करत डरो नर ॥
दीन हीन लख किसी व्यक्ति को होकर अतिहि दयार्द्र ढरो नर ।
हर का रूप समझ हर इक को बाढ़ी उनकी व्यथा हरो नर ॥
करके दूर मलिनता सारी उर सद्गुण भंडार भरो नर ।
परे रहे भव कूप जन्म बहु अब मत कोई कभी परो नर ॥
ले शिव नाम लिवा औरों से सद्यः साथिन साथ तरो नर ।
"शुक्ल" सुलभ शुभ युक्ति सुहावनि हो सश्रद्ध हिय बीच धरो नर ॥

मणि १०८

महादेव मुख बोल रे बाबा ॥

मेरी मान सलाह व्यर्थ ही कभी नहीं मुँह खोल रे बाबा ।
बड़ा कीमती वक्त जा रहा बैठ न बंडा छोल रे बाबा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूरा कर जल्दी ही प्रभु से किया हुआ निज कोल रे बाबा ।
क्षणभंगुर है जीवन जग का भरा ढोल में पोल रे बाबा ॥
मनहूसों सा बिता न इसको प्रेम सुधारस घोल रे बाबा ।
फिर आओ फिर जाव घुमकर दुनियाँ है यह गोल रे बाबा ॥

मारा मारा फिर न अरे यूँ इनकी गलियाँ डोल रे बाबा ।
बनकर "शुक्ल" इन्हीं का केवल इन्हें मुफ्त में मोल रे बाबा ॥

मणि १०९

महादेव मणिमाला की जय ॥

जोरे जन्म-जन्मके पापों का कर दिया दिवाला की जय ।
चलता खूब बजार सुकृत का परता कभी न ठाला की जय ॥

आनेवाली कभी नहीं फिर बला मेरी जो टाला की जय ।
अन्धकार-अज्ञान हटाकर उर भर दिया उजाला की जय ॥

और सुनोगे जीवन मेरा नव साँचे में ढाला की जय ।
चमके यथा सितारा सुकवा चमकाया मम भाला की जय ॥

बना दिया अनुरक्त जो मुझपर चारों हि मुक्ती बाला की जय ।
गाते "शुक्ल" सश्रद्ध हृदयकर बोलो जी उन लाला की जय ॥

दोहा

महादेव महादेव कर, कट जावे सब पाप ।
महादेव की ही कृपा, महादेव हो आप ॥
महादेव का नाम ले, महादेव को ध्याव ।
महादेव गुनगान कर, महादेव बन जाव ॥
महादेव सा देव नहिं, मिलना महा उदार ।
"शुक्ल" बात साँची कहूँ, मानो मेरे यार ॥
महादेव रचना रचें, महादेव लिखितार ।
महादेव अर्पन करें, महादेव स्वीकार ॥

श्री शुभ सं० २०१८ आषाढ़ शु० ३ शनि दि० १५-७-६१

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशोधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
बारहवीं माला समाप्त ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवेनमः *

महादेव मणिमाला

तेरहवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

जाकी बान जानके बिगारनी परी है प्रभो,
ताकी ततकाल सारी बिगरी बनाया है।
संतत रहे जो सना विषय रसों में उसे,
कैसे किस भाँति नेह सुरस सनाया है।
गनती न जाके दोषगन की गनाय सके,
कौन गुन गुनि ताहि गनमें गनाया है।
"शुक्ल" होय दंग पूछता हूँ मैं निमित्त मेरे,
ये हो देव नंग कौन ढंग अपनाया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरहवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मुद मंगल कारनं ॥
मंगल की भइ सृष्टि इन्हीं से ये मंगल स्वरूप किये धारन ।
मंगल तरु के बीज ये इनमें मंगल फलता है प्रति डारन ॥
उत्पादित हो इनसे मंगल वितरित होता बीच बजारन ।
उदित हो इस नभ में मंगल विधु करता चहुँ चंद्रिका पसारन ॥
निज प्रभाव, निज जन के नित प्रति सब सहमूल अमंगल टारन ।
अमित अमंगल लेख लिखित विधि मंगलमय करि स्वकर सँवारन ॥
सब विधि करत सुसज्जित स्वजनहिं मंगल विविध सुमन के हारन ।
"शुक्ल" लुटावत रहत अहर्निशि स्वाश्रित पर मंगल भरि थारन ॥

मणि २

महादेव सा है महान को ॥
पक्षपात से रहित सर्वथा कहो तुम्हें जचता जहान को ।
वेद-पुराण-शास्त्र बोलो तो इनकी महिमा को कहान को ॥
ब्रह्मा-विष्णु-धनेश-फनेशहु इनको चित से है चहान को ।
ज्ञानी-योगी-भक्त-सुकर्मी इनका ही शुभ पथ गहान को ॥
लेकर इनका नामहि केवल दोष दुरित दारिद दहा न को ।
होने को परिपूर्ण मनोरथ इनका जन बनकर रहा न को ॥
पड़कर प्रेम पुनीत बाढ़ में विवश बना बेसुध बहा न को ।
"शुक्ल" भये अनुकम्पा किंचित् चारोफल इनसे लहा न को ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव से मेरी यारी ।।

हुई है जब से तुम्हें बताऊँ गई है खुल तकदीर हमारी ।
यह भी सुनो कि आगे बढ़कर जोरी इनने नातेदारी ।।
मैं नगण्य साहस कस करता इनसें कछुक कथा विस्तारी ।
पर अब तो बन गया हुँ बेशक इनका परम प्रेम अधिकारी ।।
मेरे सभी विकार यार ये बड़े मजे में क्रमशः टारी ।
भर भरपूर-हौसला मेरी करते हैं स्वयमेव तयारी ।।
सुनो सभी संसारी सज्जन मेरी शुभ सलाह सुखकारी ।
"शुक्ल" बनाकर मीत इन्हें लो जीत जगत की बाजी सारी ।।

मणि ४

महादेव मैं केवल तेरा ।।

तीनि लोक के मध्य मानलो कोई और नहीं सच मेरा ।
बनता ही है कौन विश्व में मुझसे कहो अकिंचन केरा ।।
सब बनते हैं सग समर्थ के असमर्थों का कौन सगेरा ।
स्वारथ के सम्बन्धी कितने लख सम्पन्न डाल दें डेरा ।।
असम्पन्न की ओर कभी भी करते नहीं भूलकर फेरा ।
सुने संत से पढ़े शास्त्र में मैंने भी निज नयनन हेरा ।।
पाता मैं आलोक आपसे बाकी दिखता जगत अंधेरा ।
सोच समझकर खूब "शुक्ल" मैं बना हूँ प्रभुवर तेरा चेरा ।।

मणि ५

महादेव के प्यारे बन गये ।।

मैं इनका हूँ बना और ये मेरे यार दुलारे बन गये ।
हम इनके साथ ही साथ ये मेरे प्राण अधारे बन गये ।।
इनका पा उजलापन उजले मेरे धब्बे कारे बन गये ।
गुंडे जो बसते हैं दिल में सीधे सभी बिचारे बन गये ।।
इनकी अनुकम्पा से केवल हम शुभ सुगुन अगारे बन गये ।
ऐसा भी समझा जा सकता नव साँचे के ढारे बन गये ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर-हर-बम्-बम्-भोला-भोला मेरे प्यारे नारे बन गये ।
इनके "शुक्ल" निहारे नीके मेरे कारज सारे बन गये ॥

मणि ६

महादेव की विलछन माया ॥
चुटकी मात्र बजाये केवल जिसने सारा जग उपजाया ।
अघटन घटना पटीयसी है इसने अपना नाम धराया ॥
इस जादूगरनी ने ही तो विन्दु बनाकर सिन्धु दिखाया ।
बड़े-बड़े को निज इंगित पर इसने है खुब नाच नचाया ॥
कह सकता है कौन गरजकर मैंने इसका पार है पाया ।
कृपापात्र जो देव-देव के रखती है यह उनपर दाया ॥
कोई असर न उनपर इसका उनकी बन जाती है छाया ।
"शुक्ल" सहायक सब विधि मेरी आदरणीया प्रभु की जाया ॥

मणि ७

महादेव से खुब हम पाया ॥
कितना-प्रश्न निरर्थक ही है किसी तरह नहिं जाय बताया ।
मुझ गरीब की तरफ आपने जब से है निज दृष्टि फिराया ॥
मालुम होता है देने के ही निमित्त मुझको अपनाया ।
थक सा गया मैं पाते-पाते देते उनको थका न पाया ॥
यह दे दिया सविधि उसको भी मेरे हित है अतिहि सजाया ।
बना दिया अस मस्त जिसे लख बनना चहती चारों जाया ॥
किन्तु मेरा रुख नहिं पाने से मुख लगने लगता शरमाया ।
"शुक्ल" प्रसाद न पाता प्रभु का वह संतत करता पछताया ॥

मणि ८

महादेव दुनिया अग्यानी ॥
इसका मतलब यह न लगाओ मैं निज को कहता हूँ ग्यानी ।
पड़ी हुई है भाँग कुएँ में मैंने भी भरहिक है छानी ॥
उसके ही शरूर में माते करता रहता हूँ मनमानी ।
इच्छाचारी हो जाने से सच बन गया हूँ अवगुन खानी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर दरसाता हूँ औरों को जैसे बहुत बड़ा विग्यानी।
भू-मंडल में खोजे से भी मिलना कहीं न मेरी शानी॥
चढ़ा रखा मोती सा तुमने इस सीपी पर असली पानी।
"शुक्ल" बनाये तुम्हरे ही तो बनी हुई यह कानी रानी॥

मणि ९

महादेव सब बिषय खो गये॥

घेरे थे जो जन्म-जन्म से करके मुझे प्रणाम वो गये।
भागे सब सकुटुम्ब जो भागे ऐसा नहिं बस एक दो गये॥
कौन पूछता बेचारों को कहाँ गये, किस ओर कौ गये।
शायद बहुरें कभी नहीं फिर जिधर-किधर भी जहाँ जो गये॥
मेरी भला कौन सुनता था तुमने डाँटा तभी तो गये।
मालुम होता है चिर निद्रा में बेचारे सभी सो गये॥
दिखता अन्तः स्वच्छ हमारा उर विकार भलिभाँति धो गये।
अनुकम्पा से "शुक्ल" आपकी अब आनन्द निधान हो गये॥

मणि १०

महादेव सुख देते रहते॥

रहें सदा सब सुखी जगत के यही चित्त से सबदिन चहते।
जैसे मिलै सभी को सब सुख वैसे वाक्य शास्त्र में कहते॥
हो जाते अति दुखी देखकर जब कोई कुराह में बहते।
हो जाता हिय व्यथित आपका कोई कभी किसी को डहते॥
होते सुखी स्वयं लख करके जब कोई भी शुभ पथ गहते।
उन्हें देख गदगद हो जाते पर हित हेतु कष्ट जो सहते॥
उनके दोष दुरित द्वन्दों को तत्परता पूर्वक हैं दहते।
पुरस्कार में इनके द्वारा "शुक्ल" पदार्थ चारि वे लहते॥

मणि ११

महादेव का प्यार लाड़ला॥

पा करके कृत कृत्य हुआ तू इनका दिली दुलार लाड़ला।
चमक उठा अस यकायेक कस तेरा मलिन लिलार लाड़ला॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगा भाग्य अत्यन्त तिहारा निश्चित इसे बिचार लाड़ला ।
लख तो तुझे दृष्टि प्रेमिल से प्रियवर रहे निहार लाड़ला ।।
तेरे प्रति करली है देव ने वृत्ति बड़ी हि उदार लाड़ला ।
शुभ की सद्भावों की तुझको मिल गई बसी बजार लाड़ला ।।
अब नित ले आनन्द और तू नित नइ लूट बहार लाड़ला ।
कर नित केलि "शक्ल" संग प्रभू के हो नित नवल विहार लाड़ला ।।

मणि १२

महादेव मुसकान पै मरता ।।
पड़ते नजर नेक सी इनपर मैं निज प्राण निछावर करता ।
फिर होना ओझल आँखों से मुझको है अत्यन्त अखरता ।।
सुधि करके उसकी अहनिशि मैं रह-रहकर बस आहें भरता ।
आते याद तुरत आँखों से पानी झट झरने सा झरता ।।
रहता चढ़ा असर सर पर सो किसी तरह टारे नहिं टरता ।
रहता हूँ बेतरह बिवस बन उसके विरह आग में जरता ।।
करे कोई उपकार विप्रका मेरी बढ़ी व्यथा यह हरता ।
देता "शक्ल" असीस उन्हें जो इस संताप सिन्धु से तरता ।।

मणि १३

महादेव मुसकान पै मरता ।।
सुख खानी अमृत रससानी बाना की मधुरान पै मरता
लच्छेदार सुअच्छे ढंग की फूल झरनि बतरान पै मरता ।।
वेद-पुराण-शास्त्र इनका जो करते विशद बखान पै मरता
रस सागर त्रयलोक उजागर इनके उन गुनगान पै मरता ।।
ऐरे-गैरे नत्थू खैरे पर भी भई रिझान पै मरता ।
आगा पीछा सोचे बिन ही दे दें जो वरदान पै मरता ।।
मुझसे गये बिते का हरदम रखते हैं जो ध्यान पै मरता ।
मनसा-वाचा और कर्मणा "शुक्ल" मैं शम्भु सुजान पै मरता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १४

महादेव मद छान तो आजा ।।

भरा धरा है घड़ा सामने करना है यदि पान तो आजा।
बहुत फिरा सुख की तलाश में बनना हो सुखखान तो आजा॥
कभी न जो जावे उर ऐसी भरना हो उमगान तो आजा।
खुद की खुदी खुशी से तुझको करना हो कुर्बान तो आजा॥
बे पर की ही बड़ी से बड़ी उड़ना होय उड़ान तो आजा।
इसकी उसकी क्या अपना ही होय भूलना भान तो आजा॥
आसानी से अभी इसी छन वन आनन्द निधान तो आजा।
"शुक्ल" प्रेम की बलि वेदी पर होना हो बलिदान तो आजा॥

मणि १५

महादेव मद छान तो आजा ।।

जिसकी शानी नहीं विश्व में करना हो वह पान तो आजा।
पीकर दिव्य सुरा हर हालत होना हो मस्तान तो आजा॥
उसी रंग में रँगे देव का करना हो गुनगान तो आजा।
टूटी-फूटी निज भाषा में कर सक विशद बखान तो आजा॥
आनँद के अभिलाषी बनना हो आनन्द निधान तो आजा।
बहती हुई प्रेम गंगा में करना हो असनान तो आजा॥
जिसमें बचे न कुछ भी अपना देना हो वह दान तो आजा।
"शुक्ल" घाट पर मेरे कोई हो मेरा जजमान तो आजा॥

मणि १६

महादेव चरनों तक ही गति ।।

इनसे भिन्न लोक तीनों में सोच नहीं पाती मेरी मति।
भरा लाभ है याद में इनकी विस्मृति में अति भरी मेरी छति॥
पता नहीं कर लिया है मैंने इन्हें भूल करके निज छति कति।
सह लेते सहहर्ष आप हैं मेरी करी हुई सारी अति॥
रहती सदा सुरक्षित इनके कर कमलों में ही मेरी पति।
महदैश्वर्यवान होते भी रहते रहनि महान यथा यति॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहूँ यह चित से मैं अनुदिन बढ़ती रहे कमल पद प्रतिरति ।
"शुक्ल" करें स्वीकार हमारी सर्वेश्वर शत सहस लक्ष नति ॥

मणि १७

महादेव गुनगान किये जा ॥
कहता हूँ जो मैं उन मेरे कथनों को कुछ कान किये जा ।
बड़े लाभ की बात विश्वपति का शुभ सुयश बखान किये जा ॥
सुनी हुई समझी कीरति का वर्णन विशद सुजान किये जा ।
भीतर घुस के सरल प्रकृति का इनके कुछ अनुमान किये जा ॥
मिलनसार हैं सदा बृद्धिगत इनसे जान पिछान किये जा ।
जितना कर थोड़ा है फिर भी करसक सो सनमान किये जा ॥
दे क्या सकता है तू उनको अनुपम आतम दान किये जा ।
"शुक्ल" प्राप्त धारा प्रवाह तू उनसे लाभ महान किये जा ॥

मणि १८

महादेव चिलबिल्ले भारी ॥
सच कुछ ऐसी बात है या की मेरी बुद्धि गई है मारी ।
जबसे की सम्पर्क हुआ है मेरी अक्ल छका सी डारी ॥
पहले बिला इजाजत मेरे घुस आये ये मेरी बारी ।
करने साफ लगे फिर तो झट बिन पूछे मम कोठरी कारी ॥
बसे उजार दिये उन सबको जिन-जिन से थी मेरी यारी ।
करी कमाई जनम-जनम की इनने बात-बात में टारी ॥
हाय राम ! हद यह कर डाला जो बलात् साँचे नव ढारी ।
बाप रे बाप "शुक्ल" के सम्मुख दिया परोस पदारथ चारी ॥

मणि १९

महादेव से हैं हम हारे ॥
उजले उजले दिखते इनको मेरे कृत्य निपट ही कारे ।
बना देंय चुपके से चटपट जानबूझ सब मेरे बिगारे ॥
इधर किया गंदा गन्दे ने उधर स्वच्छता-पूर्ण ने टारे ।
बरबस बड़े रसीले ढंग से लेकर नव साँचे में ढारे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहलाया करते हैं संतत सर पर कर कमलों को धारे।
कहा करें मम भैया मुन्ना मेरे प्राण अधारे प्यारे॥
सुनकर मैं तकता रह जाता इनके मुँह को निज मुँह फारे।
कह पड़ता हूँ बार करोड़ों "शुक्ल" इन्हें हम वारे-वारे॥

मणि २०

महादेव सन्तुष्ट रहो तुम ॥

यही साध है शेष स्व-उर में भर मुँह मुझको स्वजन कहो तुम।
छूटे नहीं छुड़ाये विधि के इस विधि मेरी बाँह गहो तुम॥
पैदा करो चाह हिय मेरे वही कि जो देवेश चहो तुम।
पदरति के अतिरिक्त वासना और सभी सहमूल ढहो तुम॥
कर पाता नहिं मैं समाप्त सो दोष दुरित मम देव दहो तुम।
जाऊँ वहाँ स्वप्न में मैं नहिं जहाँ कि प्राण अधार न हो तुम॥
किंचित् वृत्ति विमुख हो मेरी बन निर्दय दिन-रैन डहो तुम।
"शुक्ल" कराओ करो वही बस जिससे अति संतोष लहो तुम॥

मणि २१

महादेव ही हँसना जाने।।

अट्टहास करते भी सचमुच हम जाने क्या हँसना माने।
आत्मा यदि नहिं हँसी हमारी होता क्या मुख के मुसकाने॥
हँसती जब आतमा हमारी लगते रोम-रोम हरखाने।
फिर तो कभी किसी भी हालत उदासीनता वह नहिं जाने॥
फटके पास उदासी ही नहिं रोवे कैसे कहो सयाने।
ऐसे कृपापात्र प्रभुवर के फिरते जगत बने मस्ताने॥
होती चाल निराली उनकी छिड़ते उनके भिन्न तराने।
पा उनकी पद धूलि "शुक्ल" सच जिनको धन्य-धन्यतम माने॥

मणि २२

महादेव का नाम लिया कर ॥

इतने से कर्तव्य शेष है कर यदि कुछ निष्काम किया कर।
आकर्षित हो नहिं विषयों से उनके प्रति चितवृत्ति छिया कर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हों जो छिद्र अपन में उनको जितना भी सक अवशि सिया कर ।
सबको जान रूप शिव का ही सर्बहिं दान-सम्मान दिया कर ॥
हर हालत हर का सुमिरन कर बेश्रम वेगि विशुद्ध हिया कर ।
भरा धरा घट भीतर ही है भर हिक प्रेम पियूष पिया कर ॥
जैसा जीवन दुर्लभ सबको वैसा बन सानन्द जिया कर ।
"शुक्ल" मृत्यु के बाद मुक्ति उन चारों को चौंचक्क तिया कर ॥

मणि २३

महादेव दिलदार दिवैया ॥
लखने की है बात कौन सी सुना न ऐसा यार दिवैया ।
तुमने देखा-सुना हो बोलो माँगे एक तो चार दिवैया ॥
फिर माँगे फिर-फिर कोइ माँगे हो हरषित हर हरबार दिवैया ।
निजी देन से निज जन के ये दुख-दरिद्र सब टार दिवैया ॥
जनम-जनम के विपदग्रस्त को सम्पद साँचे ढार दिवैया ।
कर सकता है कौन कल्पना इन सा अन्य अपार दिवैया ॥
ये ही हैं परसिद्ध विश्व में सचमुच छप्पर फार दिवैया ।
संभव हो सकता नहिं कैसेहु ऐसा "शुक्ल" उदार दिवैया ॥

मणि २४

महादेव के जनलू नाहीं ॥
तब हीं तोहैं बताई बहिनी एनके तूं सनमनलू नाहीं ।
मनलू तौ मनमाने ढंग से पर मोने अस मनलू नाहीं ॥
गनलू जैसे सब तस एनहूँ सर्वश्रेष्ठ उर गनलू नाहीं ।
बनलू एनकर-ओनकर पर तूं इनकर जियसे बनलू नाहीं ॥
होई विलग न किसी जन्म में ठान हिये अस ठनलू नाहीं ।
जिसमें रहें प्रसन्न देव ये फनवन ऐसन फनलू नाहीं ॥
बिसरि जाय परलोक-लोक सब प्रेम सुधा-मद छनलू नाहीं ।
सन्निधि-सुख नहिं मिलल "शुक्ल" जो शुचि सनेह रस सनलू नाहीं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २५

महादेव सुमिरे सुख होला ।।

संत शास्त्र सब वेद पुराणहु हो करके मतैक्य यह बोला ।
निजानुभव की तुला पै धरके मैंने भी भलिभाँति है तोला ॥
हुआ मान्य नहिं कभी किसी ने यदि इसके विरुद्ध मुँह खोला ।
समझा गया कि छाना इसने गहरा मोह भंग का गोला ॥
शिव सुमिरन करते ही सचमुच जाता यार बदल सा चोला ।
मिलता लाभ तुरत ही तब जब जाता साथ सुधा मधु घोला ॥
दिये इन्हीं के सद्भावों से भर जाता उसका उर झोला ।
"शुक्ल" हुआ वह पूर्ण मनोरथ बना मस्त करता है डोला ॥

मणि २६

महादेव मन मारे बैठे ।।

वृक्ष विशाल विशद वट के तर जा चुपचाप किनारे बैठे ।
होता है प्रतीत जैसे की सर्वस बाजी हारे बैठे ॥
शायद लगी न नींद रात में उठकर बड़े सकारे बैठे ।
भूषण-वसन-विहीन दिव्य तन शोभा सिन्धु उघारे बैठे ॥
प्राणप्रिया में प्राण लीनकर स्मृति के सिर्फ सहारे बैठे ।
प्रिया वियोग जनित पीड़ा से आज मौन व्रत धारे बैठे ॥
गत प्रेमिका कि ही चिन्ता में चिंतित प्रेम अगारे बैठे ।
सनमुख "शुक्ल" अवस्थित शिवगण सोचें सभी विचारे बैठे ॥

मणि २७

महादेव सा प्यारा को है ।।

इनके सिवा विश्व में बोलो मेरा दिली दुलारा को है ।
इन अतिरिक्त बतावे कोई मेरा प्राण अधारा को है ॥
करूँ प्यार क्या देख किसी को ऐसा प्रेम अगारा को है ।
कोटि अनन्त विश्व का स्वामी सीधा बड़ा बिचारा को है ॥
भोला नाम धरा भोलापन अखिल जगत का टारा को है ।
निज प्रभाव से ही अनन्त को भोलें साँचे ढारा को है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकमात्र निज प्रेमीजन का सब विधि सुखद सहारा को है ।
दिल की प्यास मिटाय "शुक्ल" के ऐसा हा ! दिलदारा को है ।।

मणि २८

महादेव चित चिन्तो चच्चा ।।

चिन्तन अन्य जो करते अहनिशि वह तो है सबका सब कच्चा ।
उसके कुपरिणाम से ही तो खाते हो गच्चा पर गच्चा ।।
उसी कुचिन्तन के प्रभाव से पर-पर नर्क बार बहु पच्चा ।
जन्मा कभी देव दानव बन मानव कभी भेंड़ का बच्चा ।।
भोगे-भोग अन्त नहिं जिनका भाँति अनेक ताप से तच्चा ।
भव प्रवाह में पड़ा इस तरह बेबश बना निरन्तर नच्चा ।।
सर्व काल सब ठौर सहायक ले लो शरण शंभु का सच्चा ।
फिर तो "शुक्ल" लोक दोनों में रहे सदा ही मंगल मच्चा ।।

मणि २९

महादेव मद छानो आओ ।।

आवाहन करता हर इक का नादानों और दानों आओ ।
सुगम राह जाते भी आओ हे ! सब राह भुलानो आओ ।।
करो न आनाकानी इसमें मेरा कहना मानो आओ ।
छाना जाना मद बहुतेरे इसे भी छानो जानो आओ ।।
रतन पारखी बुद्धि तुम्हारी गुन अवगुन पहचानो आओ ।
तन भूले मन मगन देव के गुनगन विमल बखानो आओ ।।
दुख खानो इस ही छन अबहीं अति असीम सुखसानो आओ ।
देखो यह आनन्द "शुक्ल" कुछ ब्रह्मानंद समानो आओ ।।

मणि ३०

महादेव सब जग सुख पावे ।।

ऐसी युक्ति लगाओ कोई सब जन शरण तुम्हारी आवे ।
निजकर कोमल बिल्व दलों को सुरभित शुभ सुमनों को लावे ।।
गंगाजल नहला चंदन का लेपनकर तब तुम्हें चढ़ावे ।
दिये पदार्थ तुम्हारे ही जी तुमको भोग लगाकर खावे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तन भूले मन मुदित नित्य ही तुम्हरी दिव्य गुणावलि गावे।
बाजे हों उपलब्ध उन्हें भी नहिं तो केवल गाल बजावे॥
अनायास रिझवार आपको खेल-खेल में आप रिझावे।
दुख का मुख देखे न "शुक्ल" फिर तुमको पा निहाल हो जावे॥

मणि ३१

महादेव गुनगान किया नहिं ॥

बेद पुरान शास्त्र सन्तों की कहनी को कुछ कान किया नहिं।
आगम निगम बखानें जिसको उसका आप बखान किया नहिं॥
पहचाना इनको औ उनको इनसे कुछ पहचान किया नहिं।
उलझा खूब जगत विषयों में इनसे उर उरझान किया नहिं॥
क्या है सार असार वस्तु क्या इसका भी कुछ दान किया नहिं।
लोक भूति परलोक सुगति को पदरज पर कुरबान किया नहिं॥
अहंभाव पशु लेय प्रेम की वेदी पर बलिदान किया नहिं।
होने को तैयार "शुक्ल" वे निजवश शम्भु सुजान किया नहिं॥

मणि ३२

महादेव बरसात बिते कस ॥

और बात बहुतेरी सुनली बतलाओ वह बात बिते कस।
दिन कटजाता चहल-पहल में कालरात्रि सी रात बिते कस॥
कारी अँधियारी निशि मुझको जैसे धरि-धरि खात बिते कस।
ज्वालामुखी विज्जु-जल वारिद तप्ततेल फरियात बिते कस॥
विरह ज्वाल के तरुण ताप से जरत जान लो गात बिते कस।
तुम बिन जीवनधन जीवन के दिन अति दुखत दिखात बिते कस॥
आवत ही सुधि आह आपकी प्राण अतिहि अकुलात बिते कस।
आओ "शुक्ल" सँयोग हो जानूँ मैं दिन सुखद सिरात बिते कस॥

मणि ३३

महादेव घनघोर बदरिया ॥

छाई सुखदाई देखो तो नभ मण्डल चहुँओर बदरिया।
भूरी भूरि भयावनि कोई कोइ कारी कोइ गोर बदरिया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गरज-तरज कर विविध भाँति से मचारही बहु शोर बदरिया ।
मुसलधार कहुँ रिमझिम-रिमझिम बरसे जोर कि थोर बदरिया ।।
वापी-कूप-तड़ाग बरस कर देती बरबस बोर बदरिया ।
सस्य श्यामला भूमि बनाकर लेती यह चितचोर बदरिया ।।
हटी नहीं यह हठी शाम तक आई जो बड़ भोर बदरिया ।
आओ "शुक्ल" विहार संग हो नाचे तब मन मोर बदरिया ।।

मणि ३४

महादेव के चलूँ इशारे ।।

उठती जिधर भृकुटि कुछ इनकी दिखता हूँ मैं उसी किनारे ।
पा-पा कर संकेत आपका होते हैं कुल काम हमारे ।।
पाते जरा इशारा इनका चढ़ जाऊँ मैं शिखर पहारे ।
यूँही इंगित पर पानी मैं गंदा बन बह चलूँ पनारे ।।
स्वर्ग नर्क की सैर करूँ यूँ भली बुरी कार्यों को धारे ।
भोगूँ भोग विभिन्न तरह के खट्टे मीठे तीते खारे ।।
उर प्रेरक बनकर हिय में ये बैठे रहते सदा बिचारे ।
प्रेरित हो इनसे हि "शुक्ल" मैं करूँ काज सब नीक नकारे ।।

मणि ३५

महादेव जौनी विधि राखैं ।।

रहना चहिये मस्त उसी में हमसे अहमक देखी काखैं ।
वे रह जाते पर सहिष्णु जन पुरस्कार में मेवा चाखैं ।।
कभी चबाते चना खुशी से कभी छानते देकर दाखैं ।
तेल फुलेल लगाते कबहीं कभी रमाते धूनी राखैं ।।
सुनते कभी प्रशंसा विधि-विधि कभी कोई उन प्रति कटु भाखैं ।
अस्तुति सुन प्रसन्न नहिं होते निंदा सुने न मन में माखैं ।।
दुख में नहीं रंच बिचलित हों सुख में नहीं बदलती आँखैं ।
रहते "शुक्ल" स्वस्थ हर हालत किसी परिस्थिति में नहिं झाखैं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३६

महादेव पर मरब सुहाना ॥
फलासक्ति से रहित सर्वथा करवावें सो करब सुहाना ।
लगा दें उसमें लग जाना चुप टारें उससे टरब सुहाना ॥
ननु नच बिना किये साँचे में जिस भी ढारें ढरब सुहाना ।
शून्य हृदय में देवें सो-सो भले भाव भल भरब सुहाना ॥
मैं सेवक वे स्वामी मेरे रखना इसका गरब सुहाना ।
पालित साँड़ सरीखा इनके निर्भय बिचरब-चरब सुहाना ॥
जनम जनम इनके वियोग में भरे शौक जिअ जरब सुहाना ।
कर कर इनको याद अहर्निशि इन नैनन कर झरब सुहाना ॥
हो सश्रद्ध शतबार शीश निज पद पंकज पर धरब सुहाना ।
इकले किसी तरह नहिं तारें "शुक्ल" मित्र सह तरब सुहाना ॥

मणि ३७

महादेव को यह तन अरपन ॥
गढ़े गढ़ाये जान इन्हीं के छोटे-बड़े स्वजन जन अरपन ।
विश्व विभूति इन्हीं की सारी समझ करूँ इनको धन अरपन ॥
एकमात्र इसके अधिकारी जान इन्हें करता मन अरपन ।
जीवन मिला प्राप्ति हित इनकी इससे इन्हें सभी छन अरपन ॥
किये कराये मान इन्हीं के शुभ अरु अशुभ कर्मगन अरपन ।
मनसा वाचा और कर्मणा "शुक्ल" करूँ इनको धन अरपन ॥

मणि ३८

महादेव जी जाने जियकी ॥
किया करे कोइ कुछ शरीर से सचमानो पर मानें जियकी ।
तनकृत को सामान्यतया बस सूक्ष्म दृष्टि से छानें जियकी ॥
धेला पैसा मात्र काय कृत गिनते सोलह आने जियकी ।
आडम्बर नगण्य इनके ढिग ये जन बीच बखाने जियकी ॥
इसको भी क्या कहना होगा भलीभाँति पहचाने जियकी ।
सेवा स्वल्प अमूल्य गिने ये हो सनेह रस साने जियकी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बकझक की कुछ कद्र न करते पूर्ति करें ये ठाने जियकी ।
"शुक्ल" करो सो जीजाँ से ही है अभीष्ट यदि पाने जियकी ॥

मणि ३९

महादेव कै लीला लखली ॥

करते विश्व व्यवस्था बैठे रजत शैल के टीला लखली ।
बाटैं सदावर्त सब जगको खाली होय न ठीला लखली ॥
करें याद गीली आँखों जो उन्हें सुमिर दृग गीला लखली ।
ज्योतिर्मय तन दिव्य वर्ण भल वर बदाम सा छीला लखली ॥
तपः पूत शिर जटाजूट कै केशराशि रँग पीला लखली ।
अति दयालुता का प्रमाण दृढ़ कलित कंठ निक नीला लखली ॥
बहुत कड़ा कानून और से हमसे बिलकुल ढीला लखली ।
कृपापात्र इनकी शिशपन से "शुक्ल" स्वपन तिन "शीला" लखली ॥

मणि ४०

महादेव पर मरूँ विवश बन ॥

फल लिप्सा परित्यागि शुभाशुभ करवावें सो करूँ विवश बन ।
अधोमुखी चितवृत्ति होते हूँ टारें उससे टरूँ विवश बन ॥
ढरना चहूँ न ढारें बरबस सुन्दर साँचे ढरूँ विवश बन ।
जगह नहीं उर जबरन भरते सद्भावों को भरूँ विवश बन ॥
कोई और न दीखे दूजा गले इन्हीं के परूँ विवश बन ।
श्रद्धा नहि झुक जाता यँही चरन शीश निज धरूँ विवश बन ॥
तरने की करनी ही नहि जी तो भी तारें तरूँ विवश बन ।
मिलनेच्छुक हूँ "शुक्ल" न मिलते विरह ज्वाल में जरूँ विवश बन ॥

मणि ४१

महादेव सा यार यार नहि ॥

भोला भाव भरा ऐसा कोइ दिखता गुन आगार यार नहि ।
जन हिताय ही केवल सारा करता कोई कार यार नहि ॥
करते हैं जी से जितना ये करने वाला प्यार यार नहि ।
जैसा ये करते हम सों का होता कहीं दुलार यार नहि ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्हें छोड़ दिल से दीनों का होता कहिं सत्कार यार नहिं।
इनके सिवा कोई अधमों का करता बेड़ा पार यार नहिं॥
आश्रित नर के लोक द्वय का लें लेता कोइ भार यार नहिं।
मम हित "शुक्ल" पदार्थ चार कहुँ धरा परोसा थार यार नहिं॥

मणि ४२

महादेव जी जीभर देते॥

उनके जी का भरना कैसा दे जाचकन तृप्त कर देते।
कमी बोध हो किसी तरह नहिं ऐसा ही देते गर देते॥
सुख सुविधा से पूर्ण सर्वथा रहने को घर सा घर देते।
वापी कूप तड़ाग सु सुरभित सुमन सँयुक्त बाग वर देते॥
दोनों हाथ लुटाने पर भी चुके न जो इतना जर देते।
विद्या-विनय-विवेक-प्रतिष्ठा-यश देकर विशिष्ट नर देते॥
बेटी - बेटा - नाती - पोता सब सुन्दर सुशील तर देते।
"शुक्ल" सुनो संक्षेप में लाकर चार पदारथ कर धर देते॥

मणि ४३

महादेव सब दिन के दानी॥

देते इसकी साखि संत जन विधिवत वेद-पुरान बखानी।
आदि काल से ही इनकी यह वृत्ति चली आती इकशानी॥
कोई कबहीं माँगा कुछ भी किया न इनने आनाकानी।
दिया सभी को सब कुछ फिर भी तबियत इनकी नहीं अघानी॥
हो जाती शतगुनी दानवृति जाती है जब विजया छानी।
सुनी सुनाई बात नहीं सच मेरी भलीभाँति अनुमानी॥
देने में कुछ देर न इनको माँगत रंक की मरती नानी।
"शुक्ल" सभी सुर-असुर-नाग-नर समझो इन्हें तभी सनमानी॥

मणि ४४

महादेव सुमिरत सुख बरसे॥

सुमिरन का अवसर आते ही सचमानो हदभर हिय हरसे।
होय प्रकट आनन्द अनूपम अद्भुत अपने ही उर घरसे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसकी तुलना में असत्य नहिं तुच्छ तिलोक सम्पदा दरसे ।
बह पड़ता नद प्रेम बेग सें काम कुतरु बह जाता जर से ॥
सच्चा सुख मिलता है तबहीं जब मन में सनेह शुचि सरसे ।
सुमिरक की नैया को निश्चय खेते वो अपने ही कर से ॥
सुमिरन करते-करते केवल हो जाता नारायण नर से ।
वस्तु अमूल्य मुफ्त में मिलती तो भी "शुक्ल" अभागा तरसे ॥

मणि ४५

महादेव की कृपा के दरसन ॥

होता रहता हर छन हमको इसका सुन्दर कोमल परसन ।
निज प्रभाव सें ही निज प्रति यह करती है मेरा आकरसन ॥
निकल नहीं पाता चंगुल से ऐसा किया मुझे है गरसन ।
चमत्कार से धर्मवृषभ सच बना दिया है मुझको खरसन ॥
साधारण सी बात है इसको नारायण कर देना नर सन ।
बड़ी-बड़ी निधि वखशा करती लाला करके अपने घर सन ॥
कर सकता नहिं प्राप्त जीव जो साधनकर सहस्रहू बरसन ।
दे सकती है बात बात में "शुक्ल" वही यह केवल वर सन ॥

मणि ४६

महादेव सें कीके बैना ॥

सुनते लगें सुहावन पावन मनभावन भल नीके बैना ।
निज मधुरिमा समक्ष करें जो सुधा मधुरता फीके बैना ॥
टेढ़े-मेढ़े हों सो लागें जैसे लड्डू घी के बैना ।
मधुरभाषि प्रियवादी सबही सुनके इनके झीके बैना ॥
मानें विश्व निवासी इनको बैन जगत के टीके बैना ।
और अमिय रस घोरन लागें रंचक विजया पीके बैना ॥
दिल के अतिहि दुलारे प्यारे परम हमारे जीके बैना ।
चाहूँ "शुक्ल" सुनूँ संतत मैं स्वस्थ सर्वथा ई के बैना ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४७

महादेव की चरचा चालूं ।।
पर अघ पर अपवाद दोष पर इनकी नहिं छी चरचा चालूं ।
पापखानि अनुमानि भलीविधि कभी न पर ती चरचा चालूं ॥
नाम प्रभाव गुनद गुन गन की चार बीच ई चरचा चालूं ।
भाता यह प्रसंग हैं इससे खूब लगा जी चरचा चालूं ॥
नरतन नीक संग नीके थल वास आदि दी चरचा चालूं ।
कुल-कुटेव-क्रूरता-कुटिलता हरि कुबुद्धि ली चरचा चालूं ॥
उनसा ही समझें उनके उन भक्तन की भी चरचा चालूं ।
"शुक्ल" महामुद दायी माने प्रेम सुधा पी चरचा चालूं ॥

मणि ४८

महादेव सब स्वजन सम्हारें ।।
संख्या नहिं निर्धारित जिनकी है परन्तु नहिं एक बिसारें ।
वय-विद्या-विभूति-बल आदिक इनमें से नहिं एक निहारें ॥
दीन-मलीन-हीन अघ लीनहु जो भी इनकी शरण सिधारें ।
जोरे जन्म करोरन के सब उनके पाप पहार विदारें ॥
काम-क्रोध-मद-मोह-लोभ युत उर के विपुल विकार निकारें ।
दूर दुराय तिमिर अज्ञानहिं हिय सुज्ञान की ज्योति पसारें ॥
अनुकम्पा अपार उस पर कर देते हैं नित नई बहारें ।
लोक और परलोक शौक से "शुक्ल" तासु को स्वकर सँवारें ॥

मणि ४९

महादेव से हम हँसि बोली ।।
दीखे पात्र न कोई ऐसा औरन से काहे मुँह खोली ।
जितना हो सम्भव बातों में इनसे प्रेम सुधा रस घोली ॥
होता कुछ संकोच न इससे दिखते जो अपने हम जोली ।
मैं उनसे करता वे मुझसे करते खुलकर खूब ठठोली ॥
कोई और न संग सुहाता भाती है बस इनकी टोली ।
मन रंजन के लिये रम्य थल इनको साथ लिये हम डोली ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे खरीद लिया है इनने अपनी शुद्ध प्रकृति से भोली ।
"शुक्ल" मिला रुचि में रुचि इनकी मैंने लिया इन्हें भी मोली ॥

मणि ५०

महादेव को जान न पाया ॥

जाना इन्हें उन्हें भी जाना कर इनका अनुमान न पाया ।
साधन जो उपलब्ध मैं उनसे कर कुछ अनुसन्धान न पाया ॥
मिले विविध धर रूप आप पर मैं हरगिज पहचान न पाया ।
बिन पहचान अजान मैं इनका कर किंचित् सनमान न पाया ॥
एकमात्र सग को अपने मैं बना निजी मेहमान न पाया ।
मेहमानी इनकी कर दिल का कर पूरा अरमान न पाया ॥
मिलना जो चाहिये सो अबतक प्रतिपल का पुलकान न पाया ।
हरछन हिय हुलसान न पाया "शुक्ल" मज़ा मस्तान न पाया ॥

मणि ५१

महादेव सुमिरत दिन बीते ॥

सुमिरन की दी शक्ति इन्होंने तब इनको सुमिरत किन बीते ।
जीवनधन के ही सुमिरन में जीवन के दिन गिन-गिन बीते ॥
जानि परम हितकारी सुन्दर सुमिरन में ही शुभ छिन बीते ।
शतमुख उन्हें सराहूँ सादर सुमिरन में ही वय जिन बीते ॥
कृपापात्र जो हैं प्रभुवर के सुमिरत समय मात्र तिन बीते ।
भाग्य हीन असुकृति नर का सच वक्त हाय सुमिरन बिन बीते ॥
सहस खेद उन पर है जिनका वयस नाम सुमिरत भिन बीते ।
माँगूँ "शुक्ल" काल मम हे हर सुमिरन सिन्धु बना मिन बीते ॥

मणि ५२

महादेव सुमिरो मोर भैया ॥

होई अति कल्यान मान ले शिव सुमिरन करतहि तोर भैया ।
हैं ये देव दयालु बड़े ही करि हैं तुरत कृपा कोर भैया ॥
पर कर नहिं बेगार सरीखा पुलकित प्रेम सुरस घोर भैया ।
हो अबहीं तत्पर इस ही छन मान बात आलस छोर भैया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुभ को करना शीघ्र चाहिये सोच न भूलि करब भोर भैया।
हर छन करता है आयुष-धन घुसा घरे में काल चोर भैया।
के जानै कब खेल खतम हो लगा ले झट इनसे डोर भैया॥
संशय "शुक्ल" रच नहिं इसमें देय अनन्द सिन्धु बोर भैया॥

मणि ५३

महादेव के कैसे जानी ॥

जाने बिन इनको हमने सच भोगा बड़ी-बड़ी हलकानी।
कैसी-कैसी और कि कितनी कैसे सो सब जाय बखानी॥
नभचर बनकर उड़े गगन में जलचर बनकर निवसे पानी।
घोड़ा बने, गधा बने, शूकर; वृष बन खाया भूसा-सानी॥
दानव बने, देवता भी बने, रंक बने, बने राजा रानी।
नर्क परे स्वर्गहू सिधारे गर्भ यातना सहि दुख खानी॥
यह भोगा-वह भोगा बेहद भोगत-भोगत मर गई नानी।
"शुक्ल" कराओ स्वानुभूति अब अनुकम्पा करके शिवदानी॥

मणि ५४

महादेव पद परसत हरसी ॥

निज प्रभाव चरनारबिन्द जब मम मन को आकरसत हरसी।
तेहि सनेह निज चित्तवृत्ति को भलीभाँति से गरसत हरसी॥
निज सिर पर धर प्रभु पग तल को महामोद भर घरसत हरसी।
होती तृप्ति न किंचित् कबहीं आजीवन तेहि तरसत हरसी॥
अनुकम्पा पर वश हो निज प्रति दृष्टि दयामयि दरसत हरसी।
तापित जानि त्रिताप ज्वाल से कृपावारि वर बरसत हरसी॥
फलस्वरूप सूचक सुभाग्यभल शुचि सनेह हिय सरसत हरसी।
अनायाश हर छनहिं "शुक्ल" पर हर को हम लखि हरसत हरसी॥

मणि ५५

महादेव मद छानो आओ ॥

रखते हो यदि शौक पान का तो शौकीन पिअक्कड़ धाओ।
मौका मिले न फिर-फिर ऐसा मैं कहता गफलत मत खाओ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छान चुके मद रंग-विरंगे इसे छान अब मन वहलाओ ।
लगते ज़रा मजा मुँह इसका और ओर नहिं नजर फिराओ ॥
भरा धरा है लखो सामने चखो ललक कर लब से लगाओ ।
आते ही शुरूर इसका तुम तुरतहि निज अस्तित्व भुलाओ ॥
खुद की खुदी भूलते ही तो उनसे एक मेक हो जाओ ।
"शुक्ल" द्वैतता दूर होते ही जो वह वही आप दिखलाओ ॥

मणि ५६

महादेव पर मरता खुश-खुश ॥
फललिप्सा का लेश नहीं पर करवावें सो करता खुश-खुश ।
वैसे विषय रुचें तउ उनसे टार देंय तो टरता खुश-खुश ॥
रुचती राह कुटिल धरवादें शुभ सुराह तो धरता खुश-खुश ।
भरे कुभाव भले भावों को भरवादें तो भरता खुश-खुश ॥
नरता दें नरता स्वीकारूँ खरता दें तो खरता खुश-खुश ।
भेजें स्वर्ग चला जाऊँ चुप पारें नर्क तो परता खुश-खुश ॥
डारें भव प्रवाह पर जाऊँ तारें बरबस तरता खुश-खुश ।
मिलें मजा लूँ "शुक्ल" मिलन का नहिं वियोग में जरता खुश-खुश ॥

मणि ५७

महादेव पद नख निक लागैं ॥
एक बार दृग विषय होत ही पाहुन बन उनमें टिक लागैं ।
करते नहिं आतिथ्य अघाते उनको आप अतिथि ठिक लागैं ॥
इनकी ज्योति समक्ष सूर्य-शशि सचमानो मानो दिक लागैं ।
इनकी दिव्य चन्द्रिका लखते शरद चन्द चन्दिनि फिक लागैं ॥
शोभा की सीमा होने से निरखत इन्हें नयन निक लागैं ।
इनसी सुखमा के न दूसरे विश्व बीच ये ई इक लागैं ॥
जन्म-जन्म का अन्धकार हरि परम प्रकाशक ममहिक लागैं ।
"शुक्ल" प्राण के प्राण हमारे औ जीवन ये ई जिक लागैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५८

महादेव पद नख मन भाये ।।

जैसे हमें सुहाये हैं ये वैसे नहिं कोइ और सुहाये।
रूप राशि धनराशि और कोइ राशि न ऐसा हमें लुभाये॥
नेक झलक मिलते ही इनकी ततछन तनका भान भुलाये।
टँग जाते उनपर दोनों दृग फिर क्यों हटने लगे हटाये॥
अंर्तांहित होते ही इनके बेचारे बेहद अकुलाये।
कलाकार कोइ चतुर हो ऐसा ले इनको उन मध्य लगाये॥
करे अमित उपकार सो इनकर जनम-जनम की साध पुराये।
एक नहीं जी "शुक्ल" सहस्रों मनचाही असीस वह पाये॥

मणि ५९

महादेव के खुब हम जानी ।।

निज की कारीगरि न जनाये अेनके-अेनके जानत बानी।
बिना जनाये अेनके कैसेहुँ अेनके का कोई अनुमानी॥
जब ये खुदहि जनाना चाहें तब जानन में का परशानी।
जाने बाद जान लो यह भी जना न सकती इनको बानी॥
जो करती अनुभव बेचारी किसी तरह नहिं सके बखानी।
वेद बता नहिं सके भेद को कह न सकीं शारदा-भवानी॥
जना दिये जो लेशमात्र ही उसको ही हमने खुब मानी।
"शुक्ल" अन्यथा जान इन्हें मैं सकता कैसे पामर प्रानी॥

मणि ६०

महादेव जिसके हितकारी ।।

उसकी कथा कही किमि जाती होती जो दुनिया से न्यारी।
अनुकम्पा इनकी से ही सब बात-बात में बने बिगारी॥
अनायास देखते-देखते बदल जाय चितवृत्ति विकारी।
उसके अनचाहे भी उसको देते ये शुभ साँचे ढारी॥
लोक बनाते उसका विधिवत दें सुन्दर परलोक सँवारी।
आफत-विपत, विघ्न-बाधायें टारें सब भारी से भारी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह लटता मजा दोनों ही लोकों का निर्द्वन्द सुखारी ।
"शुक्ल" जो देते देन दिनोंदिन कह सो कौन सके विस्तारी ।।

मणि ६१

महादेव का बन रे भैया ।।

उनका दिया हुआ ही है यह सचमुच तेरा तन रे भैया ।
जिसका लेता मजा उन्हीं का दिया हुआ वह धन रे भैया ।।
अनजाने करते हैं तेरी रखवाली हर छन रे भैया ।
होगा अति हितकारी तेरा बनना उनका जन रे भैया ।।
करि हैं कृपावृष्टि तुझपर खुब हैं ये कृपा के घन रे भैया ।
होते ही निज शरण तुझे वे गन लेंगे निज गन रे भैया ।।
तुम्हरा हूँ कहते निज गनना है यह उनका पन रे भैया ।
मनसा वाचा और कर्मणा "शुक्ल" नेह रस सन रे भैया ।।

मणि ६२

महादेव तुम दुखी न होना ।।

लख-लखकर आचरन हमारा प्राणेश्वर संतुलन न खोना ।
होता मेरे द्वारा वह ही होना चहिये हमसे जो ना ।।
तुम्हरी इस माया ने ही तो कर कुछ दिया है हम पर टोना ।
पैदा करती लालच अन्दर ला सम्मुख धर देती सोना ।।
समझा देती गलती होगी मौके से इस हाथ का धोना ।
इस टोनही के कारण पड़ता विविध कर्म के बीज को बोना ।।
तुमको होता खेद देखकर मेरा यह भव भार का ढोना ।
इसे आप वर्जित कर दें बस "शुक्ल" मिटे दोनों का रोना ।।

मणि ६३

महादेव का विधान पक्का ।।

सर्व शास्त्र सब संतों का यह निश्चित मत बतला गये कक्का ।
भरते रंग विवश सब उसमें इनने जौन बनाया खक्का ।।
राज करावें राज करे कोइ कहें चलाव चलावे चक्का ।
बाटे सदावर्त औरों को करता कभी आप ही फक्का ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धक्का देता बड़ों-बड़ों को खाता वही दर बदर धक्का।
बैठे ध्यान लगाय काशिका पढ़े नमाज जायकर मक्का॥
दानव-देव-नाग-किन्नर-नर सारा विश्व है इनसे छक्का।
सही गलत सो जानें वे ही "शुक्ल" बकाये उनके बक्का॥

मणि ६४

महादेव हैं हँसमुख मेरे ॥
हो जाता है हँसमुख वह भी जो हँसोड़ इनका मुँह हेरे।
कभी किसी भी हालत उसके उदासीनता जाय न नेरे॥
कारण और अकारण उसको रहती है प्रसन्नता घेरे।
शोक मोह समुदाय भूलकर डालें कभी न उर में डेरे॥
साधन सभी दुखद दुनिया के बन जाते हैं उसके चेरे।
वह अस्तित्व भूलकर अपना चलता केवल इनके प्रेरे॥
करले दृढ़ प्रतीति इस पर बस अभी भाग्य जग जावें तेरे।
संभव "शुक्ल" सभी सहजहि हो इनके नेक दयादृग फेरे॥

मणि ६५

महादेव पर मरे परा हो ॥
श्रद्धा नहीं रंचहू तो भी कजनी का का करे परा हो।
चरखा से कैसौं जी छूटा जाँता हमरे गरे परा हो॥
रुचिकारी होते भि कुपथ से टारे इनके टरे परा हो।
चाहूँ नहि भरवाये इनके सद्गुण उर फुर भरे परा हो॥
तरने के साधन कुछ नहि पर तारे इनके तरे परा हो।
आदर सहित बोलाये अनके जाये इनके घरे परा हो॥
धरवाये इनके ही धनि-धनि रूप इन्हीं कर धरे परा हो।
झुके नहीं शिर "शुक्ल" किसी को पर इनके पग परे परा हो॥

मणि ६६

महादेव का विधान सुन्दर ॥
बैठे विषय विचारक इनके सभा बीच सब प्रधान सुन्दर।
योग्य एक से एक सभी हैं विद्याबुधि के निधान सुन्दर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राग-द्वेष से शून्य साथ ही वेद शास्त्र के विद्वान सुन्दर ।
पक्षपात से हीन सर्वथा करते निर्णय सुजान सुन्दर ॥
हो सकती है भूल क्यों उनसे जिनको की है विज्ञान सुन्दर ।
"शुक्ल" सहर्ष उसे शिर धारे होता उसका कल्यान सुन्दर ॥

मणि ६७

महादेव पर मरे परत वा ॥

अनइच्छित-इच्छित जैसे हो करवावें सो करे परत बा ।
चहती वृत्ति नहीं टरने को पर दोषन से टरे परत वा ॥
रुचि से या अनरुचि से ही जिस साँचे ढारें ढरे परत बा ।
खाली जगह न तो भी सद्गुण भरवावें उर भरे परत बा ॥
सींग पूछ बिन हिले हिलाये जहाँ चरावें चरे परत वा ।
श्रद्धा चाहे बिन श्रद्धा ही गुनगन गाना गरे परत वा ॥
कोई आश्रयदाता जग नहिं गरे इन्हीं के परे परत बा ।
करनी नहिं नीयत तरने की बरबस तारे तरे परत वा ॥
चाही नहिं चाही पर उनकर डेरा घुसकर घरे परत वा ।
झुक जाता अनयाश "शुक्ल" शिर पद पंकज पर धरे परत बा ॥

मणि ६८

महादेव की कृपा बनी है ॥

हुई अकारण किन्तु सकारण से भी शतगुन सत्य घनी है ।
अपनी ही विशेषता से यह हेतु बिना ही स्वजन गनी है ॥
मेरे हितकारी तत्वों को बहुतेरे बनि जननि जनी है ।
करना मम कल्याण अधिकतर लगता इसके दिल में ठनी है ॥
इसके ही प्रसाद मति मेरी प्रभु पद पंकज प्रीति सनी है ।
"शुक्ल" समझ में आता है की यह प्रसाद गुन अतिहि धनी है ॥

मणि ६९

महादेव कै काटा भैया ॥

रहे बढ़ाये हमहूँ ओनहूँ मेला में लिटी-भाटा भैया ।
खिसिऔनी कै मारा तब ओन हमैं उआसन चाटा भैया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहेन महेश-कन्हैया संघेन सब जन मिलि कै डाटा भैया।
भै लपटी-लपटा दूनौ कै कुरता-धोती फाटा भैया॥
तब फुल्ली-फुल्ला भै ओनके गोल से अपने छाटा भैया।
अहरा लगा लगे सानै हम गील होइगवा आटा भैया॥
कितनौ किहा उपाय ठेंग कुछ बनै न बाटी बाटा भैया।
गये चिरौरी किहा आपसे जस तस ओनके साटा भैया॥
सोझिआतेन जौ नहिं वहि दिन तौ होतै बहुतै घाटा भैया।
"शुक्ल" बदौलत हम भोला के पेट ठाठ से पाटा भैया॥

मणि ७०

महादेव पै बलि-बलि जैये ॥

महादेव की दई देह यह महादेव से बुधिबल पैये।
महादेव को दियो पिऊँ जल महादेव दत दाना खैये॥
कोटि अनन्त विश्व के स्वामी वर विभूति उर अन्तर छैये।
प्रतिपल के प्रतिपालक हैं जो जीभर तासु गुनावलि गैये॥
सादर सुभग सनेह सने शुचि इनका नाम निरंतर लैये।
कीरति गान जहाँ हो इनकी सुनन सश्रद्ध हो आतुर धैये॥
जिमि अगाध जल मीन मजे में इनकी शरण परे हम रैये।
पद पंकज निज शीश समादर संयुत "शुक्ल" नमित नित नैये॥

मणि ७१

महादेव हंकार न जाता ॥

तुमको भी नगण्य सा गिनता जब यह बेटा सचमुच आता।
विषयों का गुलाम होते भी निज को ही है ब्रह्म बताता॥
अनुभव शून्य रटे तोता सा वर विज्ञान की कथा सुनाता।
प्रेम रहित हिय होते देखूँ खूब भक्ति की गाथा गाता॥
नाक पकड़ जल छिड़क बार कुछ पूरा कर्मनिष्ठ दिखलाता।
कर यत्किंच कवायद यह तो योगी का सा रंग जमाता॥
होते तुम न सहायक मेरे तो यह हमको बहुत सताता।
"शुक्ल" बदौलत तुम्हरे इसको बार बराबर गिनूँ न भ्राता॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ७२

महादेव की पद-नख जोती ।।

लगती चटक चन्द्रिका जैसी चन्द्रकिरन धौलता को धोती ।
साधारन नछत्र गिनती क्या भृगु गुरु की भी गुरुता खोती ।।
इनकी दुति लखते ही दामिनि दुर जाती लज्जित सी होती ।
हीरा हास्य पात्र समझाता रोती सी लगती है मोती ।।
ज्योतिष्पुंज जगत के जितने सबकी यह विशेषता टोती ।
समता "शुक्ल" करै को यह तो ज्योति स्वरूप ब्रह्म की गोती ।।

मणि ७३

महादेव मन क्षुभित न करते ।।

लख मेरा आचरण अनैतिक किंचित् भी कुभाव नहिं भरते ।
फिर भी खुश होते हैं खुब ही जब हम हैं कुपंथ से टरते ।।
होते अति प्रसन्न हैं लखकर भक्तन गुरु द्विज देवन डरते ।
द्रवीभूत हो जाते तब तो जब हम किसी दीन पर ढरते ।।
अपना करके हरज हर तरह आपदग्रस्त की आपति हरते ।
पर संकट निर्मूल निवारण हेतु जो हम संकट में परते ।।
होते ज्वाला दग्ध किसी को देख बचाने हेतु जो जरते ।
सबलों से निबलों की रक्षा करने में सहर्ष जो मरते ।।
महामुदित होते उनको लख सुजन जो तारि कुजन को तरते ।
हम तो "शुक्ल" सदा ही उनके चरणों पर अपना शिर धरते ।।

मणि ७४

महादेव मन भाये भैया ।।

देखे सुनें और भी कितने यही नजर पर आये भैया ।
इनसा रूप स्वभाव आप सा गुन इनसा न दिखाये भैया ।।
एक-एक इनकी विशेषता लख चित अति चकराये भैया ।
इनके गुन अनगिन को गिनकर कौन समर्थ बताये भैया ।।
जाने-जाने पर इनके सच फिर नहिं अन्य सुहाये भैया ।
जानदार वह कौन जो जाने पर नहिं जान लुटाये भैया ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे तो मन में तन में भी हैं बस यही समाये भैया।
प्रान के प्रान "शुक्ल" जीवन के जीवन यही जनाये भैया॥

मणि ७५

महादेव के हो गये हम तो ॥

उनकी भूल भुलैया सी उस विशेषता में खो गये हम तो।
होती कहाँ वापसी है अब भली घड़ी से जो गये हम तो॥
खोने ही के लिये उसी में समझ बूझकर तो गये हम तो।
उनकी दरयादिली में पड़कर भलीभाँति से धो गये हम तो॥
उनके प्रेम मधुर मंजुल रस में पड़ मुदमय मो गये हम तो।
उनकी शांतिमयी शीतल सी सुखद गोद में सो गये हम तो॥
उनमें मिलकर सचमुच मानो उनमय होने को गये हम तो।
"शुक्ल" विन्दु मैं उनमें मिलकर सिन्धु स्वयं बन गो गये हम तो॥

मणि ७६

महादेव की कृपा के बल पर ॥

बड़ी मजा लेता हूँ मैं तुम सचमानो ई कृपा के बलपर।
साधन श्रम सब त्यागि सुसुख से रहा हूँ मैं जी कृपा के बलपर॥
इनके सुभग सुयश वर्णन में लगी रहे धी कृपा के बलपर।
जप-तप-ध्यान-धारणां सम्भव वस्तु सो मैं ली कृपा के बलपर॥
करतल गत दिखलाता शुभ फल चारु चारि की कृपा के बलपर।
तरसें जिसे ज्ञानि योगीजन मिलता वह भी कृपा के बलपर॥
फिरता मस्त सुधा मधु सुन्दर प्रेम सुरस पी कृपा के बलपर।
देख हृष्ट भरतार "शुक्ल" बनि मुक्ति युवति ती कृपा के बलपर॥

मणि ७७

महादेव हमको अति चाहैं ॥

यह तो बतलाना सम्भव नहिं किसी तरह भी की कति चाहैं।
है जितना सद्भाव हृदय में करना अधिक मेरे प्रति चाहैं॥
सर्वकाल सर्वथा सर्व विधि रखा सुरक्षित मम पति चाहैं।
लगी रहे सर्वतोभाव से गुण वर्णन में मम मति चाहैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुजन द्विजजन अन्य मान्यजन के प्रति करूँ प्रकट नति चाहैं ।
बिना किये ही साधन-पाधन देना मुझे परम गति चाहैं ॥
करना मम किंचित् छति चाहैं उनकी किया बहुत छति चाहैं ।
कर देना कृतकृत्य "शुक्ल" को देकर दिव्य चरण रति चाहैं ॥

मणि ७८

महादेव कोइ दोष रहें नहिं ॥

दूषित वातावरण में पड़कर हे प्रभु कभी कुपंथ गहें नहिं ।
बहती इस विषाक्त धारा में किसी तरह पड़ देव बहें नहिं ॥
अतिरति चरणों के प्रति तजकर हम त्रयलोक विभूति चहें नहिं ।
उत्तम हो हमको दीखें नहिं दीखें तो पर दोष कहें नहिं ॥
डाहे जाने पर जगजन से किसी को भी हम कभी डहें नहिं ।
सहलूँ दुर्व्यवहार सभी का मैं न करूँ मम अन्य सहें नहिं ॥
जहरीली भाषा प्रयोगकरि कभी किसी का हृदय दहें नहिं ।
"शुक्ल" कर्मणा-मनसा-वाचा पीड़ा मुझसे जीव लहें नहिं ॥

मणि ७९

महादेव की गोद में सोई ॥

अनुकम्पा इनकी से जिसमें सो पाता है विरला कोई ।
पड़ते ही उस दिव्य क्रोड़ में हम सद्यः निज संज्ञा खोई ॥
कितना भी प्रयास करके सच पा सकता नहिं कोई तोई ।
कृपा प्रसाद से ही पाता है कभी कदाचित् पाता जोई ॥
हम लख निज हीनता सुथल यह भर विस्मय मुँह आँसुन धोई ।
भरता नहिं जी किसी तरह भी चाहे हम जितना ही रोई ॥
अनायास श्रद्धा विहीन ही जाती स्वमति चरण रति मोई ।
चाहूँ "शुक्ल" सहस्र जन्म लें दास-दास का इनके होई ॥

मणि ८०

महादेव का दास दास मैं ॥

बनना हूँ चाहता हृदय से बन पाता यदि कभी कास मैं ।
जितने भी हैं दास-दास के गिन जाता उनमें जो खास मैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटे बड़े काम सेवक के करने का पाता जो पास में।
वरद राज के लिये छीलकर लाता कोमल हरी घास में॥
उनकी वृषशाला में ही जो करने पाता कहीं वास में।
गोमय औ गौमूत्र साफ सब करता रहता रहके पास में॥
लोकपाल दिगपाल से बढ़कर करता सचमुच निज को भास में।
सत्यलोक वासिन को सत्यहि गिनता "शुक्ल" सुपात्र हास में॥

मणि ८१

महादेव कल जरूर मिलिहैं ॥
टले बहुत वादे यह है सच सके न यह टल जरूर मिलिहैं।
हैं जानते टला यह भी तो जायेगा खल जरूर मिलिहैं॥
यह भी उनसे छुपा नहीं है होगा जो फल जरूर मिलिहैं।
हृदयवान हमदर्द हैं सो वे छोड़ सभी छल जरूर मिलिहैं॥
समझदार हैं ठीक समय से बतलाये थल जरूर मिलिहैं।
पिछड़ गये यदि वरदराज तो चार कदम चल जरूर मिलिहैं॥
सो तिथि वार प्रहर घटिका वह धन्य सो पल भल जरूर मिलिहैं।
उलझी "शुक्ल" समस्या युगकी करने को हल जरूर मिलिहैं॥

मणि ८२

महादेव दुख कोई न पावे ॥
दम घुटने लगता है मेरा जहाँ कोई भी दुखी दिखावे।
दो सद्बुद्धि चरित्र सुधारो जिससे तुम्हरी राह सुझावे॥
लेकर नाम तुम्हारा अपने जनम-जनम का पाप कटावे।
होय सुखी साथ ही साथ जो प्रेम मगन तुम्हरे गुन गावे॥
तुम्हरे अर्चन, वन्दन, सेवन में सादर जो मन मति लावे।
तुम्हरा रूप मानकर सबको सबकी सब कोइ विपति बटावे॥
सबसे करे सनेह सभी कोइ जग में प्रेम सुधा बरसावे।
"शुक्ल" शरण हो देव तुम्हारी लोक और परलोक बनावे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८३

महादेव पर जान लुटैबै ॥

जान के जान सुजान यही हैं ऐसा जान लजान लुटैबै ।
हैं ये प्रान के प्रान मान यह प्रानेश्वर पर प्रान लुटैबै ॥
सुख के मूल हेतु सुख के ये इनपर तन सुख खान लुटैबै ।
मर्यादा बाँधी कुल इनकी कुलपति पर कुल कान लुटैबै ॥
इनके रखे सुरक्षित है जो इन पर सारी शान लुटैबै ।
इनसे ही होता सनमानित इन पर निज सनमान लुटैबै ॥
इनकी प्राप्ति मात्र उर में रख शेष सभी अरमान लुटैबै ।
लोक सुखद-परलोक सहायक "शक्ल" सबै सामान लुटैबै ॥

मणि ८४

महादेव के हेरत बाई ॥

जानि परम हितकारी एनके जी जाँ से हम टेरत बाई ।
औरन से निरास हो हर विधि इनकर माला फेरत बाई ॥
भाग न पावें किसी तरफ ये चहुँदिशि से हम घेरत बाई ।
सुनी न कोई कै घर बैठे राग आपनै छेरत बाई ॥
नधलेन जबसे तबसे अबले परि कोल्हू में पेरत बाई ॥
सूझै और न ठौर "शुक्ल" बस एनके चरनन में रत बाई ॥

मणि ८५

महादेव का ध्यान किया कर ॥

ज्योतिर्मय वर वर्ण गौर भल उर पुर अनुसंधान किया कर ।
सुन्दर वदन सदन शोभा लख मदन मथन अभिमान किया कर ॥
मतवारे कजरारे प्यारे नैनन में उरझान किया कर ।
मणिमय मुकुट श्रवण-कुंडल युत प्रति अंग भूषण भान किया कर ॥
भाल विशाल सुभस्म विभूषित चन्द्रकला अनुमान किया कर ।
बिम्बारुण सस्मित अंकित नित हिय अनुपम अधरान किया कर ॥
निज को नित्य निछावर सुस्थिर देख मन्द मुसकान किया कर ।
भुज प्रलम्ब विस्तृत वक्षस्थल उदर तीनि बलिवान किया कर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केहरि कृत्ति कसे कटि मंजुल दामिनि दुति परिधान किया कर।
तरुण अरुण पंकज पद का रस "शुक्ल" भ्रमर बन पान किया कर॥

मणि ८६

महादेव सुमिरन में सुख बा ॥

कर देखो तुम भी तो समझो हमको तो करते ही सुख भा।
बह पड़ती धारा सी सुख की पड़ता फूट स्रोत सा सुख का॥
हर गलि कूच हरेक राह से आता रहता है सुख-सुख धा।
तन जाता वितान सा सुख का जाता दशो दिशाओं सुख छा॥
अनचाहे अनयास घेर सा लेता है उसको शुभ सुख आ।
बन जाती हर एक परिस्थिति उसके लिये हमेश: सुख दा॥
देता डेरा डाल हिये में बिदा किये से भी नहिं सुख जा।
वह सुखमय हो जाता सद्य: "शुक्ल" सर्वथा सुख ही सुख पा॥

मणि ८७

महादेव पग पर सिर धरना ॥

हर मौके हर वक्त परिस्थिति हर छन हालत हर सिर धरना।
फल की गंध न रखकर मन में करवावे सो कर सिर धरना॥
रुचि अनरुचि चाहे जैसे हो टारें उससे टर सिर धरना।
कुटिल हिये में दैवी सम्पति भरवावें तो भर सिर धरना॥
वज्र हृदय होते दीनों पर कर दयार्द्र दें ढर सिर धरना।
दे दें माल चकाचक सो सब इनके आगे धर सिर धरना॥
डारें नर्क न चिन्ता किंचित् तारें कृपया तर सिर धरना।
मिलें मजा लो "शुक्ल" मिलन का नतु वियोग में जर सिर धरना॥

मणि ८८

महादेव पद पद्म परागा ॥

प्राप्त हुआ जिसको किंचित् भी उसका भाग भलीविधि जागा।
चमत्कार कर दिखलाता है बन जाता हंसा सा कागा॥
दोष दुरित समुदाय दूर हो बच पाता नहिं भागा-भागा।
मिलता नित्य नवीन उसे सुख होता नहीं कभी भी नागा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहता वह प्रसन्न मन प्रमुदित प्रतिछन प्रेम सुधारस पागा ।
मिला करे हर समय उसे वह हर इच्छित पदार्थ बिन मागा ।।
अनायास मिल जाता उसको बिन साधन विज्ञान-विरागा ।
हो जाता कृतकृत्य सद्य ही "शुक्ल" सरिस अत्यंत अभागा ।।

मणि ८९

महादेव पद पद्म प्रवीनो ।।

सकलाभीष्ट सिद्धि दाता है गाता है गुन वेदहु तीनों ।
करो समाराधन उसका नित सुनो सभी हे सुकृत के कीनों ।।
होगा मुददायक तुमको यह मानों हे मनसा के खीनों ।
करे दूर दीनता तुम्हारी देर करो मत दौड़ो दीनों ।।
रह जावे नहिं रंच हीनता सचमानो हे हरविधि हीनों ।
गंध लेश भी रहे न गम की बन जाओ बेगम गमगीनों ।।
होवे स्वच्छ आशु ही अन्तः मानो मनके मित्र मलीनों ।
बनकर "शुक्ल" मिलिन्द कंज पद के मकरंद सुरभि शुभ भीनों ।।

मणि ९०

महादेव बिन बड़ी बेचैनी ।।

कोई और नहीं कारण कुछ उन अभाव सब खड़ी बेचैनी ।
छनभर को अवकाश न मिलता मची रहे हर घड़ी बेचैनी ।।
मालुम होता है जैसे हो रोम-रोम में जड़ी बेचैनी ।
भीतर भी घुस करके देखो दिल अन्दर है गड़ी बेचैनी ।।
आती रहती बाद एक के एक लड़ी की लड़ी बेचैनी ।
दिखलाता होनेवाली है और दिनोंदिन कड़ी बेचैनी ।।
हुआ है जब बिलगाव आपसे मेरे पीछे पड़ी बेचैनी ।
"शुक्ल" वे आकर दूर करें तव दूर होय यह अड़ी बेचैनी ।।

मणि ९१

महादेव छाती पर पग धर ।।

बैठे सिंहासन पर सुन्दर पादपीठ मम वक्षस्थल कर ।
बना प्रसंग सहज ही नहिं यह अनुनय-विनय बहुत करने पर ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सानुराग साग्रह प्रकार बहु कहने वाद कृपा उर में भर।
आनाकानी लगी न कोई तब हो विवश अनोखि ढरनिढर॥
धरते ही पद पंकज उस पर ही तल होय गया शीतल तर।
कोमल चरण वज्र तन मेरा व्यथा न होय लगे इसका डर॥
चुभलाऊँ अंगुष्ठ लें मुँह में खुजलाऊँ आँखों में भर वर।
धर मस्तक पर अंघ्रि "शुक्ल" की जनम-जनम की साध लिये हर॥

मणि ९२

महादेव में रहूँ समाया॥
महासिन्धु में पड़ी किसी भी यथामीन गति होती भाया।
यथा कूपमण्डूक कहो या नहिं दूजी दुनिया लख पाया॥
या सावन का अन्धा समझो हरा हरा हर ओर दिखाया।
इनके ही शुरूर में माता इनके ही गुरूर गरमाया॥
दीखे और न ढंग आँख पर रहता रंग इन्हीं का छाया।
तुमको पता न हो मस्ती में इनकी ही मस्तानी काया॥
इनके ही हुलास हुलसूँ हिय इनके ही उमंग उमगाया।
"शुक्ल" न चेतन मात्र मुझे तो रोम-रोम इनमय समझाया॥

मणि ९३

महादेव सा और कोई नहिं॥
कान्तिमान कमनीय कलेवर कुन्द इन्दु दर गौर कोई नहिं।
भाल विशाल विभूति लगाये चन्द्रकला की खौर कोई नहिं॥
सर्वगुणालंकृत सर्वेश्वर सर्वदेव शिरमौर कोई नहिं।
सब शोभासम्पन्न सरल शुचि मेरे चित का चौर कोई नहिं॥
मुझसे गये बिते को सादर दे बैठन का ठौर कोई नहिं।
पूछे बात अधम मुझसे को कभी किसी भी तौर कोई नहिं॥
नमक हराम अराम पसन्दहि देनेवाला कौर कोई नहिं।
चरण शरण को छोड़ "शुक्ल" इन मुझें दीखता पौर कोई नहिं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९४

महादेव को याद करूँ बस ॥

हो जाती इति कर्तव्यों की समझ यही तो याद करूँ बस ।
होता नहिं यथार्थ रीत्या यूँ भल अन्तस धो याद करूँ बस ॥
साधन सब बेकार ई जुग में जानिसार सो याद करूँ बस ।
इनका नाम और गुन इनके सदा यही दो याद करूँ बस ॥
रहना भान न भाता इससे निज को ही खो याद करूँ बस ।
बढ़ जाती अत्यन्त मधुरता रस सनेह मो याद करूँ बस ॥
हुए दिखाते हैं ये मेरे में इनका हो याद करूँ बस ।
हंस-हंस "शुक्ल" हमेशा करता कभी-कभी रो याद करूँ बस ॥

मणि ९५

महादेव पद परस वरस भर ॥

देता नहिं अवकाश मोह तोहिं रखता अतिशय गरस वरस भर ।
नित नइ वस्तु लुभावनि दिखला रखे सदा आकरस वरस भर ॥
प्रिय पदार्थ ला-लाकर तेरे रहे चखाता छरस वरस भर ।
सब पाने खाने पर भी नहिं जाती तेरी तरस बरस भर ॥
बीते जन्म असंख्य ऐस ही मिला न सुख का दरस बरस भर ।
अब इन चरनों का आश्रय ले हो सनेह शुचि सरस बरस भर ॥
तेरे आँगन में रिमझिम कर नित्यहिं आनँद बरस बरस भर ।
"शुक्ल" सदा तू प्रभुप्रसाद से हर हालत हिय हरस बरस भर ॥

मणि ९६

महादेव को सुमिर न कुछ कर ॥

खोया वक्त बहुत मैं कहता अब तो मत खो सुमिर न कुछ कर ।
कहाँ खोजकर ज्ञानयोग को थकता है जो सुमिर न कुछ कर ॥
ढोया तो जुग-जुग साधन के बोझ क्यों अब ढो सुमिर न कुछ कर ।
चाहे यदि कल्याण सहज ही सहसनेह तो सुमिर न कुछ कर ॥
जायेगा अबिलम्ब आप ही अन्तर मल धो सुमिर न कुछ कर ।
आवे हँसी तो हँस-हँस के नहिं हो गद्गद् रो सुमिर न कुछ कर ॥
सोया नहिं बहु जन्म-जन्म से अब सुख से सो सुमिर न कुछ कर ।
वे तो तेरे "शुक्ल" सदा के तू उनका हो सुमिर न कुछ कर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९७

महादेव पद पंकज प्यारे ।।

जग पावन मेरे मनभावन निज जन जिय के परम दुलारे ।
नव नवनीत सुकोमल मंजुल वरन तरुन अंबुज अरुनारे ।।
नखदुति चन्दकला छवि सोहत लखत नखत लजि जात बिचारे ।
आराधन करते दासन के दोष दुरित दुःख द्वन्द निवारे ।।
जुग के कारे परे भक्तउर ततछन ताहि करें उजरारे ।
हर के अंधकार अज्ञानहिं वर विज्ञान सुज्योति पसारे ।।
मेरे शिष्ट वरिष्ट इष्ट ये हैं ये ही सर्वस्व हमारे ।
"शुक्ल" मेरी जर्जर नैया के ये दोनों दृढ़ खेवन हारे ।।

मणि ९८

महादेव करें प्यार हमारा ।।

नहिं सामान्यतया सो समझो जैसे हो अत्यंत दुलारा ।
अखिल विश्व के प्राण प्राण सो समझें हमको प्राण अधारा ।।
बड़ी शौक से भरी साध से बड़े मजे में हमें संवारा ।
सरस युक्ति से जीवन सरि की मम निज ओर मोड़ दी धारा ।।
रहके सदा सतर्क करें ये हर हालत हर तरह सम्हारा ।
विविध प्रकार विविध सुख सज्जित आयोजन करते हैं सारा ।।
अपनों में कर गिनती मेरी न भू मात्रयू कीर्ति पसारा ।
कहते हैं तुम "शुक्ल" बनाओ चारों को चौचक्क स्वदारा ।।

मणि ९९

महादेव सँग छनती गहरी ।।

मैं भंगड़ सुलतान हूँ पूरा वे प्रसिद्ध हैं पूरे जहरी ।
मिला जोड़ बेजोड़ विश्व का दे गलबाँह मजे में टहरी ।।
होता विपिन विहार ठाठ से होती कभी सैर खुब शहरी ।
कहुँ एकान्तवास ही सुन्दर जाकर कहूँ होस्टल ठहरी ।।
लगता विविध प्रकार भोग कहुँ कहीं-कहीं बस केवल तहरी ।
उस दिन का क्या मजा बताऊँ जिस दिन ठहरी थी अठ पहरी ।।
मिल जाने से संग आपका मेरी ध्वजा स्वर्ग लों फहरी ।
"शुक्ल" चहूँ हर जन्म मुझे तो मिलें दोस्त ये लाला लहरी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १००

महादेव कल हमसे बोले ॥
खूब फिरा करते हो पंडित याँ वाँ चक्क बनाकर चोले ।
मैंने कहा बदौलत तुम्हरे सुनते हो न भगवन् भोले ॥
कहाँ गये थे अभी बनाये वेश अक्खडी सिर को खोले ।
मैं बोला क्या ठौर और है मुझे छोड़ इक तुम्हरे टोले ॥
बोले चलो चलें तुमको तो दिन हो गये कई सँग घोले ।
मैं बोला गत सोमवार को संग जमाया था भँग गोले ॥
बोले हार जायगी मानी आज समझलो कमती जोले ।
मैं बोला चेला तुम्हरा हूँ क्षर देना झरिया कर झोले ॥
पहुँचा वहाँ तो तुम्हें बताऊँ लगे दिखाने मासे तोले ।
मैं तो मचल पड़ा गहरी बिन छाने कहीं न बन्दा डोले ॥
धुली नहीं थी तब कहता था खोल कोठरी जी भर धोले ।
भींग रहे हैं देख नाँद में बुला कोई बादाम तो छोले ॥
बनी छनी कितनी क्या कहनी इक दो नहीं सभी गन को ले ।
मेरी नम्र प्रार्थना सुनकर कोई स्वजन जो इनका हो ले ॥
बिके बिकाये जो पहले से इनको आप मुफ्त में मोलें ।
कभी चैन से नहिं सोया नर "शुक्ल" सो अभी शांति सुख सो ले ॥

मणि १०१

महादेव हमें आज बनाया ॥
अनुकम्पा विशेष जब तुमने देवेश्वर जन जानि जनाया ।
गये बिते मुझसे की मुदभरि गनंना जव निज गनन गनाया ॥
निज करि जोरि जीव पामर से धन्य सुखद सम्बन्ध घनाया ।
चरण शरण में ठौर ठीक दे टरनाँ नहिं अस ठान ठनाया ॥
तरसें जिसे ज्ञानि योगीजन प्रेममयी निज भंग छनाया ।
दे पदरति अति देव दयामय मति सनेह शुचि सुरस सनाया ॥
संभव सेवा सुयश गान हो फिन-फिन फन वन ऐसे फनाया ।
"शुक्ल" प्रसाद तुम्हारा पाकर महामहोत्सव मुदित मनाया ॥

मणि १०२

महादेव थे रोज बनाते ॥
जान नहीं पाते थे हम जो अनुकम्पा थे रोज जनाते ।
गये बिते हम करें कल्पना कैसे गन में रोज गनाते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी ओर जोर पामर से शुभ सम्बन्ध हैं रोज घनाते ।
चरण शरण में ठौर ठीक दे टरूँ न ठान हैं रोज ठनाते ॥
तरसें जिसे ज्ञानि योगी सोइ भंग प्रेम मयि रोज छनाते ।
दे पदरति अति देव दयामय मति सनेह रस रोज सनाते ॥
सम्भव सेवा सुयश गान हो फनवन फिन-फिन रोज फनाते ।
"शुक्ल" प्रसाद इन्हीं का पाकर मुदित महोत्सव रोज मनाते ॥

मणि १०३

महादेव सुमिरन कर सारे ॥

कितनी बार कहा कितनी विधि सुनेगा नहिं कारे मुँह कारे ।
करके यूँ अनसुनी बात को तूने हैं बहु जन्म बिगारे ॥
अबहीं उतरा नहीं बता क्या चढ़ा हुआ दुर्दैव कपारे ।
इस सुमिरन के ही अभाव में तूने योनि अनेकन धारे ॥
कितनी नर्क यातना भोगी रोया कितना तू मुख फारे ।
सावधान मन अधम हो अब भी छोड़ प्रमाद कुभोग विसारे ॥
दौड़ शरण ले चरण कमल गहि पाहि-पाहि प्रभु पाहि पुकारे ।
दिखते नहिं क्या करूँ "शुक्ल" मैं खड़े प्रतीक्षा माहिं विचारे ॥

मणि १०४

महादेव से बैठूँ सटकर ॥

हूँ मैं उनका अंश सनातन किसी तरह नहिं कुछ भी घटकर ।
फिर क्यों सकुचाऊँ शरमाऊँ बैठूँ क्यों नहिं मजे में डटकर ॥
नागवार सा लगता इनको मैं बैठता जरा जो हटकर ।
पास पहुँच पाता कहँ कोई-जनम जनम बहु खटनी खटकर ॥
कभी न रोना मिटता उसका चलता है जो इनसे छटकर ।
तुम्हरा हूँ कहता जो आपसे लेते उसको अपना झटकर ॥
अपना कर लेते जिसको चट देते उसकी किश्ती तटकर ।
"शुक्ल" पा लिया इन्हें सहज में नाम मात्र बस इनका रटकर ॥

मणि १०५

महादेव मेरा शिर दाबें ॥

सेवक नहीं वैतनिक मेरे करुणाकर करुणा घिर दाबें ।
बढ़ी पीर दाबें संशय क्या बिलकुल नहिं रहते फिर दाबें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होय जरूरत जोर-जोर से नहिं तो खूब धिरैधिर दाबैं ।
शय्यासन पर ही सनेह सनि सावधान बैठे तिर दाबें ॥
उकताना जानें क्या कबहीं सत्यहि स्वस्थ बैठि थिर दाबें ।
बार-बार मैं कहता बस-बस मानें नहिं फिर-फिर-फिर दाबें ॥
बतलाना होगा क्या यह भी की बहुविधि विधान बिर दाबें ।
चाहें "शुक्ल" जन्म-जन्मान्तर चरण कमल इनके चिर दाबें ॥

मणि १०६

महादेव अवलम्ब एक तुम ॥

लोक और परलोक सभी के आश्रयदाता मेरे नेक तुम ।
होती जब जितने कि जरूरत देते हौ झट भेज चेक तुम ॥
अति उदारतापूर्ण भाव से पूरी करते सभी टेक तुम ।
आवश्यकता हो जब जो भी करते हो पूरी प्रतेक तुम ॥
कभी-कभी तो जगह एक की धर देते लाकर अनेक तुम ।
आवे चहे परिस्थिति जैसी भ्रट न होने दो विवेक तुम ॥
स्वजनों के सब तरह सहायक आदिकाल से हो जगेक तुम ।
निर्भरता में कमी-कभी भी हो न "शुक्ल" यह दो वरेक तुम ॥

मणि १०७

महादेव हम पुलकत बाई ॥

परे-परे चरपाई चौचक रहि-रहि के हिय हुलसत बाई ।
विविध देन को देख तुम्हारी मनहारी मन कुलकत बाई ॥
खट्टी-मिट्ठी चटक चरपरी चाट-चाट उर उमगत बाई ।
तोह से घुलै मिलै के एहि विधि पाये कुछ-कुछ फुरसत बाई ॥
प्राण अधार तोहार नाम हौ उहै मजे में धुनकत बाई ।
कलित कीर्ति गुनगन तोहार भल भल विभोर ह्वै भुनकत बाई ॥
सुधि करि-करि तोहरै कोठरी में परा-परा हम ठुनकत बाई ।
"शुक्ल" मिले बिन तोहरे कबसे विरह आग में झुलसत बाई ॥

मणि १०८

महादेव के चरन चकाचक ॥

हो जाता निहाल लखते ही ललित लाल वर वरन चकाचक ।
महामोद भरजाता लखते महामोद मनभरन चकाचक ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीतल हो जाता है ही तल देखत ही हिय हरन चकाचक ।
सहलाने लगता कोमलता कलित कंज रद करन चकाचक ।।
पा जाता चारों फल पाते चारु चारि फल फरन चकाचक ।
झरने लगते दृग लख परते दया वारि झरि झरन चकाचक ।।
नत मस्तक हो जाता आपहि देखे अवढर ढरन चकाचक ।
स्वीकृत सरन "शुक्ल" शठ कीन्हें धनि ये असरन सरन चकाचक ।।

मणि १०९

महादेव मणिमाल जो गावे ।।
उसके लिये जरूरी है यह शंका कहीं न मन में लावे ।
भाव विभिन्न भरे हैं इसमें लख करके नहिं चित चकरावे ।।
सब सम्भव हो नहीं जिसे सो अपनावे वह भाव जो भावे ।
उस साँचे में ढाले निजको जो भी भाव आप अपनावे ।।
लेना हो सुख तरह तरह के तो सबको स्वीकृति फरमावे ।
डूबा रहे भाव सागर में प्रेम पात्र नागर बन जावे ।।
विहरा करते हैं इस बन में खोजे सो निश्चय ही पावे ।
"शुक्ल" प्रार्थना मेरी है यह संशयशील न समय नशावे ।।

दोहा

बह जाता या बूड़ता, निश्चित मेरा जहाज ।
"शुक्ल" बचा तुमने लिया, धनि मेरे सरताज ।।
होती गति मेरी बुरी, मिले न होते आप ।
"शुक्ल" चबेना सा मुझे, जाते चबा ये पाप ।।
बकपाता हूँ मैं वही, वकवाते जो आप ।
"शुक्ल" बताओ फिर भला, मुझे लगे क्यों पाप ।।
वस्तु आपकी आपको, देना धींगा धींग ।
"शुक्ल" समझ इस बात को, करे समर्पण सींग ।।

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशीधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
तेरहवीं माला समाप्त ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवे नमः *

महादेव मणिमाला

चौदहवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

जानना चाहता था एक बात आज आपसे ये,
संभव नहीं क्या पास आना चाहता था मैं।
खाने से इकल्ले लगें माहुर पदार्थ प्यारे,
लगता सुस्वादु साथ खाना चाहता था मैं।
साज बाज होते जाते उखड़ अलाप सारे,
जमता जरा ले संग गाना चाहता था मैं।
बीती बेमजे ही "शुक्ल" जिंदगी हमारी अब,
चलते चलाते मजा पाना चाहता था मैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौदहवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मंगल बरसैहैं ॥
मंगल घन हैं ही करने में मंगल वृष्टि नहीं अरसैहैं ।
मंगल की ला बाढ़ विश्व में मंगल दिग दिगंत दरसैहैं ॥
मंगल सब दिन सरसाये हैं मंगल सब दिन ही सरसैहैं ।
मंगल रूप होय स्वजनों को मंगल हित कैसे तरसैहैं ॥
मंगल हीन दीन मनुजन को मंगल अनुकम्पा गरसैहैं ।
मंगलमय विचार सबके कर मंगल वर पुनीत परसैहैं ॥
मंगल प्रेम सुधा मधु रस दे मंगल नर मधुकर करसैहैं ।
मंगल महा "शुक्ल" घर-घर भर मंगल दै जन-जन हरसैहैं ॥

मणि २

महादेव हम दास आपके ॥
है जानता जहान बात यह और नहीं हम तप न जाप के ।
इस व्रत उस व्रत को कर कबहीं मरते हरगिज हम न टाप के ॥
जल निवास नहिं कर हेमंत में ग्रीषम में नहिं तप न ताप के ।
चार धाम तीरथ थल अनगिन के थकता नहिं राह नाप के ॥
पर अनुकम्पा सेहि आपके सब कट गये पहार पाप के ।
सारे उर विकार को सचमुच बैठा हूँ बेतरह चाप के ॥
शीश उठाने की भी तो नहिं हिम्मत करते कोई झाप के ।
"शुक्ल" बड़ा रँग बँधा दीखता बेटा बने जो बड़े बाप के ॥

मणि ३

महादेव हम कैसे आई ॥
हूँ मैं महाअपंग देववर तुम तक कहो पहुँच कस पाई ।
तुम्हरे बिना और यह बोलो कैसे पूछी कौन बताई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनता कौन गोहार किसीकी हक नाहक के के गोहराई ।
होने से हतबुद्धि समझ नहिं पाई कौन युक्ति अपनाई ।।
बड़े पाप घेरे हैं हमको कैसे अहो शरण समुहाई ।
आशुतोष पर आश आपकी हम हर भाँति लगाये बाई ।।
कौनौ करि उपाय सर्वेश्वर लेव दास निज पास बुलाई ।
"शुक्ल" असीसी रोम-रोम से जुग-जुग जस तुम्हार हम गाई ।।

मणि ४

महादेव जब चाहे लखलूँ ।।
रुचि ही है अपनी यह तो जी क्यों पूछो तुम काहे लखलूँ ।
कभी न रंच रुकावट होती तब फिर मैं नहिं काहे लखलूँ ।।
इस कारण उस कारण ही क्यों जी चाहे मैं जाहे लखलूँ ।।
अनायाश ही यूँ हि अकारण साध लगी बस ताहे लखलूँ ।।
जाकर लखूँ बुलाकर लखलूँ आते जाते राहैं लखलूँ ।
शीत घाम नहिं सहूँ "शुक्ल" मैं बैठे-बैठे छाहें लखलूँ ।।

मणि ५

महादेव सुमिरन सुख भरा ।।
होती नहिं प्रतीति तो पूछो सह सनेह जिसने हो करा ।
सुमिरन कर्ता सत्य सद्य ही खोटे से हो जाता खरा ।।
प्रेरित हो इनसे कुपंथ तजि पग सुपंथ दीखे धनि धरा ।
टर जाता अनयास दोष से जो न किसी के टारे टरा ।।
इनकी अनुकम्पा से आशुहिं दिखलाता नव साँचे ढरा ।
खोजे जो न मिले औरों को सो सद्गुण मिल जाता परा ।।
होता असर न त्रयतापों का हर हालत रहता हिय हरा ।
अनचाहे आँगन में उसके दिखे चारु चारो फल फरा ।।
निज में तरना क्या विशेषता वह तो तार कितनों को तरा ।
"शुक्ल" अमर हो जाता निश्चित कहते कहनेवाले मरा ।।

मणि ६

महादेव सन्निकट हमारे ।।
मेरे ही क्यों मानो तो तुम तुम्हरे भी नेरे हैं प्यारे ।
हम तो इनसे लाभ उठाते तरह-तरह के न्यारे-न्यारे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदिकाल के बसे दस्युदल को उर पुर से सभी उजारे ।
उज्ज्वल करते रहते हैं ये मेरे कारगुजारे कारे ।।
जितने भी हैं काज हमारे इनके द्वारा जाँय सँवारे ।
मैं निशंक विचरा करता हूँ इनके ही इकमात्र सहारे ।।
रखते सदा सुरक्षित सब विधि रहके मेरे साथ बिचारे ।
"शुक्ल" इन्हें पा पास आप यह समझें सोता पाँव पसारे ।।

मणि ७

महादेव मक्कार महा मैं ।।

आज हो गया हूँ ऐसा नहिं लगता है सब दिनहि रहा मैं ।
तब ही तो इस जीवन में भी राह निद्य मक्कार गहा मैं ।।
जिससे भी जो कहा झूठ सच मक्कारी की बात कहा मैं ।
मक्कारी हो सफल सब तरह सचमानो वह चीज चहा मैं ।।
मक्कारी जहँ जाय पढ़ाई जाता हूँ झट पहुँच तहाँ मैं ।
मक्कारी प्रचार करता खुब जा पहुँचूँ हूँ जहाँ-जहाँ मैं ।।
पता नहीं क्यों तब अहैतुकी कृपाकोर पर देव लहा मैं ।
"शुक्ल" बना अलमस्त उसी से हँसता हूँ हा हहा-हहा मैं ।।

मणि ८

महादेव सबको धर पटकें ।।

स्वजनों के अनिष्टकर तत्वों को तत्पर होकर झट झटकें ।
मूल उखार फेंक दें उसका जो इनको किंचित् भी खटकें ।।
पाते रंच इशारा इनका गन धर देंय काटकर कटकें ।
लेंय निकाल कचूमर उसका जो चाहें मूठी से छटकें ।।
उनके सद्यस्रवत सोनित को प्रमुदित मन जोगिनि गन गटकें ।
लख ऐसी यातना विचारे उर विकार जन पास न फटकें ।।
दास सहायक आप सरीखा होते भी नर भव में भटकें ।
"शुक्ल" लहाले कोई दोनों केवल नाम आपका रटकें ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९

महादेव कल परे फेर में ।।

पहले मुझको भोला-भाला समझ खूब भल परे फेर में।
पर जब कलई खुली हमारी जान महाखल परे फेर में।।
सज्जनता के बदले मेरे सुने सभी छल परे फेर में।
अपनाने की वात कह चुके सके न अब टर परे फेर में।।
सोच रहे थे इसी विषय में बैठे वटतल परे फेर में।
आई वाढ़ जो करुणार्णव में बढ़ा आत्मबल परे फेर में।।
उठे हुए असवार बैल पर आये मम थल परे फेर में।
"शुक्ल" लगाया गले भले वे निकला यह हल परे फेर में।।

मणि १०

महादेव कर विफल मनोरथ ।।

लगता है आघात सा मन को होता हूँ गर विफल मनोरथ।
देय टार आशा जग जनकी तुरंत ही पर विफल मनोरथ ।।
आशा लतिका की सद्यः ही देय काट जर विफल मनोरथ।
हो जाता अभिमुख तुम्हरे झट होता जो नर विफल मनोरथ।।
जाय कहाँ तब राह तुम्हारी लेता है धर विफल मनोरथ।
तव तो उसके लिये चारिफल देता है फर विफल मनोरथ ।।
होते भी अभिशाप सिद्ध होता है शुभवर विफल मनोरथ।
"शुक्ल" तुम्हें तज देव जगत में होऊँ मैं हर विफल मनोरथ।।

मणि ११

महादेव प्रतिकूल सहाओ ।।

हंसते हर अनुकूल परिस्थिति हर हालत हर हमें हँसाओ।
परवा रंच न कर रुचि की मम-मन चाहे निज दृश्य दिखाओ।।
जो भी चाहो आप चित्त से वही चीज बस मुझे चहाओ।
होगा सच अनर्थकारी वह मेरी मन चाही जो कराओ।।
लौकिक क्या स्वर्गीय प्रलोभन से भी वृत्ति न मेरी हिलाओ।
होने से अल्पज्ञ देववर हित-अनहित मैं समझ न पाओ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ आप हैं निज इंगित पर मुझे नचाओ ।
सौ की एक "शुक्ल" यह सुनलो हमें हर तरह से अपनाओ ॥

मणि १२

महादेव आये थे उस दिन ॥
रूप अनूप सलोना सुन्दर अतिशय मन भाये थे उस दिन ।
किन्तु बनाये वेष विचित्रहि लख हम चकराये थे उस दिन ॥
छिद्रयुक्त कौपीनमात्र तन तेजस् चमकाये थे उस दिन ।
विश्ववंद्य दिख रहे सो नंगा कह हम मुसकाये थे उस दिन ॥
दृष्टिकोण मेरा स्विकार कर शर्मद शर्माये थे उस दिन ।
पर अबोधता को विचार मम सुरवर समझाये थे उस दिन ॥
आत्मस्थित का ढका खुला क्या सुन हम सकुचाये थे उस दिन ।
"शुक्ल" करूँ वर्णन कैसे जो सदुपदेश पाये थे उस दिन ॥

मणि १३

महादेव मौके से आये ॥
दिन बढ़िया बसन्त पंचमि का छनने की धुन मन में लाये ।
उनके अनुरागी सज्जन जो उनको हम दस-पाँच बोलाये ॥
विजया औ बादाम, लायची, पिस्ता, केसर आदि जुटाये ।
बजने लगा खटाखट बट्टा श्यामा गौ का दूध मँगाये ॥
सित शर्करा मलमली साफी चौपरती कर दिव्य छनाये ।
भोग लगाने हेतु आपको आँख बन्दकर सब बैठाये ॥
देखें जो दृग खोल सभी तो बैठे हैं मुँह आप लगाये ।
फिर की फिर पूछना कभी जी "शुक्ल" किस तरह कौन बताये ॥

मणि १४

महादेव से जो-जो बातें ॥
होती रहती हैं हमसे जी कहूँ किस तरह सो-सो बातें ।
दो पर दो तो होती ही हैं शामिल हो नहिं को-को बातें ॥
गंध नहीं छल कपट की किंचित् होती अंतस् धो-धो बातें ।
बड़ी मौज से मस्ती में भर खूलकर आपा खो-खो बातें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोम-रोम पुलकित कर देती प्रेम सुधा रस मो-मो बातें।
"शक्ल" कभी खुब हँस-हँस होतीं होतीं कबहीं रो-रो बातें॥

मणि १५

महादेव पदकंज अमोले॥
हैं हीं और नहीं कोइ वैसे किसे कोई तुलना में तोले।
कुंजी हैं अंगुलि गन जनके बन्दभाग्य का ताला खोले॥
रज कण में इनके है शक्ति वह भर दे झट्ट मनोरथ झोले।
होते ही प्रपन्न स्वजनों के हिय में प्रेम सुधा मधु घोले॥
आश्रित नर को धारण करने पड़ते नहीं विविध विधि चोले।
चारि पदारथ करतल उसके आश्रय इनका जब भी जोले॥
चितनमात्र इन्हीका कर कोइ अन्तःकरण आशुहीं धोले।
इनकी छाया में आ कोई विगतताप हो शान्ति से सोले॥
हो जावे कृतकृत्य ततक्षण गति अनन्य हो इनका होले।
"शुक्ल" और कुछ जाने ही नहिं जय-जयकार इन्हीं की बोले॥

मणि १६

महादेव जिउ मारैं बप्पा॥
का जानी केहि जनम कै दैया कस कै कंसर निकारैं बप्पा।
बाभन बूढ़ बेदाँती जानत दया नहीं हिय धारैं बप्पा॥
हम-पा-जीव जुड़ावा चाही जानि-जानि ई जारैं बप्पा।
पथरा वने पसीजत नाहीं हमका भूँजे डारैं बप्पा॥
अहनिशि आह निर्दयी वन के उर पुर बज्जर पारैं बप्पा।
नंगा निठुर अनंगा रिपु सो कुटिल करेजा फारैं बप्पा॥
गजब करैं बेखौफ अजब ये सोचैं कुछ न बिचारैं बप्पा।
कोई लगो गोहार हाय रे कब से "शुक्ल" पुकारैं बप्पा॥

मणि १७

महादेव की बात बिचित्रै॥
भूतात्मक नहिं चिन्मय केवल दर्शनीय गुरु गात बिचित्रै।
चतुर्वर्ण से भिन्न सर्वथा वर्णनीय नहिं जात बिचित्रै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लँगड़े लूले काने खोरे बैठी घेरि जमात बिचित्रै ।
कूँड़ी सोटा भाँग धरी बस बात वड़ी औकात बिचित्रै ॥
करते ताण्डवनृत्य आप जब सचमुच दृश्य दिखात बिचित्रै ।
प्रकट शास्त्र हो नाद से जिसके बाबा डमरू बजात बिचित्रै ॥
मेरे बेटा वाप मतारी सार भनोई नात बिचित्रै ।
"शुक्ल" तुम्हारी तुम जानो-यह हमको देव सुहात बिचित्रै ॥

मणि १८

महादेव के चरन जो देखूँ ॥
तो अतिभाग्य सराहूँ अपना महामोद मन भरन जो देखूँ ।
जाऊँ बलि-बलि वार अनेकन ललित लाल वर वरन जो देखूँ ॥
तो लूं चूमि सहर्ष कमल की कोमलता रद करन जो देखूँ ।
हो जावे जिव जूड़ अभी ही मेटन उन जिय जरन जो देखूँ ॥
भरजाऊँ उमंग से अतिशय रंच झलक उर धरन जो देखूँ ।
ततछन हों दुख दोष दूर सब अखिल दुरित दल दरन जो देखूँ ॥
तरने की मिटजाय साध सब दृगभरि तारन तरन जो देखूँ ।
सफल मनोरथ होंय सद्य हम सहज चारिफल फरन जो देखूँ ॥
जाऊँ हिरा आशु हेरत ही मैं अपने हिय हरन जो देखूँ ।
"शुक्ल" मुक्ति चारो ठुकराऊँ शिरधरि उनपर मरन जो देखूँ ॥

मणि १९

महादेव रस चखे सो जाने ।
स्वाद विशेष किसी भी रस का बतलाओ बिन चखे को जाने ।
क्या जाने वह ठीक किसी भी यदि रसज्ञ के कहे जो जाने ॥
कभी किसी भी तरह भाग्यवश कहीं प्राप्त हो उसे तो जाने ।
जाना चहे सुभागि सर्वथा रस दाता का ही हो जाने ॥
होने में उसके ये शर्त है निज निजत्व को ही खो जाने ।
कोई और न "शुक्ल" तीसरा रस पाता दाता दो जाने ॥

मणि २०

महादेव आनँद अधिकाये ॥
हटा लिये सब साथ साथ ही जितना थे प्रतिबंध लगाये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण अन्य समर्थ न इसमें अतिशय अनुकम्पा दरसाये ॥
अनायास करि कृपा अहैतुकि निज उदारता प्रकटि दिखाये ।
बिगरी जन्म जन्म की सगरी बात बात में बेगि बनाये ॥
प्रगति कराते ओर आपनी देखूँ मैं हो से हे लाये ।
हतभागी अपराधी मुझसे पर अत्यंतहिं प्यार जनाये ॥
चरम शरम सुख हेतु चरन प्रति अपने परम सनेह सनाये ।
"शुक्ल" सहस शतबार शीश निज पद पंकज नाये हरषाये ॥

मणि २१

महादेव से हँस-हँस बतला ॥

काफी है संकेत इतन ही और कहूँ क्या कस-कस बतला ।
कर भी तो प्रारंभ देखना मजा मिलेगा जस-जस बतला ॥
जस-जस हो सुख बोध हटे क्यों रोक नहीं कुछ तस-तस बतला ।
हो उत्साह एक भर तो तूँ मैं कहता हूँ दस-दस बतला ॥
उतावली क्यों तुझे पड़ी है लेत भये रस रस रस बतला ।
यह तबियत तेरी है चाहे जोर-जोर या फस-फस बतला ॥
करता क्या बेमन-सी बातें पूर्ण प्रेम से लस-लस बतला ।
"शुक्ल" किया नहिं कभी किसी से खूब खोल दिल अस-अस बतला ॥

मणि २२

महादेव की बात को समझे ॥

सच तो यह की कृपाकार कर जिसको समझावें सो समझे ।
समझा सो नहिं सके अन्य को किसी तरह से भी जो समझे ॥
इनसे अनुनय विनय किये पर ये यदि चाहेंगे तो समझे ।
समझदार शिरमौर भले हो ये नहिं चाहें तो नहिं समझे ॥
तद्विपरीत ये है हो सकता समझ निजी सबको खो समझे ।
गंदादिल रखकर हरगिज नहिं जो समझे दिल को धो समझे ॥
हँस-हस भी समझा जा सकता आसानी से रो-रो समझे ।
"शुक्ल" द्वैत में देर लगेगी इनसे झट अद्वैत हो समझे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २३

महादेव का भजन भला है।।

मनरंजनि परलोक सँवारनि बंदनीय कलि कलित कला है।
किन्तु किये प्राचीन पाप से हाय शोक हम खलन खला है।।
भजनीकों की हँसी उड़ाना निंदनीय इक चलन चला है।
ऐसे इसे कहा जा सकता दुर्दिन ने मम बुद्धि छला है।।
भजन हीन होने से प्राणी जुग-जुग से त्रयताप जला है।
विफल मनोरथ होय वार बहु शिर पीटा खुब हाथ मला है।।
अनुकंपा अनुकूल पायरितु अब मानो तरु सुकृत फला है।
"शुक्ल" शरण होते हि शंभु की भव बंधन से मुक्त गला है।।

मणि २४

महादेव की शरण में आओ ।।

अष्टग्रही बाधा से पीड़ित सारा जन समुदाय बुलाओ।
महाभीत जनता को जाकर मेरा शुभ संदेश सुनाओ।।
जैसे जो समझे समझाकर इनकी शरणागति में लाओ।
लाकर छत्र छाँह में इनकी सबको निर्भय निपट बनाओ।।
आलस छोड़ प्रमाद त्यागकर जितना घटे विलास घटाओ।
जिस प्रकार कर सके जो उससे वैसे आराधन करवाओ।।
पूजन करो प्रणाम करो कोइ जी भर नाम जपो गुणगाओ।
"शुक्ल" प्रसाद प्राप्तकर प्रभुका सामूहिक आनंद मनाओ।।

मणि २५

महादेव की शरण सिधारो ।।

कहता हूँ निहोर कर तुमसे मेरी बात ये मानो यारो।
सबसे पहले करो काम यह डरो नहीं उर भीति निकारो।।
दुर्दिन है सामने तो मित्रों दिल से दुर्विचार सब टारो।
आशुतोष की आश भरो हिय पूरे मन से उन्हें पुकारो।।
करता जो कल्याण सदा ही शंकर उसको कहें विचारो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो सकता नहिं अकल्याण कुछ इनके रहते मानो प्यारो ॥
देवाराधन करो नाम लो प्रभु का पूर्ण भरोसा धारो ।
हर से लगन लगाओ हरविधि "शुक्ल" न हरगिज हिम्मत हारो ॥

मणि २६

महादेव यह कल कहते थे ॥
पाये हो बाभन की काया क्यों बनते हो खल कहते थे ।
बूढ़ भये दिन मरन के आये छोड़ो अब सब छल कहते थे ॥
हुआ हो गया पर दोषों से अब बिलकुल ही टल कहते थे ।
छोड़ कुराह भद्रजन चलते उस शुभ पथ से चल कहते थे ॥
मैं कहता सो मान बेगिही नव साँचे में ढल कहते थे ।
वर्ना खूब समझ लो होगा बुरा भोगना फल कहते थे ॥
करने से सुकर्म सद्यः ही बढ़ता आतम बल कहते थे ।
कहते भले लोग जैसे सब "शुक्ल" मेरे हित भल कहते थे ॥

मणि २७

महादेव से कल मैं बोला ॥
सुनकर उचित बात विभुवर की बन करके विनम्र खल बोला ।
निसंकोच निर्भय नितांत हो छोड़ भलीविधि सब छल बोला ॥
कथन आपका शिरोधार्य ही करने में मेरा भल बोला ।
करदें आप विरत विषयों से मैं जाऊँ तुरंत टल बोला ॥
जिस भी साँचे आप ढालिये जाऊँगा मैं झट ढल बोला ।
रखना चहें रहूँ मैं वैसे मुझे सुनावें मत फल बोला ॥
धर्म कर्म का नहीं मुझे है एकमात्र तुम्हरा बल बोला ।
"शुक्ल" समस्या मेरी सारी तुमको करना हो हल बोला ॥

मणि २८

महादेव हितकारी हरके ॥
आवे शरण आपकी कोई चाहे पाप कितन हूँ करके ।
लेते हैं अपनाय उसे ये दृढ़ता से उसका कर धरके ॥
राह चलत लें पकड़ कभी तो अवढर-ढरन अहैतुक ढरके ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझें इन्हें पराया हम हीं इनको सब दिखलाते घरके ॥
अछत दयालु आपसा हा दुख मरते हम त्रिताप से जरके ।
जगजन से गठबन्धन करके इनसे फिरते हैं हम टरके ॥
इरके चलते नहिं कुकर्म से चाहे परें बार बहु नरके ।
भोंगे यमयातना विविध-विधि पहुँचे जब जमलोक में मरके ॥
घूमें योनि अनेक विवश बन अघ का घड़ा धरे शिर भरके ।
खरके बने ढोवते लादी श्वान सुनें दुर-दुर दर-दर के ॥
केवल नाम देव लेकर के पद पंकज में प्रभु के परके ।
"शुक्ल" चारु चारों फल फरके पहुँचे पार सिन्धु भव तरके ॥

मणि २९

महादेव से हँसबै बोलबै ॥

कौन जरूरत और किसीकी इनसे आपन अंतस खोलबै ।
इनसे अति अनुराग बढ़ाकर घुलमिल प्रेम सुधा रस घोलबै ॥
इनही को ले साथ सर्वदा चाहे जहाँ मजे में डोलबै ।
रह इनके अनुकूल सर्वथा "शुक्ल" इन्हें बिन मोलहि मोलबै ॥

मणि ३०

महादेव भज भोर भया रे ॥

मंगल आरति हो मंदिर में शंख घंट बज भोर भया रे ।
आलस छोड़ प्रमादी उठ झट चट शय्या तज भोर भया रे ॥
पड़े सभी शुभ काज करन को दीर्घसूत्रि लज भोर भया रे ।
मात-पिता गुरुजन वंदनकर धर शिर पद रज भोर भया रे ॥
हो पवित्र करि प्रात कृत्य निज बैठि देव यज भोर भया रे ।
हो परत्र कल्याण "शुक्ल" सो साज सभी सज भोर भया रे ॥

मणि ३१

महादेव कल पार चलोगे ॥

मौसम भी अच्छा दिन अच्छा बतलाओ तो यार चलोगे ।
चटक चाँदनी रात नाव पर करने रैन विहार चलोगे ॥
मैं जो कहता हूँ सो शर्त पर हो कर कहो तयार चलोगे ।
हमें अघाओ तुम हम तुमको करके यह इकरार चलोगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छेके हैं जो दोस्त तुम्हारे कर उनको इन्कार चलोगे ॥
बसी दिखेगी सचमुच तुमको मौजों की बाजार चलोगे ।
मिला न हो जो कभी आजतक वह लूटने बहार चलोगे ॥
पाया हो हरगिज नहिं जैसा वैसा पाने प्यार चलोगे ।
हमें न रुचता जो न बोलते पूछ चुका कै बार चलोगे ॥
"शुक्ल" कहो सरकार चलोगे बोलो प्राण अधार चलोगे ॥

मणि ३२

महादेव बिन भा चित बाउर ॥

पूछ रहे बेकार मित्र तुम बतलाऊँ कस का चित बाउर ।
भास जाय भलिभाँति तुम्हें ही देखो निकट जो आ चित बाउर ॥
भोजन धरा परोसा सम्मुख बेमन के ही खा चित बाउर ।
गायक है गाना पड़ता है पर जस तस ही गा चित बाउर ॥
यहाँ वहाँ भी जाना पड़ता ले जाता कोइ जा चित बाउर ।
कभी-कभी तो निरुद्देश्य ही यत्र-तत्र बस धा चित बाउर ॥
रहता पर मन मगन सदा ही पाता नहीं क्या पा चित बाउर ।
जानि इष्ट ही जड़ चेतन को "शुक्ल" सबहि शिर ना चित्र बाउर ॥

मणि ३३

महादेव हैं चढ़े कपारे ॥

आज नहीं सच आदिकाल से उतरें हरगिज नहीं उतारे ।
कोई काम न मैं निज मनका करपाता हूँ इनके मारे ॥
कहती दुनिया कर्ता मुझको सुन लेता हूँ बस चुप मारे ।
विवश बना सचमुच झख मारूँ नाचूँ मैं इनके हि इशारे ॥
बनें काम इनके हि बनाये बिगरें सो इनके हि बिगारे ।
कभी वाह वाही दें मुझको कबहीं नाहक थूकें सारे ॥
उसमें भी है हाथ इन्हीं का कहें वे जाते भले बिचारे ।
जीते अपने जान सभी से मगर "शुक्ल" हम इनसे हारे ॥

मणि ३४

महादेव को सुमिर सबेरे ॥

जचता यदि यह काम जरूरी मैं कहता तो सुमिर सबेरे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुविधा मिले जहाँ सुमिरन की तजि प्रमाद जो सुमिर सबेरे ॥
नर है खर नहिं बड़े फजर से मत लादी ढो सुमिर सबेरे ।
प्रभु का नाम-पराया हित बस और न कुछ दो सुमिर सबेरे ॥
पर अपवाद परार्थं हानि छिः भूलि कभी नो सुमिर सबेरे ।
कब का गंदा पड़ा सद्य ही अंतस मल धो सुमिर सबेरे ॥
वैर बबूल विहाय अंब के प्रेम बीज बो सुमिर सबेरे ।
आनंद मगन इकंत बैठि कहुँ धार बाँधि रो सुमिर सबेरे ॥
हारा थका भ्रमत संसृति में शांति सेज सो सुमिर सबेरे ।
"शुक्ल" हुआ सो हुआ किन्तु अब कृत्य कृत्य हो सुमिर सबेरे ॥

मणि ३५

महादेव सा नेक न दीखा ॥

ठीक वक्त पर अटके जन को देनेवाला चेक न दीखा ।
दिया किसी को कभी किसी ने देता जो कि प्रत्येक न दीखा ॥
एक माँगता दास उसे हो देता कोइ अनेक न दीखा ।
हत भागी अपराधी नर से मिलनेवाला छेक न दीखा ॥
अपनी टेक भुला सेवक की रखने वाला टेक न दीखा ।
अद्वितीय ये "शुक्ल" जोड़ का इनके जग में एक न दीखा ॥

मणि ३६

महादेव दी खरी सुचित्ती ॥

दुर्लभ जैसी देवगनों को ऐसी अनुपम करी सुचित्ती ।
जाती नहीं विदा करते भी रहती है हर घरी सुचित्ती ॥
होता नहीं गरम-रखती है दिल दिमाग में तरी सुचित्ती ।
हर हालत हर समय हमारी रखे ये तवियत हरी सुचित्ती ॥
भर सी दी अलमस्ती उर में है यह अद्भुत जरी सुचित्ती ।
कह को सके स्वाद गुण इसका नित्य नवल रस भरी सुचित्ती ॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष भी थाल परोसे धरी सुचित्ती ।
"शुक्ल" वही जाने सुख इसका जिसके पतरी परी सुचित्ती ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३७

महादेव पद पंकज सहला ॥

गौरव से भर जावेगा तू देव देव का सेवक कहला ।
स्वयं नहाले जल सुरसरि का हो जावे निहाल तू नहला ॥
संसृति की दौरान से बच जा जो इनकी गलियों कर टहला ।
उदासीनता पास न फटके इनके गुन गा गा मन बहला ॥
लेकर नाम फकत-इनका-दिल यमका यमदूतों का दहला ।
इन्हें समर्पण करे कर्म सब छू न जाय पग में भव चहला ॥
ले पद थाम जो इनका अबहीं सुविधा से भवसागर थहला ।
जस तस "शुक्ल" प्राप्ति हो इनकी जीवन का यह काम है पहला ॥

मणि ३८

महादेव के डोलूँ साथी ॥

जाना कहीं जो होता हमको अवशिमेव इनको लूँ साथी ।
जाता लख पाता कहिं इनको चुपचापहि मैं होलूँ साथी ॥
कहना हो कोइ बात किसी से तो हम दोनों बोलूँ साथी ।
धरा परोसा थाल सामने भोजन को मुख खोलूँ साथी ॥
इसे वताना है बेकार सा भोजनान्त कर धोलूँ साथी ।
रह अनुकूल एक के इक हम एक-एक को मोलूँ साथी ॥
खेलूँ साथ गाय लूँ साथहि हँस लूँ साथ मैं रोलूँ साथी ।
आये समय शांति शय्यापर "शुक्ल" सदा ही सोलूँ साथी ॥

मणि ३९

महादेव का करा भरोसा ॥

जबसे तबसे तुम्हें बताऊँ लोक जनों का जरा भरोसा ।
रह नहिं गया किसी कोने में ऐसा दिल से टरा भरोसा ॥
रखना मैं चाहूँ रहता नहिं पता नहीं क्यों डरा भरोसा ।
ठौर और के लिये जरा नहिं नखशिख इनका जरा भरोसा ॥
रहा नहीं अस्थान आनको रोम-रोम भल भरा भरोसा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवश्यक जब हुई वस्तु जो यह झट झर-झर झरा भरोसा ।।
अनधिकारि मुझसे के हित भी शुभ चारों फल फरा भरोसा ।
"शुक्ल" धरा है जबसे मैंने रखता है हिय हरा भरोसा ।।

मणि ४०

महादेव सुख नींद सुलाते ।।

इन अशांत जगके जीवों को सादर मेरे देव बुलाते ।
आ जाते जो भाग्यमान नर उनको स्वजनों में हि तुलाते ।।
उसके किये करोड़ जन्म के अपराधों को तुरत भुलाते ।
जैसी खुलती कभी किसी की उसकी अस तकदीर खुलाते ।।
राह रूंध उसकी खोटी सब अपनी गलियों में हि डुलाते ।
करवाकर सुमिरन सप्रेम निज उसका अंतःकरण धुलाते ।।
फूले फूल हजारा जैसा करके उसे प्रफुल्ल फुलाते ।
"शक्ल" सुनो संक्षेप में उसको लेकर अपनी गोद झुलाते ।।

मणि ४१

महादेव पद लोटत मरी ।।

आज नहीं यह जनम-जनम से हिय में साध हमारे धरी ।
इसकी प्राप्ति हेतु हमसे वे साधन जौन करावें करी ।।
गीषम तापि सविधि पंचागिनि जीभर हमैं जरावें जरी ।
शिशिर हिमंत सुवाय जलाशय जितना चहै ठरावैं ठरी ।।
करवावें उपवास मास भर निर्जल राखि न एहि से डरी ।
रुचिकारी होते भी अबहीं टारैं सब दोषन से टरी ।।
भावे नहिं तो भी भरवावें उर भलि भाँति भलाई भरी ।
कोई कैसेहु युक्ति लगाओ "शुक्ल" सबै के पायन परी ।।

मणि ४२

महादेव से कालिह कहा हम ।।

जब से होश सम्हाला जग में एकमात्र तुमको हि चहा हम ।
जानूं राह न और किसी की प्रियवर गली तुम्हारि गहा हम ।।
ताका तरफ न कभी किसी के बनकर सदा तुम्हार रहा हम ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हरी जिकर तुम्हारी चर्चा किया जहाँ भी गया जहाँ हम ॥
भरी रहे किन भीर भले ही देखा केवल तुम्हें तहाँ हम ।
तो भी जाने क्यों जीवनधन बरबस विषम वियोग सहा हम ॥
अनुपस्थिति तुम्हरी अनुभव करि विरह दवागिन मांहि दहा हम ।
बीते जन्म अनेक चाहते "शुक्ल" न सुख सहवास लहा हम ॥

मणि ४३

महादेव अपनावैं जानैं ॥

हतभागी अपराधी नर को अपना आप बनावैं जानैं ।
अपनाये को आप आशु हीं निजगन मध्य गनावैं जानैं ॥
अपनाये से दिन दिन द्विगुणित शुचि संबंध घनावैं जानैं ।
अनुदिन अनुकंपा अनंतगुन जनपर आप जनावैं जानैं ॥
प्रेममयी निज भंग नित्य ही स्वजनहि सविधि छनावैं जानैं ।
आश्रित की चितवृत्ति सर्वथा सुरस सनेह सनावैं जानैं ॥
टरे नहीं फिर शरणागत से दृढ़ शुभ ठान ठनावैं जानैं ।
पाकर प्रेमिल दास "शुक्ल" सच मन मह मोद मनावैं जानैं ॥

मणि ४४

महादेव पद पाते पुलका ॥

आशुतोष की आशु अपनपर अनुकंपा अधिकाते पुलका ।
सर्व शरण्य जानि शरणागत शुचि सुजान के जाते पुलका ॥
उलझन अन्य दुराय देव से उर अपना उलझाते पुलका ।
पा करके उच्छिष्ट आपका षटरस खल खलु खाते पुलका ॥
लगती तुच्छ विभूति विश्व की हिय वैभव विभु छाते पुलका ।
गुनातीत की गुनगन मंडित सुभग गुनावलि गाते पुलका ॥
एक-एक को कहूँ कहाँ तक लख इनकी सब बातें पुलका ।
चरन कमल में "शुक्ल" शीश निज हो विनीत नत नाते पुलका ॥

मणि ४५

महादेव मम सहज सँघाती ॥

खाता हूँ पदार्थ जो कुछ मैं उससे उनकी वृत्ति अघाती ॥
भरे भये भल भाव उन्हीं के गीत जीभ मेरी है गाती ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूनें वे ले बड़ी शौक से जो हम इस चरखा से काती ।
कर उनके अनुकूल काज कुल मेरी सदा जुड़ाती छाती ॥
मैं जब कोई दिया जलाऊँ वे उसकी उसकाव्रें बाती ।
पाकर मैं प्रकाश उनसे ही पढ़ता उनकी भेजी पाती ॥
वे मेरे सर्वस्व मैं उनका उनकी मेरी खुब विध खाती ।
"शुक्ल" बनूँगा दूल्हा जब मैं आप बनेंगे मेरे बराती ॥

मणि ४६

महादेव चरणों की आशा ॥

की है जबसे तुम्हें बताऊँ देख रहा हूँ खूब तमाशा ।
जगजन की आशा था फाँसा होय गई सो सफा रफा सा ॥
इसने तो निज नये ढंग से जीवन को खुब नीक नकाशा ।
जैसा संभव न था समझता वैसा विशद बनाय विकाशा ॥
प्रकट प्रतच्छ प्रभाकर जैसा दिखलाता अति भाग्य जगा सा ।
इह परलोक काम का सारा दिखता द्वार पदार्थ गजा सा ॥
सजना चहिये साज जो कुछ भी सो दिखलाता साफ सजा सा ।
मैं तो बैठा "शुक्ल" मजे में लूट रहा हूँ मजा मजा सा ॥

मणि ४७

महादेव से मन बहलाता ॥

दिल बहलाने काबिल कोई प्राणि पदार्थ न अन्य दिखाता ।
नश्वर चीजों से बहलाना जी मैं ठीक समझ नहिं पाता ॥
पुत्र कलत्र मित्र या कोई तबियत उनसे है फुसलाता ।
किंतु बिछुड़ते ही उनके मैं देखूँ बेचारा बिलखाता ॥
कोई पाकर माल चकाचक उसमें अपना चित्त रमाता ।
होते हानि नानि मरजाती दीन दशा पाता बिलपाता ॥
इनमें जो रममाण व्यक्ति है वह अद्‌भुत आनन्द उठाता ।
"शुक्ल" सदा हरषाता है वह हरदम हुलसाता पुलकाता ॥

मणि ४८

महादेव चाहे जस रक्खो ॥

वस्तु तुम्हारी रखो यथारुचि कहूँ भला मैं क्यों कस रक्खो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूँ क्यों दखल स्वत्व में तुम्हरे तबियत तुम्हरी हो तस रक्खो॥
सुख सुविधा के साथ रखो तुम भलीभाँति चाहे घस रक्खो।
परम स्वतंत्र बना विचराओ चहे बनाकर परबस रक्खो॥
थुकवावो जन जन से चाहे चाहे ललित लसा यश रक्खो।
महानिषिद्ध रखान रखो या दिखे जोड़ नहिं या अस रक्खो॥
बना उदार वृत्ति दो मेरी महा सूमसी कर ठस रक्खो।
जीवन नीरस बना दो बिलकुल लेते नित्य नया रस रक्खो॥
निर्जन में रक्खो चाहे तुम चाहे बसा बीच दस रक्खो।
सौ की एक "शुक्ल" से सुनलो जैसे जी चाहे बस रक्खो॥

मणि ४९

महादेव जी कहाँ नहीं हैं।

भूल कभी भी कहना मत कुछ जहाँ नहीं हैं वहाँ नहीं हैं।
जहाँ नहीं हों आप सत्य ही जगह कोई भी जहाँ नहीं है॥
वैसे तुम्हें न सूझें तो तुम कह सकते हो यहाँ नहीं हैं।
किन्तु कहे से तुम्हरे केवल हो सकता नहिं तहाँ नहीं हैं॥
भला तंतु के बने वस्त्र में तंतु कहाँ पर रहा नहीं हैं।
"शुक्ल" कनक कंकन में कंचन मूढ़ मोह बस लहा नहीं हैं॥

मणि ५०

महादेव के चरन चढ़े चित॥

जाने नहीं उतरना कबहीं ललित लाल वर वरन चढ़े चित।
करते रहते प्रमुदित संतत महामोद मन करन चढ़े चित॥
हीतल शीतल करें निरंतर मिटा सभी जिय जरन चढ़े चित।
पापपुंज मम दूर दुरावें दुरित दोष दल दरन चढ़े चित॥
दुर्गुण भवन हमारे हिय में शुचि शुभ सद्‌गुण भरन चढ़े चित।
ढूंढ़ भाग्य में मेरे बरबस चारु चारिफल फरन चढ़े चित॥
अनुकंपा हैं किये अहैतुकि मुझपर अवढर ढरन चढ़े चित।
"शुक्ल" हमें हरषाते हरछन ये मेरे हिय हरन चढ़े चित॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५१

महादेव पदपद्म प्रान हैं ॥

जीता हूँ इनके हि जिलाये नहिं जीवन आधार आन हैं ।
गमनागमन किया ये करते श्वास बने ये ही समान हैं ॥
जीव बने ये बसे देह में ये ही मुझे जनात प्रान हैं ।
भरी जीवनी शक्ति जो इनमें करते मुझे सदैव दान हैं ॥
अन्य सुखों की मुझे चाह नहिं मम समस्त सुख की ये खान हैं ।
भरते रहें उमंग सदाउर गुन मंडित इनके सुगान हैं ॥
करके ध्यान इन्हीं का संतत भूला रहूँ शरीर भान हैं ।
हुआ हुँ मैं कृत कृत्य "शुक्ल" सच कर इनका मकरंद पान हैं ॥

मणि ५२

महादेव मैं कौन बतादो ॥

तुमसे ही परिपूर्ण विश्व तब कौन मुख्य को गौन बतादो ।
आया दूजा तत्व कहाँ से जो रहस्य हो तौन बतादो ॥
तुम हो खासे ईश वो तुमसे भिन्न जीव हो जौन बतादो ।
तुम रहते परमात्म लोक में इसका कहाँ है भौन बतादो ॥
कंचन के कंकन कुण्डल में रहता कहाँ न सौन बतादो ।
तदनुसार ही जग कन-कन में रमे आप भी हौन बतादो ॥
वात हो जैसी तैसी ही वस बिना मिर्च बे नौन बतादो ।
शिष्यभाव से "शुक्ल" पूछता गुरुवर हो क्यों मौन बतादो ॥

मणि ५३

महादेव हम रोवत रहिये ॥

को समुझै समुझाऊँ कैसे अपनी व्यथा कौन से कहिये ।
कैसे होय निवारण इसका किस पथ चलूँ कौन गलि गहिये ॥
दीखत नाहिं यदपि तौ हू हम विरह दवाग्नि रैन दिन दहिये ।
अनुपस्थिति अनुभूत आपकी कर विशेष पीड़ा हम लहिये ॥
वृश्चिक कोटि लक्ष नागहु के दंश सरीख यातना सहिये ।
होत विराम न छनकहु कबहूँ सतत वियोग बाढ़ि बिच बहिये ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँगे मीच न देइ विधाता जाचे बीच देत नहिं महिये ।
मुदमय "शुक्ल" मिलन हो जहिये ममहित विपति बिहान है तहिये ॥

मणि ५४

महादेव मेरी कब सुनि हौ ॥

सुने हौ सुनते हौ बहुतों की कहौ इ जन केरी कब सुनिहौ ।
कहने को सच कहता बातें भरी हैं बहुतेरी कब सुनिहौ ॥
इतना ही बतला दो तब तक जल्दी या देरी कब सुनिहौ ।
धीरे से सुनि लैहौ या की जोर जोर टेरी तब सुनिहौ ॥
जान सके नहिं कोई सुनिहौ या बजा शंख भेरी कब सुनिहौ ।
दूरि परे सुनि सकौ-भये पर या नेरा नेरी कब सुनिहौ ॥
दर बैठे सुनि लैहौ आकर या याँ वाँ हेरी कब सुनिहौ ।
"शुक्ल" लगाये आशजुगों से हम माला फेरी कब सुनिहौ ॥

मणि ५५

महादेव उर भक्ति भरा नहिं ॥

कहते जगजन भक्त भक्त पर बन पाया मैं भक्त खरा नहिं ।
करते जो सत्कार्य भक्तजन मैंने तो वह कभी करा नहिं ॥
तुमने हो टारा तुम जानो दोष किन्तु सर्वथा टरा नहिं ।
डरते जिन कामों से सज्जन उन कामों को करत डरा नहिं ॥
धन जन धरा हृदय में भलिविधि तुम्हरी मंजुल मूर्ति धरा नहिं ।
परा स्वार्थवश किन-किन के पग हो सश्रद्ध तव चरन परा नहिं ॥
स्वजनों के ही जरे विरह में तव वियोग में देव जरा नहिं ।
"शुक्ल" निछावर होकर तुम पर तव हियको हियहार हरा नहिं ॥

मणि ५६

महादेव के हम पछिआवा ॥

जात रहेन कौनौ जन के घर वड़े भाग्य से हम लखियावा ।
जय हो देव आपकी सुनिये भरे प्रेम हिय तव गोहरावा ॥
देखा किहेन अनसुनी ई तौ सिर पर पाँव धरे हम धावा ।
रुके आप तव पास पहुंचकर सादर चरन शीश निज नावा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठब सोहाय न हमके औऊ बार-बार झुकि चहैं उठावा ।
बरबस लिये उठाय जोर करि हम हँसि तब धरि कंठ लगावा ॥
छोड़ा चही कहाँ तब फिर हम कहाँ आप फिर चहैं छोड़ावा ।
"शुक्ल" खबर कुछ नहीं इस तरह गलमिलि कितना वक्त बितावा ॥

मणि ५७

महादेव हमके पछिआयेन ॥
जात रहे एनहीं से मिल इन ए धौं कहाँ देखि तब पायेन ।
जानि न हम पावा कौनौ विधि पाछे लागि चला चुप आयेन ॥
आँख बंदकरि लिहेन लपकि के का जानी कस मौका पायेन ।
हम पहिचानि सके नहिं एनके वड़ी बेर ले हमैं छकायेन ॥
हारी जब माना तव कैसेहुँ आँखि खोलि खुव हँसेन हँसायेन ।
आयेन तब लिआइ अपने थल भल अंगूरी भंग छनायेन ॥
मेवा मोदक माखन मिश्री खायेन साथहि बैठि खवायेन ।
रैन विहार "शुक्ल" प्रिय संग करि भोरे भोरही छानि सिधायेन ॥

मणि ५८

महादेव जो करैं सो थोरा ।
जुरा न कोई और जगत में गये बिते से नाता जोरा ।
जाते थे उस ओर पकड़कर नाक घुमाय दिया निज ओरा ॥
छलिया नंबर एक जो मैं सो चहें बनाना प्रकृति का भोरा ।
मेरे किये कर्म काले सब हाथों हाथ बनावें गोरा ॥
सच भल भक्त बनाना चाहें धर करके मुझसा खल कोरा ।
शुष्क हृदय को करना चाहें मेरे प्रेम सुधारस बोरा ॥
जकड़े हुये मोह ममता हम कर कमलन मम बंधन छोरा ।
"शुक्ल" करूँ फरयाद कौन से घुस घर में चितचोरा मोरा ॥

मणि ५९

महादेव ये कला कौनसी ॥
बतलाओ तो मुझ जैसों को जो अपनाले कला कौनसी ।
अपनाये को बना सब तरह रूप अपन दे कला कौनसी ॥
नैया उसकी बड़ी शौक से निज हाथों खे कला कौनसी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मति करि विमल विशेष तासुकी दे सनेह भे कला कौनसी ॥
दूर परे भी सतत हृदय ज्यों कमठ अंड से कला कौनसी ।
अनुकंपावश देय बोर जो सुख समुद्र में कला कौनसी ॥
जिसका आश्रय पा नर बैठा बस मूँछे टे कला कौनसी ।
कलानिधान पूछता हूँ मैं "शुक्ल" कहो है कला कौनसी ॥

मणि ६०

महादेव चरनों का चिंतन ॥

करना ही भाता है हमको ललित लाल बरनों का चिंतन ।
कर देता निहाल-कोमलता कमलन रद करनों का चिंतन ॥
हर लेता हिय आशु हमारा अपने हिय हरनों का चिंतन ।
भर देता मन मोद सर्वथा उर मुद भल भरनों का चिंतन ॥
झर देता आनन्द झटिति यह आनँद द्रव झरनों का चिंतन ।
आभारी कर देय अत्यधिक इन अवढर ढरनों का चिंतन ॥
रहने देय न दुःख लेश भी दोष दुरित दरनों का चिंतन ।
फर दे "शुक्ल" अर्थ कामादिक चारि सुफल फरनों का चिंतन ॥

मणि ६१

महादेव चरनों से मतलब ॥

होय किसी का किसी से हमको अपने हिय हरनों से मतलब ।
कर परसें नहिं कोइ-कोमलता कमलन रद करनों से मतलब ॥
देखा चहें न दृश्य और दृग ललित लाल वरनों से मतलब ।
अन्य मोदकर वस्तु त्यागि इन उर मुद भल भरनों से मतलब ॥
चहूँ और आनन्द न मैं बस आनँद द्रव झरनों से मतलब ।
आराधूँ केहि और हमें तो इन अवढर ढरनों से मतलब ॥
रहें दूर हो दोष हमें इन दोष दुरित दरनों से मतलब ।
"शुक्ल" चारिफल को ठुकरा इन सुफल चारि फरनों से मतलब ॥

मणि ६२

महादेव के चरन अलौकिक ॥

किनकी उपमा दूं इनका तो ललित लाल वर वरन अलौकिक ।
लगें अतिहि सुस्पर्श-कमल की कोमलता रद करन अलौकिक ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर लेते हिय आशु हमारा ये मेरे हिय हरन अलौकिक ।
भर देते मन मोद भली विधि मेरे उर मुद भरन अलौकिक ।।
झर देते आनन्द हृदय में हैं आनँद द्रव झरन अलौकिक ।
ढर जाते अहेतु हमसों पर ऐसे अवढर ढरन अलौकिक ।।
दूर करें द्रुत दुरित हमारे दोश दुरित दल दरन अलौकिक ।
सफल करें मन काम "शुक्ल" के चारु चारि फल फरन अलौकिक ।।

मणि ६३

महादेव बड़ मजा देखवलेन ।।

मस्त रहे हम निजी रंग में हम पर आपन नजर फिरवलेन ।
जान नहीं पहचान कभी की हक नाहक हमके अपनवलेन ।।
लेहलेन पास बोलाय पकरि के जबरन आपन दास बनवलेन ।
करा न चाही तबौ बताई तोह से सेवा निजी करवलेन ।।
हम बड़का बदमाश विदित जग हमसे खूब सनेह बढ़वलेन ।
तोहसे बात छिपायी काहे लै लै हमके गोद खेलवलेन ।।
का कोई दुलराई जैसन हम हतभागी के दुलरवलेन ।
"शुक्ल" कही ई कथा कहाँ ले बड़ी बहार यार बरसवलेन ।।

मणि ६४

महादेव सन्मार्ग गहावें ।।

करें सम्हाल सदा ही उनकी जो जनकी इन केहि कहावें ।
प्रकटि विराग आग उनके उर भोग वृत्ति सहराग दहावें ।।
जन्म जन्म जुग जुग का जड़ से जमा कुतरु वासना ढहावें ।
निज विधान अनुसार दुःख सुख रखकर उसे तटस्थ सहावें ।।
करके उसे अचित्त चित्त में अपने हो बस वही चहावें ।
हो वह भले असंत बनाकर सद्य संत की रहनि रहावें ।।
लगने दें त्रिताप तनकहु नहिं कर कमलन की छाँह छहावें ।
कृपावारि बरसाय भलीविधि आशुहिं नीकी भाँति नहावें ।।
लाकर बाढ़ सनेह सरित में बेसुधि विवश बनाय बहावें ।
अपनी "शुक्ल" बताऊँ मैं क्या मेरा सभी लहान लहावें ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६५

महादेव पद कैसे कोमल ।।

कर नहिं सके कल्पना कोई सचमानो तुम वैसे कोमल ।
जान सके बिन छुये भला को हैं जितने वे जैसे कोमल ।।
छूने बाद बताना संभव हो सकता नहिं तैसे कोमल ।
इन समक्ष नवनीत कि नीरज लगते जैसे गैसे कोमल ।।
और जिन्हें तुम सोच सकोगे समझो इनकर बैसे कोमल ।
"शुक्ल" गुलामी करूँ मैं उसकी दिखा दे जो कोइ ऐसे कोमल ।।

मणि ६६

महादेव करिहैं सो होई ।।

इनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ कर सकता नहिं कभी भि कोई ।
करने की कोशिश करता जो उसकी बुद्धि गई है खोई ।।
होगा निश्चय ही असफल सो करना चाहेगा जोइ जोई ।
इक दो बार न किन्तु शताधिक बेचारा बेकार श्रम ढोई ।।
हठवादी होते भी हरदम होकर विफल मनोरथ रोई ।
निज को कर्ता मान कर्म के बेशक बीज शुभाशुभ बोई ।।
तद्विपरीत अकर्ता बन कोइ अभ्यंतर मल आशुहिं धोई ।
"शुक्ल" सर्वथा निर्भर इन पर होकर के सुशांति सुख सोई ।।

मणि ६७

महादेव पर भार विश्व का ।।

बना करे कर्ता कोई भी करते ये कुलकार विश्व का ।
टिका इन्हीं पर है जग सारा हैं ये ही आधार विश्व का ।।
आच्छादित इनसे है सृष्टि ये इनमें ही विस्तार विश्व का ।
इनकी सत्ता से सचमानो चलता सब व्यवहार विश्व का ।।
इनके संरक्षण में प्रतिक्षण होता अति उपकार विश्व का ।
इनका पा संकेत मात्र बस हो सद्यः संहार विश्व का ।।
आराधन इनका करने से कटता पाप पहार विश्व का ।
"शुक्ल" शरण होने से इनकी हो जाता निस्तार विश्व का ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६८

महादेव पद कंज हैं मोले ।।
हतभागी हम पर दयार्द्र हो मेरा भाग्य भलीविधि खोले ।
अपना पुण्य प्रदेश त्यागकर टिके हुये हैं मेरे टोले ।।
मेरे नीरस अंतस्तल में अतिशय प्रेम सुधा रस घोले ।
देते देन रैन दिन विधि-विधि अनगिनतिन बे नापे तोले ।।
आराधन करनेवाले को धारन करने पड़ें न चोले ।
बना दिखे लोक द्वय उसका जस तस आश्रय इनका जोले ।।
सोया नहीं जुगों से जो सो इनका होले सुख से सोले ।
"शुक्ल" तभी तो रोम-रोम से जय-जयकार इन्हीं की बोले ।।

मणि ६९

महादेव कृतकृत्य करो अब ।।
ढरे हुए हो देव जुगों से चाहूँ और विशेष ढरो अब ।
धरे हो कब से हो सर पर कर प्रभुवर सो सस्नेह धरो अब ।।
करते बास अखंड हो उर में स्मृति से भी नहिं कभी टरो अब ।
सुख सुविधा के साथ रह सको साफ जराकर लेव घरो अब ।।
वह जावे विकार सबका सब कृपा वारि बहु वेग झरो अब ।
साधक सब समुदाय सद्य ही बाधक तत्व समूल हरो अब ।।
यत्किंचित हौ दिये सही पर मम हिय भक्ति भँडार भरो अब ।
"शुक्ल" नामधारी नहिं केवल बना देव विभु भक्त खरो अब ।।

मणि ७०

महादेव को बरन करो सब ।।
वड़े लाभ की वात निवेदन करता हूँ स्वीकरन करो सब ।
आह जल रहे हो जुग-जुग से दूर जल्द जिय जरन करो सब ।।
मूल मान निश्चित सब दुख का दुष्पथ से द्रुत टरन करो सब ।
दुश्चितन परित्यागि दुरितमय चिरंचितन इन चरन करो अब ।।
भोग चुके आवा जाही खुब संसृति से निस्तरन करो अव ।
आसानी से यह संभव हो स्वीकृत इनकी सरन करो अव ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसमें ही साफल्य समझकर सेवा इनकी करन करो सब ।
"शुक्ल" आर्त बन आतुरता से पद पंकज सिरधरन करो सब ॥

मणि ७१

महादेव में रम क्यों भटके ॥

उरकी वृत्ति भटकनी अपनी मान कहा कर कम क्यों भटके ।
अस्थिरता को छोड़ जल्द ही कहता उसपर जम क्यों भटके ॥
भटका कुछ थोड़ा नहिं भैया कर प्रयत्न ले दम क्यों भटके ।
आश्रय ले प्रकाश का अब झट मिटा मोहमय तम क्यों भटके ॥
जड़ चेतन सब रूप इन्हीं का दीख रहा सो भ्रम क्यों भटके ।
तेरे अंदर भी बैठे ये करते हैं हम हम क्यों भटके ॥
संसृति के कण-कण में सचमुच व्याप रहे हैं सम क्यों भटके ।
"शुक्ल" तत्व की बात इतन ही समझ बना बेगम क्यों भटके ॥

मणि ७२

महादेव मैं किसे कहूँ मैं ॥

उठी आज जिज्ञासा जी में मैं को जाना अवशि चहूँ मैं ।
जड़ चेतन सब आप बापजी मैं कह कहिये किसे गहूँ मैं ॥
काया आप आत्मा तुमहीं मैं पदार्थ को कहाँ लहूँ मैं ।
पास कहीं हो खुशी दूर हो जा पहुँचूँ खोजता तहूँ मैं ॥
इस मैं के मिथ्या भ्रम से ही तीनिताप से देव दहूँ मैं ।
आज नहीं सच आदिकाल से शत सहस्र यातना सहूँ मैं ॥
अब तो भ्रांति मिटाओ विभुवर ताकि शांति संयुक्त रहूँ मैं ।
आवे बाढ़ अनंद सिन्धु में "शुक्ल" बना बेखबर बहूँ मैं ॥

मणि ७३

महादेव पद पंकज में पर ॥

और अपरिमित कर्तव्यों को मनचाहे तू कर या मत कर ।
धरते जिनपर नित विधि हरि सिर होकर के सश्रद्ध तू भी धर ॥
अवढर ढरन प्रसिद्ध देव ये बस इतने में ही जावे ढर ।
जोरे जन्म-जन्म के तेरे दोष दुरित दल देय द्रुतहि दर ॥
अनुकम्पा करके उर अंतर शुभ सद्गुण भलिभाँति देंय भर ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तू प्रमुदित प्रसाद पा उनका वन जावे आदर्श नीक नर ॥
तेरे अनचाहे हि पितृकुल जाँय मातृकुल के भि पितर तर ।
हो जा जीवन्मुक्त "शुक्ल" तू काशी चाहे जाय मगह मर ॥

मणि ७४

महादेव सव करें करावें ॥
अपनी मूढ़ बुद्धितावश ही हम निजको कर्ता ठहरावें ।
पैरों में बेड़ी इस ही से हाथों में हथकड़ी भरावें ॥
योनि कुयोनि किये धारन फिर लोक कुलोक विवश बनि धावें ।
हम पामर की हस्ती ही क्या अखिल विश्व को वही नचावें ॥
साधारण सी बात कृपा से उनकी सुजन समझ जो पावें ।
उनपर भार डार लोकों का दोनों ही निशंक बनि जावें ॥
उनकी दिव्य प्रेरणा पा निज रुचिमय उनकी रहनि बनावें ।
"शुक्ल" सुहावें उन्हें प्राण सम वे इनको प्राणाधिक भावें ॥

मणि ७५

महादेव को मैं खुश रखता ॥
जिससे रहें प्रसन्न प्राणधन उसी काम को हूँ मैं करता ।
जैसे भी ये रखना चाहें वैसे ही मैं रहना चहता ॥
जैसा नाच नचाते हैं वे वैसा साज सदा मैं सजता ।
जिस पथ आप चलाना चाहें उसी राह को सादर गहता ॥
करूँ दुलार स्विकार यथा मैं हँस हँस तैसहि मार भी सहता ।
उनका शुभद विधान मानकर हर हालत में राजी रहता ॥
नर्क स्वर्ग की करूँ न परवा भेजें जिधर उधर धा परता ।
रह उनके अनुकूल सर्वथा "शुक्ल" प्रसाद मैं उनका चखता ॥

मणि ७६

महादेव तुम जड़ तुम चेतन ॥
तुम अनिकेत तुम्हीं बसते हो देव उच्च औ निम्न निकेतन ।
तुम बन वृक्ष विशाल शोभते तुम हो सस्य सोहते खेतन ॥
गिरि सागर नद नदी बने तुम धारे तुम विहंग पशु के तन ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम मजदूर बने खटते हो तुम बन स्वामि चुकाते वेतन ।।
कैदी बने चलाते चक्की जेलर बने पीटते बेतन ।
दुख सुख स्वर्ग नर्क भोगो तुम जग बिच विविध जीव के लेतन ।।
अयशी बना हँसाओ यशदे करते तुम प्रसिद्ध हौ नेतन ।
रचना रुचिर रचाते तुम ही हमसे हमें "शुक्ल" का देतन ।।

मणि ७७

महादेव वल पा हम पटका ।।
लखकर इन्हें सहायक कुछ जो रहा सयान शत्रुदल सटका ।
उनका हाल बताता हूँ अब उसके बाद बचा जो कटका ।।
पहुँचाया कुछ पार सिन्धु के देकरके जोरों का झटका ।
कुछ को बाँध दिया है मैंने ऊर्ध्वपाद सिर नीचे लटका ।।
कुछ की करी मरम्मत ऐसी आया याद दूध दिन छटका ।
जो जो गये बताऊँ तुमसे हिम्मत किये न डाकें फटका ।।
मिला न आश्रय जब तक प्रभुका उन गुंडों ने मारा भटका ।
अब सुख नींद "शुक्ल" सोता हूँ ताने पाँव बना बेखटका ।।

मणि ७८

महादेव सुमिरन बिन भटका ।।
कहाँ कहाँ बतलाऊँ कैसे ले सिर भरा पाप का मटका ।
कुफल भोगने गया नर्क तब लखकर दृश्य वहाँ का ठटका ।।
पीये बुरे अपेय अभक्ष्यों को लाचार बने खुब गटका ।
खाये मुद्गर मार शूल बहु सहे गये गिरि शृंग से पटका ।।
सुकृतों का आस्वादन करने देव देह धरि सरगे सटका ।
परा गर्भ में जब-जब तवहीं उर्ध्वपाद सिर नीचे लटका ।।
नाचे खुब खुब नाच साच हम विधि-विधि वेष बनाये नटका ।
"शुक्ल"किन्तु शिव सुमिरन करतेसब दिनको सबमिट गयाखटका ।।

मणि ७९

महादेव अब खोलो फटका ।।
कबसे आश लगाये देखो खड़ा हुं मैं द्वारे पर अटका ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर तो चुका यत्न बहुतेरा खुलता नहिं मम खोले खटका ॥
ताकत भी अजमाया सारी झटकाता नहिं मेरा झटका ।
आने से पहले इस दर पर सचमानो मैं हूँ बहु भटका ॥
सरग से नरक नरक से सरगे फिरता रहा हुँ छटका छटका ।
भोग रहा हूँ विविध भोग अब धर नर देह हाल यह टटका ॥
परीशान हो चुका बेतरह बहुत दिनों का लटका लटका ।
"शुक्ल" स्वरूप सुझाओ सुन्दर नटवर वेष मिटाओ नटका ॥

मणि ८०

महादेव गोदी मा बैठें ॥

करते ही बस याद हृदयधन अकस्मात् आशुहिं आ बैठें ।
बात आज की ही नँहिं मानो जब चाहा तब हीं धा बैठें ॥
छू पाना हरगिज संभव नहिं देख सको देखो का बैठें ।
सकें सो कैसे देख जो करना नहिं विश्वास शपथ खा बैठें ॥
उनके तो हिय में होते भी उनके लिये दूर जा बैठें ।
उनको यह दिन दुर्लभ ही है जो कल्पना करे ना बैठें ॥
कर प्रतीति ऐसी बातों पर मैं ही क्यों कितने पा बैठें ।
उसके भी जल्दहि बैठेंगे "शुक्ल" जो कहता है हाँ बैठें ॥

मणि ८१

महादेव मम काम पिपासा ॥

मिटा देव जल्दी से जल्दी देव देववर वाम पिपासा ।
है कैसी यह घृणित बताओ तुमहि चाटनी चाम पिपासा ॥
दूर करो जल्दी ही दिल से बढ़ी हुई यह दाम पिपासा ।
धरकर धूल मिटा दो दादा नवल धवल भल धाम पिपासा ॥
कर दो देव तमाम ततक्षण वंशवृद्धि की माम पिपासा ।
मिट्टी कर दो नीक तरह से सच दिग व्यापी नाम पिपासा ॥
अच्छे लोक प्राप्त हों इसकी हिरा जाय हे राम पिपासा ।
दिन दूनी चौगुनी रात को "शुक्ल" बढ़े प्रिय त्वाम पिपासा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८२

महादेव से हम कह बैठे ॥

हमें जानना यह था हमको मिले आप कैसे रह बैठे ।
हमने हाथ बढ़ाया ही नहिं मेरी बाँह आप गह बैठे ॥
मैं नहिं चाह प्रकटकर पाया-पहले आप मुझे चह बैठे ।
जानत भये महामायावी मेरे मोह माँहि वह बैठे ॥
मैंने दई दुहाई भी नहिं सारे दोष दुरित दह बैठे ।
सहना मुझे चाहिये सब कुछ उलटे आप सभी सह बैठे ॥
मूँदूँ आँख न धरूँ ध्यान ही दीखें आप हिये महँ बैठे ।
"शुक्ल" जो लहते क्वचित सुजन ही हम अपराधी सो लह बैठे ॥

मणि ८३

महादेव हे परा हई हो ।

तोहसे कवन छिपाई दादा दोष दुरित कुल करा हई हो ।
होय से सेवर होय समुझिल्यऽ सचमुच हम खल खरा हई हो ॥
डाँड़-मेड़, खेते-खरिहाने खुब अखण्ड खर चरा हई हो ।
बाह्य भद्र भीतर अभद्र अति अस साँचे में ढरा हई हो ॥
दहलो मत सुनि दशा हमारी अघ अवगुन से भरा हई हो ।
फलस्वरूप तीनिहु तापन से, जुग-जुग जी भर जरा हई हो ॥
साधनहीन सर्वथा केवल पद पंकज सिर धरा हई हो ।
अभयदान दो "शुक्ल" भीरु को भोभव भवभय डरा हई हो ॥

मणि ८४

महादेव पद पकरि जो पाई ॥

छन चूमीं-छन दृगन लगाई छन सश्रद्ध बन माथ चढ़ाई ।
छन तलुअन से सिर सहलाई-छन अँगुष्ठनख आँख खुजाई ॥
छन गंगोदक लै नहलाई छन लै विधि-विधि इत्र लगाई ।
छन लै केसर-मिश्रित चन्दन रुचिकरि रचना रुचिर रचाई ॥
छन शुभ सुरभित सुमनमाल लै सावधान मन सुभग सजाई ।
छन दशांग लै धूप जलाई छन आरति करि अतिहि अघाई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छन लै व्यंजन विविध भाँति के बहु रितुफल भल भोग धराई ।
"शुक्ल" करत साष्टांग दंडवत ततछन देह दशा बिसराई ॥

मणि ८५

महादेव पदपंकज गहबै ॥

और कौन है सुननेवाला बिगरी-बनी इनहि से कहबै ।
मुँह काला कर चाह मात्र का पद रज प्रीति इनहि की चहबै ॥
लेकर नाम कुठार अकुण्ठित कुत्सित कुतरु वासना ढहबै ।
आशुहिं जला विराग अग्नि को दोष दुरित दल को द्रुत दहबै ॥
जानि विधान-निधान परमहित सादर सहित हर्ष सब सहबै ।
निज रुचि करि निर्मूल सर्वथा वे निज रुख रखिहैं तस रहबै ॥
आये बाढ़ प्रेम सरिता में बेसुध बनि विशेष बस बहबै ।
लहते जल्द न "शुक्ल" चचा जो इनकी कृपा सद्य सो लहबै ॥

मणि ८६

महादेव हर हाल जपूँ मैं ॥

आज जपूँ मैं अभी जपूँ मैं कभी न सोचूँ काल जपूँ मैं ।
मौन जपूँ प्रिय तौन जपूँ ढंग बजा-वजा कर गाल जपूँ मैं ॥
थिरक-थिरक कर जपूँ भाव भरि दे-दे कर खुब ताल जपूँ मैं ।
विना माल के जपूँ सदा ही बैठ कभी तो माल जपूँ मैं ॥
स्वस्थ जपूँ-अस्वस्थ जपूँ मैं जकड़े जग-जंजाल जपूँ मैं ।
शतबाधा संयुक्त जपूँ मैं सब बाधा को टाल जपूँ मैं ॥
बढ़े हुए पर माल जपूँ मैं होने पर कंगाल जपूँ मैं ।
"शुक्ल" न भूलूँ कभी किसी छन प्रतिपल निज प्रतिपाल जपूँ मैं ॥

मणि ८७

महादेव मक्कार हुं मैं जी ॥

तुम्हें जान करके उरवासी करता सच इजहार हुं मैं जी ।
किया जो था हर बार गर्भ में भूला वह इकरार हुं मैं जी ॥
वृद्ध हो चला पर ज्वानों सा करता खूब विहार हुं मैं जी ।
वन बैठा यह आप समझलें अधमों का सरदार हुं मैं जी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी दशा देख जग जन ये कहते अति गद्दार हुँ मैं जी ।
नतमस्तक हो मुक्तकंठ से करता सब स्वीकार हुँ मैं जी ॥
किन्तु न भूले होगे तुम्हरा वहुत पुराना यार हुँ मैं जी ।
तुम करते की नहों "शुक्ल" पर करता तुमको प्यार हुँ मैं जी ॥

मणि ८८

महादेव पद पास परा रह ॥

डर मत पास फटकने में तू भला बुरा जो कुछभि करा रह ।
भय क्या दोष और दुरितों से तू भलेहि भलिभाँति भरा रह ॥
बन मत भूल कभी कुछ का कुछ देने में इजहार खरा रह ।
कहदे साफ बे हिचक-बेशक चाहे जहाँ चरा बिचरा रह ॥
निसंकोच ले शरण देव की आकर के प्रभुद्वार अरा रह ।
जिसमें करें नियुक्त जुटे झट टारें उससे अवशि टरा रह ॥
लेकर नाम अखण्ड अहैतुक अन्तरमल अत्यन्त हरा रह ।
चन्द दिनों में चमत्कार ले देख "शुक्ल" फल चारि फरा रह ॥

मणि ८९

महादेव से चरन न दीखें ॥

हैं पद पावन और किन्तु अस ललित लाल वर वरन न दीखें ।
करते आह्लादित पर ऐसे महामोद मन करन न दीखें ॥
ढरते सभी स्वजन पर तो भी ऐसे अवढर-ढरन न दीखें ।
होते ही प्रपन्न सुमिटा दें जल्द जो जी की जरन न दीखें ॥
आराधक के अवशि अनन्तन दोष दुरित द्रुत दरन न दीखें ।
करि अपहरन कुभाव करोरन शुचि सुभाव भल भरन न दीखें ॥
आश्रित नर के लिये आशु हीं चारु चारिफल फरन न दीखें ।
तीनि लोक बिच "शुक्ल" सत्य ही मुझ असरन के सरन न दीखें ॥

मणि ९०

महादेव सँग पार गया था ॥

लूटा था न कभी जीवन में वह लूटने बहार गया था ।
चटक चाँदनी रात चैत की था जिस दिन इतवार गया था ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होना जान बेकार तीसरा दो पर दो बस यार गया था ।
मौसम समझ बसन्ती सुन्दर करने रैन विहार गया था ।।
उर के वे अरमान सँजोये करने सब साकार गया था ।
सोची समझी पूरी हो सब करके यह इकरार गया था ।।
दिल की सारी साध पुराने साथ सजन दिलदार गया था ।
"शुक्ल" अमित आनन्द देन हित आनँद का अवतार गया था ।।

मणि ९१

महादेव को भजना प्यारे ।।
हों जो वाधक-भजन-भाव में उन कामों से होकर न्यारे ।
घबड़ाने की बात न किंचित् वे बन जायँ सहाय तुम्हारे ।।
नीयत दृढ़ करते हि बेग से बढ़ोगे तुम उनके हि सहारे ।
निशि-दिन डोर लगी रखने को नाम मानसिक लो अबिसारे ।।
शुचि श्रद्धा संयुक्त होय सो पूर्ण प्रतीति प्रीति उर धारे ।
सुकृत समूह बढ़ें इतने में दीखें दोष दुरित द्रुत टारे ।।
तेरे विना प्रयास किये ही दिखें लोक-परलोक संवारे ।
काम गंध से शून्य "शुक्ल" हो बस तत्पर हो जाव सकारे ।।

मणि ९२

महादेव से सब सुख पावा ।।
तुम तो लगे पूछने भैया कैसे काका जाय बतावा ।
इक-दुक हो शत हो सहस्र हो अनगिनतिन कस जाय गनावा ।।
पावा निरुज देह बाभन की सुन्दर गौर सुरूप सुहावा ।
पावा पिता पुनीत कृपाकरि विश्वेश्वर जिनको अपनावा ।।
पावा पत्नि सुशील साधवी पावा पूत यथा मन भावा ।
पावा पुत्रि सेविका शिवकी जिसु करि नित गह बाज बधावा ।।
पावा भला भानजा जिसने उजरा घर भलिभाँति बसावा ।
पावा विप्र प्रसाद स्वजन कर सद्व्यवहार सनेह सनावा ।।
पावा वैद विचित्र लटी लखि काया पुनरपि पुष्ट बनावा ।
पावा स्वामि सहिष्णु सुसादर हम हरामि आमरण निभावा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पावा मित्र सहायक विधि-विधि पावा धन यश मान अघावा ।
पावा कीर्तन भवन सुहावन षट-षट मास अखण्ड जगावा ॥
पावा शुक्लेश्वर सुलिंग वर अति अद्भुत-श्रृंगार दिखावा ।
पावा नाम प्रतीति प्रीति रुचि जीवन कर भल लाभ उठावा ॥
पावा कीरति गान देवकर भरहिक खुब गावा उमगावा ।
पावा "शुक्ल" पदारविन्द प्रभु की रज जो सब साज सजावा ॥

मणि ९३

महादेव हर हाल सम्हारें ॥

घड़ी उपस्थित लख आपति की हो तत्पर तत्काल सम्हारें ।
जल्द जरूरत जान स्वजन की घिरे जगत-जंजाल सम्हारें ॥
गिरिगह्वर बनगहन भटकते बेगि बूड़ते माल सम्हारें ।
रोग सम्हारे दोष सम्हारें खड़ा सामने काल सम्हारें ॥
धनिक सम्हारें बनिक सम्हारें करि करुणा कंगाल सम्हारें ।
दीन सम्हारें हीन सम्हारें पाप लीन हर चाल सम्हारें ॥
इसे सम्हारें उसे सम्हारें किसे नहीं जनपाल सम्हारें ।
मेरी मत पूछना "शुक्ल" कोइ मुझको ज्यों निज लाल सम्हारें ॥

मणि ९४

महादेव झख मारे आये ॥

आयें कैसे नहीं भला जी जब कोई उनको गोहराये ।
सहृदय हैं करुणा-सागर हैं प्रेमी उनसा कहाँ दिखाये ॥
आने में कुछ हिचक न इनको दिल से कोई इन्हें बुलाये ।
आना ही क्यों खाना संभव कोई भी जो कुछ भि खिलाये ॥
और सुनो सब कर सकते ये जो जो इनसे काम कराये ।
किये हैं सारा काम किसी का पूछो तो प्रमाण बतलाये ॥
पूछे से पूरा पड़ना क्या हिम्मत वाला हो अजमाये ।
"शक्ल" बढ़ा व्यवहार आपसे जीवन का भललाभ उठाये ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९५

महादेव से हारा बाटी ॥

है जग जाहिर बात यदपि यह हम दुर्दिन कर मारा बाटी ।
जब से होश सम्हारा अबकिउ करनी करत नकारा बाटी ॥
भीतर से बदमाश बड़ा ही बाहर बड़ा बिचारा बाटी ।
तदपि कृपा की कोर अहैतुकि पाये सुखद सहारा बाटी ॥
हर हालत हर समय हमेशः हम एहिसेहि सम्हारा बाटी ।
कैसे कही कोई कस मानी इनकर बना दुलारा बाटी ॥
कारण बिनहिं असाधारण अति प्राणेश्वर के प्यारा बाटी ।
पा इन प्राण अधारा सादर "शुक्ल" चरण शिर धारा बाटी ॥

मणि ९६

महादेव दिल बसे हमारे ॥

जान नहीं पाया परन्तु मैं कैसे कब प्रविसे किस द्वारे ।
अब चाहते निकलना ही नहिं किस विधि कोई इन्हें निकारे ॥
यह भी नहिं इकठौर विराजें दिन-दिन दूने पाँव पसारे ।
लखकर यह इनका रुख बेढब मरता हूँ मैं शक के मारे ॥
लगता है हो न हो किसी दिन हमको ही ये करें किनारे ।
रह न जाय अस्तित्व हमारा ऐसे जायँ समूल उखारे ॥
दिन बीतता फिक्र में जस-तस रात बीतती गिनते तारे ।
"शुक्ल" समस्या सुलझाओ हम बड़े फेर में पड़े हैं प्यारे ॥

मणि ९७

महादेव रस क्यों नहिं पीता ॥

है दुर्दैव सवार शीश पर शायद इससे लगता तीता ।
घबरा मत चकरा न जरा भी मुँह से लगा मान तो मीता ॥
करता नहिं यकीन बातों पर हकनाहक ही होता भीता ।
कैसा हुआ मतिभ्रम तुझको कामधेनु को समझे चीता ॥
बड़े शोक की बात हैं सचमुच अब तक रहा जो इससे रीता ।
बीता व्यर्थ न संशय इसमें इससे वंचित जीवन बीता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इससे रहित मुआ है–इससे संयुत ही जन जग में जीता।
"शुक्ल" सराहें इसे शास्त्र सब इसके ही गुन गाती गीता॥

मणि ९८

महादेव की सरन निरापद॥

मनसा वाचा और कर्मणा करना इनको वरन निरापद।
भार स्वसिर का डार भार में परना इनके गरन निरापद॥
स्वर्ग लोक अरु सत्य लोक से जाना इनके घरन निरापद।
साधन शत सहस्र करने से पद पंकज पर परन निरापद॥
चिन्ता त्यागि लोक दोनों की करना चिन्तन चरन निरापद।
अनुकम्पा करि येन-केन विधि इनका अंगीकरन निरापद॥
देने से वर वरदेश्वर के शिरसि वरद कर धरन निरापद।
देवाश्रित सच "शुक्ल" नरन का यत्रकुत्र भी मरन निरापद॥

मणि ९९

महादेव निर्मल मन कर दो॥

भरी परी गंदगी जो इसमें अभी इसी छन हे हर! हर दो।
बदले में रुचिकारी निज की आशुहिं अवशि दिव्यता भर दो॥
जलता जान इसे जुग-जुग से इस पर वारि कृपा झट झर दो।
अति दयनीय दशा लख इसकी अवढर-ढरन शीघ्र ही ढर दो॥
दुर्बल देखि इसे अत्यन्तहिं इसके दोष दुरित द्रुत दर दो।
अनुकम्पा करके अहैतुकी इसके शीश वरद कर धर दो॥
साधनहीन सर्वथा समुझत इसके लिये चारिफल फर दो।
बने "शुक्ल" पदकंज मधुप यह ऐसा इक अलभ्य वर वर दो॥

मणि १००

महादेव कर प्यार बुलाया॥

अनुकम्पा ने ही अहैतुकी है यह सुन्दर दिन दिखलाया।
निजी तौर पर निजी व्यक्ति से है निज शुभ संदेश पठाया॥
दिन हो गये अधिक अलगाये आना आवश्यक कहलाया।
बिलगाया नहिं रहा अकारण यह है भलीभाँति समझाया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवाहन की बात सुनत ही कौन कहे कितना पुलकाया ।
मिल ही गये कि मिलन शेष है यह कुछ काल समझ नहिं पाया ।।
चलने की तैयारी चटपट करनी है करि उचित उपाया ।
सुदिन सुमंगल दिवस "शुक्ल" सोइ जब प्रियतम हँसि-हृदय लगाया ।।

मणि १०१

महादेव मस्ती न घटे अब ।।

कटी है अब तक साथ आपके साथहि जीवन शेष कटे अब ।
पटती थी पहले जितनी जी उससे और विशेष पटे अब ।।
खटती थी जितनी सेवा में उससे दुगुनी देह खटे अब ।
दोस्त बने जो घुले मिले थे दुश्मन का समुदाय छटे अब ।।
भरे परे जो दोष हैं कबके हियसे मेरे जल्द हटे अब ।
संचित जन्म-जन्म का है जो मेरा पाप पहार लटे अब ।।
छाया जो काला बादल सा शीघ्र तिमिर अज्ञान फटे अब ।
बदले में शुचि शुभ सद्‌गुण का उर में आय समूह डटे अब ।।
अंतःकरण हमारा आशुहि भल-भावों हो पूर्ण पटे अब ।
दिये देन हैं बड़ी-बड़ी कुछ मुक्त हस्त हो और बटे अब ।।
अविश्रांत हो अहनिशि रसले नाम आपका जीह रटे अब ।
आकुल है जी कब से जिसको सीने से सो "शुक्ल" सटे अब ।।

मणि १०२

महादेव के सिर सब बोझा ।।

पढ़े सुने का सार शास्त्र में इतना ही गँवार यह खोझा ।
इनने ही सब भूत बनाये ये ही बने खेलावें ओझा ।।
मोटी अकल है तो भि समझ में आ ही गया हिसाब ये सोझा ।
कलकी फिकर "शुक्ल" करता नहिं भर-भर गाल भकोसे गोझा ।।

मणि १०३

महादेव की जै मैं कहता ।।

दाता दिखे अनोखे ये तो इनसे निज अभीष्ट मैं लहता ।
करता प्रकट न चाह और से जो चहता इनसे मैं चहता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिदिन पुलकित परम प्रेम से पद पंकज इनके मैं गहता।
इनका नाम अकाम लेय नित सद्यः दोष दुरित मैं दहता॥
इनसे पाय आत्मबल अनुपम हँसतहि सब संकट मैं सहता।
आवे बाढ़ सनेह सिन्धु में बन बेसुध बरबस मैं बहता॥
अति अगाध अति अगम मानते गोपद भवसागर मैं थहता।
"शुक्ल" सुरक्षित मान सब तरह सुख से परा शरण मैं रहता॥

मणि १०४

महादेव अस कृपा करो तुम॥
धरे हो निजकर कमल शीश मम सो हो अतिहि दयार्द्र धरो तुम।
ढरे हो कुछ कम नहीं किन्तु अब अवढर ढरन विशेष ढरो तुम॥
तापित जानि त्रिताप ज्वाल से अनुकंपा वर वारि झरो तुम।
किये करोर जन्म के मेरे आशुहिं पाप पहार हरो तुम॥
भरे परे जुग-जुग के उर में सपदि दोष समुदाय दरो तुम।
बदले में सद्भाव सुसद्गुण भक्ति भली भलिभाँति भरो तुम॥
साधन हीन सर्वथा हूँ मैं मेरे हित फल चारि फरो तुम।
टरो नहीं छन एक "शुक्ल" कहुँ मन मंदिर एहि भाँति अरो तुम॥

मणि १०५

महादेव संसार बने हैं॥
निराकार संसृति के पहले थे अब विविधाकार बने हैं।
जिनका जन्म मरन संभव नहिं जड़ चेतन अवतार बने हैं॥
निर्गुण के निर्गुण रहते ही सब गुण के आगार बने हैं।
निरानंग अवधूत असंगी करन सृष्टि व्यापार बने हैं॥
सबदिन के अक्रिय जो वे ही सब जगके करतार बने हैं।
निर्मम निर्मोही सच वो ही भले विश्व भरतार बने हैं॥
आये समय लखोगे इनको हँसते ही हरतार बने हैं।
"शुक्ल" न कोई अन्य धन्य सब मेरे प्राण अधार बने हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०६

महादेव के रहते धोखा ॥

हो सकता है कैसे उसको जो इनका हो औरस खोखा ।
धर्मपत्नि इनकी ने ही हो धारन किया जिसे निज कोखा ॥
निजी लालसा इनने जिसको बड़े प्यार से पाला पोखा ।
होते भी जो बहुतेरों के लगता होय लाड़ला नोखा ॥
पाकर अनुपम प्यार आपका जो हो गया होय अति सोखा ।
इनकी अनुकंपा से जिसका कोई काम न होता ओखा ॥
इनके नाम और गुन तज के जिसने सबक न दूजा घोखा ।
लगे न हर्रं न "शुक्ल" फिटकरी उसका रंग चकाचक चोखा ॥

मणि १०७

महादेव पग पर खुब खुश हूँ ॥

भटका बहुत न कम कुछ भरमा आकर इनके दर खुब खुश हूँ ।
टारे इनके ही सचमानो मैं दोषों से टर खुब खुश हूँ ॥
पा करके इनसे शुभ सद्गुण उर घर में मैं भर खुब खुश हूँ ।
सत्य बनाये इनके ही मैं बनकर नरसा नर खुब खुश हूँ ॥
विप्र वृन्द अनुरागी इनके भक्तजनों से डर खुब खुश हूँ ।
करवाये इनके ही इनकी सेवा किंचित् कर खुब खुश हूँ ॥
करनी नहिं तारे इनके ही जीते जी ही तर खुब खुश हूँ ।
"शुक्ल" मनोहर मूर्ति देवकी मनमंदिर में धर खुब खुश हूँ ॥

मणि १०८

महादेव कल कहाँ मिलोगे ॥

यह प्रधान त्योहार है अपना बतलाओ थल कहाँ मिलोगे ।
बतला भर तुम देव पहुँच मैं जाऊँगा चल कहाँ मिलोगे ॥
हुआ था जस उस बार-फूल-डे-सरिस न हो छल कहाँ मिलोगे ।
मैं पहुँचा ढूँढता खोजता, आप गये टल कहाँ मिलोगे ॥
सोचा है इस बार कि गहरी छने भंग भल कहाँ मिलोगे ।
नहलाऊँ नहाव तुम जितना खींच खींच जल कहाँ मिलोगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और भी कुछ कामना हृदय में रही है प्रिय पल कहाँ मिलोगे ।
"शुक्ल" लूट लेना चहता हूँ जीवन का फल कहाँ मिलोगे ॥

मणि १०९

महादेव मणिमाल धरेगा ॥
भावित हो तत्तद्भावों से साँचे दिव्य नवीन ढरेगा ।
किये बिना अन्यान्य साधनों को अपना कल्याण करेगा ॥
भरा परा जुग-जुग का हिय में होकर विकल विकार टरेगा ।
सद्य नाश अज्ञान तिमिर हो, उर बिच प्रवल प्रकाश भरेगा ॥
मिले शांति शीतलता उसको नहिं त्रिताप के ज्वाल जरेगा ।
उसके बिना प्रयत्न किये ही उसके हित फल चारि फरेगा ॥
निजके तरने में संशय क्या सात पुश्त वह तारि तरेगा ।
"शुक्ल" लोक दोनों का उसका सहजहि सारा काम सरेगा ॥

दोहा

धनि-धनि तेरा नाम है, धनि-धनि तेरा धाम ।
धनि-धनि तेरे काम सब, धनि तव जन अभिराम ॥
तेरी ज्ञानी का नहीं, दानी देखा अन्य ।
पाकर तेरी देन यह, हुआ है धन्य नगन्य ॥
करते और करावते, जब तुम हीं सब काम ।
बेचारे इस "शुक्ल" को, क्यों करते बदनाम ॥
करे कराये सव तेरे, जान गर्व के साथ ।
करें समर्पण "शुक्ल" जी, लेव बढ़ाकर हाथ ॥

ज्येष्ठ शुक्ल ४ बुधवार सं. २०१९

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशोधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
चौदहवीं माला समाप्त ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवे नमः *

महादेव मणिमाला

पन्द्रहवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

आओगे नहीं क्या अभी पूछता सुस्पष्ट आज,
सत्यसिंधु बात साफ-साफ बतलाओगे।
जलता वियोग में जुगों से हूँ तुम्हारे जौन,
जानना चहूँ मैं और कितना जलाओगे॥
लगती दया है नहीं बाभन बेदाँती देख,
करुणा निधान हो कठोर कहलाओगे।
पाछे पछताओगे अकीर्ति जग छाओगे जो,
"शुक्ल" को सताओगे न अच्छा फल पाओगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पन्द्रहवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव सब दिन के मंगल ।।
मंगल मूर्ति आदि युग के ये कौन कहे इस छिन के मंगल ।
मंगल वाचक शिव शंकर शुभ नाम हैं इनविन किनके मंगल ।।
करना जग कल्याण मात्र बस सहज काम हैं इनके मगल ।
शरणागत होते वे इनकी होनहार हैं जिनके मंगल ।।
एक न एक सदा जीवन में रहे उपस्थित तिनके मंगल ।
गिन-गिन करें बिचारे कितने करते ये अनगिन के मंगल ।।
पानेवाला ऊब न पाता देते प्रतिदिन भिन के मंगल ।
"शुक्ल" मुझे तो देते रहते देव-देव फिन-फिन के मंगल ।।

मणि २

महादेव पद पूजो पंडित ।।
भव सागर तरने को एहि जुग है उपाय नहि दूजो पंडित ।
इनकी कलित कीर्ति को ही बस किये कंठ कल कूजो पंडित ।।
सुयशमात्र इन देवेश्वर के श्रवण मध्य शुभ गूजो पंडित ।
जाते हैं जिस राह भ्रमित मति उस पथ से जनि तू जो पंडित ।।
कर्तापन परित्यागि क्रियाकरि कर्मबीज भलि भूजो पंडित ।
लोकलाभ परलोक सुगति की कर लालच को लू जो पंडित ।।
रहे शरीर लिप्त इस उसमें हिय हरगिज मत छू जो पंडित ।
"शुक्ल" स्वरूप चीह्न सत्वर ही जो वह सो तू हू जो पंडित ।।

मणि ३

महादेव घुस आते फिर-फिर ।।
गये हुये ये उर विकार सब किंचित् मौका पाते फिर-फिर ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गफ़लत जरा हुई मन बुधि पर जस के तस छा जाते फिर-फिर ॥
आते नहिं बदजात बाज ये अपनी कला दिखाते फिर-फिर ।
वही चाल वह सधा कुटिलपन वह फरेब वह घातें फिर-फिर ॥
लगती देर न इनको कुछ भी चटपट चित बहकाते फिर-फिर ।
किया धरा सब साधक जन का साधन धूल मिलाते फिर-फिर ॥
हमको तो निज बना खिलौना, खुब-खुब खेल खिलाते फिर-फिर ।
"शुक्ल" छुड़ाओ पीछा इनसे, हम नत विनय सुनाते फिर-फिर ॥

मणि ४

महादेव बिसरायऽ जिनि हो ॥

करके दया दयालु देववर भोलानाथ भुलायऽ जिनि हो ।
आपन जानि हयऽ अपनाये रुख दूसर अपनायऽ जिनि हो ॥
नित नइ संग छनायऽ छकि-छकि थकि कहुँ ठेंग चटायऽ जिनि हो ।
सरस दृष्टि से देखि कवौं अब टेढ़ी भृकुटि दिखायऽ जिनि हो ॥
मन भरि मुँहे लगायऽ कबहीं, मुँह बिचकाय मुआयऽ जिनि हो ।
जी भर दुलरायऽ दिल खोले, अब देखऽ ठुकरायऽ जिनि हो ॥
दिनप्रति प्यार बढ़ायऽ प्रियतम, नेह बढ़ाय घटायऽ जिनि हो ।
हँसि-हँसि हृदय लगाय "शुक्ल" के, अव कबहूँ अलगायऽ जिनि हो ॥

मणि ५

महादेव कै मरजी बाबू ॥

देते दिव्य देन जो हमको हैं मेरे नहिं करजी बाबू ।
कभी माँगते नहिं विनम्र बन, हम ऐसे अलगरजी बाबू ॥
करनी करि प्रतिकूल बराबर हम वरंच बहु बरजी बाबू ।
हमफारी अरुझाय-सुचित ये बैठि सिअैं वनि दरजी बाबू ॥
सहें नहीं-विहँसे लख हम नित, नई शरारत सरजी बाबू ।
उदासीन मन करें न किंचित् पर हम भूँजी भरजी बाबू ॥
मानो मतमानो स्वतंत्र तुम, हम यह कही न फरजी बाबू ।
"शुक्ल" बनो सब दास देव के, यही हमारी अरजी बाबू ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६

महादेव का भक्त बन गया ॥

इनकी अनुकंपा से ही सच, इनके सुरस सनेह सन गया ।
गनती लायक नहीं किसी भी, गनमें इनके किन्तु गन गया ॥
और किये से इनके ही मैं, जग जाहिर इनका हो जन गया ।
करने से इनके हि आशुहीं, इनसे ही संबंध घन गया ॥
होना कभी अलग नहिं इनसे, ठनवाये इनके ये ठन गया ।
इनके दिये राह चलते ही, नाम महा मिल मुझे धन गया ॥
सेवा सुयश गान संभव हो, फिन-फिन फनवन दिव्य फन गया ।
बिचरूँ "शुक्ल" सुखद छाया में, शिर प्रभुकृपा वितान तन गया ॥

मणि ७

महादेव के भक्त बनो सब ॥

कोई नहीं मुसीवत तुमको, मिहरवान क्योंकि तुम पर रब ।
सद्य सफल तुम हो प्रयास में ऐसा आय गया अवसर अब ॥
होने से अनुकूल देव के लग जावे अनयास सभी ढब ।
बड़ी चूक मानी जावेगी इस मौके में चूक गये तब ॥
कौन बता सकता है ऐसा, यह लहान बैठेगा फिर कब ।
और बात की जिकर कौन सी, मुश्किल यह शरीर मिलना जब ॥
देने को उत्सुक ले प्रभु से भर प्रेमामृत से उर का टब ।
"शुक्ल" पिओ बेरोक रात दिन कभी हटाओ नहिं उससे लब ॥

मणि ८

महादेव दिलदार दोस्त हैं ॥

बना करें कोई परंतु ये दिल के अतिहि उदार दोस्त हैं ।
देखे सुनें न हों जैसे कोइ ऐसे प्रेम अगार दोस्त हैं ॥
दुनिया के पर्दे में ऐसे दिखलाते नहिं यार दोस्त हैं ।
अपने प्यारे को सचमानो, करते बेहद प्यार दोस्त हैं ॥
दंग होंय देखनहारे ये इतना करें दुलार दोस्त हैं ।
कर कोइ सके कल्पना भी नहिं नित नइ देंय बहार दोस्त हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वड़ी कृपा करते तब मिलते आनँद के अवतार दोस्त हैं।
"शुक्ल" मेरे जीवन के जीवन, मेरे प्राण अधार दोस्त हैं॥

मणि ९

महादेव की करूँ बड़ाई॥

क्यों मैं करूँ बखान किसी का, निंदक निंद्य प्रकृति है पाई।
तब यह सब कहना पड़ता है, जबकि विशेष विवश बन जाई॥
कहने से पहले कह देता इस पर करो प्रतीति हे भाई।
संभव लाभ नहीं कुछ भी जब तब हम काहे झूठ बताई॥
जब से काम पड़ा है इनसे, लख लच्छन इनके चकराई।
आशुतोष अक्षरश: सच ये अवढर-ढरन सही सब गाई॥
अधमोद्धारन सत्य-सत्य ये, अशरण शरण नाम सच्चाई।
लाभ उठा अति "शुक्ल" आपसे तब हम तोहैं बतावत बाई॥

मणि १०

महादेव के चरन जो पाऊँ॥

चाहूँ काम न करूँ और मैं बस बैठा-बैठा सहलाऊँ।
कभी केवड़ा मलूँ कभी खश कबहीं रूह गुलाब लगाऊँ॥
केसरिया चंदन ले कबहीं ध्वज कुलिशादि चिन्ह अलगाऊँ।
कबहीं चुंवन करूँ प्रेमभर सह सनेह कहुँ शीश चढ़ाऊँ॥
कबहीं मृदु अंगुष्ठ नखन लै हिय हर्षित दोउ दृगन खुजाऊँ।
कबहीं लाड़ लड़ाऊँ विधि-विधि कबहीं करि आदर अदराऊँ॥
कबहीं भाग्य सराहूँ अपने पा इनको तन मन पुलकाऊँ।
हदभरि हुलसाऊँ सु "शुक्ल" में मुदभरि मिलनानन्द मनाऊँ॥

मणि ११

महादेव पद पा पुलका हूँ॥

मारा-मारा फिरे बाद बहु इन चरनों तक आ पुलका हूँ।
दिया हुआ उच्छिष्ट आपका श्वान सरीखा खा पुलका हूँ॥
बनकर दीन अधीन सर्वथा इन्हें भाँति भलि भा पुलका हूँ।
सब साधन शिरमौर मानकर गुनगन इनके गा पुलका हूँ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनकी बिपुल विभूति सु-सादर उर अंतर निज छा पुलका हूँ ।
इन्हें यादकर आनंदित हो हँसता हा-हा-हा पुलका हूँ ॥
इनकी मंजु मनोरम मूरति मन मंदिर में ला पुलका हूँ ।
विधि हरि वंद्य पदारविन्द में "शुक्ल" शीश निज ना पुलका हूँ ॥

मणि १२

महादेव कुछ हमें न आता ॥

मानो मत मानो स्वतंत्र तुम मैं तुमसे नहिं झूठ वताता ।
तुम बहकाओ अखिल विश्व को मैं तुमको क्यों कर बहकाता ॥
पढ़ा न कक्षा एक दोय भी दुनिया में पंडित कहलाता ।
कुछ भी नहीं शऊर मुनीमी कर परन्तु मैं पेट चलाता ॥
दुर्जन दुर्गुन खान सत्य में, सज्जन सद्गुनवान दिखाता ।
निंदा का सच पात्र सर्वथा अस्तुति सुनता ऊब हूँ जाता ॥
लगता है संकोच नहीं तो पोल खोल अपनी दिखलाता ।
"शुक्ल" बदौलत तुम्हरे सचमुच है यह पापी पाँव पुजाता ॥

मणि १३

महादेव कुछ और न चहिये ॥

हुई प्राप्ति बहुमुखी आपसे तब फिर क्यों संतोष न लहिये ।
वची साध कुछ शेष देव सो तुमको छोड़ कौन से कहिये ॥
तजकर ज्ञान गुमान सर्वथा केवल प्रभु प्रेरित पथ गहिये ।
जो रुचिकारी होय आपको हम रुचि सहित रहनि वह रहिये ॥
जस तस कटी आज तक तो फिर कलकस कटी फिकर हो नहिंये ।
मिलन सरिस सुख लहूँ याद में, विस्मृति तव वियोग दुख दहिये ॥
पाकर पद अवलंब आपका गोखुर सम भवसागर थहिये ।
वहिये परमानंद सिंधु में, जहिये "शुक्ल" मिलन हो तहिये ॥

मणि १४

महादेव के चरन मिले नहिं ॥

उदासीन रहता हूँ इससे जो मम मन मुद भरन मिले नहिं ।
घर फाँसीघर सा लगता जो आकर मेरे घरन मिले नहिं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गई नहीं जिय जरन आजतक जो मेटन जिय जरन मिले नहिं।
छाती ठंढी हुई न मेरी लगा-लगा जो गरन मिले नहिं॥
हिय हरषित होता हरगिज नहिं जो मेरे हिय हरन मिले नहिं।
सुख की करूँ कल्पना कैसे जो मेरे सुख करन मिले नहिं॥
गये न दोष दुरित अब तक जो दोष दुरित दल दरन मिले नहिं।
"शुक्ल" सरन दे कौन बताओ मुझ असरन के सरन मिले नहिं॥

मणि १५

महादेव का सुमिरन सच्चा॥
पक्का दिखलाते भि सर्वथा शेष जगत का काम है कच्चा।
शास्त्र कहें यह संत कहें यह, कहते थे यह कक्का चच्चा॥
संशय की कुछ गुंजायश नहिं अनुभव से भी ठीक हि जच्चा।
स्वप्ननगर की भाँति इसे भी तेरे मन ने ही है रच्चा॥
झूठा है, असार है निश्चित सुनता कोलाहल जो मच्चा।
समझे विना बात यह सच्ची पड़कर भूल भुलैया नच्चा॥
झूठे सुख पा आश्वासित हो झूठी पीड़ा पा अति पच्चा।
कहते थे गुरुदेव "शुक्ल" से बात पते की सुनले बच्चा॥

मणि १६

महादेव से मिलबे वनिये॥
जरा भाव ऊँचा कर उठ तो बेचन हारे हल्दी धनिये।
छन्न विनाशि संपति के हित ही यह वह सारे फनवन फनिये॥
सावधान हो-महामोहवश माल प्राप्ति सम मोक्षहि मनिये।
जो मुँह मोर लेय आखिर में ये उनकी माया में सनिये॥
अमर विभूति प्राप्तकर अब रे कुछ कौड़ी को सब कुछ गनिये।
उधर देख आतुर हैं वे तो उठा लेन को तुझको कनिये॥
रंच कृपा की कोर फेरकर कर देंगे तुझको धनि धनिये।
जी से कर परतीति बात पर "शुक्ल" नहीं मिथ्या हम भनिये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १७

महादेव पद परते पुलका ।।

अरुन-अमल-कल-कोमल अति ही उन पर निज शिर धरते पुलका ।
शतशः भाग्य सराहत उनकी सेवा किंचित करते पुलका ।।
सुमिर-सुमिर उनको सनेह सह नयन नीर नित झरते पुलका ।
बाधक तत्त्वों से सुमिरन के चित्तवृत्ति निज टरते पुलका ।।
सुमिरन के प्रभाव सहजहि सब दोष दुरित द्रुत दरते पुलका ।
जप-तप-ध्यान-धारना बिनहीं सुकृत भँडारन भरते पुलका ।।
अनायास लख जीवन अपना नव साँचे में ढरते पुलका ।
अनुकंपा तरु में सु-"शुक्ल" हित देखि चारि फल फरते पुलका ।।

मणि १८

महादेव जो कहते करता ।।

लगा देंय लग जाता उसमें टारें उससे तुरतहि टरता ।
गुन दें गुन सागर बन जाऊँ अवगुन दें अवगुन उर भरता ।।
नरता दें नरता स्वीकारूँ, खरता दें शिर लादूँ खरता ।
वना देंय वन देव पुजाऊँ, दे दें योनि कीट कृमि धरता ।।
भेजें जा नन्दनवन विहरूँ, पठादेंय नरकों जा परता ।
निर्भय करें नगण्य काल तब डरवावें खटमल से डरता ।।
करता नहिं इन्कार किसी से सिर धारूँ हर्षित हिय हरता ।
तुम्हरी तुम जानो ये "शुक्ल" का इसी भाव में परता-परता ।।

मणि १९

महादेव का रसमय रस्ता ।।

बड़ी बहार भरी है इसमें भर सुपंथ लालित्य है लस्ता ।
परम सुखद है राह सु-राही चलता खाता खजला खस्ता ।।
उनपर निर्भर हो चलने से सारा विघ्न समूह है नस्ता ।
लग जाते हैं पर उसके तो वह करता गति नहिं खुर घस्ता ।।
वे पथ करें प्रदर्शन खुद सो भूलभुलैया में नहिं फस्ता ।
संरक्षण उनका रहने से लूटे नहीं लुटेरा दस्ता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता खतम मंजिल सचमानो बात-बात में हँसता-हँस्ता।
चलकर देख "शुक्ल" सकता कोइ कीमत में भी पड़ता सस्ता॥

मणि २०

महादेव के लब तो देखो॥

कैसे लाल सुकोमल कितने आकर्षक या रब तो देखो।
लखते ही रह जाव जरा तुम अनुपम इनकी छब तो देखो॥
फिर क्या नजर हटा सकते हो भर दृग इनकी फब तो देखो।
मंद-मंद मुसकाते हों जब मैं कहता हूँ तब तो देखो॥
लखना हो अतिशय विशेषता छनी हो गहरी जब तो देखो।
अति प्रसन्न मुद्रा में बैठे आओ इधर लो अब तो देखो॥
जग जावे तब भाग्य भली विधि लग जावे कहिं ढब तो देखो।
नख-शिख से सौंदर्य राशि प्रभु "शुक्ल" कहीं अँग सब तो देखो॥

मणि २१

महादेव मेरे मन हारी॥

जितना ही स्वरूप है सुन्दर उतना ही स्वभाव सुखकारी।
कौन लगा अनुमान है सकता जैसी प्रकृति परी उपकारी॥
मथा गया क्षीराब्धि सुधाहित प्रकटा प्रथम हलाहल भारी।
होने लगा अकाल प्रलय तब सबने मिल सर्वेश पुकारी॥
लिये पानकर आप विहँसते नीलकंठ वर नाम स्वधारी।
निकले महारत्न जब पीछे सब मिल बाँट लिये व्यापारी॥
एक नहीं ऐसी अनेक हूँ कथा पुरान कहें विस्तारी।
"शुक्ल" करें स्वीकार शरण निज नत विनीत शत विनय हमारी॥

मणि २२

महादेव मम ओर निहारें॥

प्रकृति उदार अत्यधिक इससे दृष्टि सुधा रस बोर निहारें।
करुणाकर हैं ही स्वभावतः किये कृपा की कोर निहारें॥
घुसे किसी कोने में मेरे रंचक गुनकर गोर निहारें।
परम उपेक्षामयी दृष्टि से भरे परे सब खोर निहारें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े-बड़े अपराध हमारे, किये बनाकर थोर निहारें ।
जानत महामलिन चित मुझको चाह भरे चित चोर निहारें ।।
छलिया नम्बर एक समझते प्राणेश्वर छल छोर निहारें ।
"शुक्ल" स्वजीवन सा सचमानो धनि जीवन धन मोर निहारें ।।

मणि २३

महादेव बिसरायऽ जिनि हो ।।

चाह्यऽ भले भलाई आपन अनके भाय भुलायऽ जिनि हो ।
बहकावै केतनौ किन कोई बहकाये में आयऽ जिनि हो ।।
पायऽ प्रिय परिवार सुसंपति मन कतहूँ अरुझायऽ जिनि हो ।
जनि दीनता दिखायऽ जगके भलि भवभक्ति लजायऽ जिनि हो ।।
विशद विचार विकाश किहऽ खुब पर हंकार बढ़ायऽ जिनि हो ।
बनऽ अनन्य उपासक लेकिन भेदभाव अपनायऽ जिनि हो ।।
शरणागति परित्यागि देवकै साधन मध्य लोभायऽ जिनि हो ।
चरण शरण से "शुक्ल" शंभु की कौनौ जनम परायऽ जिनि हो ।।

मणि २४

महादेव का काम सुनोगे ।।

करके सृष्टि पालके विधिवत् करदें खेल तमाम सुनोगे ।
अस अद्भुत व्यापार करें पर भोला परा है नाम सुनोगे ।।
महा मशान कहाता है जो बसते हैं उस गाम सुनोगे ।
कनक कशिपु विदीर्ण कर्ता का धारे हैं तन चाम सुनोगे ।।
जाकर फिर आना संभव नहिं ऐसा इनका धाम सुनोगे ।
दीनों के हित खुला सदा ही है दरबारे आम सुनोगे ।।
लगने पाता है आश्रित को नहिं त्रिताप का घाम सुनोगे ।
"शुक्ल" लोक परलोक शौक से करें सँवारा माम सुनोगे ।।

मणि २५

महादेव सुख कहाँ समावे ।।

दिन प्रतिदिन छिन-छिन देवेश्वर जो तुमसे जनदीन ये पावे ।
अभी भिन्न तब भिन्न भिन्नता में नित नव प्रकार जो लावे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी कभी-कभी फिर वैसी नित्यहि वर बहार बरसावे ।
कैसा स्वाद जायका कैसा कहकर किस विधि कौन बतावे ॥
जिसकी शानी का दुनिया में कर नहिं कोई कल्पना पावे ।
उसकी कथा कही किमि जावे इस दरया में बाढ़ जो आवे ॥
हर हालत में ही हरषावे रोम रोम मेरा पुलकावे ।
नैन नेह का नीर बहावे "शुक्ल" देह का भान भुलावे ॥

मणि २६

महादेव के पास चलूँगा ॥
वैसे संभव नहिं जग जन से होकर निपट निरास चलूँगा ।
जकड़े जो बंधन-सयुक्ति में उनसे निजहिं निकास चलूँगा ॥
बेदर्दी के साथ बिनाश्रम सारे विघन विनाश चलूँगा ।
हो अति आसानी चलने में बनकर उनका दास चलूँगा ॥
होगा तिमिराच्छन्न मार्ग नहिं पाता दिव्य प्रकाश चलूँगा ।
मनहूसी से जाते मुर्दें मनमें भरे हुलास चलूँगा ॥
फिर आने की ऐसी तैसी करने वहीं निवास चलूँगा ।
जनम जनम की लगी प्यार की "शुक्ल" मिटाने प्यास चलूँगा ॥

मणि २७

महादेव के पास चलो सब ॥
चलने में हिचको मत कोई चलो भलो सब चलो खलो सब ।
कसकर कमर तयार जल्द हो, अब मत बैठे हाथ मलो सब ॥
बहुत जले रह दूर अब तलक और न तिहरे ताप जलो सब ।
दूरी दे बढ़ाय जो दिन-दिन उन कामों से दूर टलो सब ॥
गतिशीलता बढ़ा दे शतगुन ऐसे साँचे शीघ्र ढलो सब ।
उठो बढ़ो बेरोक पहुँचने से पहले विश्राम न लो सब ॥
करते सत्संकल्प देव की अनुकंपा से पूर्ण पलो सब ।
चमत्कार दिखलाय पथहि में "शुक्ल" चारु फल चारि फलो सब ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २८

महादेव से खूब लड़ी कल ॥

अपने ढंग की तुम्हें बताऊँ आई थी अद्भुतहि घड़ी कल ।
मैं पहुचा सामने तो देखा नजर आपकी यार कड़ी कल ॥
कुछ समझा चाहूँ तब तक तो लिया उन्होंने उठा छड़ी कल ।
मैं कह पाऊँ नहिं अपनी ही बातों की दी लगा झड़ी कल ॥
मेरे तो समक्ष अनयासहि हुई समस्या विकट खड़ी कल ।
सूझा अन्य उपाय न पदनख पर ही मेरी दृष्टि गड़ी कल ॥
सब साहस बटोर कर सीधे चरनों पर खोपड़ी पड़ी कल ।
भूल गई ततकाल समझलो देते थे जो बड़ी भड़ी कल ॥
हँसकर हृदय लगाय पिरोने लगे मंजु मुक्तान लड़ी कल ।
फिर तो तरह-तरह की मानो बरसी "शुक्ल" बहार बड़ी कल ॥

मणि २९

महादेव सब सुख से सोवें ॥

देखूँ मैं जगजन प्रमाद में, जीवन के अमूल्य दिन खोवें ।
सुख की नींद हराम इन्हें ये निशिदिन दुःख व्यथा से रोवें ॥
अमृत फल की करें कल्पना भ्रमवश देव बीज विष बोवें ।
लख परिणाम विषाक्त बिचारे विवश बने आँसुन मुँह धोवें ॥
तब क्यों रहे कष्ट कोई भी प्रभुपद प्रेम-सुधारस मोवें ।
होवें जो जन "शुक्ल" आपके हर हमेश हिय हरषित होवें ॥

मणि ३०

महादेव सुख अब बरसतबा ॥

कैसे बतलाऊँ की किसदिन किस छिन किस घटि कब बरसतबा ।
पाबंदी नछत्र तिथि की तज दस जी चाहा जब बरसतबा ॥
पाया है आदेश आपका कह सकता हूँ तब बरसतबा ।
बरसन की विधि का बरनन क्या नित नव धारे छव बरसतबा ॥
आज और कल और इस तरह नित्य नये ही ढब बरसतबा ।
फबता कहीं न जाय किसी विधि फबने जैसा फब बरसतबा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौन-कौन सुख कहूँ किस तरह यह सुख वह सुख सब बरसतबा ।
लेता साँस न "शुक्ल" कौन वह बरसा ई या रब बरसतबा ॥

मणि ३१

महादेव सुख साधन मेरे ॥
सच ये ही हैं मूल हमारे इहसुख पर लौकिक सुख केरे ।
पाता विविध प्रकार नित्य ही मैं सुख सब इनके ही प्रेरे ॥
इनके ही आदेश से मुझको रहते सुख चहुँधा से घेरे ।
पा इनका संकेत बने हैं सब विधि सुख समझो मम चेरे ॥
हटते नहीं हटाये सुखगन परे हैं उर में डाले डेरे ।
बहुतायत के कारण कितने तो हैं पहुँच न पाते नेरे ॥
मुझे तलाश न रही किसी की मुझे तलाश रहे बहुतेरे ।
संभव यह सब हुआ "शुक्ल" बस इनके नेक दया दृग फेरे ॥

मणि ३२

महादेव के चलें इशारे ॥
अनावृष्टि अतिवृष्टि के कर्ता धौरे धूमिल बादल कारे ।
कहीं बहा देते प्रदेश को सूखें कहीं कूप नद नारे ॥
इनके ही इंगित मंगल बुध चलते सूरज चाँद सितारे ।
ये सच झूठ किया करते हैं, फलित शास्त्र के बचन उचारे ॥
कथा कौन उपदेव देव की, विधि हरि रहते भृकुटि निहारे ।
पा इनका संकेत विश्व की करें व्यवस्था विशद बिचारे ॥
इनकी सत्ता से संचालित हों संसृति के कन-कन सारे ।
"शुक्ल" समर्थ कौन दुनिया में जो आदेश आपका टारे ॥

मणि ३३

महादेव की ओर निहारूँ ॥
चौदह भुवन निवासी जितने सच मानो सब छोर निहारूँ ।
संभव जितने नात जगत के सब ही इनसे जोर निहारूँ ॥
स्वारथ परमारथ हित अपने इनके कृपा कि कोर निहारूँ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेत्र तृप्ति सर्वथा करन को मुद मुख मंजुल गोर निहारूँ ॥
चितरंजन को नित नियमित ही मैं अपना चितचोर निहारूँ ।
इनकी शोभा के समक्ष मैं सबकी शोभा थोर निहारूँ ॥
बार-बार बलि जाय निहारूँ, छिन-छिन मैं तृनतोर निहारूँ ।
जब जी चाहा "शुक्ल" नेह भरि साँझ निहारूँ भोर निहारूँ ॥

मणि ३४

महादेव के चरन भावते ॥

परम मृदुल मंजुल अरुनारे मेरा मन अतिशय लुभावते ।
शीतल शुचि सुहावने सुन्दर छूते ही ही तल जुड़ावते ॥
होते ही दृग्विषय दृगन को मगन करें आनँद अघावते ।
सेवत सकल अभीष्ट सुलभ करि भरि प्रमोद सेवक सजावते ॥
आराधत बाधत त्रिदोष दुख साधत काज समस्त तावते ।
पूजत प्रेमाधिक्य प्रेमिजन आशुहिं चारि पदार्थ पावते ॥
ध्यावत देह भाव भूले जो तिनको सन्निधि सुख लहावते ।
वंदत "शुक्ल" पदारविंद जो वंदनीय विधि के बनावते ॥

मणि ३५

महादेव के चरन चौधरी ॥

कोमलता रद करन कमल की ललित लाल वर वरन चौधरी ।
नेक झलक मिलतेहि मान लो महामोद मन भरन चौधरी ॥
विश्व बीच विश्वास करो बस ये ही असरन सरन चौधरी ।
खोजे कहीं नहीं मिलने के ऐसे अवढर ढरन चौधरी ॥
हो कृपालु अनयास दास के दोष दुरित दल दरन चौधरी ।
बात-बात में निज सेवक की मिटा देंय जिय जरन चौधरी ॥
आश्रित नर के लिये आशु हीं चारु चारि फल फरन चौधरी ।
"शुक्ल" सश्रद्ध सतत इनहीं पर चाहूँ मैं शिर धरन चौधरी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३६

महादेव मेरे प्रिय दर्शन ॥
हो जाता निहाल सा मैं तो सत्य सकृत हेरे प्रिय दर्शन ।
हैं मुझको कृतकृत्य करदिये नेक नजर फेरे प्रिय दर्शन ॥
बैठे रहते स्वस्थ सदा ही डाल हिये डेरे प्रिय दर्शन ।
होते दूर कभी हमसे नहिं रहें सदा नेरे प्रिय दर्शन ॥
होता बोध कभी जैसे हों चहुँधा से घेरे प्रिय दर्शन ।
सुनते सभी पुकार हमारी बन विनीत टेरे प्रिय दर्शन ॥
पाता परमानन्द प्रतिक्षण सचमुच मैं प्रेरे प्रिय दर्शन ।
अनुकंपा करि "शुक्ल" अहैतुकि बना लिये चेरे प्रिय दर्शन ॥

मणि ३७

महादेव का रसिक बना नहिं ॥
यह वह क्या-क्या बना फिरा मैं किन्तु शोक हा रसिक बना नहिं ।
लाये भाव अनेकन निज उर रसिक भाव ला रसिक बना नहिं ॥
गाये गान भले भोंड़े बहु रस गीतन गा रसिक बना नहिं ।
धाकर थके विभिन्न पथों में रस पथ पर धा रसिक बना नहिं ॥
यहाँ वहाँ नहिं गया कहाँ मैं रसिकन में जा रसिक बना नहिं ।
नाया इन उनको-रसज्ञ के चरन शीश ना रसिक बना नहिं ॥
शुचि सेवा करि रस ज्ञाता की भलीभाँति भा रसिक बना नहिं ।
रसमय "शुक्ल" देव रसदाता का प्रसाद पा रसिक बना नहिं ॥

मणि ३८

महादेव का भक्त कहावे ॥
उसको उचित किसी प्राणी को नहिं किंचित् पीड़ा पहुँचावे ।
शारीरिक ही नहिं संभव हो जितना दिल भी नहीं दुखावे ॥
हो समर्थ दुखिजन सहायता करने में जी नहीं चुरावे ।
गया बिता स्वयमेव हो तो फिर दीनों पर बस दया दिखावे ॥
भोजन काल किसी भूखे के आने पर खिलाय खुद खावे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करे किसी की आश न त्रासहि सबको मीठे बचन सुनावे ॥
ससम्मान सिर नावे सबको भले बुरे का भेद भुलावे ।
हानि लाभ संयोग वियोगहु संपति विपति समान सुझावे ॥
पूजन भजन आदि करने में कभी नहीं हरगिज अलसावे ।
"शुक्ल" सुहावे सबको ही जो देव-देव को वही सुहावे ॥

मणि ३९

महादेव तुम मिले आय हो ॥
गये बिते मुझसे पर अपनी अनुकंपा अतिशय जनाय हो ।
मेरी व्याकुलता विलोक कर हो दयार्द्र सहवेग धाय हो ॥
थोड़ा ही होगा जितना भी तुम्हें सराहा देव जाय हो ।
बाढ़ी विरह व्यथा सबकी सब वात-बात में दी मिटाय हो ॥
जनम-जनम की साध पुरादी हँस-हँस कर हिय से लगाय हो ।
मनचाही अनचाही सारी हो ली "शुक्ल" अघा अघाय हो ॥

मणि ४०

महादेव भल भला करेंगे ॥
करते भला विश्वभर का क्यों निज जन का नहिं लला करेंगे ।
बन जावें प्रिय पात्र जो इनके इंगित पर हम चला करेंगे ॥
दें लगाय लगजावें उसमें टालें उससे टला करेंगे ।
ननु नच बिना किये ही साँचे जिस भी ढालें ढला करेंगे ॥
फिर तो अनुकंपा से इनकी भली भाँति हम पला करेंगे ।
इनकी कृपा बेलि में ममहित चारु चारिफल फला करेंगे ॥
मेरे बिना कहे ही मेरी दूर सभी ये बला करेंगे ।
अनभल के सब हेतु बनें भल "शुक्ल" प्रकट वह कला करेंगे ॥

मणि ४१

महादेव कह सोच वृथामत ॥
सोचन की कोइ बात न जग में मस्त सदारह सोच वृथामत ।
जो निसोच कर देय लोक द्वय सो प्रभु पग गह सोच वृथामत ॥
सोचमूल सब चाह चुकाकर शिवपद रति चह सोच वृथामत ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्म अधार विधान बना सो सब सहर्ष सह सोच वृथामत ॥
डाहे जाने पर भि अन्य से तू न कभी डह सोच वृथामत ।
लेकर नाम निरंतर हर का दोष दुरित दह सोच वृथामत ॥
दुख-सुख हानि-लाभ भूले सब प्रेम सिन्धु बह सोच वृथामत ।
लहते जो जोगीश "शुक्ल" नहिं अक्षय पद लह सोच वृथामत ॥

मणि ४२

महादेव कहते सो सुनरी ॥

साफ सत्य बातें हैं इनको सुन करके मनमें निज गुनरी ।
दूर करे तत्काल सयानी लगे हुये मति में जो घुनरी ॥
दुख सुख के दाता अपने ही किये हुये हैं पाप औ पुनरी ।
पीड़ा पा करके जग जन से हरगिज मत हिय में जल भुनरी ॥
कर्म प्रधान विश्व यह बेटी सोच समझकर कात औ बुनरी ।
दुख चाहे हो पाप परायण सुख इच्छित तो पुण्यहि चुनरी ॥
दे निकाल सब सोच हृदय से प्रेम सहित शिव नामहि धुनरी ।
"शुक्ल" बरसने वाली ही है कृपावारि वदरी जो उनरी ।

मणि ४३

महादेव हैं हमें जिलाये ॥

वर्ना सेल गया होता मैं अवसर ऐसे-ऐसे आये ।
आये जितनी बार वे जो-जो होते तितनी बार मुआये ॥
पर इनकी अनुकंपा से कोइ बाल नहीं बाँका कर पाये ।
जितना संभव था उतना वे रूप भयंकर भले दिखाये ॥
सुनो सभी हे विश्व निवासी कहता हूँ मैं भुजा उठाये ।
संकट विकट परे कितना भी चित में नहिं कोई चकराये ॥
पूर्ण प्रतीति प्रीति संयुत सो देव-देव की शरण सिधाये ।
बिपति सिन्धु से "शुक्ल" पार हो लोक और परलोक लहाये ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४४

महादेव देते सो ले लो ॥

देने को उत्सुक देवेश्वर देखो तो अभिमुख हो ले लो ।
लेने में बाधक बनता है अहंभाव बिलकुल खो ले लो ॥
पाने का है लाभ उठाना तो अंतसमल को धो ले लो ।
लोक और परलोक हेतु सिध होगा हितकारी जो ले लो ॥
सस्ता समझ पड़ेगा पीछे मैं कहता सर्वस दो ले लो ।
हँसते-हँसते देंय खुशी है धार बाँध नतु रो-रो ले लो ॥
जीवन सफल सद्य करने को मित्र मेरी मानो तो ले लो ।
लिये खड़े हैं "शुक्ल" सामने माथ चढ़ा करके लो ले लो ॥

मणि ४५

महादेव देते सो ले लो ॥

देने को तैयार देव सब फिर क्यों हाय मुसीबत झेलो ।
लेने को उत्सुक हैं तुमको क्यों नहिं आप गोद में खेलो ॥
होते देख दुखी सचमानो कब से जो भव ठेला ठेलो ।
कैदी सी हैसियत तुम्हारी काट रहे हो तुम जग जेलो ॥
दौड़ो देर करो मत कोई भाँति-भाँति के पापड़ बेलो ।
हो निराश क्यों पास करें ये सभी क्षेत्र में भये जो फेलो ॥
दौड़ो गुरुजन गर्व त्यागकर दौड़ो चाह भरे चित चेलो ।
"शुक्ल" परोसा थाल सामने चारि पदारथ का है ये लो ॥

मणि ४६

महादेव पर मरन न भाया ॥

किये गये षटकर्म विविध विधि सेवा इनकी करन न भाया ।
भरे विकार प्रकार अनेकन भक्तिभाव भल भरन न भाया ॥
गये नर्क औ स्वर्ग सिधारे जाना इनके घरन न भाया ।
जरे त्रिताप ज्वाल से जुग जुग इन वियोग में जरन न भाया ॥
धन जन धरे हृदय में भलिविधि पद पंकज हिय धरन न भाया ।
ढोये भार लोक दोनों के परना इनके गरन न भाया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोना स्वीकृत हुआ जन्म बहु होना इनकी सरन न भाया।
सर्व सिद्धिप्रद "शुक्ल" सद्य ही देव चरन पर परन न भाया॥

मणि ४७

महादेव सँग खेल खेलाड़ी॥

नीरस पड़ा सरस सद्यः ही हो जावे तव केल खेलाड़ी।
लिये साथ रह इन्हें सद्य ही जावे जिस भी गेल खेलाड़ी॥
पढ़ इनके ही साथ पाठ सब, पास हो चाहे फेल खेलाड़ी।
रख इनको संग ही रंग से विधि-विधि पापड़ बेल खेलाड़ी॥
थका मार इनको भी जो तू थक-थक ठेला ठेल खेलाड़ी।
हरगिज छोड़ नहीं इनको तू जाना पड़े जो जेल खेलाड़ी॥
इन्हें लिये ही लिये सदा तू सभी मुसीबत झेल खेलाड़ी।
इन्हें हिचक होगी नहिं इनसे "शुक्ल" बढ़ाले मेल खेलाड़ी॥

मणि ४८

महादेव यह विनय हमारी॥

नत विनीत अति आरत होकर कहता हूँ सो सुनो पुरारी।
बचपन विता जवानी ढल गई, चलने की कर रहा तयारी॥
शोक सहित कहना पड़ता सच मति गति किन्तु न गई गँवारी।
फलस्वरूप निज आप देखलें बनी हुई है वृत्ति विकारी॥
करिये अस-अनुकंपा जिसमें जिय से दुर्वृति जाय निकारी।
शेष काल में ही सचेष्ट हो कुछ तो बिगरी जाय सुधारी॥
समझें आप सर्वथा मेरा सरपर भार आपके भारी।
"शुक्ल" करो तुम वही शौक से जो कुछ मरजी होय तुम्हारी॥

मणि ४९

महादेव यह बिनती मेरी॥

सावधान हो सुनो देववर विनयावलि कुछ इस जन केरी।
चलने के इस वक्त बताओ क्यों कुबुद्धि है हमको घेरी॥
तुम्हें टेरने के बदले हम अहनिशि हरछन धन जन टेरी।
त्याग विराग विसारि विषय की मम नितवृत्ति बनी है चेरी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदलो इसकी राह बेगि ही आशुतोष अब करो न देरी।
आशु बढ़ाओ ओर आपनी दयानिधान दया दृग फेरी॥
कबके भये दूर हैं तुमसे होती फिर से नेरा नेरी।
कहना था सो "शुक्ल" कह चुका, करो वही जो मरजी तेरी॥

मणि ५०

महादेव से गाल कौन के॥

गोरे भले भरे उभरे से दिखलाते इस चाल कौन के।
बदन मदन मद कदन सदन शुभ अधर बिंब से लाल कौन के॥
भूषित सित भलि भस्म सुहावनि उन्नत भाल विशाल कौन के।
संतत तरल तरंगित सुरधुनि जटाजूट जल जाल कौन के॥
अमृत कला संयुक्त सदाशिर शोभत वर विधु बाल कौन के।
शोभा खानि बखानि जाय नहिं फणि मणि की गरमाल कौन के॥
प्रति अँग-अंग अनंत वासुकी भूषण बने सुव्याल कौन के।
नरहरि की अनिंद्य अति अद्‌भुत"शुक्ल"कसी कटि खाल कौन के॥

मणि ५१

महादेव देलन पाईं ला॥

इनके सिवा आन से हरगिज हम न दीनता दिखलाई ला।
इनसे पाय महान वस्तु हम हरषाईला हुलसाईला॥
इनकर नाम गुनावलि सुन्दर हर हमेश हुलसित गाईला।
श्रवणेच्छुक बन सुयश सुहावन यत्र तत्र दौरल जाईला॥
तजकर लोक संपदा सारी इनकर हिय विभूति छाईला।
उलझन सब समाप्त कर संतत इनसे ही उर उरझाईला॥
इनकर याद सदा करके हम अति उमंग भरि उमगाईला।
इनके पूज्य पदारविंद में "शुक्ल" सश्रद्ध शीश नाईला॥

मणि ५२

महादेव प्रिय सजन हमारे॥

वह दिन धन्य परम धनि वह छिन जब इन बाँह गहा मम प्यारे।
सुकृत समूह सहाय भये या अनुकंपा निजकरि दृग डारे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब से गहे कृपा करके कर विविध भाँति से रहें दुलारे।
लखते नहीं हीनता मेरी नहिं मलीनता तकें बिचारे॥
बिना हिचक बे झिझक बिगारे मेरे काज सँवारे सारे।
मनचाही अनचाही चीजन आवश्यक ला धरें सकारे॥
देखा करें सदारुख मेरा हम सुख लहें सो बचन उचारे।
भावी सभी जन्म में मेरे "शुक्ल" देव ये हों हिय हारे॥

मणि ५३

महादेव मुसकाना जानें॥
वैसे दाँत निपोरें सब ही जाने क्या मुसकाने मानें।
इनके लिये है स्वाभाविक जो सदा आत्मसुख रहें समाने॥
सच तो यह मुसकाते नहिं ये खेलें आप अधर मुसकाने।
लख जो लें मुसकान आपकी वह बन जाय अनंद निधाने॥
उसकी भी मुसकान जाय नहिं शत सहस्र साँसत समुहाने।
सुख में रहे तटस्थ सदा वह दुःख में गावे सुखमय गाने॥
उनकी हालत देख लोक जन सचमानो लगते चकराने।
"शुक्ल" बना अलमस्त डोलता लगता जस हो गहरी छाने॥

मणि ५४

महादेव मुसकान जो देखो॥
तो मैं कहता सो सचमानो हो जाओ हैरान जो देखो॥
गौर गँभीर मंजु मुखमण्डल आत्मानंद समान जो देखो॥
तब कृतकृत्य मानलो निजको उन-आनन्द निधान जो देखो।
मस्ती में भरजाव ततक्षण चंद्रवदन मस्तान जो देखो॥
भूलो नहीं बात मेरी यह भूल जाव तब भान जो देखो।
फिर देखे बिन चैन परे नहिं एकबार सुखखान जो देखो॥
देखो तुम शतबार भले पर कर नहिं सको वखान जो देखो।
"शुक्ल" भाग्य खुल जाय भलीविधि तुम भोला भगवान जो देखो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५५

महादेव पद पूजन भावे ॥

सेवा सुश्रूषा तज इनकी अन्य काज नहिं करन सुहावे ।
लख इनका लालित्य सद्य ही मन मेरा अत्यंत लुभावे ॥
चुंबन कर कैसे बतलाऊँ की कितना मम मुख सुख पावे ।
चिपका कर इनको सचमानो मम हीतल शीतल हो जावे ॥
इनका रज अंजन करने से आँखन दिव्य ज्योति दरसावे ।
रसमय गुन इनके गा-गा के मम रसना आनंद अघावे ॥
इनका पा प्रसाद अहनिशि हिय हुलसावे पुनि-पुनि पुलकावे ।
"शुक्ल" सश्रद्ध सप्रेम हृदय करि इनपर शीश बार बहु नावे ॥

मणि ५६

महादेव के चरन चाहता ॥

कोई कुछ कोई कुछ चाहे मैं अपने हिय हरन चाहता ।
उर उमंग उपजाते मेरे उन निज उर आभरन चाहता ॥
दृग रंजन करने को दोनो ललित लाल वर वरन चाहता ।
अनुकंपा निजपर करने को मैं इन अवढर ढरन चाहता ॥
गौरव वृद्धि हेतु अपना मैं करना इनको वरन चाहता ।
लोक द्वय कल्याण मान निज होना इनकी सरन चाहता ॥
सार्थकता करने को इसकी इनपर निज शिर धरन चाहता ।
"शुक्ल" साध सारी पूरन हित धर इनपर सिर मरन चाहता ।

मणि ५७

महादेव सुख दिन दिन दे हैं ॥

यह संभव नहिं किसी तरह भी बतलाऊँ मैं किन-किन दे हैं ।
फिर भी कह सहता हूँ इतना इच्छुक होंगे तिन-तिन दे हैं ॥
उदासीन सर्वथा हो जीवन ऐसे-ऐसे खिन-खिन दे हैं ।
देने पर ही तुले हैं वे तो मुझ जैसे भी घिन-घिन दे हैं ॥
क्या है थोर पास में उनके यह क्यों सोचो गिन-गिन दे हैं ।
लगा भोर से शाम-शाम से भोर तलक वे छिन-छिन दे हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े मजे के बड़ी मौज के आनँद प्रभुवर फिन-फिन दे हैं।
"शुक्ल" निहाल होय निश्चित ही सचमानो वे जिन-जिन दे हैं॥

मणि ५८

महादेव से प्रेम पुराना ॥

जन्म-जन्म के साथी हैं ये आज नहीं इनको पहचाना।
फूट गया था भागहि उस दिन जिस दिन हा इनसे बिलगाना॥
हुआ था क्यों विलगाव आपसे यह भी तो अबतक नहिं जाना।
भूल चूक कुछ भई हि होगी वर्ना क्यों पड़ता अलगाना॥
भोगी भवयातना विविध विधि साँसत सहस सहे विधि नाना।
हुई देव अनुकंपा पुनरपि अपना जानि चहा अपनाना॥
धूल डाल सब किये भूलपर होकर अति अनुकूल सुजाना।
लिये लगाय कंठ उत्कण्ठित "शुक्ल" धन्य शत धन्य बखाना॥

मणि ५९

महादेव दुख दूर न होवें ॥

करना चहें करें कम ज्यादा किंतु समाप्त समूर न होवें।
लगा रहे सिलसिला कुछ न कुछ ये बिलकूल काफूर न होवें॥
तद्विपरीत कभी भी मेरे सुख के सपने पूर न होवें।
सुख की आशा कर किंचित भी जग में हम मतिकूर न होवें॥
भौतिक सुख का मूल वित्त या हम धन मद में चूर न होवें।
कर न सकें पहचान व्यक्ति की अस शुरूर में सूर न होवें॥
सुख की जड़ता से जगदीश्वर कभी घृणित हम घूर न होवें।
कृपावारि से रहें सदातर "शुक्ल" कभी हम भूर न होवें॥

मणि ६०

महादेव दुख दूर करो सब ॥

मेरा नहिं इन लोक जनों का देव-देव दुख दोष हरो सब।
ऐसी दो सुवृत्ति इनको की दुष्कर्मों से सद्य टरो सब॥
हित साधक इकबनें एक के अनहित से अत्यंत डरो सब।
लख दयनीय दशा जिस तिस की होकर अतिहि दयार्द्र ढरो सब॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखें न कोइ दुर्भाव किसी से सबके प्रति सद्भाव भरो सब ।
दुष्पथगामी दिखे न कोई हितकारी शुभ पंथ धरो सब ॥
यम यातना न भोगे कोई सपरिवार सह मित्र तरो सब ।
"शुक्ल" सुलभ हो जाय सभी कुछ देव चरन अति प्रीति परो सब ॥

मणि ६१

महादेव सबको पहचानें ॥

बाहर नहीं बीच घट बैठे पढ़ा करें सबके सब माने ।
कोई बात छिपी नहिं इनसे सबके नस-नस की सब जानें ॥
लखा करें हर वक्त सजग ये हर की हर हरकत भितराने ।
जो हम करें कल्पना सोचें जो कुछ भला बुरा उर आनें ॥
सही-सही सर्वथा किया ये अंकित करें अशंक चुपाने ।
हम जनदृष्टि बचा जब लेते समझें निजको परम सयाने ॥
इनकी दृष्टि बचाना संभव है ही नहीं सुनो मरदाने ।
क्षमा सिंधु हैं "शुक्ल" भुला दें सब बन दीन शरण समुहाने ॥

मणि ६२

महादेव को भी पहचानो ॥

यह जानो वह सब तुम जानो इनको भी कोशिश कर जानो ।
पर पहचनवाए बिन इनके सके न कोइ पहचान सयानो ॥
वेद शास्त्र सब पढ़ो पुराणों को भी आप भलीविधि छानो ।
जो पहचान पास के हों कुछ उनकी करि सेवा सनमानो ॥
करें जो वे आदेश प्रीति औ सह प्रतीति पालो मरदानो ।
संतत नाम जपो सश्रद्ध बन कीरति अति कमनीय बखानो ॥
बिनती करो विनीत भाव से जब ये मिटा देंय अज्ञानो ।
सब शिव मय तब "शुक्ल" समझकर बन जाओ आनन्द निधानो ॥

मणि ६३

महादेव तुमको खुब जानें ॥

निज की कुछ पहचान तुम्हें नहिं पर ये भली भाँति पहचानें ।
तुम देखो माटी क़ाया को ये तुमको तत्त्वतः पिछानें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम भूले इन पंचभूत में पर ये तुम्हें अंश निज मानें।
निज को भूल-भूल इनको तुम फिरते बन दुनिया दीवानें॥
लख उन्मत्त दशा यह तुम्हरी दयानिधान देव दुख सानें।
अकुलाया वे करें अहर्निशि कैसे तुम्हें पाय सनमानें॥
उत्कंठित रहते हमेश ही ले तुमको निज कंठ लगानें।
"शुक्ल" तुम्हारा रुख नहिं पाकर, हृदयेश्वर लगते पछतानें॥

मणि ६४

महादेव को जानो तुम भी॥

ये तो जानें आदिकाल से इनको अब पहचानो तुम भी।
अपना अंश मान सनमानें क्यों न इन्हें सनमानो तुम भी॥
तुमसे करें सनेह हार्दिक शुचि सनेह मति सानो तुम भी।
तुमको पा पुलकाते बेहद इन्हें प्राणधन मानो तुम भी॥
तजना तुम्हें कभी नहिं चाहें ऐसा ही हिय ठानो तुम भी।
सबके सुहृद सर्व हितकारी हैं ये यह अनुमानो तुम भी॥
परम उदार चरित्र जानके सुन्दर सुयश बखानो तुम भी।
निज में लीन किया ये चाहें "शुक्ल" यही उर आनो तुम भी॥

मणि ६५

महादेव को जान गया मैं॥

करा दिया पहचान स्वयं ही, इससे ही पहचान गया मैं।
करवाया बखान निज जस-जस, तस-तस इन्हें बखान गया मैं॥
सनवाया बलात् सो इनके शुचि सनेह रस सान गया मैं।
मान न मान बनूँगा ही तब मान-महा मेहमान गया मैं॥
लख अहेतु हितकारी हरके सब विधि समझ सुजान गया मैं।
दीनों का सनमान देखकर इनको जान महान गया मैं॥
अति उदारतावश दरबारी इनका बन नादान गया मैं।
"शुक्ल" सराहूं भाग्य किस तरह पा भोला भगवान गया मैं॥

मणि ६६

महादेव की छवि मन हारी॥

गौरव मयी गौर ज्योतिर्मय काया कांति लगे अति प्यारी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदन मदन मद कदन सदन शुभ नयनन निरखि निमेष निवारी ॥
बालचंद्र भल भाल विभूषित सित भलि भस्म तड़ित दुतिकारी ।
छूटत-फबत फुहार सदा सिर सुरसरिता झरिता त्वरितारी ॥
कलित कान नासिका अमोलक दाड़िम दशन अधर अरुनारी ।
कहि न जाय देखत बनि आवत मंद हास्य लखि देह बिसारी ॥
नीलकंठ वक्षस्थल विस्तृत भुज प्रलंबयुत भूषण भारी ।
तरुण अरुण से "शुक्ल" सुशोभित चरण कमल की मैं बलिहारी ॥

मणि ६७

महादेव को भजे भलाई ॥

कहता हूँ पुकारकर सादर सावधान हो सुन लो भाई ।
रहते लगे रातदिन जिसमें साथ जायगी नहीं कमाई ॥
कर करके कसरत-कसरत से जाती जिसको गिजा पिलाई ।
तेल फुलेल लगा कपड़ों से गहनों से जो जाय सजाई ॥
कौन नहीं जानता बताओ काया भी वह साथ न जाई ।
पुत्र कलत्र मित्र परिजन की स्वार्थमूल है सभी सगाई ॥
कोई काम नहीं आने के उठ जब यार जनाजा जाई ।
लोक और परलोक सदा ही, "शुक्ल" करें सच शंभु सहाई ॥

मणि ६८

महादेव के नाम की खेती ॥

कर देखो कोई भी सज्जन होगी बड़े काम की खेती ।
होती बारहमास बराबर बे बरसात बे घाम की खेती ॥
जाना कहीं दूर नहिं पड़ता है यह तो निज धाम की खेती ।
करना श्रम न श्रमिक ही देना, यह बिल्कुल बे दाम की खेती ॥
बैठे सोते भी कर सकते हैं सच बड़े अराम की खेती ।
धनी गरीब सुजात कुजातहु है यह पब्लिक आम की खेती ॥
कोई समय नहीं निर्धारित यह तो आठोयाम की खेती ।
हरी भरी रहती हर हालत "शुक्ल" ये अपने राम की खेती ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६९

महादेव के नाम की खेती ॥

बड़ी कीमती सिद्ध सब तरह पर होती है बिल्कुल सेती ।
पैदावार अमित हो इसकी यह कल्पना करो मत केती ॥
बारह मास उपज तुम इसकी, कर सकते हो चाहे जेती ।
ऊसर पाथर में यह उपजे होती फसल सफल जहँ रेती ॥
अंधा लँगड़ा लूला कोढ़ी कर सकता मन चाहे तेती ।
इसकें लिये सहज है सद्यः पूरी कर देना चित चेती ॥
करने से अकाम सचमानो यह अद्भुत अनंत फल देती ।
कर देती कृतकृत्य "शुक्ल" सच भलि विधि भक्ति भाव मति भेती ॥

मणि ७०

महादेव की प्राप्ति न की क्यों ॥

प्राप्ति हेतु ही प्राप्त देह यह बात बुद्धि नहिं समझ सकी क्यों ।
चमत्कार से पूर्ण जगत के चाक चिक्य को लखे चकी क्यों ॥
झूठे आकर्षण विषयों के बे समझे इन ओर तकी क्यों ।
भरा परा घर-घर दर-दर जो महामोह मद छान छकी क्यों ॥
मिटी प्यास नहिं मृगतृष्णा से दौड़-दौड़ मति मृगी थकी क्यों ।
मिलता था प्रकाश जिस दिग से उस दिशि से निज आँख ढकी क्यों ॥
मिलते अपन आप ही आकर जीह नहीं गुन नाम बकी क्यों ।
"शुक्ल" भोग बहु जन्म यातना आह दैव बुधि नहीं पकी क्यों ॥

मणि ७१

महादेव सुधि आती फिर-फिर ॥

मर सा मैं जाता वियोग में यह ही मुझे जिलाती फिर-फिर ।
उदासीनता फटक न पाती उर उमंग उमगाती फिर-फिर ॥
हो पाता हताश हरगिज नहिं रहती हिय हुलसाती फिर-फिर ।
आती देख उदासी रंचहु यह दक्षा फुसलाती फिर-फिर ॥
होते ही अधीर यह चतुरा भलिविधि धीर बँधाती फिर-फिर ।
बूड़त विरह सिन्धु चितलखते तुरत तरनि बन जाती फिर-फिर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जाता प्रसन्न मन पुनरपि वह कौशल दिखलाती फिर फिर।
"शुक्ल" धन्य शत धन्य इसे कहि, वृत्ति मेरी बलि जाती फिर फिर॥

मणि ७२

महादेव आये हो भैया॥

सुनतहि यह संवाद सुहावन तन सुधि बिसराये हो भैया।
दौड़ पड़े कह कहाँ किधर हैं अति चित चकराये हो भैया॥
पास खड़े नहिं दिखें दशा मम लख वे मुसकाये हो भैया।
लगा लिये भर बाँह गले से हम मन सकुचाये हो भैया॥
निबुकि अधीर किये मन निज सिर पुलकित पद नाये हो भैया।
नयनन के जल से नेहातुर पग द्वय पखराये हो भैया॥
करे कौन आतिथ्य अकिंचन अति उर शरमाये हो भैया।
पाकर प्राण अधार "शुक्ल" निज तन मन पुलकाये हो भैया॥

मणि ७३

महादेव गलहार बने हैं॥

एकमात्र प्रियपात्र हमारे ये ही प्रेमागार बने हैं।
आज नहीं जुग जुग से मेरे ये ही प्रेमी यार बने हैं॥
प्राण सुरक्षित हैं इनसे ये मेरे प्राण अधार बने हैं।
जीता हूँ इनके हि जिलाये ये जीवन साकार बने हैं॥
इनसे ही देखूँ दुनिया में ये दृग दोउ हमार बने हैं।
बिचरूँ मैं इनमें ही निशिदिन ये गुलशन गुलजार बने हैं॥
पाऊँ परमानन्द प्रतिक्षण ये दाता दिलदार बने हैं।
सेवक "शुक्ल" तुच्छ इनका मैं ये मम स्वामि उदार बने हैं॥

मणि ७४

महादेव इकबार हँसो तो॥

मनहूसी धारन करली क्यों माननीय मम यार हँसो तो।
मेरी भूल भुला दो सारी मैं करता मनुहार हँसो तो॥
जीत तुम्हारी सही-मानता लो मैं जाता हार हँसो तो।
फटता हिय मेरा मुद्रालख हो हरषित हियहार हँसो तो॥
दिल बैठा जाता सच मेरा ऐ मेरे दिलदार हँसो तो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर आनँद की झड़ी लगाओ आनँद के अवतार हँसो तो ॥
दूँ मैं प्राण लुटाय ललकते मेरे प्राण अधार हँसो तो ।
"शुक्ल" मेरे सरकार हँसो तो मेरे सर्वस सार हँसो तो ॥

मणि ७५

महादेव हँसनू लग हँसने ॥

तेरे हँसते ही मुड़ेर पर बैठा हुआ लगे कग हँसने ।
गुरु जो हम जैसे भगतों का उज्ज्वल पक्ष लगे बग हँसने ॥
नटत मयूर फुदकते फिद्दा शुक सारिका सभी खग हँसने ।
सिंह हँसे गज हँसे अन्य भी वानर भालु वन्य मृग हँसने ॥
देव हँसे देवरानी हँसिहैं नर हँसि नारि सहित सग हँसने ।
सोये हँसें हँसें जाग्रत भी राही लगें चलत मग हँसने ॥
तरुवर हँसें सरोवर हँस दें सचमाने लागें नग हँसने ।
हँसन बहार "शुक्ल" छाये खुब हँसकर देख लगे जग हँसने ॥

मणि ७६

महादेव को पूज सहेली ॥

होते एक दीखते हैं जो प्रकृति पुरुष दो पूज सहेली !
करना हो कृतकृत्य काय यह मैं कहती तो पूज सहेली ॥
पूजत बने यथार्थ रीतया अंतरमल धो पूज सहेली ।
सुविधा हो घर में हि अन्यथा देवालय जो पूज सहेली ॥
उपजें विविध भाव उर अंतर प्रेम बीज बो पूज सहेली ।
सानी सुरस सनेह कभी हँस कबहीं रो रो पूज सहेली ॥
पूजन सफल सद्य हो सजनी देह भान खो पूज सहेली ।
पूजन की इति होय "शुक्ल" तब जो वो सो हो पूज सहेली ॥

मणि ७७

महादेव के पाँय पूजबै ॥

घर में लही लहान घरै में नहिं देवालय जाय पूजबै ।
सोरह विधि साहित्य सुसादर लै रुचि सहित अघाय पूजबै ॥
कबहिं मनोमय ही पदार्थ ले बैठे स्वस्थ सुध्याय पूजबै ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब साधन शिरमौर समझकर भलिविधि मनहिं लगाय पूजबै ॥
जैसे होय बेगार तैसनहिं वृत्ति सनेह सनाय पूजबै ।
हितकारी अनुमानि हर तरह भर उमंग उमगाय पूजबै ॥
हो करके अनुरक्त उसी में हम तन भान भुलाय पूजबै ।
"शुक्ल" स्वदेव मनाय पूजबै तन्मयता अपनाय पूजबै ॥

मणि ७८

महादेव को जाना जब हम ॥
पूरा लाभ उठा पाया है भलीभाँति पहचाना जब हम ।
अपने बन पाये ये—इनको अपना चहा बनाना जब हम ॥
मिला आत्म संतोष है, इनको जी से है सनमाना जब हम ।
वाणी सफल हुई है, इनके गुनगन विमल बखाना जब हम ॥
उदासीनता मिट गइ सीखा इनसे जी बहलाना जब हम ।
आई तब मस्ती जीवन में प्रेम सुरा छकि छाना जब हम ॥
इनमय ही तब दिखी सृष्टि यह दृष्टि भुला दी नाना जब हम ।
दीवाने बन फिरें ये पीछे "शुक्ल" बना दीवाना जब हम ॥

मणि ७९

महादेव से करो जो यारी ॥
तो यारी करने की भलि विधि सफल होय सच साध तुम्हारी ।
कैसे की जाती है यारी ये उसकी विधि जानें सारी ॥
जिसे यार स्वीकार लेंय कर उसकी भूल भुलावें भारी ।
निज समकक्ष गिनें ये उसको भरी परी हीनता बिसारी ॥
बना देंय सब बात-बात में जो जितनी वह होय बिगारी ।
देखत ही देखत सचमानो देते उसकी दशा सुधारी ॥
कर देते बेजोड़ विश्व में निजकर कमलन उसे सँवारी ।
वह कृतकृत्य "शुक्ल" हो जाता निज तन मन धन इन पर वारी ॥

मणि ८०

महादेव सब बला हरेंगे ॥
जैसे हो न रही ही कोई, ऐसी अद्भुत कला करेंगे ।
इनकी अनुकंपा से केवल, मेरे दुर्जर पाप जरेंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनका पा संकेत मात्र बस मेरे दोष समूह टरेंगे।
अनहितकारी तत्व कोई भी आते मेरे पास डरेंगे॥
करके दया दयानिधि मम उर शुचि सुन्दर भल भाव भरेंगे।
इनका कृपा प्रसाद प्राप्तकर हम नव साँचे शीघ्र ढरेंगे॥
तरता कोई होय इकल्ला सपरिवार हम सद्य तरेंगे।
मनसा वाचा और कर्मणा "शुक्ल" पुलकि प्रभु पाँय परेंगे॥

मणि ८१

महादेव उस दिन आवेंगे ॥
जिस दिन आना किया है निश्चित् हरगिज उसे न बिसरावेंगे।
बड़े बात के धनी आप हैं, क्या उसमें कलंक लावेंगे॥
आने में दिक्कत क्या उनको मन करते हि पहुँच जावेंगे।
लेना देख हुलास भरे हिय हम मलीन को अपनावेंगे॥
करके शत प्रयत्न प्राणेश्वर हमको हरविधि हरषायेंगे।
जैसे कभी न बरसी होगी अस बहार वर बरसावेंगे॥
हम पा मिलन गीत मित्रन सह भर उमंग उमगा गावेंगे।
"शुक्ल" सनेह सु सरसावेंगे पद पंकज प्रिय परसावेंगे॥

मणि ८२

महादेव सा सगा कौन है ॥
मैं कहता आत्मीय आप सा कभी न कोई रहा औन है।
मिलती भला मुख्यता कैसे दिखता ही जब नहीं गौन है॥
इनने ही महि रची कि जिसपर मेरा बना विशाल भौन है।
इनसे मिलता साग पात सब अन्न और जल मिर्च नौन है॥
इनसे ही मिलते सबके सब सुख साधन सामान जौन है।
इनसे प्राप्त प्रकाश पुंज यह प्राण रूप संचरित पौन है॥
जिससे जड़ शरीर चेतन यह जो ये आतम तत्त्व तौन है।
"शुक्ल" सका महिमा बखान नहिं वेद बिचारा बना मौन है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८३

महादेव से लगन लगी है ॥

जबसे तबसे तुम्हें बताऊँ, भली भाँति तकदीर जगी है ।
इनसे जान निकट संबंधित करे न माया ठगिनि ठगी है ॥
इनकी रोषपूर्ण मुद्रालख मेरी सभी बलाय भगी है ।
आये गये विघन बहुतेरे इनकृत दृढ़मति कुछ न डगी है ॥
इनकी अनुकंपा द्वारा पा प्रेमामृत रस वृत्ति पगी है ।
कृपा प्रसाद से हि बुधि मेरी शुचि सनेह शुभ रंग रँगी है ॥
इनके नाम गुनावलि गाती अहनिशि मेरी जीह खगी है ।
जाय् कहाँ पदपोत "शुक्ल" तजि बसी इसी में बुद्धि कगी है ॥

मणि ८४

महादेव को धन्यवाद दो ॥

इनने दी नरदेह दिव्य यह अनुग्रहीत हो धन्यवाद दो ।
इनसे विशद बुद्धि पा विकसित हुये हो तुम तो धन्यवाद दो ॥
इनकी रची पढ़ी विद्या तुम तब विद्वान भो धन्यवाद दो ।
इनके दिये माल से मस्ती लेते हो जो धन्यवाद दो ॥
पत्नी मिली पुत्र कन्या भी रत्न मिले सो धन्यवाद दो ।
तज करके अभिमान भलीविधि अंतरमल धो धन्यवाद दो ॥
भरकर प्रेम अगाध हृदय में धारबाँध रो धन्यवाद दो ।
दो शत "शुक्ल" सहस्रबार दो लक्षबार दो धन्यवाद दो ॥

मणि ८५

महादेव के गाल निरखते ॥

उभरे भरे कपोल सुकोमल होऊँ अतिहि निहाल निरखते ।
पाऊँ किये प्रयत्न न कोई हारूँ हेरि मिसाल निरखते ॥
गदगद हो जाती है तबियत भस्म विभूषित भाल निरखते ।
शीतल हो जाता है ही तल, शीश इन्दुवर बाल निरखते ॥
लेती है मन मोह गले में पड़ी सुमन मणिमाल निरखते ।
हो जाता हूँ मस्त भव्य वह कमर कसी हरि खाल निरखते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चकराता भोले स्वभाव का महाकाल के काल निरखते।
जी होता लूँ चूम "शुक्ल" चट मृदुल चरन तल लाल निरखते।

मणि ८६

महादेव हमको बतलाओ ॥

बनकर धृष्ट पूछता हूँ जो साफ-साफ सो देव बताओ।
नफरत बड़ी झूठ से मुझको सत्य-सत्य करि कृपा सुनाओ॥
देखूँ मैं निज गरज आप नित गलि-गलि घर-घर दौड़े जाओ।
करते भी मनुहार किंतु क्यों मेरे ढिग आते शरमाओ॥
लखकर दुर्लक्षण मेरे क्या, मुझसे आप घृणा फरमाओ।
तब क्यों मुझ जैसे शतशः को ले ले करके गले लगाओ॥
समदर्शी होते भि आप यह भेद दृष्टि काहे अपनाओ।
शंकाशील "शुक्ल" पूछूँ मैं समाधान मेरा करवाओ॥

मणि ८७

महादेव हैं बड़े मजे के ॥

वैसे कोमल हैं कठोरता के अवसर पर कड़े मजे के।
आश्रित जन के लिये सुसंकट-काल सहायक खड़े मजे के॥
दास मनोर्थं पूर्ण करने को भरे ये अद्भुत घड़े मजे के।
अपनी अति बिशेषता से ही मेरे दिल में गड़े मजे के॥
ऐसे भी कह सकते ये तो रोम-रोम में जड़े मजे के।
मैंने तड़ा तड़ाये इनके ये भी मुझको तड़े मजे के॥
चढ़ते नजर न कोई जबसे नैना इनसे लड़े मजे के।
मेरी पतरी पड़े मजे के "शुक्ल" हिये मम अड़े मजे के॥

मणि ८८

महादेव मिट्टी के मालिक ॥

इनने इसे रचा रुचि से है इसको दफन करें ये मालिक।
गर्भ मध्य से अब तक इसको रखे सुरक्षित हैं से मालिक॥
बने हैं बस इस बार अबे नहिं जन्म जन्म ये ही थे मालिक।
इनके अछत न भ्रमवश कोई समझ इसे बैठे बे मालिक॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाव पड़ी मझधार जो इसकी उसको पार करें खे मालिक ।
बिता ताव से आजतलक तो कल की फिक्र करें वे मालिक ।
दिया बवक्त जरूरत सब दिन आगे भी निश्चय दे मालिक ।
"शुक्ल" न भूले बात कभी यह ऐसी कृपा करो हे मालिक ॥

मणि ८९

महादेव होशियार बड़े हैं ॥

मुल्लह वेष बनाये फिरते समझदार सरकार बड़े हैं ।
भोली प्रकृति बड़ी होते भी शानदार सरदार बड़े हैं ॥
छोटे को ठुकराकर केवल मारें आप शिकार बड़े हैं ।
नीरस से लगते परंतु ये मिलनसार दिलदार बड़े हैं ॥
नंगे फिरें भलेहि पास में भरे भले भंडार बड़े हैं ।
आनाकानी जानें क्या ये दाता आप उदार बड़े हैं ॥
उदासीन से लगें किंतु ये कुशल सृष्टि करतार बड़े हैं ।
"शुक्ल" सविधि भरतार साथ ही हिय हर्षित हरतार बड़े हैं ॥

मणि ९०

महादेव दरबाजा खोलो ॥

इकले बैठे मनहूसों सा क्या करते हो मुँह से बोलो ।
आ मैं गया हुँ हाथ बटाने फिर क्यों बैठि इकल्ले छोलो ॥
लाओ मैं हूँ इसे छीलता तुम निकालकर भाँगहि धोलो ।
देर हो रही है नाहक ही मैं कहता झट रगड़ो घोलो ॥
धरदो जो कुछ है झोले में, क्या उसको अंदाजो तोलो ।
हो निवृत्त अस्नान आदि से चटपट चक्क बनाकर चोलो ॥
चटक चाँदनी रात हैं देखो, दे गलबाँह साथ मम डोलो ।
चलो "शुक्ल" उस शैल शिखर पर थल रमणीय संग प्रिय सो लो ॥

मणि ९१

महादेव से नाता जोरबै ॥

करबै दृढ़ संबंध आप से जगत जनों से ततछन तोरबै ।
उदासीन बन शेष सभी से इनकर उर सनेह रस घोरबै ॥
असंबद्ध रहकर इनसे अब निजकर निज कपार नहिं फोरबै ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिमुख रहब सदा इनके ही अन्य सबहि दिशि से मुँह मोरबै ॥
रुचिकारी अपनौबै भलिविधि अनरुचि कर तत्वहि हठि छोरबै ।
मोट महीन धरैहैं धरबै जो तर खुश्क झोरैहैं झोरबै ॥
रह इनके अनुकूल सर्वथा हम इनकर सहजहिं चित चोरबै ।
इनके "शुक्ल" प्रेम सागर में श्रद्धा शिला बाँधि मन बोरबै ॥

मणि ९२

महादेव की करो कल्पना ॥

सृष्टिरूप धारे हैं एई सत्यसार ई करो कल्पना ।
एही नर ए निरे नपुंसक यही तरुणि ती करो कल्पना ॥
साधु असाधु यही व्यभिचारी ब्रह्मचारि भी करो कल्पना ।
मन ए चित ए अहंकार ए इनहिं धवल धी करो कल्पना ॥
एही जीवातमा इन्हीं से रहा जगत जी करो कल्पना ।
गाय भैंस औ अजा बने ए दूध दही घी करो कल्पना ॥
इनने ही सब वस्तु व्यक्ति के स्वांगधार ली करो कल्पना ।
इनसे रिक्त "शुक्ल" कुछ भी नहिं जग इनमय ही करो कल्पना ॥

मणि ९३

महादेव की करूँ चाकरी ॥

इससे अधिक महत्त्व कौन का साधन पाधन और का करी ।
रखें पास रह निकट खुशी से भेजें कहिं बे उज्र जा करी ॥
तर दें तव तर खाय माल चक खुश्क देंय खुश खुश्क खा करी ।
जो कुछ करें इशारा प्रभुवर बन विनीत अतिशीश ना करी ॥
नहिं वेगार सरीखा कवहीं मन मथि सुभग सनेह ला करी ।
सीकर से त्रयलोक सुपोषित वह वैभव हिय मध्य छा करी ॥
हो श्रद्धा संयुक्त निरंतर भर उमंग गुनगान गा करी ।
मुफ्त न "शुक्ल" सर्वथा सच यह दिव्य-दिव्य वर देन पा करी ॥

मणि ९४

महादेव दुर्गुन कब जैहैं ॥

बतलाओ दिल घुसे दस्युगन देव-देव कव दूर परैहैं ।
भतनाथ अभिभूत किये इमि कबतक बनकर भत सतैहैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुख के मूल शूलदायक ए होते भी अनुकूल दिखैहैं ।
लगे साथ हैं आदिकाल से अंतकाल तक साथहि रैहैं ।।
या इनसे हो मुक्त युक्त मुद हम सद्‌गुण संयुक्त सुहैहैं ।
रहते सुजन सुसेवक तुम्हरे वैसी कवहुँ रहनि रहि पैहैं ।।
चित बरजोर बटोर विषय से प्रेम विभोर गुनावलि गैहैं ।
संतत वने विनीत मनैहैं "शुक्ल" पदार विंद सिर नैहैं ।।

मणि ९५

महादेव से लाभ उठाओ ।।

हित की बात सर्वथा कहता सुनो सुजन मेरे भ्राताओ ।
बड़े भाग्य से मिली देह यह पाना इसका सुफल कराओ ।।
होना अति सहजहि निश्चित सो मेरी बात मित्र पतिआओ ।
भोला नाम सुना जस इनका वैसा भरा हुआ गुन पाओ ।।
फुसले गाल बजावत केवल उसको क्यों नहिं तुम फुसलाओ ।
गंगाजल दलविल्व धतूरा आक चढ़ाय अभीष्ट पुराओ ।।
सुमिरो नाम सनेह सने नित श्रद्धा संयुत सुयश सुनाओ ।
लहे न ज्ञानी योगी का जो अपना "शुक्ल" लहान लहाओ ।।

मणि ९६

महादेव का नाम सुनोजी ।।

फैला जग कोने-कोने में किये हैं ऐसा काम सुनोजी ।
वतलाना क्या उसे भला है जाने जनता आम सुनोजी ।।
जन हितकारी कार्य करें ये अहर्निशि आठो याम सुनोजी ।
सदा लोक कल्याण करत ही करें सुबह से शाम सुनोजी ।।
इनसी ही कल्याणी इनकी विश्ववंद्य वर वाम सुनोजी ।
श्रद्धा संयुत हो दंपति का लेते जो पद थाम सुनोजी ।।
अखिल लोक संपदा सत्य ही भर दें उसके धाम सुनोजी ।
"शुक्ल" लोक परलोक सुरक्षित है इनके कर माम सुनोजी ।।

मणि ९७

महादेव हर कहो मनस्वी ।

वेमन कहना बुरा नहीं पर मन सश्रद्ध कर कहो मनस्वी ।
कह सकते सच्छिद्र-उत्तम हो दोषन से टर कहो मनस्वी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाहर कहो बजार कहो यूँ रहो अगर घर कहो मनस्वी ।
पुलकित कहो सप्रेम कहो नित उर उमंग भर कहो मनस्वी ॥
कहो सनेह सने निशिवासर नयन नीर झर कहो मनस्वी ।
ऐसे कहो कहो खुश वैसे-जैसे हो पर कहो मनस्वी ॥
ईश प्रसाद सेहि कह सकते शीश चरन धर कहो मनस्वी ।
कहना क्या तब "शुक्ल" कहीं जो जीते ही मर कहो मनस्वी ॥

मणि ९८

महादेव हर कहो मनस्वी ॥
महादेव हर कहकर केवल दोष दुरित दल दहो मनस्वी ।
महादेव तक पहुँचा दे जो सद्य सुपथ सोइ गहो मनस्वी ॥
महादेव पग प्रीतिमात्र ही महादेव से चहो मनस्वी ।
महादेव के प्रेम सिंधु में बनकर बेसुध बहो मनस्वी ॥
महादेव के शुभ विधान से प्राप्त शुभाशुभ सहो मनस्वी ।
महादेव की शरण सर्वदा सुखद सर्वथा रहो मनस्वी ॥
महादेव की अनुकंपा से बनालेव यह वहो मनस्वी ।
महादेव हो "शुक्ल" इसी छन महादेव पद लहो मनस्वी ॥

मणि ९९

महादेव पद का हि सहारा ॥
इसके सिवा और सचमानो है नहि कोइ अवलम्ब हमारा ।
मुझ जहाज के कौओ के हित हैं एही इकमात्र अधारा ॥
और ठौर ही नहीं विश्व में मेरे लिये शून्य जग सारा ।
तुम मानो मत मानो यारो इसका करता कौन विचारा ॥
जानत और हानिकर मानत मैंने करनी निजी विगारा ।
बोया बीज बबूल शौक से खौफ न दिल में रंचक धारा ॥
पर ये अनुकंपा परवश हो स्वकर करें सच सकल सँवारा ।
"शुक्ल" सश्रद्ध सनेह सने चित नमन करूँ मैं बारंबारा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १००

महादेव के चरन पर परे ।।

हो जाता निहाल ततछन में सचमानो हे चरन पर परे ।
बन जाते अनुकूल तुरत ही मैं देखूँ ये चरन पर परे ।।
बना लेंय निजभक्त तासुमति नेह सुरस भे चरन पर परे ।
नैया पार लगा दें उसकी निज हाथों खे चरन पर परे ।।
पूर्णकाम कर दें उस नर को मनवांछित दे चरन पर परे ।
पापी होय सुरापी ही हो सुफल चारि ले चरन पर परे ।।
साधन किये सहस्र कुशल नहिं किसी भाँति बे चरन पर परे ।
अनुकंपा अत्यंतहि जिनपर हुई "शुक्ल" ते चरन पर परे ।।

मणि १०१

महादेव के चरन दिखादो ।।

अकुलातीं आँखें दरसन को ललित लाल वर वरन दिखादो ।
जला जा रहा जिगर बेतरह मेटन जियके जरन दिखादो ।।
मनहूसी छाई जीवन में महामोद मन करन दिखादो ।
उदासीन रहता हरछन ही उर उमंग भल भरन दिखादो ।।
अति अधीर हो रहा हृदय मम मेरे हिय के हरन दिखादो ।
उन बिन कौन सरन दे मुझको कोउ असरन के सरन दिखादो ।।
अनुनय विनय करूँ शतशः मैं पावों तुम्हरे परन दिखादो ।
"शुक्ल" साध पूरी करदो कोइ धर उन पर सिर मरन दिखादो ।।

मणि १०२

महादेव कै धनि-धनि धनियाँ ।।

ज्योतिर्मय जो लोक सुहावन मणि द्वीप जाकी रजधनियाँ ।
रतन सिंहासन पर बिराजतीं मुदमय लिये गजानन कनियाँ ।।
आज्ञा विना प्रवेश नहीं जहँ कर सकते ब्रह्मा ब्रह्मनियाँ ।
टहल बजावें जल भरि लावें नहलावें सप्रेम देव-रनियाँ ।।
चरन दबावें चमर डुलावें हो आनन्द विभोर सयनियाँ ।
गावें गुन सादर सँगीतमय सुमधुर कंठ सुधारस सनियाँ ।।
बरनन करूँ तासु केहि विधि मैं कहि न सके जिसु वेद कहनियाँ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक-एक गुन के कहने में बरबस रुक जाती है बनियाँ ॥
आराधना सश्रद्ध करें नित बन विनीत रनियाँ महरनियाँ ।
जानि "शुक्ल" लघु दास कृपा निज मोपर करे महान महनियाँ ॥

मणि १०३

महादेव जो करें वही शुभ ॥
रिस खुश हो जिस किसी भाँति भी देव-देव कर धरें वही शुभ ।
जैसी भी स्थिति में जिस विधि से राखें वन या घरें वही शुभ ॥
संपति से अवकाश नहीं हो सतत विपति में परें वही शुभ ।
भेजें स्वर्ग जाँय खुश-खुश ही जाय नर्क में जरें वही शुभ ॥
मेरे उर अंतर में गुननिधि गुन-अवगुन जो भरें वही शुभ ।
काशी मिले "शुक्ल" अति सुन्दर जा मग्गह में मरें वही शुभ ॥

मणि १०४

महादेव हरसाते हरदम ॥
अपनी शोभा से स्वभाव से हैं हमको करसाते हरदम ।
एक एक से बढ़े चढ़े उन गुनगन से गरसाते हरदम ॥
जानत भये मलीन हीन मोहिं बड़ी दया दरसाते हरदम ।
करके कृपा अहैतुकि मम उर शुचि सनेह सरसाते हरदम ॥
अनुकंपा परवश हो अनुपम वर बहार बरसाते हरदम ।
पता नहीं क्यों निज स्वरूप के दरसन को तरसाते हरदम ॥
करते भी मनुहार करोरन आने में अरसाते हरदम ।
आ जाते जब "शुक्ल" प्राणधन पद पंकज परसाते हरदम ॥

मणि १०५

महादेव से डोर लगी है ॥
वैसे संभव कहाँ-मित्र-जब हुई कृपा की कोर लगी है ।
कुछ इनसे कुछ उनसे नहिं जी सब जग जन को छोर लगी है ॥
लोकासक्ति प्रबल को देखूँ सचमुच तृण ज्यों तोर लगी है ।
सब दिशि से कर बंद टकटकी बस इनकी ही ओर लगी है ॥
नहिं सामान्यतया सचमानो डोर मोर अति जोर लगी है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी अनुकंपा से अनुपम शुचि सनेह रस बोर लगी है ॥
दिन में लगी रात में लागी शाम लगी बड़ भोर लगी है ॥
सब की लगे "शुक्ल" ऐसी ही देव-देव जस मोर लगी है ।

मणि १०६

महादेव दृग देखत रहिये ॥
यही साध है भरी हृदयमम चित से यही रैन दिन चहिये ।
वह दिन धन्य घड़ी वह सुन्दर जब इनके पद पंकज गहिये ॥
अतिहि प्रतीति प्रीतियुत संतत इनके नाम गुनावलि कहिये ।
नीके सुमिरि निरंतर इनको सपदि समूल दुरित दल दहिये ॥
इनका मान विधान हँसत हिय आये शूल फूल सम सहिये ।
असंबद्ध हो जाऊँ इनसे संभव किसी काल में नहिं ये ॥
तन सुधि भूलि तूलि तृण निजको इनके प्रेम सिंधु महँ वहिये ।
"शुक्ल" आपकी अनुकंपा से बेश्रम चारि पदारथ लहिये ॥

मणि १०७

महादेव से लाग सनेहिया ॥
भई परम अनुकंपा इनकी तब इनके प्रति जाग सनेहिया ।
कहना नहिं होगा सद्यः ही जगा दिया भल भाग सनेहिया ॥
खिलें भाव के सुमन सहस्रों लगा दिया उर बाग सनेहिया ।
आसानी से दोष दुरित का मिटा दिया दिल दाग सनेहिया ॥
जला दिया सहमूल वासना तरुको बनकर आग सनेहिया ।
दिन प्रति होत रसीली देखूँ शुचि सनेह रस पाग सनेहिया ॥
मेरे लिये मुबारक हो यह जन्म-जन्म शुभ याग सनेहिया ।
"शुक्ल"कभी कुछ माँग न प्रभुसे माँग चरन प्रति माँग सनेहिया ॥

मणि १०८

महादेव के डार गले में ॥
विचरूँ मैं निर्द्वंद डालके इनके निज सब भार गले में ।
सोचो तुम मैं लिये फिरूँ क्यों झगड़ा सब बेकार गले में ॥
इनका मैं-मेरा समाज सब, मैंने लिया उतार गले में ।
फिर क्यों बुद्धू बना बताओ ढोऊँ यह बेगार गले में ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोग चुका हूँ मजा खूब मैं लेकर लाखों बार गले में।
अब बोटी थर्राती मेरी लेते यार बजार गले में॥
बदले में लगता है ऐसा मरने बाद लचार गले में।
डालेंगे ये "शुक्ल" विवशकर मेरे पत्नी चार गले में॥

मणि १०९

महादेव मणिमाला जी हाँ॥
धारन करने से उर अंतर चमका देती भाला जी हाँ।
घुसे हुये कामादि दस्यु का कर करके मुँह काला जी हाँ॥
देर न होने दे समझो यह बलपूर्वक है टाला जी हाँ।
फिर आने पाते न दोषगन बंद करे दृढ़ ताला जी हाँ॥
जीवन को अचरज न मानिये नव साँचे में ढाला जी हाँ।
फेरा करे इसे सुकृतों का परे कभी नहिं ठाला जी हाँ॥
और सुनो अति आसानी से मिटा देय जग जाला जी हाँ।
"शुक्ल" बना दे मस्त देख खुद मोहे मुक्ती बाला जी हाँ॥

दोहा

पर्दे के अंदर घुसे करें आप सब काम।
पता न पाते क्या मजा कर मुझको बदनाम॥
इस धोखे से हो सके रखिये मुझको बाज।
अति विनीत विनती मेरी सुनो मेरे सरताज॥
इस तन से जो चाहते आप तूर्ण से तूर्ण (जल्दी)।
"शुक्ल" करा-कर लीजिये अपनी इच्छा पूर्ण॥
बना बनाये आपके भला बुरा जो कुच्छ।
"शुक्ल" समर्पण कर रहा है सादर यह तुच्छ॥

पंद्रहवीं माला सम्पूर्ण।

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशीधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
पंद्रहवीं माला समाप्त।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवेनमः *

महादेव मणिमाला

सोलहवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

आना है नहीं या तुम्हें मेरे हियहार पूछूँ,
करके कृपा सो साफ-साफ बतलाना है ।
जलता जुगादि से ही बाभन बेदाँती बूढ़
जी नहि भरा-क्या उसे और भी जलाना है ॥
सोचिये सुजान किसी आश्रित अजान को क्या,
उचित कहायगा यूँ संतत सताना है ।
'शुक्ल' समझाना तुम्हें क्या है देवदाना,
भला जस का कमाना क्योंकी अंत मरजाना है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोलहवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मंगल मय मनवाँ ॥
नख से शिख प्रतीति कर इनका मंगल तत्व सुनिर्मित तनवाँ ।
सच तो यह उपजे इनहीं में हैं ये ही मंगल के खनवाँ ॥
भरे परे हैं इस जंगल में मान अनंत सुमंगल गनवाँ ।
यत्र तत्र बरसाते रहते रिमझिम ये ही मंगल घनवाँ ॥
इनकी जिकर चले जब सुन्दर बन जाता वह मंगल छनवाँ ।
किया निछावर जाता इनपर माना जाता मंगल धनवाँ ॥
इनकी कर स्वीकार दासता हो ततछन मंगल जग जनवाँ ।
विचरे "शुक्ल" महान मुदित वह उसके हित मंगल घर बनवाँ ॥

मणि २

महादेव पग परना भाया ॥
अरुन मृदुल कमनीय कमल से युगल चरन सिर धरन सुहाया ।
निरखत ही नीके नयनन से बस वह चली दो धारी माया ॥
पहुँचत ही कुछ पास बताऊँ चुंबन करने को ललचाया ।
आँखें लगीं खुजाने तबतक पद अंगुष्ठ ले खूब खुजाया ॥
छाती कौआती देखा हम ले पद तल फिर फिर चिपकाया ।
दश शतबार परे इनपर सच सिर संतोष नहीं फरमाया ॥
चाहे चिपका रहूँ इन्हीं में मैं लख यह लीला चकराया ।
"शुक्ल" हुआ संतुष्ट सब तरह जब प्रभुवर लें हृदय लगाया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव का प्यार मिले से ।।
दिल की साध हो गई पूरी इनका दिली दुलार मिले से ।
समझूँ खुशनसीब अपने को इनके जैसा यार मिले से ।।
बिसरी सभी तुच्छता अपनी इनका शुचि सत्कार मिले से ।
सम्मानित हो गया व्यक्ति मैं इनका वर दरबार मिले से ।।
बड़े चैन से कटे दास की इनसा स्वामि उदार मिले से ।
पुलकाया करता हूँ हरदम इनसे बड़ी वहार मिले से ।।
इनको भी संतोष दीखता मुझसा ताबेदार मिले से ।
"शुक्ल" हुआ कृतकृत्य सद्य ही इनकी कृपा अपार मिले से ।।

मणि ४

महादेव सुखरूप हमारा ।।
सुख से ही संभूत सर्वथा सुखमय ही विग्रह हम धारा ।
होने से सुख कारण मेरा कार्य रूप मैं सुख ही सारा ।।
सुख के सिवा न अन्य तत्व मैं अंतर्बाहर सुखहि पसारा ।
सुख तन सुख मन सुख इन्द्रियगन सुख बन बहे रक्त की धारा ।।
सुख सुभाव सुख गुन-सुख सुन्दर बुधि बिचार सुख बचन उचारा ।
सुख की जिकर फिकर सुख की ही सुख की सुखद कथा विस्तारा ।।
सुख से शुद्ध सृष्टि होने से सुख केवल सूझे संसारा ।
हम सुख तुम सुख यह सुख वह सुख "शुक्ल" धरे सुख विविधाकारा ।।

मणि ५

महादेव शुभ सुयश तुम्हारे ।।
मुददानी अनुपम सुख खानी बानी के सर्वस्व हमारे ।
सुनत मधुर उर दें उमंग भर श्रवनन बीच सुधा मधु डारें ।।
लगत ललित बरनत वनि आवत कीरति कलित तिलोक पसारे ।
गावत मन भावत हुलसावत बरसावत आनन्द अपारे ।।
अघनाशन षटरिपु के त्रासन दासन के जीवन धन प्यारे ।
कहि न सिराँय कहे कितनहिं कोइ हारे वेद पुरान बिचारे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहि न जाय बिन कहे यथा रुचि यथाशक्ति रसना बकि डारे ॥
सब विधि "शुक्ल" सहारे मेरे जीऊँ मैं इनकेहि अधारे ॥

मणि ६

महादेव रितु आइ वसंती ॥

देखो चलि बहार अनुपम सी है पहार पर छाइ वसंती ।
छोटे बड़े सभी तरुवर पर नइ विशेषता लाइ वसंती ॥
नव किशलय संयुक्त बनाकर बन उपवन उमगाइ वसंती ।
फूले फूल गुलाब नेवारी बेला बरनिन जाइ वसंती ॥
विकसे सरनि सरोज विविध विधि अलिगन रहे लुभाइ वसंती ।
बौरे लखो रसाल डालपर बैठि कोकिला गाइ वसंती ॥
चटक चाँदनी रात चैत की मन मेरा मचलाइ वसंती ।
उठो चलो प्राणेश "शुक्ल" के लें सुख कहीं अघाइ वसंती ॥

मणि ७

महादेव हँस-हँस हेरीला ॥

बतलाने की बात नहीं कस बतलाऊँ कस-कस हेरीला ।
हेरत ही हेराय जाईं हम सचमानो अस-अस हेरीला ॥
हेरन की लालसा बढ़े अति हे अंनके जस-जस हेरीला ।
जस-जस बढ़े लालसा छिन-छिन सच हमहूँ तस-तस हेरीला ॥
पर घटती रुचि नहीं लखन की बार भले दस-दस हेरीला ।
होने से प्रति अंग सुघर हम नीकि भाँति नस-नस हेरीला ॥
कहलाती उतावली क्या हम लेते रस-रस-रस हेरीला ।
अनुकंपा से "शुक्ल" आपकी नेह नवल लस-लस हेरीला ॥

मणि ८

महादेव मन मानत नाहीं ॥

हित की बात कहें कुछ इससे ई घोंघा उर आनत नाहीं ।
सग लागें जग जन इस जड़ को सच सग तुमका जानत नाहीं ॥
छाने मद मदांध विधि-विधि के प्रेम सुधा मधु छानत नाहीं ।
ठाने ठान अजान अहैतुक भजनभाव भल ठानत नाहीं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाने फनबन मूढ़ फसावन पदसेवा प्रभु फानत नाहीं ।
सानत विविध कर्म में निज को शुचि सनेह रस सानत नाहीं ॥
तापित बहु त्रिताप से होतेहु कृपा तान सिर तानत नाहीं ।
सौ सौ बार धिकार इसे क्यों "शुक्ल" देत कोउ लानत नाहीं ॥

मणि ९

महादेव को को समझावे ॥

इनकी रंगत देख देखकर मेरी तो अक्कल चकरावे ।
आठो पहर याचकों के हित इनका द्वार खुला दिखलावे ॥
लेखा जोखा कुछ नहिं जो भी जो जो माँगे सो सो पावे ।
गहरी छान के बैठे हों जब तब की कथा कही नहिं जावे ॥
थोड़ा अनुनय विनय करे बस मांगे एक अनेक ले जावे ।
कहने की यह बात नहीं जी कोई आय पास अजमावे ॥
सुनकर ही संतोष क्या होगा वह निज में नित लाभ उठावे ।
"शुक्ल" गये गुजरे का मुझसे यह वह दोनों लहा दिखावे ॥

मणि १०

महादेव में असीम करुना ॥

मेरे हित हितकारी सब विधि सिद्ध भई ये असीम करुना ।
नैया मम मझधार परी सो रही स्वकर खे असीम करुना ॥
मुझसे गये बिते को जग में नहीं ठौर बे असीम करुना ।
होती सदा सहायक सद्यः सब संकट में असीम करुना ॥
जिनपर अनुकंपा असीम हो बनें पात्र ते असीम करुना ।
आप्त काम यह आप समझ लें कर उसको दे असीम करुना ॥
अति नीरस जीवन को भी दे रस सनेह भे असीम करुना ।
कैसे कहूं खेलाती रहती "शुक्ल" गोद ले असीम करुना ॥

मणि ११

महादेव की हँसी तो देखो ॥

अहनिशि स्मित खेले अधरन पर मूर्ति सो मम उर बसी तो देखो ।
ज्योतिर्मय शुभ गौर काय में वर विभूति भलि घसी तो देखो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जटाजूट सुरसरि सुहावतीं सुभग बाल भल ससी तो देखो ।
भृकुटि बंक त्रय नयन नुकीले करें चोट जस असी तो देखो ॥
भव्य विशाल खाल नरहरि की कस करके कटि कसी तो देखो ।
बरनन करे कौन विधि कोई अनुपम शोभा लसी तो देखो ॥
नीके नयन निहार और को निरखन की वृति नसी तो देखो ।
चरन कमल में "शुक्ल" आपके मम मति भ्रमरी फँसी तो देखो ॥

मणि १२

महादेव से विनय करो सब ॥

संकटकाल महान देश पर इनका दृढ़ अवलंब धरो सब ।
होओ मत हताश कोई भी कायरता से दूर टरो सब ॥
प्रबल शत्रु की भ्रमित कल्पना कर मन में नहिं नेक डरो सब ।
बढ़ा आत्मबल अमित नरो सब एक-एक की भीति हरो सब ॥
शौर्य प्रकट का अवसर पाकर हिय में अति उत्साह भरो सब ।
करे रंच संकेत अग्रणी उर उमंग भर कूद परो सब ॥
माम् अनुस्मर युद्ध नीति को अपनाकर दिल खोल लरो सब ।
जन्म भूमि के लिए जो मरना परे "शुक्ल" हँसतेहि मरो सब ॥

मणि १३

महादेव आपत्ति हरेंगे ॥

सहज बानि यह तो है इनकी इसमें क्यों आलस्य करेंगे ।
दुविधा दिल से दूर दुरा जब इनका हम अवलम्ब धरेंगे ॥
आश्रयदाता जानि एकाकी प्रेम भरे उर पाँय परेंगे ।
आशुतोष हैं ही जग जाने तदनुसार प्रभु आशु ढरेंगे ॥
इनकी बक्र दृष्टि पड़ते ही सारे शत्रु समूह जरेंगे ।
सहाश्चर्य देखोगे तुम वे बे मारे बे मौत मरेंगे ॥
कायरता क्रूरता कुटिलता जियसे सभी कुभाव टरेंगे ।
इनका दिव्य प्रसाद पाय हम "शुक्ल" महामन मोद भरेंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १४

महादेव आवेंगे उस दिन ।।

घेरे हैं जो जनम-जनम से दुख दुर्दिन जावेंगे उस दिन ।
सुख समाज सब दिगादिगंत से मम दिशि को धावेंगे उस दिन ।।
लगता जहर अन्न अबहीं सो रुचि संयुत खावेंगे उस दिन ।
दौड़ें जनु काटने भोग जो भलिविधि सब भावेंगे उस दिन ।।
रोना ही रुचता अबहीं तो मुद मंगल गावेंगे उस दिन ।
तुमको बतलाऊँ क्यों बोलो ममहित जो लावेंगे उस दिन ।।
समझ कोई पावेगा कैसे जो कुछ हम पावेंगे उस दिन ।
"शुक्ल" हुलसि मन पुलकि-पुलकि तन पद शिर नत नावेंगे उस दिन ।।

मणि १५

महादेव मम गाल चूमते ।।

ठीक-ठीक बस उसी भाव से जैसे कोइ निज लाल चूमते ।
मैं मलीन अति घृणित तोभितो भरि सनेह शशि भाल चूमते ।।
लेकर अंक निशंक देववर हिय हर्षित हर हाल चूमते ।
तजा नहीं चाहें छनेक भी प्रतिपल मम प्रतिपाल चूमते ।।
सर्वकाल सब चाल बाल गनि महाकाल के काल चूमते ।
सनावृत्ति सादर सप्रेम में बना मुझे गरमाल चूमते ।।
कहना क्या होगा यह भी अब होते अतिहि निहाल चूमते ।
भरके बाहु विशाल चूमते "शुक्ल" गोद निज घाल चूमते ।।

मणि १६

महादेव की भक्ति भावती ।।

होती अति अनुकंपा जिसपर उसके ही हिय में ये आवती ।
आ जाती जब देव कृपा से उर सनेह सरिता बहावती ।।
कर को सके कल्पना उसकी जो नित नये तरंग लावती ।
अद्भुत अनुपमेय अत्यंतहि अहनिशि यह आनँद बढ़ावती ।।
अपने कृपाप्रसाद व्यक्ति को करके कुछ का कुछ दिखावती ।
ज्ञानी को योगी तपस्वि को निज जन के सम्मुख लजावती ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना वरदहस्त धर सर पर प्रभु का अति प्यारा बनावती ।
चाहूँ "शुक्ल" अकिंचन मुझ पर दयामयी निज दृग फिरावती ॥

मणि १७

महादेव के भक्त भावते ॥

सरल प्रकृति छलहीन सर्वथा कपट शून्य अतिशय सुहावते ।
वदन प्रसन्न हास्य मुख संतत बानी सत्य मधुर सुनावते ॥
कोमल चित कठोर व्रत पालक बालक भाव लिये लुभावते ।
निरभिमान मानद प्रत्येक को अभयद अन्य स्वभय भुलावते ॥
सहनशील संतुष्ट सदा ही शांति सहित नित वय बितावते ।
विगत वैर स्वाधीन चित्त के प्रेम सिन्धु मनमिन बनावते ॥
सर्व सुहृद सबके हितकारी मितहारी दुर्गुन दुरावते ।
मेरे परम पूज्य प्राणाधिक प्रिय पद "शुक्ल" स्वशीश नावते ॥

मणि १८

महादेव देखो वह सबही ॥

देखो सो उतना ही नहिं जी जो सुन सको और कह सबही ।
छू न सको जिसको वह भी औ जिसको हो बैठे गह सबही ॥
हैं जो तुम्हें अवांछित-साथहि चित से जिसे रहे चह सबही ।
जो तुमको है खूब डाहता जिसको आप रहे डह सबही ॥
नव निर्माण कर रहे जिसका जिसे समूल रहे ढह सबही ।
सिंचित सतत सनेह सलिल जो जेहि क्रोधाग्नि रहे दह सबही ॥
जल रह थल रह याकि गगन रह जड़ चेतन स्वरूप तह सबही ।
"शुक्ल" बने स्वयमेव आप ही सचमुच सर्वेश्वर यह सबही ॥

मणि १९

महादेव देते खा लेता ॥

रूखे चिकने का सवाल नहिं शिरोधार्य कर सब पा लेता ।
बतलावें प्रसाद मिलता जहँ लालच हिये भरे जा लेता ॥
होता प्राप्त सुयश सुनना तहँ निज को धन्यमान धा लेता ।
देते मुझे नामधन संतत वह भी पा जाता आ लेता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में गुनगन गाना जानूँ क्या आप गवाते सो गा लेता ।
जानूँ मैं विभूति क्या इनकी जो उर छा देते छा लेता ॥
मैं क्या करूँ करोड़ों बूड़ें भव थहाय ये दें था लेता ।
समझूँ मैं कृतकृत्य आपको "शुक्ल" जो चरनों सिर ना लेता ॥

मणि २०

महादेव सर्वस्व हमारे ॥
चलता है सर्वदा ये अंधा सच इस लकड़ी के हि सहारे ।
बिचरे नित निर्द्वंद बिना ही अननुकूल अनुकूल बिचारे ॥
राह कुराह नहीं गिनता कुछ कुश कंटक कंकड़न निहारे ।
घुस जाता बे खौफ गहन वन चढ़ जाता बेफिक्र पहारे ॥
पड़ता कूद बढ़े नद नारे इनके सदा अधारे धारे ।
होता कभी न खतरा कोई हर हालत हर रहें सम्हारे ॥
होने का अंदेशा ही नहिं जिसके ये संरक्षक प्यारे ।
सुख की नींद "शुक्ल" सोता मैं लोकद्वय के सोच बिसारे ॥

मणि २१

महादेव मन लाकर सुमिरो ॥
सुमिरो सभी परिस्थिति में ही भूखे सुमिरो खाकर सुमिरो ।
कंगाली में सुमिरो सुख से माल चकाचक पाकर सुमिरो ॥
मिले जहाँ सुविधा तहँ सुमिरो घर या बाहर जाकर सुमिरो ।
आलस को ठुकराकर मित्रो सह सनेह नित धाकर सुमिरो ॥
बड़ा सुभीता है सचमानो मेरे पास में आकर सुमिरो ।
जैसे रुचे सुमिरना तुमको रोकर सुमिरो गाकर सुमिरो ॥
स्वामि उदार स्विकार इन्हेंकर बनकर इनके चाकर सुमिरो ।
हो जाओ शतधन्य "शुक्ल" तुम प्रभु चरनन सिर नाकर सुमिरो ॥

मणि २२

महादेव मन हरन सहेली ॥
मंजु महा मुदकरन ज्योतिमय दिव्यगौर वर वरन सहेली ।
सोहत सुमन हार सुरभित शुभ भ्राज मालमणि गरन सहेली ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टि दयामयि परत ततच्छन मेटत सब जिय जरन सहेली ।
सुनत बनत बतरानि मनोहर वचन फूल जनु झरन सहेली ॥
सुभग सुभाव सरल कोमलचित प्रेमिल अवढर ढरन सहेली ।
आश्रित जन के लिये आशुहीं चारु चारिफल फरन सहेली ॥
रिधि सिधि लोक संपदा सारी भक्तभवन भल भरन सहेली ।
कहते सभी संत सत शास्त्रहु इनको असरन सरन सहेली ॥
तेरा हूँ कहते अपनाना इनका अतिप्रिय परन पहेली ।
आराधे सुर असुर "शुक्ल" सब तब हीं इनके चरन सहेली ॥

मणि २३

महादेव कैसे मिलि गैलऽ ॥

हम न हईं अधिकारी अेकर कैसे देव कृपा तूं कैलऽ ।
बड़का चतुर कहावऽल तूं हमरे चकमा में कस अैलऽ ॥
रँगल छुअल देखले से साइत हम समझीला धोखा खैलऽ ।
की अपने स्वभाव बस बरबस दया करैके विवश तुं भैलऽ ॥
बन करके लाचार देववर गयल बितल कर बाँह तुं धैलऽ ।
जो जैसन भी होय "शुक्ल" के अबनिज अंक निशंक तुं लैलऽ ॥

मणि २४

महादेव को धनि-धनि कहिये ॥

कहे बिना रह जाता ही नहिं सचमुच तब तो धनि धनि कहिये ।
काया दी सुघराई भी दी दी स्वस्थता सो धनि धनि कहिये ॥
दी सुबुद्धि सहवास सुभग ही सुस्थलवास हो धनि धनि कहिये ।
दी सनेह सेवा शुचि अपनी हो अभार रो धनि धनि कहिये ॥
एक एक लख दिव्य देन को देह भान खो धनि धनि कहिये ।
बन विनीत तजि कपट भाव कुल अंतसमल धो धनि धनि कहिये ॥
शत सहस्त्र लख कोटि-कोटि मैं बार न इक दो धनि धनि कहिये ।
संत शास्त्र सब कहें "शुक्ल" मैं का विशेष जो धनि धनि कहिये ॥

मणि २५

महादेव मैं रहूँ मनाता ॥

हो श्रद्धा संयुक्त सदा ही मैं पद पंकज गहूँ मनाता ।
अनुनय विनय करूँ सहस्त्रशः दीन वचन मैं कहूँ मनाता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोक नहीं परलोक संपदा पदरति केवल चहूँ मनाता ।
आये द्वन्द सभी दुनिया के हर्ष सहित ही सहूँ मनाता ॥
उर अंकुरित गर्व तरु को अति बनि कठोर मैं दहूँ मनाता ।
संचित जन्म जन्म के सबही द्रुतहि दुरित दल दहूँ मनाता ॥
शत सौभाग्य सराहि नेह नद बढ़े विवश मैं बहूँ मनाता ।
किसमुख कहूँ "शुक्ल" कौनी विधि जो प्रसाद मैं लहूँ मनाता ॥

मणि २६

महादेव हमसे बतिआवऽ ॥

आवऽ तनी सामने हमरे काहे हमसे बदन छिपावऽ ।
बड़ा गोर मुँह बा तोहार हो तब काहे नहिं हमैं दिखावऽ ॥
बड़ी लालसा बा देखैक ओही से हमके ललचावऽ ।
हमके जानि गुनाही-नाहीं आन-आन के घरे तू आवऽ ॥
हमरे ठीक परोसे वहि दिन आह रहऽ की नहीं बतावऽ ।
आहट पाइ हमहुँ रहे जोहत का करै भाग हमार जगावऽ ॥
भूल भुलाय हमार दयानिधि आपन जानि हमैं अपनावऽ ।
बा अकुलात विशेष "शुक्ल" जी आवऽ अब ले गले लगावऽ ॥

मणि २७

महादेव के चरन परे सुख ॥

अद्भुत अनुपम और अलौकिक मिलता है रे चरन परे सुख ।
जीवन में जो परे कभी हैं जानें बस ते चरन परे सुख ॥
मिलता है पर तभी-परें जब मति सनेह भे चरन परे सुख ।
होता है यह प्राप्त देव की अनुकंपा से चरन परे सुख ॥
होने से अतिकृपा हमें तो मिले सदा हे चरन परे सुख ।
शत प्रयत्न कर सतत प्रार्थना मित्र तु भी ले चरन परे सुख ॥
मैं तो सोच समझ नहिं पाऊँ किसी तरह बे चरन परे सुख ।
अर्थ धर्म नहिं काम मोक्ष कुछ "शुक्ल" देव दे चरन परे सुख ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २८

महादेव अधमन को तारें ॥
सुकृतिन लख संतोष करें पर दुर्वृत्तिन लख दूर पुकारें ।
पतित हुआ जो पड़ा सर्वथा होकर उसे दयार्द्र उबारें ॥
जिसकी पूछ नहीं दुनिया में उसको प्राण समान निहारें ।
तुम्हरा हूँ कहते हि ततक्षण अपनों में गिनती करि डारें ॥
बड़ी शौक से भरी साध से अगतिन की गति स्वकर सँवारें ।
बढ़ी-बढ़ी-लघु-मध्य कैसहूँ आई अननिग विपति विदारें ॥
निर्भर नरका नीक तरह से आप लोक परलोक सुधारें ।
मेरी मत पूछना "शुक्ल" कोइ मुझको देते विविध बहारें ॥

मणि २९

महादेव सुमिरत दुख भागे ॥
टिक पाता दुख कहाँ बिचारा वतलाओ सुमिरन के आगे ।
दुख की गंध नहीं रह पाती सुमिरन में किंचित लव लागे ॥
सुमिरन हो विशेष इससे वह सुमिरक तो दुःख ही दुःख मागे ।
सुमिरन में पड़जाय शिथिलता उर उसका सुख में दुःख दागे ॥
सुमिरन करते ही स्वभावतः सचमुच भाग्य भलीविधि जागे ।
उनकी अनुकंपा से आशुहिं तिसुचित वृत्ति प्रेम रस पागे ॥
सुधि न रहे तन की भी किंचित् सुमिरन में ऐसा अनुरागे ।
"शुक्ल" कहूँ क्या फिर उसको नित मिलती नइ बहार बेनागे ॥

मणि ३०

महादेव को मूढ़ सुमिर बस ॥
छोड़ सभी गोरख धंधे को एकनिष्ठ हो मूढ़ सुमिर बस ।
फिर कहता फिर फिर कहता मन सुन सचेत ओ मूढ़ सुमिर बस ॥
सुमिरन सफल सद्य हो सचमुच अंतरमल धो मूढ़ सुमिर बस ।
सुमिरन का ले लाभ स्वमति को रस सनेह मो मूढ़ सुमिर बस ॥
सुमिरन का रस लेना हो तो हो अधीर रो मूढ़ सुमिर बस ।
तन्मयता तत्काल प्रकट हो निज निजत्व खो मूढ़ सुमिर बस ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधन श्रम से मुक्ति चाहता मैं कहता तो मूढ़ सुमिर बस ।
भोगा बहुत "शुक्ल" अब तो तू शांति गोद सो मूढ़ सुमिर बस ॥

मणि ३१

महादेव पर प्रान टँगा है ॥

टँगने के अस्थान वही तब क्या अचरज गर प्रान टँगा है ।
समुझि प्रान के प्रान इन्हें ही शुचि सनेह भर प्रान टँगा है ॥
जगजन से धन से सबही से भलीभाँति टर प्रान टँगा है ।
बीते दिन विशेष बिलगाने अति वियोग जर प्रान टँगा है ॥
मिलने की अधीरता में नित नयन नीर झर प्रान टँगा है ।
पूर्वभ्यास वशात् सभी कुछ यह शरीर कर प्रान टँगा है ॥
तुम न करो परतीति मत करो जीते ही मर प्रान टँगा है ।
"शुक्ल" न वे आये अब उनके जाने को घर प्रान टँगा है ॥

मणि ३२

महादेव सब पूर करेंगे ॥

भरी परी जो जन्म-जन्म की सब कमियों को दूर करेंगे ।
मित्र बने जो घुसे शत्रुगन दूर सभी उन क्रूर करेंगे ॥
जो निकलेंगे नहीं रगड़कर उनके मद को चूर करेंगे ।
बना रखा जो चिर निवास को ढहा सुदृढ़ गढ़ घूर करेंगे ॥
जिससे पोषण मिलता उनको उनकी खेती झूर करेंगे ।
जिसका उन्हें विशेष गर्व है वह धन धर कर धूर करेंगे ॥
चंद दिनों में ही लख लेना मेरी बानी फूर करेंगे ।
"शुक्ल" सफलता देकर मुझको मुझपर वर्षा नूर करेंगे ॥

मणि ३३

महादेव को सुमिर आजरे ॥

बिगड़े हुये जन्म-जन्मों के बात-बात में बनें काज रे ।
जो बिगाड़ते आते जुग से उन तत्वों से आव बाज रे ॥
हितकारी भासते अहितकर के सिर शीघ्र गिराव गाज रे ।
घेरे बने मीत रिपुगन जो उनसे होकर भीत भाज रे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाचा खुब निर्लज्ज बना—अब काज अनैतिक करत लाज रे ।
महामलिन हो रहा हियस्थल ले नित नाम अहेतु माज रे ॥
शुचि सनेह संयुक्त सतत हो लोकद्वय शुभ साज साज रे ।
करतल धरा दिखे सच माने "शक्ल" अखिल ब्रह्माण्ड राज रे ॥

मणि ३४

महादेव को सुमिर सुखी बन ॥

क्यों फिरता दुख वोझ उठाये सुमिर-सुमिर ओ सुमिर सुखी बन ।
भोगी वड़ी यातना भैया सुमिरन विन सो सुमिर सुखी बन ॥
दुख का मुख दीखे न कभी फिर यदि चाहे तो सुमिर सुखी बन ।
सुमिर-सुमिर के ही संतत निज अंतर मल धो सुमिर सुखी बन ॥
अति बाधक मद मस्ती तेरी अहंभाव खो सुमिर सुखी बन ।
सद्य सफलता की हो कामना मति सनेह मो सुमिर सुखी बन ॥
प्रेमाधिक में हँस-हँस कबहीं कबहिं-कबहिं रो सुमिर सुखीबन ।
"शुक्ल" सभी भ्रम छोड़ भली विधि एकनिष्ठ हो सुमिर सुखी बन ॥

मणि ३५

महादेव जय होय तुम्हारी ॥

लुट जातीं सेंत ही देव सो तुमने लज्जा रखी हमारी ।
बात-वात में देखा मैंने मेरी बिगरी सभी सुधारी ॥
यह लखकर हत भागी मैंने जानबूझ बहु और बिगारी ।
सहाश्चर्य देखता हुँ फिर भी बिगरी जाती तुरत सँवारी ॥
कम होती नहिं हाय तोभि तो मेरी वह रफ्तार गँवारी ।
थकते तुम नहिं हार मानते मुँह न मोरते आह अघारी ॥
करते प्यार दुलार हमारा इतने पर भी धन्य पुरारी ।
इस अत्यंत उदार नीति पर तुम्हरे "शुक्ल" जाउँ बलिहारी ॥

मणि ३६

महादेव कह महादेव हो ॥

महादेव जो राह गहावें स्वस्थ वही गह महादेव हो ।
महादेव जिस रहनि रहावें मुदित सदा रह महादेव हो ॥
महादेव जो वस्तु चहावें मात्र वही चह महादेव हो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुग का जमा वासना तरु जो आशु अबहिं ढह महादेव हो ॥
आये उन अनिवार्य द्वंद को हँसते ही सह महादेव हो ।
सुमिरि सश्रद्ध सतत तन्मय हो महादेव लह महादेव हो ॥
प्रेमार्णव में महादेव के विवश विसुध बह महादेव हो ।
महादेव ले मान निर्जहिं जो "शुक्ल" सपदि वह महादेव हो ॥

मणि ३७

महादेव के चरन परा रह ॥
थक यदि गया भरमते भव में जा अब इनके घरन परा रह ।
होना निडर चाह यमगन से इन ढिग मारे डरन परा रह ॥
जरन मिटाना होय निकट तब इन मेटन प्रिय जरन परा रह ।
तरना हो अभीष्ट संनिधि में संतत तारन तरन परा रह ॥
करना हो दयार्द्र नित नत हो पास सु अवढर ढरन परा रह ।
होना चह निर्द्वंद लोकद्वय तो तू इनके गरन परा रह ॥
सब विधि हो कल्याण चाहता हो निश्छल प्रभु सरन परा रह ।
मेरी मान सलाह "शुक्ल" तो बन निर्भर आमरन परा रह ॥

मणि ३८

महादेव के बनी बनाये ॥
जनम-जनम से जान-जान के हमरे जोन नसान नसाये ।
फारे आँख निहारूँ हदतक दूसर और न हमें दिखाये ॥
हो ब्रह्माण्ड बीच यदि कोई तो वह मेरे सम्मुख आये ।
मैं देखना चाहता हूँ जी अपनी करामात दिखलाये ॥
दुस्साहस करके नहिं कोई अपनी इज्जत धूल मिलाये ।
आये भरे गरूर यहाँ तक मेरे दोष देख भय खाये ॥
अपना सा मुँह ले बेचारा जाते भी वापस शरमाये ।
"शुक्ल" मुझे बस आश इन्हीं की अन्य ओर को दृष्टि उठाये ॥

मणि ३९

महादेव सुमिरन सुखकंदा ॥
सुमिरन कर्ता को सद्यः ही निश्चय बना देय निर्द्वंदा ।
अपने सुप्रभाव से सत्वर उसका भाव मिटावे गंदा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इससे शुभ प्रेरणा प्राप्तकर वह तज देय सभी छल छंदा ।
देखत ही देखत सच मानो बन जाता सुसाधु सिर चंदा ।।
भाग खड़े हों सुभट शत्रु दल जहाँ चला शिर सुमिरन रंदा ।
बनें विवेकशील सुमिरन कर केवल महा-महा मतिमंदा ।।
साधन अन्य किये बिन भस-भस जाता फाट सुदृढ़ भवफंदा ।
मानो "शुक्ल" चहे मत मानो व्यर्थ बात नहिं बकता बंदा ।।

मणि ४०

महादेव गुनगान करूँगा ।।

महादेव गुनगान सार है अहनिशि यह अनुमान करूँगा ।
हो सश्रद्ध सहप्रेम सदा ही सुंदर सुयश बखान करूँगा ।।
सब साधन सिरमौर मानकर मैं इसका सनमान करूँगा ।
ज्ञान योग तप ध्यान आदि सब तुलना में नहिं आन करूँगा ।।
मनरंजन परलोक सँवारन इसको जान सुजान करूँगा ।
इसके ही द्वारा मैं अपना समझे सब कल्यान करूँगा ।।
गदगद वचन मुदित मन तन का भलिविधि भूले भान करूँगा ।
"शुक्ल" बना मस्तान करूँगा हरदम हिय हुलसान करूँगा ।।

मणि ४१

महादेव गुनगान करूँगा ।।

साधन अन्य सहस्र परे हों मैं नहिं कोई आन करूँगा ।
जब जैसे भी जी चाहेगा इसको विविध विधान करूँगा ।।
सुबह करूँगा शाम करूँगा मन चाहे मध्यान करूँगा ।
बिना किये अस्नान करूँगा करके भी अस्नान करूँगा ।।
भूखे करूँ भलीविधि बेशक अड़से खूब अघान करूँगा ।
विलसत करूँ करूँगा विहँसत अतिशय उर उमगान करूँगा ।।
भूलजाय तनभान इसलिये मुदित प्रेम मद छान करूँगा ।
उदासीन नहिं "शुक्ल" सदा ही भर मस्ती मस्तान करूँगा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४२

महादेव हर राह दिखाने ॥
निकला घर से सशिशु युवतिबन शीश कलश धर राह दिखाने ।
दीन हीन चिथड़ों में लिपटे पड़े ये फुट पर राह दिखाने ॥
विपद ग्रस्त दयनीय दशा में रहे अश्रु झर राह दिखाने ।
बड़े ठाठ से जाते थे ये बने नीक नर राह दिखाने ॥
लिये जा रहे थे कंधेधर गये थे ये मर राह दिखाने ।
किस गति में कैसे बतलाऊँ बने जो वे खर राह दिखाने ॥
उस दिन तो सच धन्य धेनु ये बने रहे चर राह दिखाने ।
घर बाहर दर बदर "शुक्ल" ये क्या अचरज गर राह दिखाने ॥

मणि ४३

महादेव बिन परी न पूरा ॥
एक नहीं शत सहस कोटिहू कर उपाय किन परी न पूरा ।
अहनिशि कर उद्योग-शांति पर दीखे नहिं छिन परी न पूरा ॥
हार थके लाचार बेचारा खटत रात-दिन परी न पूरा ।
हो असफल हर बार हर तरह रहेगा वह खिन परी न पूरा ॥
होने से हताश जीवन से हो जावे घिन परी न पूरा ।
इनसे विमुख लोग जो हैं सो तीनि लोक तिन परी न पूरा ॥
कह तो चुका कै बार और लो कहता फिन फिन परी न पूरा ।
इनसे मिलो "शुक्ल" सुख लूटो पर इनसे भिन परी न पूरा ॥

मणि ४४

महादेव सब देखत रहते ॥
गतिविधि का अध्ययन करें पर कभी किसी से कुछ नहिं कहते ।
रखें जानकारी सच-सच ये हम जिस समय राह जो गहते ॥
जान जाँय सब बिनहिं जनाये जो हम जभी चित्त से चहते ।
हो जाते अति खिन्न देखकर जब हम दीन दुखी जन डहते ॥
होते खुश जब नाम शस्त्र ले हम बासना कुतरु को ढहते ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जान इसे अनिवार्य हँसत ही आये द्वन्द सभी हम सहते ॥
बन विवेक संयुक्त भलीविधि हम इस भवसागर को थहते ।
हो निहाल ये जाँय "शुक्ल" सच येन केन विधि इनको लहते ॥

मणि ४५

महादेव ध्यैबै सुख पैबै ॥

अनुपम अद्वितीय उर अंतर इनकर छबि छैबै सुख पैबै ।
धार प्रवाह अखंड अहर्निशि इनसे लव लैबै सुख पैबै ॥
हिय महि बीच सतत तत्पर हो प्रेम बीज बैबै सुख पैबै ।
सुधाबाद कर स्वाद सहित नित इन उच्छिष्ट खैबै सुख पैबै ॥
तन भूले मन मगन लगनयुत प्रभु गुन गन गैबै सुख पैबै ।
सुरस कथा हो सुयशमयी तहँ श्रवणेच्छुक जैबै सुख पैबै ॥
झाँकी बनी श्रवणसुनि बाँकी दर्शनहित धैबै सुख पैबै ।
सादर देव पदारविंद में "शुक्ल" शीश नैबै सुख पैबै ॥

मणि ४६

महादेव को भूल न भकुआ ॥

भूल किया भकुआपन खुब तू फिर भकुअन में तूल न भकुआ ।
झूले-बहु झूला भव झूला हो सचेत अब झूल न भकुआ ॥
फाका धूल बहुत दुनियाँ की और फाक तू धूल न भकुआ ।
छन विनाशि पा जग वैभव को नाहक मन में फूल न भकुआ ॥
चखना है यदि रस रसाल का बो तू बीज बबूल न भकुआ ।
निष्कंटक रहना जो चाहता पहुँचा किसी को शूल न भकुआ ॥
देते वही पावते सब हैं बदलेगा यह रूल न भकुआ ।
सतत सतर्क "शुक्ल" रह कर से निकल जाय कहिं मूल न भकुआ ॥

मणि ४७

महादेव बेकाम कर दिया ॥

रह न गई कहुँ लेश कामना का अस काम तमाम कर दिया ।
रहने को ठौर ही कहाँ जब मुझको पूरन काम कर दिया ॥
सबकी कर इक साथ पूर्ति ये अब अत्यंत अकाम कर दिया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयदायक समझाय कामना को मम हेतु निकाम कर दिया ॥
सीमित कर रखता असीम को लघुकर्ता धिक-धाम कर दिया ।
दृढ़ बंधक आसक्ति मूल सच सकल सुतासुत वाम कर दिया ॥
खतरनाक बर्द्धक प्रमाद मद दोषयुक्त दृग दाम कर दिया ।
अप्रमत्त आनंदमयी अति "शुक्ल" वृत्ति विभु माम कर दिया ॥

मणि ४८

महादेव मम सुहृद सनेही ॥
दीख पड़ेंगे इस दुनिया में इन समान कम सुहृद सनेही ।
कर नहिं सकें कल्पना सचमुच इन जैसे हम सुहृद सनेही ॥
बन करके झूठे ही कितने भरते हैं दम सुहृद सनेही ।
बने बने के साथी-बिगरे सकते नहिं थम सुहृद सनेही ।
बिगरे बने सभी हालत ये एकमात्र सम सुहृद सनेही ।
रंचक कृपादृष्टि करते ही हर लेते गम सुहृद सनेही ॥
इष्ट अनिष्ट लाभ क्षति का झट मिटा देंय भ्रम सुहृद सनेही ।
"शुक्ल" सदा से रहे हैं मेरे रोम रोम रम सुहृद सनेही ॥

मणि ४९

महादेव को जान गया तब ॥
हर प्रकार हितकारी हरके इनको ही पहचान गया तब ।
लोक और परलोक हितैषी अपना मन अनुमान गया तब ॥
हो श्रद्धा संपन्न सुयश शुचि इनका विविध बखान गया तब ।
जीवन का आधार हर तरह हो इनका गुनगान गया तब ॥
एकमात्र इनका विचार में सविधि समा सनमान गया तब ।
टरना नहीं शरण से प्रभु की अनायास ठन ठान गया तब ॥
इष्ट अनिष्ट विभेद त्याग हो स्वीकृत देव विधान गया तब ।
"शुक्ल" तुम्हारी तुम जानो—मैं इनपर हो कुरबान गया तब ॥

मणि ५०

महादेव हर कह हम हरसी ॥
महादेव की राह वाह वा गौरवमयी को गह हम हरसी ।
महादेव पद प्रीति सुहावनि सचमुच चित से चह हम हरसी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महादेव की कीर्ति सुनत शुभ तुरत भीतरी तह हम हरसी ।
महादेव का नाम शस्त्र ले कुतरु-वासना ढह हम हरसी ।।
महादेव को जान जथारथ दुरित दोष दल दह हम हरसी ।
महादेव के प्रेम सरित में बनकर बेसुध बह हम हरसी ।।
महादेव की सुखद शरण में सरल भाव से रह हम हरसी ।
महादेव की कृपा "शुक्ल" सच महादेव पद लह हम हरसी ।।

मणि ५१

महादेव मम प्रान सहेली ।।

जीवन का आधार हमारा है नहिं कोई आन सहेली ।
जिला रहा है सचमाने तू इनका ही गुनगान सहेली ।।
मन बहलाती रहती करके इनका विविध बखान सहेली ।
विस्मृति भई जरा सी की बस लगे निकलने जान सहेली ।।
लुटादि हैं इनपर ही मैंने कुल अपनी कुलकान सहेली ।
भूली रहती हूँ निजको मैं दिव्य प्रेम मद छान सहेली ।।
कभी भूलता नहीं भुलाये अहनिशि इनका ध्यान सहेली ।
जीते जी संयोग "शुक्ल" हो दे यह प्रिय वरदान सहेली ।।

मणि ५२

महादेव आधार हमारे ।।

इनके ही इंगित पर केवल होते हैं कुल कार हमारे ।
सच इनके ही सदा बनाये बनते सभी विचार हमारे ।।
इनके किये कराये सबही हों विस्तृत विस्तार हमारे ।
इनके ही इकमात्र बसाये हैं सब बसे बजार हमारे ।।
पूरे होते रहते प्रतिदिन इनसे ही दरकार हमारे ।
इनके नित्य लगाये देखूँ लगते डोंगे पार हमारे ।।
इनके द्वारा ढोये जाते लोकद्वय के भार हमारे ।
"शुक्ल" असीसूँ सपरिवार हों चिरंजीव सरकार हमारे ।।

मणि ५३

महादेव दें दाना-पानी ।।

इन पशुपति का ही पशु हूँ मैं इनसे पाता भूसा सानी ।
आँख बंद करके सहर्ष मैं रहूँ पेरता इनकी घानी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाथ देंय नथ जाऊँ सीधे करूँ कभी नहिं आनाकानी।
इनके चलूँ इशारे संतत करता नहिं हरगिज मनमानी॥
इनका शुभ संरक्षण पाकर मेरी भलिविधि वृत्ति अघानी।
उच्चस्थल वासी कोई को समझूँ मैं नहिं अपनी शानी॥
इनकी सेवा से निवृत्त मैं किसी जन्म नहिं होउँ भवानी।
चाहूँ नहिं कुछ और मात्र यह "शुक्ल" मुझे वर दो वरदानी॥

मणि ५४

महादेव की ये अंगुलियाँ॥

कमल कली सी अरुन सुकोमल दर्शनीय हैं हे अंगुलियाँ।
जर्जर बोझीली आश्रित की नाव तदपि रहिं खे अंगुलियाँ॥
पार लगा देतीं बेड़े को तुरत सहारा दे अंगुलियाँ।
कभी दीखती हैं प्रपन्न की रही हैं मूछें टे अंगुलियाँ॥
अनुकंपा कर देतीं उसकी मति सनेह रस भे अंगुलियाँ।
रखतीं सदा सुरक्षित उसको कमठ अंड सी से अंगुलियाँ॥
भरे प्रेम दुलराया करतीं सविधि अंक में ले अंगुलियाँ।
मेरा सिर सहलाया करतीं "शुक्ल" सदा ही वे अंगुलियाँ॥

मणि ५५

महादेव मुझको दुलरावें॥

संभव नहीं और जन के प्रति जस मम प्रति ये प्यार जनावें।
अल्पवयस्क स्वशिशु सा लेकर भाँति-भाँति के लाड़ लड़ावें॥
कभी अंक में ले हलरावें कभी पालने घालि झुलावें।
मेरे प्रिय पदार्थ ला लाकर बड़े प्रेम से मुझे खिलावें॥
म जानूँ सजना क्या मुझको अपनी रुचि अनुसार सजावें।
मनरंजन के लिये कुतूहल वड़े-बड़े देवेश दिखावें॥
रोचक दृश्य दिखा खुश होते भयदायक से मुझे बचावें।
में उनपर वे मुझपर जी हाँ "शुक्ल" वार बहु बलि-बलि जावें॥

मणि ५६

महादेव अलबेला मेरा॥

बनना चहिये गुरुवर इसको बन बैठा यह चेला मेरा।
इसी खिलाड़ी के माथे सच जमा खूब है खेला मेरा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी सावधानी से नितप्रति यही चलाता मेला मेरा ।
मेरे बस की बात नहीं जी यही ठेलता ठेला मेरा ॥
मुझे आँच नहिं-यार इसी ने तो सब संकट झेला मेरा ।
तुम हमको समझो इसने ही सारा पापड़ बेला मेरा ॥
देता बड़ी देन बेचारा लेता कभी न धेला मेरा ।
आदिकाल से "शुक्ल" आजतक यही सम्हारे रेला मेरा ॥

मणि ५७

महादेव पद पूजो प्रानी ॥
मेरी नेक सलाह मान लो करो न किंचित् आनाकानी ।
हित हरभाँति समाया इसमें कहता हूँ त्रिसत्य यह वानी ॥
रोग शोक संतप्त जगत जन तुमसे झूठ न वात वतानी ।
वेद पुरान शास्त्र सव संतहु इसकी महिमा विशद बखानी ॥
दानव देव नाग किन्नर नर पूजें सभी प्रेम रस सानी ।
होते सफल मनोरथ सद्यः पाते वस्तु सकल मनमानी ॥
आदिकाल से चला आ रहा आराधन इनका सुखखानी ।
क्यों दुख "शुक्ल" उठाओ कोई अछत उदार देव वरदानी ॥

मणि ५८

महादेव गुन गान साजना ॥
कहें संत सतशास्त्र एक स्वर है सब सुखकी खान साजना ।
अनायास दोनों लोकों में हो इससे कल्यान साजना ॥
साधन अन्य नगण्य सभी हैं एहि समान नहिं आन साजना ।
सर्व सुलभ है तो भी यह तो होते महा महान साजना ॥
किया करें हम सब मिल करके प्रतिदिन हिय हुलसान साजना ।
हो श्रद्धा संयुक्त सुहावन शुचि सनेह रस सान साजना ॥
मनरंजन परलोक सँवारन है यह विशद विधान साजना ।
सत्य सत्य त्रय सत्य सहज ही मिलें "शुक्ल" भगवान साजना ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५९

महादेव गुनगान सजनियाँ ॥

तुझसे प्रेरित होय साधवी करतहि उर उमगान सजनियाँ ।
समझ पड़ा यह सत्य-सत्य ही है शुभ सुख की खान सजनियाँ ॥
मेरी शक्ति कहाँ किंचित भी जो कर सकूँ बखान सजनियाँ ।
कह न सके कोई भी इसकी महिमा महा महान सजनियाँ ॥
करने को कौआया करती मेरी सदा जवान सजनियाँ ।
सुनने को उत्सुक रहते ये मेरे दोनों कान सजनियाँ ॥
साधन होंय सहस्र मुझे कोइ रुचते ही नहिं आन सजनियाँ ।
"शुक्ल"प्राप्ति प्रति जन्म मुझे हो हिय समान अरमान सजनियाँ ॥

मणि ६०

महादेव हमदर्द हमारे ॥

इस दुनिया के बीच आप हैं सबल सहायक फर्द हमारे ।
अहितकारि तत्वों को ततछन मिलादेंय गहि गर्द हमारे ॥
इस दहसत के मारे रिपुगन देखो पड़ गये जर्द हमारे ।
पाला सा पड़गया दोजपर दुरित हो गये सर्द हमारे ॥
ढके छिद्र हैं सभी इन्हीं से सकल सुरक्षित पर्द हमारे ।
"शुक्ल" मैं इनकी जो हूँ सो हूँ मर्द सरिस ये मर्द हमारे ॥

मणि ६१

महादेव के गाल की रचना ॥

किसने की कैसे की वोलो अति अद्भुत इस चाल की रचना ।
फँसा लिया जिसने मन पंछी वतलाओ अस जाल की रचना ॥
स्रवत फुहार शीश सुरसरि के शुचि सुहाय शशि बाल की रचना ।
भूषित भस्म त्रिपुण्ड लखो तो इस विशाल भल भाल की रचना ॥
मतवारे अरुनारे किंचित् नयन कमलदल टाल की रचना ।
नीकी नाक नुकीली सुन्दर सरहनीय शुक साल की रचना ॥
निरखत बनिआवत नहिं बरनत अधर बिंब से लाल की रचना ।
मंद-मंद मुसकान मनोहर मेरे जिय की काल की रचना ॥
नीलकंठ वक्षस्थल विस्तृत भव्य सुमन मणिमाल की रचना ।
"शुक्ल"सराहत बने किमपि नहिं जुगल चरन जनपाल की रचना ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६२

महादेव ले गोद खेलावें ॥

औरसपुत्र जानकर अपना मेरे प्रति अति प्रेम जनावें ।
मेरी लखे महान मलिनता नाममात्र भी नहीं घिनावें ॥
चाहा करें तहे दिल से ये कस पावें कब अंक लगावें ।
कर को सके कल्पना किस विधि पाते ही कितना पुलकावें ॥
मेरे दोष नगण्य गनें सब-मेरी सारी भूल भुलावें ।
रंचक गुण लखतेहि सराहें उत्साहित कर कर हरषावें ॥
होते तृप्त न मुझे सजाकर मन चाहे जितनाहि सजावें ।
"शुक्ल" बिके फिरते इनपर हम और आपसे क्या बतलावें ॥

मणि ६३

महादेव को ढूढ़ूं वन वन ॥

छान चुका हर नगर गाँव अब लोकलाज धो ढूढ़ूं वन वन ।
बनवासी कहते सब इनको करि विश्वास सो ढूढ़ूं वन वन ॥
चारा ही जब रहा न दूजा तब लचार हो ढूढ़ूं वन वन ।
धरता धीर नहीं अधीर मन बढ़ी पीर तो ढूढ़ूं वन वन ॥
सुध करके इनकी नैनों से बहे धार दो ढूढ़ूं वन वन ।
करते हो परिहास भला क्यों जीवनधन जो ढूढ़ूं वन वन ॥
मिलना है अनिवार्य मानकर अविश्वास खो ढूढ़ूं वन वन ।
मिले "शुक्ल" घर भीतर बैठे मैं जिनको रो ढूढ़ूं वन वन ॥

मणि ६४

महादेव दरबार तुम्हारा ॥

दर्शनीय अश्लाघनीय अति वांछनीय सरकार तुम्हारा ।
ब्रह्मा वेद विनीत उचारें विष्णु विशद अस्तुति अनुसारा ॥
इन्द्र चमर गहि छत्र धनाधिप पवन व्यजन बन विनत सम्हारा ।
सुमन वृष्टि सुर करें सुमन करि ऋषिगण विविध विरद उच्चारा ॥
गावत गुण गंधर्व सकिन्नर सविनय सरस सँगीत प्रचारा ।
नाचें देव बधूटी लूटी कलित कला निरखत मन हारा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नंदी भृंगी आदि प्रमुखगण पुनि पुनि जय जय कार पुकारा।
करते काम विदूषक का जो भद्र भूतगन की भरमारा॥
आरत अर्थार्थी जनके हित अहनिशि रहता खुला दुआरा।
प्रेमदान हो भक्तजनों को दीनों का सत्कार उदारा॥
लुटता मुक्त हस्त हो प्रतिछन लूटे कोइ पदारथ चारा।
लहालूट के इस चर्खे में सब ही "शुक्ल" लहान हमारा॥

मणि ६५

महादेव मिल गये मिला सब॥

भरे अनंत छिद्र अंतर के भलीभाँति सिलगये सिलासब।
जन्म कोटि के कर्म शुभाशुभ बिलकुल ही विल गये बिला सव॥
बहुकालीन वासना तरु के सुदृढ़ मूल हिल गये हिला सब।
अनुकंपा पा "शुक्ल" देव की हिय पंकज खिल गये खिलासब॥

मणि ६६

महादेव फिर मिलेंगे-कहके॥

चलते बने बताऊँ उसदिन निजकर से मेरा कर गहके।
गये सो लौटे नहीं आह वे-फिरते पता नहीं कहँ बहके॥
मिलते ही हद सा कर डाला था मुझको जी जाँ से चहके।
मैं तो बिकसा गया हुँ मानो कुछ ही काल साथ में रहके॥
शत-शत भाग्य सराहा अपना कहता सत्य आपको लहके।
अब छिन छिन भारी उनके बिन झुलसूँ वियोगाग्नि में दहके॥
जितना चाहा था-सहस्रगुन कर फेरे लेते हैं डहके।
"शुक्ल" कल्पना कल्पवृक्ष को कर क्यूँ दिया नष्ट यूँ ढहके॥

मणि ६७

महादेव सन्निधि सुख देते॥

सुमिरन करते ही सुमिरक की मति सनेह सुंदर रस भेंते।
करते शुचि समीपता अनुभव सद्यः ही सुमिरक हैं जेते॥
विविध भाव संयुक्त हृदय करि वे सामीप्य सरिस सुख लेते।
तन्मयता में भूल अपन को करलें प्रकट ततक्षण केते॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखलाते हैं खुली आँख से ऐसों की नैया वे खेते ।
देखा जाय ये भी ऐसों को हैं वे कमठ अण्ड ज्यों सेते ॥
पहुँच जो जाँय परिस्थिति में इस यह आनन्द हैं पाते तेते ।
निर्भरमात्र "शुक्ल" इन पर हो बैठे मूँछ मजे में टेते ॥

मणि ६८

महादेव के कान के कुंडल ॥

निरखत बनें बखानत पर नहिं सचमानो सुखखान के कुंडल ।
जगमग जगमग करें जड़ाऊ दोनों शंभु सुजान के कुंडल ॥
तारागन शशि की समता क्या हर लेते भा-भान के कुंडल ।
पड़ जाते धूमिल धरते ही धर देखो ढिग आन के कुंडल ॥
देखे सुने नहीं हमने तो और कोई इस शान के कुंडल ।
हिलते लगते मस्त झूमते मनो प्रेममद छान के कुंडल ॥
देते अति आनन्द याद से ये आनन्द निधान के कुंडल ।
एकमात्र येइ मान्य विश्व के "शुक्ल" प्रानके प्रान के कुंडल ॥

मणि ६९

महादेव दीदार दिखादो ॥

एक दो नहीं चार पाँच छः कहतो चुका कै वार दिखादो ।
तरस रहा हूँ एक झलक को हाय मेरे हियहार दिखादो ॥
एकमात्र यह साध है दिल की बन उदार दिलदार दिखादो ।
प्राण मेरे अकुलाते हैं अति सो मम प्राण अधार दिखादो ॥
भूल जाव गलती मेरी सब करता मैं मनुहार दिखादो ।
प्रतिकूलता बिसारि मेरी-हो सानुकूल सरकार दिखादो ॥
मैं बहुभाँति मनाता तुमको मान जाव अब यार दिखादो ।
कर जोरूँ पद "शुक्ल" धरूँ शिर विनती करूँ हजार दिखादो ॥

मणि ७०

महादेव से कहूँ मैं जी की ॥

अपना कुछ जाना समझा नहिं राह इन्हीं के गहूँ मैं जी की ।
भला बुरा जो लगे किसी को इनके रहनि रहूँ मैं जी की ॥
चाह चुकाकर वाह निजी सब चित से इनके चहूँ मैं जी की ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने नहिं मनमानी देते सुनूँ शिकायत यहूँ मैं जी की ॥
लगता कुछ संकोच बताते यार मार जो सहूँ मैं जी की ।
क्रीड़ा हेतु वासना विषयक बनी इमारत ढहूँ मैं जी की ॥
बारह मास मनाऊँ होली नित दुरितावलि दहूँ मैं जी की ।
इनके ललित लहाये लल्लू सबही "शुक्ल" लहूँ मैं जी की ॥

मणि ७१

महादेव कर दया सभी पर ॥

जलते हैं त्रिताप से जग जन विमल बारि झर दया सभीपर ।
जन्में बार अनंत और ये चुके बहुत मर दया सभी पर ॥
बने अनाथ बिलखते इनप्रति हिय विशेष भर दया सभी पर ।
बहे जा रहे विवश बिचारे बेगि बाँह धर दया सभी पर ॥
होगी अगति बुरी बेशक ही की न गई गर दया सभी पर ।
कर न गौर करनी अहेतु निज अवशि ढरनि ढर दया सभी पर ॥
अपना जान सद्य अपना ले चल अपने घर दया सभी पर ।
चरण शरण में "शुक्ल" शीघ्र ही देव देहि दर दया सभीपर ॥

मणि ७२

महादेव को यह समझा दो ॥

पहले खूब समझलो खुद ही फिर उनसे भी कह समझा दो ।
समझदार की चली आ रही परंपरा को गह समझा दो ॥
मेरी और साथ ही उनकी कोई भलाई चह समझा दो ।
तुम्हरे वियोगाग्नि में वरबस बाभन रहा है दह समझा दो ॥
छीनकाय हो गया है अतिशय दुखद यंत्रणा सह समझा दो ।
बनकर भूत सतावे तुमको वह पंचत्व को लह समझा दो ॥
संभव दुष्परिणाम और जो हो सकता है वह समझा दो ।
विकल बिनत विनवता "शुक्ल" मैं समझा दो कोइ अह समझा दो ॥

मणि ७३

महादेव मम मरन बनावें ॥

इसी मरन से मरन शेष है समझ शौक से करन बनावें ।
सेवा नहिं पूजा कर पाऊँ यूँ ही अवढर ढरन बनावें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदिकाल का किया करन को वह निज पूरन परन बनावें ।
अपनाकर उदारता अतिशय तब ये तारन तरन बनावें ।।
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद उर विकार करि हरन बनावें ।
किये कराये कोटि जन्म के दुरित दलहि करि दरन बनावें ।।
संभव और न किसी तौर से रख करके निज सरन बनावें ।
"शुक्ल" देव शिरमौर दासकरि गौर ठौर दे चरन बनावें ।।

मणि ७४

महादेव से लगन लगाओ ।।

सोया पड़ा जन्म जन्मों से आशुहि अपना भाग्य जगाओ ।
ठगे गये बहुबार बताऊँ होओ सजग न और ठगाओ ।।
दुनियाबी आकर्षण को लखि हरगिज मत निज वृत्ति डगाओ ।
इनमें उनमें नहीं किसी में प्राणेश्वर में प्राण टँगाओ ।।
भरे भये जुग-जुग के सारे दोष दुरित द्रुत दूर भगाओ ।
छूटे नहीं छुटाये कबहीं चित अस पक्के रंग रँगाओ ।।
गुनगन इनके छोड़ भूलकर कबहीं गाने अन्य न गाओ ।
"शुक्ल" सरस जीवन हो सद्यहि मन शुचि सुरस सनेह पगाओ ।।

मणि ७५

महादेव को देखूँ देखो ।।

बैठे हैं अंदर ही ये तो अंतरमल धो देखूँ देखो ।
वैसे कौन देख सकता है वे चाहें तो देखूँ देखो ।।
उनकी अनुकंपा से ही सच निज निजत्व खो देखूँ देखो ।
फलस्वरूप जिसके दर्शन हो प्रेम बीज बो देखूँ देखो ।।
करके बंद साथ ही खोले इन नैनन दो देखूँ देखो ।
जिसे देख दृक शक्ति सफल हो सुख संयुक्त सो देखूँ देखो ।।
जिसे देखने कोहि मिले दृग दिव्य दृश्य वो देखूँ देखो ।
हँस-हँस कभी देखता हर्षित "शुक्ल" कभी रो देखूँ देखो ।।

मणि ७६

महादेव जानें कल क्या हो ।।

पल की खबर नहीं तब कलकी बतलावे कैसे खल क्या हो ।
कौन कहे तेजी किसकी हो कौन बता सकता डल क्या हो ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गर्जन तर्जन खूब सुनाता अंदर वह जाने बल क्या हो।
होना है अच्छा हि संधिका किंतु कौन जाने छल क्या हो॥
करो नेक नीयत से सब कुछफिक्र छोड़ करके फल क्या हो।
भल संभव हो करो वही पर सोच न कुछ अनभल भल क्या हो॥
छन भंगुर सब खेल यहाँ का लखकर उसे विचल चल क्या हो।
उलझाया जिन "शुक्ल" समस्या बता वही सकता हल क्या हो॥

मणि ७७

महादेव सुख खान मान मन॥

सुखके मूल सुखस्थल येई निश्चय ही नहिं आन मान मन।
सुखके जनक यथाविधि वितरक सुखके सुखद निधान मान मन॥
सुखके सींव नीव सब सुखके सुख के शुभ संस्थान मान मन।
सुखदाता सुखपाता शुभसुखके ज्ञाता सुमहान मान मन॥
सुख येई सुखदेई तबके सुख स्वरूप भगवान मान मन।
दानव देव आदि सुख इनसे पाते सभी सुजान मान मन॥
प्राणिमात्र का यही वनाते सुखमय शुभद विधान मान मन।
अपने लिये "शुक्ल" सुख साधन इनकर शरण सुज्ञान मान मन॥

मणि ७८

महादेव मैं तोर मोर तैं॥

आदिकाल कै हए तबै तौ सहजहिं कैले कृपा कोर तैं।
हमसे मिलैके खातिर पट्ठे लखली मरले बहुत जोर तैं॥
हमसे ज्यादा हम जानीला रहे लगवले यार डोर तैं।
कहुतौ सुनी कवन गुन देखले जवन चितवले मोरि ओर तैं॥
लागऽले बड़नीक हमें तौ सच्च कहीं अति गोर गोर तैं।
लखतैमात्र कहीं हम कैसे लेहले बरबस चित्त चोर तैं॥
मीठ मीठ बतिआइ बताईं सुधि बुधि हू तौ लिहे छोर तैं॥
हमके खूब जुड़ावऽले सच मिलकर प्रत्यह साँझ भोर तैं।
लखले जहाँ सकेते हमके परले होके द्रवित दोर तैं।
काहें झूठ बखानी मानी शानी बाटे एक तोर तैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तैं तौ हए प्रेममद मातल देहले हमहुँ पिआइ घोर तैं ।
निकसि न पाई "शुक्ल" कंसहूँ नेहार्णव असदिहे बोर तैं ॥

मणि ७९

महादेव सब रोग भागिगा ॥

सुख स्वरूप अपना सुधि आतेहि सचमानो सब सोग भागिगा ।
कर्तापन का गर्व जात ही दुम दबाय भव भोग भागिगा ॥
विश्व व्याप्ति अपनी समझत ही होना योग वियोग भागिगा ।
जिनसे विघ्न "शुक्ल" संभव था दूर सभी वह लोग भागिगा ॥

मणि ८०

महादेव से बात भई कल ॥

पता नहीं किस सुसंस्कार से लगादई यह योग दई कल ।
करली गई यथाविधि से हल जटिल समस्या यार कई कल ॥
जैसी की चाहिये सुलझना उलझन सारी सुलझ गई कल ।
भ्रममूलक कब कीहि खड़ी वह शंका की दीवार ढई कल ॥
वातावरण सरस करने को प्रेम बीज संयुक्त वई कल ।
सुरस सनेहसनी सुखदायक चरचा चली नई हि नई कल ॥
कैसे किसे बताऊँ जैसी भई वृष्टि आनन्दमई कल ।
आई बाढ़ प्रीति सरिता में हिलमिल लहरा "शुक्ल" लई कल ॥

मणि ८१

महादेव चाहे जो दे दें ॥

देने की आदत जुग-जुग से होते उससे विवश तो दे दें ।
किसी वस्तु की कमी न इनको तब बोलो काहे नो दे दें ॥
साधारणतः कुछ सोचें नहिं जिसकी जिसे चाह सो दे दें ।
चाहहीन को सोच समझकर आवश्यक जो हो वो दे दें ॥
दीनहीन दयनीय व्यक्तिको स्वाभाविक दयार्द्र हो दे दें ।
आश्रित निज पर निर्भर जनको बेशक भुक्ति मुक्ति दो दे दें ॥
अधिकारी को देते ही हैं चाहें अनधिकारि को दे दें ।
मेरा "शुक्ल" हिसाब न रखते पावें सो मुझको तो दे दें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८२

महादेव पर मरूँ न कैसे ।।

विरुज शरीर नीक बुधि ही इन करवावें सो करूँ न कैसे ।
वृत्ति मलीन तो भि दुष्पथ से टरवावें तो टरूँ न कैसे ॥
बनते बुरे कार्य काया से परिणामों से डरूँ न कैसे ।
थल अभाव लखते भि-भावभल भरवावें तो भरूँ न कैसे ॥
और ठौर जब नहीं विश्व में गले इन्हीं के परूँ न कैसे ।
साधनहीन सर्वथा समुझत बरबस तारें तरूँ न कैसे ॥
अनुपस्थिति अनुभूति हो रही वियोगाग्नि में जरूँ न कैसे ।
नत हो जाता अपन आप ही "शुक्ल" चरन सिर धरूँ न कैसे ॥

मणि ८३

महादेव सबको उद्धारो ।।

हम कलियुग के जीव देववर हमको किसी भाँति निस्तारो ।
पतितोन्मुख है वृत्ति हमारी इस पर दृष्टि भलीविधि डारो ॥
अति दयनीय दशा लखमेरी मम प्रति सद्य दया दिल धारो ।
भरे परे जो जन्म-जन्म के उर से सभी विकार निकारो ॥
अनुकंपा करि अवशि आशुहीं हमको नव साँचे में ढारो ।
दे शुभ सत्प्रेरणा सदाशिव सबकी बिगरी दशा सुधारो ॥
दो सबको सद्‌बुद्धि प्रेम द्रो सबके भीतर भरो उज्यारो ।
"शुक्ल" सभी का कर सुधार सब कुछ मेरे भी लिये विचारो ॥

मणि ८४

महादेव सुखदाता साजन ।।

किये एक स्वर मुक्त कंठ से चतुर्वेद गुन गाता साजन ।
संत समाज शास्त्र सहमत हो इनकर सुयश सुनाता साजन ॥
जिसके लिखे लिलार नहीं विधि वह इनसे सुख पाता साजन ।
परमसुखी हो जाता वह जो इनसे उर उरझाता साजन ॥
सुख स्वरूप बन जाता वह तो इनके मद माता साजन ।
सुख रस में सन जाता सद्यः जो इनका बन जाता साजन ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख समुद्र में डूब जाय सो जो पूजन मन लाता साजन ।
उसकी दशा "शुक्ल" कहिये किमि जो पद शिर नत-नाता साजन ॥

मणि ८५

महादेव सुख दीना सजनी ॥

कर सकता है कौन विश्व में जो कुछ इनने कीना सजनी ।
रहा हुँ जब तक दूर आपसे रहता था मन खीना सजनी ॥
इनके ही अभाव में जीवन बना रहा गम गीना सजनी ।
तुम जानो सव-दूभर था जो एक-एक दिन जीना सजनी ॥
संबंधित होते ही इनसे मैं बन गया नवीना सजनी ।
ठग धनराशि सरिस इनने सच शोक मोह छलि छीना सजनी ॥
इनकी अनुकंपा से द्रुत गति पद रति मति भइ लीना सजनी ।
"शुक्ल" सदा आनंद सिंधु में बिहरे बन मन मीना सजनी ॥

मणि ८६

महादेव यह धाम आपका ॥

स्वयं प्रकाश अखंड ज्योतिमय वेद शास्त्र कह धाम आपका ।
फैलाते नहिं प्रभा-प्रभाकर नहिं नक्षत्र जहँ धाम आपका ॥
विशद वर्णनातीत विलक्षण वांछनीय अह धाम आपका ।
दुर्लभ अतियोगी जन को भी बतलावें वह धाम आपका ॥
दीन मलीन किंतु निश्चय ही पाते पद गह धाम आपका ।
चाह चुकाकर सभी चरन प्रति परमप्रीति चह धाम आपका ॥
सादर जहँ सेवक जन जाते आते नहिं लह धाम आपका ।
"शुक्ल" महा प्रलयान्तकाल में शुचि सुस्थिर रह धाम आपका ॥

मणि ८७

महादेव मुख बोल सनेही ॥

इसी निमित्त मिलाही है यह व्यर्थ कभी मत खोल सनेही ।
सार्थक करे नाम निज सब विधि शुचि सनेह रस घोल सनेही ॥
दुरुपयोग मतकर इनका ये जीवन छन अनमोल सनेही ।
आवाजाही मिटे नहीं यूँ यह दुनिया है गोल सनेही ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भजा न इसमें सजा भरी है ठोस नहीं सब पोल सनेही।
मन के काँटे पर रखकर खुब बात मेरी ले तोल सनेही॥
पाले इनको अभी इसी छन इनकी गलियों डोल सनेही।
मोल इन्हें हम लिया "शुक्ल" सच वजा वजाकर ढोल सनेही॥

मणि ८८

महादेव सब शत्रु पछारें॥

बाहर औ भीतर के सारे रिपुदल को ये दलि मलि डारें।
इनके आश्रित जनसमूह को करि कुदृष्टि वह कौन निहारें॥
बोध करा दें सविधि क्रोध को आप कचूमर काम निकारें।
लोभ करे यदि छोभ स्वजन उर तो भल सोभव भूँजे भारें॥
ममता मद हदभरि रद करिके मोह द्रोह सह मूल उखारें।
मत्सरादि भी अन्य विकारों से यारों को अवशि उवारें॥
दूर करें द्रुत दस्यु दलों को भूत प्रेत ग्रह बाधा टारें।
"शुक्ल" वना निर्द्वंद देंय सच शरणागत सब भाँति सम्हारें॥

मणि ८९

महादेव में ही चित रक्खा॥

और दिखें नहिं देखा चाहूँ जब से मैंने इनको लक्खा।
अब तो वस ये ही हैं मेरे एकमात्र प्राणों के सक्खा॥
इनको पा पुलकित हो जाऊँ इन बिन बंठा करता झक्खा।
रोऊँ बिलख-बिलख विरहा में हँसूँ प्राप्ति में अक्खा अक्खा॥
इनने ही यह पाठ पढ़ाया इनने याद कराया कक्खा।
जानूँ नहिं गुन स्वाद भेद कुछ इनके सुरस चखाये चक्खा॥
सिकता सी शर्करा लगे अब लगें धूल से दाड़िम दक्खा।
कृष्ण पक्ष इनके बिन सब जब मिलें "शुक्ल" समझूँ सोइ पक्खा॥

मणि ९०

महादेव-हे-रे हम पावा॥

गये नहीं कहिं दूर दुआरचौ घर भीतर हेरे हम पावा।
होती क्यों हरास थकता क्यों नेरे से नेरे हम पावा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसी खोज तलाश कहाँ की डाले दिल डेरे हम पावा ।
किया न पूजा पाठ न जप-तप बन केवल चेरे हम पावा ॥
क्या विशेषता हुई है इसमें जबकी ये मेरे हम पावा ।
अपनी कारीगरी न कुछ भी सत्य दुआ तेरे हम पावा ॥
बात तो यह ईमान की---इनके दया दृष्टि फेरे हम पावा ।
"शुक्ल" बता तो पूछूँ यह मैं तू नहिं क्यों लेरे हम पावा ॥

मणि ९१

महादेव आई वहार है ॥

जानि शुभागम रितु बसंत का गुलशन में छाई बहार है ।
करि पल्लवित सुपुष्पित तरुगन प्रकृति नटी लाई वहार है ॥
देखत बनै बरनि नहिं आवत दशदिशि दरसाई वहार है ।
चहकि-चहकि चिड़ियायें अलिगन गुंजि सुगुन गाई बहार है ॥
लखि जेहि होत विभोर मोर मन अनुपम बरसाई बहार है ।
सुखद सँजोगि जनों को सब विधि उर अति उमगाई बहार है ॥
किन्तु आपके बिन मुझको तो धरि-धरि जनुखाई बहार है ।
आओ जीवन धन सँयुक्त हो "शुक्ल" हमहुँ पाई वहार है ॥

मणि ९२

महादेव की कुल अच्छाई ॥

एक नहीं मुख हों हजार तो किसी तरह भी कही न जाई ।
जान कौन सकता है इनमें नख से शिख तक भरी भलाई ॥
जानेगा ही नहिं बेचारा तब किस विधि क्या बात बताई ।
वेद बन गये मौन शास्त्र ने भी तो असमर्थता दिखाई ॥
तव अब कौन समर्थ दूसरा किस मुँह इनकी करे बड़ाई ।
कहे बिना पर रहा न जाता यथाशक्ति कहते सब भाई ॥
वानी की सार्थकता करते यत्किंचित गुन इनके गाई ।
हमसे "शुक्ल" नहीं कुछ बनता हो सश्रद्ध चरनन सिर नाई ॥

मणि ९३

महादेव में छमा भरी है ॥

लगता है जैसे इनके इन रोम-रोम में छमा जरी है ।
जन्म-जन्म के किये मेरे सब दोष सहज ही छमा करी है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी काल में नहीं किसी छन इनके हिय से छमा टरो है।
कौन महा अपराधी ऐसा जिस पर नहिं यह छमा ढरी है॥
बड़ी लाभकारी सिध होती हम जीवन हित छमा घरी है।
करने को भव पार जगत जन बड़ी सुदृढ़ यह छमा तरी है॥
आप्त काम हो जाते वे तो जिनके हिस्से छमा परी है।
ममहित "शुक्ल" सत्य सद्यः यह चारु चारि फल छमा फरी है॥

मणि ९४

महादेव के नैन नुकीले॥

निरखत बनें न बरनत कैसहुँ अद्वितीय ये नैन नुकीले।
आज हो गये हैं मत समझो सब दिन से थे नैन नुकीले॥
मिलते ही नैनों से दिल में तुरतहि घुसिगे नैन नुकीले।
कभी करें बेचैन बेतरह कभी चैन दें नैन नुकीले॥
बोरें बिरह सिंधु में कबहीं रहे नाव खे नैन नुकीले।
कभी दिखाकर सैन विविध विधि मम मन हरलें नैन नुकीले॥
कभी-कभी रस वर बरसाकर दें सनेह भे नैन नुकीले।
रहो सदा अनुकूल दास पर "शुक्ल" विनय हे नैन नुकीले॥

मणि ९५

महादेव सुमिरन सुखकारी॥

सत्य-सत्य त्रय सत्य मित्र यह कहता मानो बात हमारी।
आज करो स्वीकार ऐसही कल हाँ करदे अकल तुम्हारी॥
मेरी कही वात नहिं केवल कहें शास्त्र सब संत पुकारी।
करो प्रतीति सुदृढ़ तर सचमुच इसमें भरी भलाई भारी॥
चिंतन में करता प्रमाद जो उसकी बुद्धि गई है मारी।
श्रमनहिं रंच नहीं व्यय कुछ भी नहिं अकाज कुछ हो व्यापारी॥
खासा परता परता इसमें कर कुछ रोज अरे रोजगारी।
नहीं लाभ हो "शुक्ल" तुम्हें तो बुरी-वुरी नित देना गारी॥

मणि ९६

महादेव सब हरे भरे हों॥

वापी कूप तड़ाग पूर्ण सब यथा समय जल जलद झरे हों।
दिखें सस्य सम्पन्न खेत सब पशुगन खूब अघाय चरे हों॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफल वृक्षपर चिड़ियाँ चहकें सुमन भरे उद्यान हरे हों ।
वह दुनिया दिखलाव देववर कोई नर नहिं पाप करे हों ॥
चारों वर्ण चरित्रवान हों सब शुभ सुकृत भँडार भरे हों ।
दीखे नहीं कुराही कोई चलते सभी सुराह धरे हों ॥
गुन के खान सुजान सुहृद सब सकल दोष से सभी टरे हों ।
दाबें एक नया पैसा नहिं देन लेन के अतिहि खरे हों ॥
सब बलवान सुबुद्धिमान सब असमय में नहिं कोइ मरे हों ।
सहज प्राप्त निर्भयता साथहि सुर गुरु द्विज से सभी डरे हों ॥
कोइ न किरायेदार किसी का रहते सब अपनेहि घरे हों ।
संपतिवान सुपत्निवान सब पुत्रवान लखि दीन ढरे हों ॥
दंपति प्रेम सुप्रेम आपसी ईश प्रेम अति भरे परे हों ।
घर-घर शांति निवास निरंतर नहिं त्रिताप के ज्वाल जरे हों ॥
सदाचारि उपकारि अखंडित ब्रह्मचारि बनि सभी तरे हों ।
"शुक्ल" शरण हो देव आपकी अनायास फल चारि फरे हों ॥

मणि ९७

महादेव सब करते कल्लू ॥
कर्तृत्वाभिमान निज उर में हम झूठे ही भरते कल्लू ।
इस मिथ्याभिमान से केवल हम बंधन में परते कल्लू ॥
सिर्फ इसी कारण समझो हर बार जनमते मरते कल्लू ।
इसके ही ले जाने से हम जाय नरक में जरते कल्लू ॥
इसके ही धरवाये से सच स्वाँग विविध विधि धरते कल्लू ।
हो जाती सब बला दूर बस इसके दिल से टरते कल्लू ॥
निरभिमान होतेहि भलीविधि नवसाँचे में ढरते कल्लू ।
पाकर कृपा प्रसाद देवका "शुक्ल" चारिफल फरते कल्लू ॥

मणि ९८

महादेव चरनन मन लागा ॥
पा असीम अनुकंपा प्रभु की तब प्रिय पाद पद्म अनुरागा ।
जिसे जानकारी न नेह की वह भलिभाँति प्रेम रस पागा ॥
इनके ही टाँगे बिलकुल सच रहता प्राण इन्हीं पर टाँगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब फिर कहूँ कौन विधि तुमसे सोया भाग्य जाग अस जागा ॥
हो करके भयभीत बेतरह आशुहि दोष दुरित दल भागा ।
संभव कहाँ बताना उनका यह वह सभी मिला बिन मागा ॥
परमानंद प्रयास बिना ही मिलने लगा नित्य बेनागा ।
चमत्कार यह हुआ हंस बन गया 'शुक्ल' सा काला कागा ॥

मणि ९९

महादेव के गाल हायरे ॥

लखत बनत नहिं बनत बखानत फुली कचौरी चाल हायरे ।
गौर बरन वरगात ज्योतिमय कुंद इंदु दुति टाल हायरे ॥
नीके नैन सुनाक नुकीली भस्म लसित सित भाल हायरे ।
जटा जूट बिच गंग तरंगित शोभत भल विधु बाल हायरे ॥
अधर अरुण मुसकान मनोहर दंत मुक्ति का माल हायरे ।
मणि मुक्ता शुभ सुमन हार से संयुत वक्ष विशाल हायरे ॥
भुज प्रलंब भूषण युत-किंकिणि कटि असि केहरि खाल हायरे ।
अहनिशि बसत 'शुक्ल' उर अंतर लसत युगल पद लाल हायरे ॥

मणि १००

महादेव के चरन चाहता ॥

रही चाह नहिं और किसी की मैं बस निज हिय हरन चाहता ।
नमस्कार कर गन्य अन्य को देव मैं अवढ़र ढरन चाहता ॥
है नहिं किंचित ठौर और को इनको ही उर धरन चाहता ।
जैसे भी पटजाय पटाकर बिकना इनके करन चाहता ॥
मिल करके इनसे मैं जी की जल्द मिटाना जरन चाहता ।
ठुकराकर कैवल्य परम पद रहना इनकी सरन चाहता ॥
इनकी याद इन्हीं की चरचा इन्हें हृदय धर मरन चाहता ।
हो श्रद्धा संयुक्त 'शुक्ल' सच पद पंकजपर परन चाहता ॥

मणि १०१

महादेव सा सखा सुना नहिं ॥

संपति के सैकड़ों दीखते विपति काल का सखा सुना नहिं ।
संकट लखे बिनाहिं बुलाये आवे जोधा सखा सुना नहिं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीन मलीन अधीन व्यक्ति से आप मिले आ सखा सुना नहिं ।
अगति अनाथ अपाहिज जिससे अमित प्रेम पा सखा सुना नहिं ॥
हर हमेश हित चिंतक हर का हर हालत हा सखा सुना नहिं ।
अपनी राग भुलाय स्वजन की समुद गीत गा सखा सुना नहिं ॥
वर्तमान क्या भूत काल में भी ऐसा था सखा सुना नहिं ।
मुझसा गया बिता प्राणों सा "शुक्ल" जिसे भा सखा सुना नहिं ॥

मणि १०२

महादेव छोरना न जानें ॥

बाँह गहे की लाज इन्हें है लगा नात तोरना न जानें ।
लग जाने के बाद किसी से फिर ये मन मोरना न जानें ॥
स्वाभाविक सुधार करना है भाग्य कभी फोरना न जानें ।
पार किया करते कितनों की पर किश्ती बोरना न जानें ॥
दीन-मलीनों से इनसा कोइ और नात जोरना न जानें ।
स्वजनों का अति आसानी से चित्त अन्य चोरना न जानें ॥
प्रेमिल को पाकर घुलमिलि कोइ प्रेम सुधा घोरना न जानें ।
आर्त भक्त के लिये आशुहीं "शुक्ल' और दोरना न जानें ॥

मणि १०३

महादेव तैं मोर मैं तोरा ॥

यह अटूट संबंध आदिका कल्पित नहीं कथानक कोरा ।
कौन बता सकता है इसको कब किसने आगे बढ़ जोरा ॥
कभी उतरता नहीं चित्त से वह तेरा मुख मंजुल गोरा ।
नहीं भूलता कभी भुलाये सुभग हँसोर सुभाव सुभोरा ॥
इन्हीं गुनों से तो तैंने बस मम चुटकी बजाय चित चोरा ।
हुलसाया करता हरदम हिय जो तूने सनेह शुचि घोरा ॥
निकल कहाँ पाता है अब मन तैंने प्रेम सिंधु मधि बोरा ।
तूने किया किनारा किंचित "शुक्ल" तो प्राण वचे नहिं मोरा ॥

मणि १०४

महादेव के चरन परे पर ॥

होता अति संतोष मुझे है सेवा इनकी करन करे पर ।
बना हुँ मैं निर्द्वंद लोक द्वय सच मानो इनके हि गरे पर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिक्र रही नहिं पास फिक्रकी सिर समर्थ कर कमल धरे पर ।
जरनि मिटी जी की जन्मनि की इनके रंच वियोग जरे पर ॥
हो सा गया कृतार्थं हुँ केवल इनके अवढर ढरनि परे पर ।
भरना शेष न कुछ उर अंतर भलि विधि भवपद भक्ति भरे पर ॥
तरने की मिट गई साध सब इन मृदु तलुअन केहि तरे पर ।
मुक्ति निछावर "शुक्ल" करूँ मैं धर प्रभु पग शिर मुदित मरे पर ॥

मणि १०५

महादेव की शरण चलो सब ॥

हिचको मत मैं कहता तुमसे चलो बढ़ो बेखौफ खलो सब ।
कोई छल नहिं होना तुमसे रुको नहीं जग जनन छलो सब ॥
करेंगे तुमसे प्रीति चलो तो जरके सदा अनीति फलो सब ।
पापबुद्धि हो दूर डरो मत चलो न साँचे दुरित ढलो सब ॥
बन जाओगे नाम परायण चल देखो प्रभु नाम न लो सब ।
जलन सभी मिट जाय तुम्हारी चलो भि तो त्रय ताप जलो सब ॥
हर मुराद पूरी हो निश्चय लोक द्वय से हाथ मलो सब ।
वन विनीत मन मुदित "शुक्ल" करि चलो बेगि निर्भीक भलो सब ॥

मणि १०६

महादेव हर कहूँ हमेशा ॥

सब साधन शिरमौर सदा का इसे मानकर कहूँ हमेशा ।
हो इससे कल्याण सर्वथा उर प्रतीतिभर कहूँ हमेशा ॥
हो न जाय नामापराध कुछ बस इससे डर कहूँ हमेशा ।
बाहर फिरूँ बजार भटकता या बैठा घर कहूँ हमेशा ॥
रुचि से अनरुचि सेहि सविधि या होय अविधि पर कहूँ हमेशा ।
होती अनुकंपा विशेष तब नयन नीर झर कहूँ हमेशा ॥
अर्थ धर्म नहिं काम मोक्ष कुछ चाहूँ यह वर कहूँ हमेशा ।
कहत कहत घुट जाय "शुक्ल" दम जाऊँ मैं मर कहूँ हमेशा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०७

महादेव मै समझ न पाता ।।

है वह क्या विशेषता मुझमें कैसे हूँ मैं तुमको भाता ।
मुझ मदान्ध को गौर किये भी रंचक गुण निज में न दिखाता ।।
दोषों की कुछ बात न पूछो मूर्तिमान वह ही समझाता ।
पर तुमको भ्रम हुआ सो कैसे बस यह सोच चित्त चकराता ।।
समझे अति उदार गुन तुम्हरे समाधान ततकाल हो जाता ।
जिससे ही प्रेरित हो तुमने जोरा परम अधम से नाता ।।
जिसके किये विवश मैं देखूँ देते दिव्य देन नित दाता ।
"शुक्ल" सपदि पद पीठ शीश धरि कहि धनि धन्य धन्य पुलकाता ।।

मणि १०८

महादेव समता सिखलाओ ।।

सीखी और निकम्मी सिख जो सर्वेश्वर सो सद्य भुलाओ ।
शुभ समता का पाठ पढ़ाकर योग सिद्धि का मार्ग सुझाओ ।।
दुख की हालत सुख समृद्धि में हमको देव तटस्थ बनाओ ।
किसी परिस्थिति का हम पर नहिं किसी प्रकार प्रभाव जनाओ ।।
इष्ट अनिष्ट असाधु साधु औ शत्रु मित्र का भेद नशाओ ।
छन विनाशि जंजाल जगत का है यह भली भाँति समझाओ ।।
करके अति अनुकंपा प्रभुवर निजपद प्रति अनुराग बढ़ाओ ।
"शुक्ल" शरण स्वीकार शीघ्र करि जीवन को कृत कृत्य कराओ ।।

मणि १०९

महादेव मणिमाला गाओ ।।

सादर सबहि बुलाता परिचित साथहि अन्य अपरिचित आओ ।
करो नहीं संकोच रंचभी करि विनती सब सुजन बुलाओ ।।
हों विश्वास युक्त प्रेमी जन उनको ही बस साग्रह लाओ ।
तन विभिन्न मन एक बनाकर करि संयुक्त गान सुख छाओ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथवा बैठि इकंत भावभरि आवृति करि करि अश्रु बहाओ।
वे तुम्हरे तुम उनके बेशक कभी न यह संबंध भुलाओ॥
झट हो जाँय फिदा तुम पर वे मेरी बातों को पतिआओ।
मुझे ठौर नहिं मिले नर्क में "शुक्ल" जो यूँ उनको नहिं पाओ॥

दोहा

विविध मर्ज का बोध हो विविध मर्ज के तर्ज।
ग्रसित हुआ किस मर्ज यह-मैं मैं रहा जो गर्ज॥
विविध मर्ज के नाश हित - विविध तरह के तर्ज।
मैं मैं जो गर्जे वृथा जाय सो कैसे मर्ज॥
और बताओ कौन से - करूँ अर्ज निज गर्ज।
"शुक्ल" बचाना मर्ज से - देव आपका फर्ज॥
दिया देह - बुधि और भी साधन सो सिर कर्ज।
"शुक्ल" उतारो बस उसे करो समर्पण दर्ज॥

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशीधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
सोलहवीं माला समाप्त।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवेनमः *

महादेव मणिमाला

सत्रहवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

मारा हूँ मुसीबत का सैकड़ों सहस्रों लाखों,
दाया उर धारो यार और अब मारो ना।
जारा हूँ वियोग का तुम्हारे हि जुगादि से ही,
उचित न होगा जरे को जी और जारो ना॥
हमको नहीं तो कुछ दैव को डराव भाई,
जानके गरीब ऐसा गजब गुजारो ना।
'शुक्ल' सुविचारो शौक संयुत सँवारो जिसे,
जग में पसारो कीर्ति कानन उजारो ना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्रहवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मंगल जग जाने ॥
मूर्तिमान मंगल कह इनको विविध भाँति से वेद बखाने ।
शास्त्र पुराण एकमत होकर गावें इनके मंगल गाने ॥
जीव अनन्त अनादि काल से इनसे मंगल पाय अघाने ।
मंगल की तलाश में भटकें कितने इनको बिन पहचाने ॥
इन बिन मंगल की वे कल्पना करते जो भलिविधि भ्रमसाने ।
पाते दरस नहीं मंगल का तरस-तरस रह जाँय दिवाने ॥
इनका नाम-धाम-गुन मंगल इनके चरित सुमंगल मानें ।
इनकी शरण महा मंगलमयि "शुक्ल" हो परमानंद समाने ॥

मणि २

महादेव खुशहाल करो सब ॥
मुझे यथारुचि रखो शेष तो सद्यः मालामाल करो सब ।
सब विधि से सम्पन्न सब तरह सुखी सपदि कंगाल करो सब ॥
हृष्ट-पुष्ट सुन्दर बलिष्ठ ये दिखते नर कंकाल करो सब ।
मातृ-पितृ सेवी सुयोग्य शुचि सर्वेश्वर अब बाल करो सब ॥
सुहृद सुशील सुसेवक शुभ मति सज्जन सभ्य सुचाल करो सब ।
भरके भाव उदार भलीविधि हिय के अतिहि विशाल करो सब ॥
नव जीवन इनका जगदीश्वर नव साँचे में ढाल करो सब ।
दशा देख दयनीय "शुक्ल" सच करके दया निहाल करो सब ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव को सुमिर सनेही ।।

तुम्हें खबर है नहीं देह यह मिली निमित्त है सुमिरन केही ।
सुमिरन कर सुखसुभग लूटते सर्वकाल सच त्यागी गेही ।।
वर्णाश्रम अधिकार भेद नहिं सुमिरन में तत्पर होते ही ।
लाभ उठाता अवशि अलौकिक प्रीति युक्त कर सुमिरन जेही ।।
सब साधन शिरमौर समझ यह भरी सिद्धि सब सुमिरन में ही ।
सुमिरन कर सश्रद्ध कितने ही बन जाते ततकाल विदेही ।।
अर्थ-धर्म शुभ काम मोक्ष का इस युग में वरदाता ये ही ।
पूर्णकाम में बना सद्य ही "शुक्ल" मान लो सुमिरन से ही ।।

मणि ४

महादेव हर हर कहता हूँ ।।

यहाँ वहाँ फिरते अबाध गति सचमानो दर-दर कहता हूँ ।
अपने ही नहि जहाँ-जहाँ भी जाता मैं घर-घर कहता हूँ ।।
हो किंचित पीड़ा न किसी को इससे अति डर-डर कहता हूँ ।
अखिल विश्वजन के प्रति मन में सुसद्भाव भर-भर कहता हूँ ।।
होती कृपा विशेष उस समय नयन नीर झर-झर कहता हूँ ।
बनकर भाव विभोर "शुक्ल" प्रभु पद पंकज पर-पर कहता हूँ ।।

मणि ५

महादेव है वदा या नहीं ।।

बतलाओ पथ परम शुभद निज गहादेव है बदा या नहीं ।
विश्व विभूति त्यागि पद रति निज चहादेव है बदा या नहीं ।।
जमा कुतरु वासना हृदय मम ढहादेव है बदा या नहीं ।
दावानल बन सद्य दुरित वन दहादेव है बदा या नहीं ।।
कर बकवास बन्द हर-हर बस कहादेव है बदा या नहीं ।
करि वर वृष्टि सुप्रेम सुधा की नहादेव है बदा या नहीं ।।
लाकर बाढ़ सनेह सिन्धु में बहादेव है बदा या नहीं ।
आये द्वन्द सभी हँसते ही सहादेव है बदा या नहीं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर हालत हर मस्त बनाकर रहादेव है बदा या नहीं ।
और जो तुम समझो सो "शुक्ल" का लहादेव है बदा या नहीं ॥

मणि ६

महादेव अस कृपा करो तुम ॥

समझो अपना ही तुम मुझको सह परिजन धन धरनि घरो तुम ।
होते अति समर्थ लख मेरे दोष दुरित को नहीं डरो तुम ॥
देख दशा दयनीय हमारी अवढर ढरन विशेष ढरो तुम ।
जलता जान त्रिताप ज्वाल से दयावारि झट देव झरो तुम ॥
दुख की खान अज्ञान जनित यह द्वैत भाव दुर्बुद्धि हरो तुम ।
बदले में अविलम्ब अवश्यहि शुभ समता सद्बुद्धि भरो तुम ॥
करो अखण्ड निवास हृदय मम छनभर को भी नहीं टरो तुम ।
"शुक्ल" धरूँ पदशीश विनत बन मेरे सिर कर कमल धरो तुम ॥

मणि ७

महादेव कल शाम मिले थे ॥

वादे के अनुसार सत्य ही वे प्राणेश्वर माम मिले थे ।
मानो मत मानो इससे क्या आकर मेरे धाम मिले थे ॥
वासों उछल रहा था तब दिल जबकि नयन अभिराम मिले थे ।
ऐसे नहीं जरूरी सा था लेकर के जो काम मिले थे ॥
बतलाऊँ क्या तुम्हें बनाकर जो सुन्दर पैगाम मिले थे ।
मेरी शुभ इच्छा करने को पूरी आप तमाम मिले थे ॥
तरह-तरह के तरह-तरह से देने मुझे अराम मिले थे ।
पूर्ण काम करने को ततछन "शुक्ल" बे प्राणाराम मिले थे ॥

मणि ८

महादेव कर कमल धरे सिर ॥

धनि वह दिन वह घरी धन्य अति जब इन निजकर छाँह करे सिर ।
यह कहने की बात न तबसे फिर त्रिताप के ज्वाल जरे सिर ॥
जनम-जनम जुग-जुग के जोरे आप पाप के भार टरे सिर ।
अनायास बिन किये कराये उच्चकोटि के पुण्य परे सिर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुकम्पा वर बीज पाय बस चारू चारि शुभ सुफल फरे सिर ।
अहनिशि अंतरिक्ष से अद्‌भुत अनुपम पुष्प अदृश्य झरे सिर॥
हो न सशंकित स्वाभाविक यह देवन द्वारा चमर ढरे सिर ।
परा रहे यह "शुक्ल" चहूँ मैं इन मृदु तलुअन केहि तरे सिर॥

मणि ९

महादेव हर-हर कर हर दम ॥

बाहर फिर हर-हर करते ही गूँजा डाल इससे घर हर दम ।
हो करके पुलकित हरषित हिय प्रेमवारि नयनन झर हर दम॥
मत कर सहन कड़ा रुख करके बाधक तत्वों से टर हर दम ।
हो न जाय कुछ अहित किसी का अधिकाधिक इससे डर हर दम॥
सबकी कर कल्याण कामना सब प्रति शुभद भाव भर हर दम ।
आवे विपति अनन्त अपन पर सह सहर्ष धीरज धर हर दम॥
आपदग्रस्त अन्य को लखतहि कर सहाय दिल से ढर हरदम ।
लख हर को हर रूप "शुक्ल" तू हर के पाँव पुलकि पर हर दम॥

मणि १०

महादेव साहस भल भर दो ॥

देर करो मत हे देवेश्वर ! दिल की दुर्बलता द्रुत हर दो ।
दहले नहीं शत्रुबल लखकर ऐसा मम बलिष्ठ मन कर दो॥
हैं ही क्या षट रिपुगन सोचो दे निज शक्ति देववर ! दर दो ।
हो आऊँ अविलम्ब अभय मैं शिर पर अभयंकर कर धर दो॥
उड़ूँ उड़ान अबाध अर्हनिशि अद्‌भुत आप लगा वह पर दो ।
चख पाता विरला ही कोई वह मुँह लगा चखन को फर दो॥
रह देखा सब ठौर काल बहु अब आश्रय अपने ही घर दो ।
माँगूँ कोई वर न कभी भी आज "शुक्ल" मोहिं यह वर वर दो॥

मणि ११

महादेव जो देंय को देई ॥

पाते अधिकारी सबसे ये हम जैसों को देंय को देई ।
जानत भये अपात्र-अभागी अहनिशि ये तो देंय को देई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसे तरसते ज्ञानी-योगी सचमानो सो देंय को देई ।
दबे-दबे दिल देय न जानें उत्साहित हो देंय को देई ॥
आश्रित नर का बड़ी शौक से भार सभी ढो देंय को देई ।
उसके उर की भरी गंदगी निज हाथों धो देंय को देई ॥
उसकी सुमति सनेह सुधारस भलीभाँति मो देंय को देई ।
"शुक्ल" होय अनुकंपा परवश बना लोक दो देंय को देई ॥

मणि १२

महादेव बन बिजली चमकें ॥

वादल बने भयानक गरजें उमड़ि-घुमड़ि बरसें फिर जमकें ।
धूल बने सहते प्रहार पग रत्न बनें सिर राजन दमकें ॥
बेला बनें चमेली बनते बनें गुलाब गमागम गमकें ।
दिखला कला मुग्ध करते सब बन नर्तकी छमाछम छमकें ॥
संत बने शुभ मार्ग सुझावें बन असंत पथ गहते भ्रमकें ।
शांतिकाल बन शान्ति बिराजें रण बरसें बनि गोला बमकें ॥
यह वे बने बने वह भी वे सबमें सविधि रहें वे रमकें ।
"शुक्ल" शास्त्र सिद्धान्त सत्य-सो बतलाते हैं वे ही हमकें ॥

मणि १३

महादेव गुन गाया कर तू ॥

बस इतना ही करके केवल उनको अतिशय भाया कर तू ।
करत भये गुनगान अवश्यहि उर विशेष उमगाया कर तू ॥
होकर प्रेम विभोर मेरे प्रिय तनका भान भुलाया कर तू ।
करते हों गुनगान सुजन जहँ श्रवणेच्छुक बन जाया कर तू ॥
सुनकर कलित कीर्ति प्रभुवर की नयनन नीर बहाया कर तू ।
पाते जिसे न ज्ञानी-योगी वह प्रसाद नित पाया कर तू ॥
जिसकी जाय अघान कभी नहिं उस आनंद अघाया कर तू ।
"शुक्ल" सदा हुलसाया कर तू छनप्रति छन पुलकाया कर तू ॥

मणि १४

महादेव से लगा मेरा दिल ॥

काटी कस कर चुटकी इनने तब सोते से जगा मेरा दिल ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके पहले दिली दुश्मनों ने बहुतेरा ठगा मेरा दिल ॥
जरा प्रलोभन दिया उन्होंने की बस तुरतहि डगा मेरा दिल ।
परीशान खुब होय चुका था पा-पा इनसे दगा मेरा दिल ॥
पाकर देव इशारा पीछा छुड़ाके जस तस भगा मेरा दिल ।
अब तो सच मानों रातों दिन रहता इन पर टँगा मेरा दिल ॥
इनके ही सुमधुर सुंदर वर प्रेम सुधारस पगा मेरा दिल ।
समझे एकमात्र इनको ही "शुक्ल" ये अपना सगा मेरा दिल ॥

मणि १५

महादेव के जनत ऽ कैसों ॥

वनि जातै कुल काम ततक्षण जन इनकर जौ बनत ऽ कैसौं ।
अेतौ गने हयेन निज तोहके तू अेनके कुछ गनत ऽ कैसौं ॥
मानैं महामान्य आपन करि तोहऊ अैसै मनत ऽ कैसौं ।
तोहसे करैं सनेह सदा से तू सनेह में सनत ऽ कैसौं ॥
माँगे देंय दयालु माँगि झट प्रेम भंग छकि छनत ऽ कैसौं ।
सेवा सुयश गान संतत हो अैसन फनवन फनत ऽ कैसौं ॥
टरी न देव शरण से सौ जुग ठीक ठान अस ठनत ऽ कैसौं ।
लागत ताप न तनिक "शुक्ल" तन कृपा तान सिर तनत ऽ कैसौं ॥

मणि १६

महादेव पर मरब जरूरी ॥

फल की किंचित चाह नहीं पर करवावें सो करब जरूरी ।
भरे अनंत दोष हैं तो भी टारें उससे टरब जरूरी ॥
सद्गुण अन्य हों न हों भय नहिं हृदय भक्ति भव भरब जरूरी ।
ये स्वामी मैं सेवक इनका रखना यह शुभ गरब जरूरी ॥
निर्भयता स्वाभाविक सुन्दर-द्विज हरजन से डरब जरूरी ।
हो न अधीर आप आपति में परपीड़ा लखि ढरब जरूरी ॥
तरे न अब तक नहीं सही जी पा नर तन अब तरब जरूरी ।
"शुक्ल" अनन्य भाव भरि भलि विधि प्रभु चरनन पर परब जरूरी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १७

महादेव की कृपा का खेला ॥

देखा खूब खुले दृग मैंने सच मानो ई कृपा का खेला ।
दीख रहा जीवन में मेरे सबका सब जी कृपा का खेला ॥
भरे जो थे व्यक्तित्व में मेरे गये छिद्र सी कृपा का खेला ।
करतल गत कर दिया लायकर भोग योग भी कृपा का खेला ॥
अनायास बिन साधन पाधन दिव्य देन दी कृपा का खेला ।
शोक-मोह-मद-द्रोह-दोष सब हर हठात् ली कृपा का खेला ॥
बिचरूँ मैं अलमस्त बना बस प्रेम भंग पी कृपा का खेला ।
रोना मिटा "शुक्ल" हँसता अब हा-हा ही-ही कृपा का खेला ॥

मणि १८

महादेव का स्वभाव भोला ॥

भोलेपन की बात आपके शास्त्र-पुराण विविध विधि बोला ।
बन जाते तब और बताऊँ रख लेते जब गहरा गोला ॥
आराधक चढ़ते विमान-गज आप बैल चढ़ि करते डोला ।
फिरें दिगंबर वेष बाँटते रिधि-सिधि भक्तन को भरि झोला ॥
बंद पड़ा कितनों का किंचित् अनुकंपा करि भाग्य को खोला ।
सेवक सुखी निरोग आपके फिरते चक्क बनाये चोला ॥
इनके ही द्वारा सब उनकर सब दिन शुभद व्यवस्था होला ।
मैं तो बिका हाथ हूँ इनके "शुक्ल" बड़ी कीमत दे मोला ॥

मणि १९

महादेव कह-कह सुख पावा ॥

अपनी रुचि रद करि बस इनकी रुचिनुसार रह-रह सुख पावा ।
चाह चुका अपनी—ये चाहें मात्र वही चह-चह सुख पावा ॥
जिधर करें प्रेरित उरप्रेरक पथ वो ही गह-गह सुख पावा ।
इनकी कृपाकोर ज्वाला में दुरित दोष दह-दह सुख पावा ॥
लेकर नाम कुठार-वासना कुतरु मूल ढह-ढह सुख पावा ।
आई दैववशात् आपदा हँसते ही सह-सह सुख पावा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आये बाढ़ प्रेम सागर में बेसुध बन बह-बह सुख पावा ।
जो न जुरे इनको उनको जी "शुक्ल" सत्य वह-वह सुख पावा ॥

मणि २०

महादेव पग परा रहूँ बस ॥

साधन अन्य न हों-यत् किंचित् सेवा इनकी करा रहूँ बस ।
सम्हले नहिं संतता-दास के शुभ साँचे में ढरा रहूँ बस ॥
करना क्या गुन पुंज लुंज को देव भक्ति से भरा रहूँ वस ।
फल क्या चारि सुफल पाने से नेह नवल फल फरा रहूँ बस ॥
इन्हें याद करके सनेह सह नयन नीर नित झरा रहूँ बस ।
करें बलात् दूर इनसे जो उन तत्वों से टरा रहूँ बस ॥
डर क्या भला काल से यम से भव भक्तन से डरा रहूँ बस ।
मुक्ति चहूँ नहिं-धरे गोद सिर "शुक्ल" मोद भरि मरा रहूँ बस ॥

मणि २१

महादेव का मुख देखा तब ॥

मंजु मुखार विंद कोई के जचते नहिं सचमुच मुझको अब ।
ज्यों नक्षत्र समुदाय हो—इनके चंद्रानन समक्ष लगते सब ॥
अनुपस्थिति में जचें, उपस्थित होते ही जाती शोभा दब ।
लेती छोप बेतरह सबकी छबको तुम मानो इनकी छब ॥
संभव कहाँ मिसाल गाल की दंत मुक्ति का माल लाल लब ।
मतवारे रतनारे नैना बंक भृकुटि नासिका रही फब ॥
ललचाया करता रह छन में किसविधि से देखूँ कैसे कब ।
निरखत-निरखत मरूँ इन्हें ही "शुक्ल" लगा यह ढब मेरे रब ॥

मणि २२

महादेव कल्यान मूर्ति हैं ॥

खोज थका मैं देख खोज तू ऐसी नहिं कहुँ आन मूर्ति हैं ।
इनका करूँ बखान किस तरह ये अनुपम रसखान मूर्ति हैं ॥
आप अमान मान दें सबको सरल स्वभाव सुजान मूर्ति हैं ।
जगकर्ता भर्ता संहर्ता व्यापक जक्त जहान मूर्ति हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वमान्य-विश्वेश-विश्वपति मंजुल महा महान मूर्ति हैं ।
लख उमंग में भर जाता मैं अस अद्भुत उमगान मूर्ति हैं ।।
आ जाती मस्ती लखते ही ऐसे ये मस्तान मूर्ति हैं ।
"शुक्ल" भरें आनन्द दास उर अस आनंद निधान मूर्ति हैं ।।

मणि २३

महादेव मस्ती भल भर दी ।।

कर न जाय कल्पना कि जैसी दृष्टि दयामयि अनुपम कर दी ।
लख दयनीय दशा मेरी ये अवढर ढरनि अचानक ढर दी ।।
जलता जान जन्म जन्मों से शीतल कृपावारि झट झर दी ।
जान अनाथ नाथ जगके ये मम सिर भुज समर्थ निज धर दी ।।
करके दया दयालु देववर मेरी सकल दीनता दर दी ।
अब की नहीं न जाने कब की पीछे परी हीनता हर दी ।।
अनुकंपा वश ही अयाचते ममहित चारु चारि फल फर दी ।
पहुँचा पास शुक्ल" उड़कर झट अद्भुत लगा धन्य इन पर दी ।।

मणि २४

महादेव के पास जो पहुँचा ।।

हुआ निराश नहीं इनसे वह कभी लगाये आश जो पहुँचा ।
कर निहाल दें सद्य-दैव का मारा कोई कास जो पहुँचा ।।
पाता वह अमोघ आशुहिं फल दोष दुरित को नाश जो पहुँचा ।
होती बड़ी कद्र उसकी तो बन कोइ इनका दास जो पहुँचा ।।
गदगद हो जाते पाकर के मुझसा प्रेमी खास जो पहुँचा ।
आता "शुक्ल" लौटकर फिर नहिं पाता निकट निवास जो पहुँचा ।।

मणि २५

महादेव ही स्वाद हैं साहब ।।

वस्तु व्यक्ति सबके सब ये ही, यही दोष गुन आद हैं साहब ।
चेला बन ये करें खुशामद यही बने उस्ताद हैं साहब ।।
करते बने गुलाम गुलामी ये ही तो आजाद हैं साहब ।
समझो हर्ष महान इन्हें ही ये ही विषम विषाद हैं साहब ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुलझी सभी समस्या ये ही ये ही विपुल विवाद हैं साहब।
यह वह सब ये ही हैं-इसमें एक नहीं अपवाद हैं साहब॥
इस दुनिया के रूप में सचमुच बन ये ही आबाद हैं साहब।
रखते याद जो इनकी, उनकी करते रहते याद हैं साहब॥
पड़कर इनके फेर में कितने बने हुए बरबाद हैं साहब।
"शुक्ल" हुए दीवाने फिरते इनके ही उन्माद हैं साहब॥

मणि २६

महादेव दुर्वृत्ति गई नहिं॥

आयु गई दीखती देवता पर छिछोरि वासना छई नहिं।
यह वह बना पता नहिं क्या-क्या बन पाया मन निजी जई नहिं॥
भोग लिप्त चितवृत्ति बनी है किंचित् प्रेम प्रवृत्ति भई नहिं।
दई देन बहु किन्तु चहिअ तस चरन कमल रति देव दई नहिं॥
कहते लोग भक्त सुन लेता हिय में मेरे भक्ति हुई नहिं।
बन अनाथ भोगता भटकता सब समर्थ की शरण लई नहिं॥
द्वन्द मई दीखती ये दुनिया शोक दिखे सब तुमहिं मई नहिं।
"शुक्ल" गिनो दासानुदास निज विनती है यह एक कई नहिं॥

मणि २७

महादेव मस्ती भर देहलन॥

कौन करे कल्पना कि जैसन आप कृपा हम पर कर देहलन।
अनायास अनुकंपा परवश अवढर ढरनि देव ढर देहलन॥
तापित जानि त्रिताप ज्वाल से दयावारि झर झर झर देहलन।
हो गैली निहाल ततछन ही जब सिर वरदहस्त धर देहलन॥
अनके देखि सहायक रिपुदल दुम दबाय चुपकै टर देहलन।
निज प्रभाव से ही जुग-जुग कर मम द्रुत दोष दुरित दर देहलन॥
शरणागत स्वीकार सद्य करि करि सार्थक काया नर देहलन।
"शुक्ल" चाह नहिं रंच रही कुछ अस अद्भुत अभीष्ट वर देहलन॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २८

महादेव की कृपा जो करै ।।
सो सब थोड़ा ही समझो तुम चमत्कार यह कौन नो करै ।।
अधिकारी सिरमौर सद्य ही अनधिकारि अतिहीन को करै ।।
जनम-जनम के मलिन व्यक्ति को पावन परम स्वहस्त धो करै ।
सूखे हिय को हराभरा यह प्रेम मधुर फल बीज वो करै ।।
नीरस जन को सरस सत्य ही नेह सुधा शुभ सुरस मो करै ।
दानव-देव-नाग-किन्नर-नर कर न सके यह आशु सो करै ।।
जो करना अभीष्ट हो इसको देव-देव नहिं चहें तो करैं ।
"शुक्ल" अपेक्षित इसे न साधन अनायास अनुकूल हो करै ।।

मणि २९

महादेव के माने समझो ।।
अति गंभीर भाव इनका है मेरे सुहृद सयाने समझो ।
वैसे समझ कौन सकता है समझा देंय सो जाने समझो ।।
मैं क्या जानूँ इनको ये क्यों मुझको लगे बताने समझो ।
पर आर्कांषित हूँ इनके प्रति बिना इन्हें पहचाने समझो ।।
जरा हुई विस्मृति इनकी की लगते प्रान पिराने समझो ।
लगता है जैसे हों मेरे रग-रग यही समाने समझो ।।
इनमें ही बस वड़े मजे में हम तो रहें हिराने समझो ।
खोजे मिलते नहीं "शुक्ल" को हैं दिल में हि लुकाने समझो ।।

मणि ३०

महादेव के चरन धन्य हैं ।।
वंदनीय आराधनीय ये सेवनीय शुचि महामन्य हैं ।
अखिल विश्व सिरताज भ्राजते सुरसमाज मह अग्रगन्य हैं ।।
कोमलता की सींव सुहावन दीखें इनसे नहीं अन्य हैं ।
वर्णित वेद-शास्त्र अनुमोदित पुनि पुराण भलि-भाँति भन्य हैं ।।
जारत पाप त्रिताप निवारत फारत फंदहि जगत जन्य हैं ।
सच मेरे सर्वस्व "शुक्ल" ये हम सेवक इनके अनन्य हैं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३१

महादेव जो करैं सो ठीकै ॥

अवढर ढरन कहाते ही हैं हम जैसों पर ढरैं सो ठीकै ।
विश्व विदित वरदाता हैं ही वरदहस्त सिर धरैं सो ठीकै ॥
जलता जान त्रिताप ज्वाल जन दयावारि झट झरैं सो ठीकै ।
अनुकंपा करके अहैतुकी भक्ति हृदयमम भरैं सो ठीकै ॥
अति उदार हैं बिन चाहे ही चक्क चारिफल फरैं सो ठीकै ।
इनसे प्रबल प्रेरणा पा हम दोषों से द्रुत ढरैं सो ठीकै ॥
इनके नाम चलत चाकी में दुरित दाल अस दरैं सो ठीकै ।
इनसे श्रेष्ठ जान इनके जन करत अवज्ञा डरैं सो ठीकै ॥
बन कृतज्ञ शत सहस बार हम पद पंकज पर परैं सो ठीकै ।
"शुक्ल" मधुर मुसकान निरखते हम प्रसन्न मन मरैं सो ठीकै ॥

मणि ३२

महादेव से जो हम सीखा ॥

है पर्याप्त हमारे हित में तुम भलेहि समझो कम सीखा ।
प्रभुपद धूलि लगाव दृगन में मिले प्रकाश मिटे तम सीखा ॥
कर बकवास बंद हर हालत करना हमदम हर बम सीखा ।
रज्जु सर्प मृगजल जैसा ही यह संसार निरा भ्रम सीखा ॥
कुछ भी रहे जाय कुछ भी या करना रंच नहीं गम सीखा ।
कुछ भी बने बिगड़ जाये कुछ रहना मस्त सदा सम सीखा ॥
जो है सो बस-वही-उसी का-कहना भूलि नहीं मम सीखा ।
बात तत्व की "शुक्ल" आप वह बन जगरूप रहा रम सीखा ॥

मणि ३३

महादेव जग के उपकारी ॥

करते हित साधन सब ही का अपन-पराव विभेद बिसारी ।
लगते प्यारे सभी जगतजन यथापितहि संतति लग प्यारी ॥
जानि न जाय दान विधि इनकी पाते अधिकारी नधिकारी ।
सेवक सुखद स्वभाव मनोहर कीरति कलित तिलोक पसारी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवत शरण ताहि अपनावत भावत दीन-अनाथ-दुखारी ।
होते तुष्ट सद्य ही पावत कुछ जल विन्दु पात दुइ चारी ।।
कहि न सिरात सुनत सुख उपजत इनकी अगनित लीला न्यारी ।
हम पर होय कृपालु "शुक्ल" ये आशुलोक-परलोक सँवारी ।।

मणि ३४

महादेव का सुनो सँदेशा ।।

कर आवाज बुलन्द बुलाता सब समीप आ सुनो सँदेशा ।
करो प्रमाद नहीं किंचित् भी करि प्रयत्न धा सुनो सँदेशा ।।
अविश्वास हत्याकारी तज दृढ़ प्रतीति छा सुनो सँदेशा ।
हितकारी हरभाँति मानकर मुदित शीश ना सुनो सँदेशा ।।
दे देगा ततकाल तुम्हें यह नवजीवन सा सुनो सँदेशा ।
हो जाते निहाल वे तुमको सचमुच ही पा सुनो सँदेशा ।।
पा जाते क्या नहीं मान लो तुम्हें हिये ला सुनो सँदेशा ।
चलो "शुक्ल" सब शरण देव की मम विनम्र हा ! सुनो सँदेशा ।।

मणि ३५

महादेव अज अमर सदा से ।।

इनका त्याग-विभूति देख हो नत मस्तक लज अमर सदा से ।
दी है महा मान्यता इनको मिलकर हरि-अज-अमर सदा से ।।
आराधन करते सश्रद्ध नित सब प्रमाद तज अमर सदा से ।
जाकर इनके धाम विनत बन करते हैं हज अमर सदा से ।।
इनके पद की चाह भरे चित लेते हैं रज अमर सदा से ।
करें सुराज स्वर्गपुर सुखमय इनको ही भज अमर सदा से ।।
विचरें चढ़े विमान कृपा से और विशद गज अमर सदा से ।
इनके कर कमलन की छाया "शुक्ल" समुद सज अमर सदा से ।।

मणि ३६

महादेव क्या-क्या नहि देते ।।

पाते रहते तरह-तरह के नित्य पदारथ इनसे केते ।
ये लख भीड़ दहलते नहि जी आवे मंगन चाहे जेते ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जय जयकार मनावें पावें अनचाही-मनचाही तेते।
आते दीन-मलीन बने वे जाते खुश हो मूछें टेंते॥
आश्रित की जर्जर बोझीली नैया ये खुद ही हैं खेते।
सेवक भक्त सुजान जानकर मति भलि-भाँति भक्तिरस भेंते॥
आये दैववशात् दास पर सद्य सभी संकट हर लेते।
"शुक्ल" उठाओ लाभ आपसे हैं इस वक्त खूब ही चेते॥

मणि ३७

महादेव के पायन परिये॥
भाते अन्य न जो दिखलाते जानि वरेण्य इन्हीं को वरिये।
हो श्रद्धा संयुक्त सर्वथा सेवा इनकी निजकर करिये॥
लगा देंय लग जाउँ जिधर से टारें हम ततछन ही टरिये।
इनकी भेंड़ बने नतमस्तक जो भी जिधर चरावें चरिये॥
पा इनसे बल प्रबल उरस्थित रिपु से हो उत्साहित लरिये।
देते रहें दयावश निशि-दिन ले सद्गुण अभिअंतर भरिये॥
इनको ही मनमन्दिर अपने ज्यों धन धरे कृपण त्यों धरिये।
साध बड़ी यह भरी "शुक्ल" हिय धर पद शीश मोदयुत मरिये॥

मणि ३८

महादेव को गुनिजन जानें॥
जान और सकता हि कौन है जो जानें सब विधि सनमाने।
रुचे न वर्णन अन्य किसी का इनको बने विभोर बखाने॥
भावें यही मनावें इनको गावें रुचिर इन्हीं के गाने।
अहनिशि करें अलापा केवल हो तन्मय इनके हि तराने॥
सुधि-बुधि भूले फिरें फलाने पावन प्रेम सुरा शुभ छाने।
तृण सम गिनें त्रिलोक सम्पदा इनके मदके बन मस्ताने॥
किये उपेक्षित मुक्ति विचरते इनके वे दीदार दिवाने।
उनके पद की धूलि प्राप्तकर निजको "शुक्ल" कृतारथ माने॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३९

महादेव बिन को कर धरता ॥
अवढर ढरन बिना बतलाओ मुझपर कौन अनुग्रह करता ।
अनधिकारि सिरमौर समझते ऐसी ढरनि अनोखी ढरता ॥
पावन पतित त्यागि हम जैसे कौन पतित के फेर में परता ।
अनुकम्पा परवश हो केवल मेरे दोष दुरित हठि हरता ॥
जरता जान त्रिताप ज्वाल से मुझपर कृपावारि झट झरता ।
साधन-पाधन किये बिना ही मम उर भक्ति भली विधि भरता ॥
चाहूँ अनधिकार कैसे पर मम हित चारुचारि फल फरता ।
मैं मरता नहिं "शुक्ल" कहूँ सच धन्य देव ! मुझ पर ही मरता ॥

मणि ४०

महादेव की माया सारी ॥
जल से भरी भयावनि सी जो दिखे बदरिया भूरी-कारी ।
सभी सुस्वादु-कुस्वादु वस्तु औ मीठा पानी वो जल खारी ॥
मीठी-कड़वी लगनेवाली कहलाती जो अस्तुति गारी ।
बदसूरत दिखलाती है जो लगती है जो साँचे ढारी ॥
सजे राजसी ठाठ दिखे सो मूर्ति जो दंड-कमंडलु धारी ।
कहलाता नरवीर और जो जाती कही नवेली नारी ॥
पूज्यपाद पंडित जी औ वे सकल प्रजाजन नाऊ-बारी ।
"शुक्ल" जो देखा-सुना जाय सव और नहीं कुछ हलका-भारी ॥

मणि ४१

महादेव दिल के अमीर हैं ॥
अखिल लोक नायक एकाकी बने आप फिरते फकीर हैं ।
इनकी जोड़ नहीं दुनिया में बेमिसाल ये बे नजीर हैं ॥
है स्वभाव भोला अत्यंतहि पर ये विश्व प्रसिद्ध वीर हैं ।
कहलाते त्रिपुरारि तभी तो त्रिपुर नशाये एक तीर हैं ॥
दानव-देव-नाग-किन्दर-नर सब के ही पद पूज्य पीर हैं ।
दान शीलता की मत पूछो देने को रहते अधीर हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गाते गुनानुवाद आपका वेद-शास्त्र-मुनि महा कीर हैं।
पूजे जाते प्रथम "शुक्ल" वे पुत्र आपके बने मीर हैं॥

मणि ४२

महादेव पद शीश घसेंगे ॥

इनका पाय कृपाबल अब हम निज इन्द्रियगन खूब कसेंगे।
पाकर प्रबल प्रलोभन भी नहिं स्वस्थ वृत्ति से रंच खसेंगे॥
जाग्रत की क्या कथा स्वप्न में भी रिपुगन नहिं हमहिं ग्रसेंगे।
मेरे दोष-दुरित-दुख-दारिद लेकर मेरी मौत चसेंगे॥
राग-द्वेष-दुर्भाव आदि सब फिर उपजें नहिं ऐसे नसेंगे।
बदले में उर अन्तर मेरे शुभ सद्गुण-सद्भाव बसेंगे॥
प्रभु की दया दृष्टि होने से हम आशुहिं भव-भक्ति लसेंगे।
रोये "शुक्ल" जन्म कितने ही अब भावी हर जन्म हँसेंगे॥

मणि ४३

महादेव अब गले लगाओ ॥

आखिर क्या विचार तुम्हरा है यह भी तो कुछ मुझे बताओ।
वादे पर वादे कर करके क्यों मुझको इस तरह छकाओ॥
यहाँ रही है बीत जान पर तुम हँस-हँस कर बात बनाओ।
हँसी-हँसी में खेल खतम हो ऐसा न हो बाद पछताओ॥
मेरी लख दयनीय दशा को पिघलो नेक तरस कुछ खाओ।
जली जा रही विरह ताप से आओ मम आतमा जुड़ाओ॥
जानहार जिय जान हृदय-धन धाओ रंच बिलम्ब न लाओ।
देकर "शुक्ल" दरश संजीवन जाते मेरे प्राण बचाओ॥

मणि ४४

महादेव के देखै पाइत ॥

सुन्दर-सुघर सुनी अनके हम लखि रचि आपन आँखि जुड़ाइत।
मिठ बोलनि विख्यात आपकै कहुँ पाइत सुनि श्रवण अघाइत॥
सरल स्वभाव आपकर अद्भुत मिलि पाइत व्यवहार बढ़ाइत।
डारि बदाम लायची-मिश्री अंगूरी भलि भाँग छनाइत॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेवाकरित सनेह सानि शुचि करि मालिश मलि-मलि नहवाइत ।
लाइत रूह गुलाब सुकेसर मिश्रित चन्दन लेप लगाइत ।।
गो दधि-दूध-मलाई संयुत प्रिय पकवान बनाइ जेंवाइत ।
परे मसाले विविध सुगंधित मगही पान पुरान चभाइत ।।
भरे चाव से भले भाव भरि शय्या कोमल दिव्य दसाइत ।
करि मनुहार हजार बार हम निज प्राणेश्वर के पौढ़ाइत ।
बलि जाइत वहुवार "शुक्ल" हम उनपर आपन प्राण लुटाइत ।।

मणि ४५

महादेव भजबे नहिं का रे ।।
अपनाये अगनित दोषन को मूढ़ त्वरित तजबे नहिं कारे ।
करते कुत्सित कार्य कुभागी मन निलज्ज लजबे नहिं का रे ।।
अंतःकरन अनादि काल का मलिन परा मजबे नहिं कारे ।
पाकर शुभ सुयोग सद्‌गुण से "शुक्ल" सद्य सजबे नहिं कारे ।।

मणि ४६

महादेव स्वागत तुम्हार है ।।
आओ देव पधारो दृग मम सुफल होय तुमको निहार है ।
कब से खड़ा प्रतीक्षा में यह पंच प्राण सादर हमार है ।।
तुम्हरे ही अभाव में प्रियतम जीवन सच जचता असार है ।
आते ही तुम्हरे तुरंत ही भरजावे इसमें बहार है ।।
जहाँ मरुस्थल बना वहाँ ही बहने लगे सहस्र धार है ।
मुरझायीं कलियाँ हर गुल की सब खिल पड़ें बड़े सकार है ।।
फिर क्यों देर होय हृदयेश्वर आओ करि विनती स्विकार है ।
"शुक्ल" मिटे यंत्रणा जीव की हो प्रमुदित नित नव विहार है ।।

मणि ४७

महादेव की चाह मुझे है ।।
और चाह चक्कर में डाले लगी खूब यह थाह मुझे है ।
इनकी चाह चुकावे सारी चाह ये भी आगाह मुझे है ।।
इनके चाहे से ही सचमुच मिली ये इनकी राह मुझे है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पथ पर चलते पग-पग पर मिलती शीतल छाह मुझे है ॥
दिखलाती रहती हरिआली हर मौसम-हर माह मुझे है ।
प्रखर धूप-लू-लपट लगे भी होता रंच न दाह मुझे है ॥
गोखुर सा प्रतीत होता सच यह भव सिन्धु अथाह मुझे है ।
"शुक्ल" लुटाना प्राण देवपर भाता केवल आह मुझे है ॥

मणि ४८

महादेव की कथा सुनोगे ॥

अद्भुत अपने ढंग निराली क्या इनकी गुन गथा सुनोगे ।
वरदाता गृहपति जैसे हैं है गृहिणी भी तथा सुनोगे ॥
छोटे बड़े लुटावें जुगकर इनके घर की प्रथा सुनोगे ।
पिये हलाहल जग रक्षा हित गया सिंधु जब मथा सुनोगे ॥
विचरें लिये संग में सब दिन भूतों का भल जथा सुनोगे ।
दानव-देव-नाग-किन्नर-नर-हरि-विरंचि भी यथा सुनोगे ॥
नाचे निखिल विश्व इंगित पर ऐसा है इन नथा सुनोगे ।
"शुक्ल" देव से विमुख देखिजन होती हमको व्यथा सुनोगे ॥

मणि ४९

महादेव भजले भल होई ॥

कबके घुसे कुभागी कितने कर बाहर कजले भल होई ।
पर निन्दा, पर द्रव्य, पर स्त्री, पर पीड़ा तजले भल होई ॥
करते कुत्सित कार्य कोई भी मन निलज्ज लजले भल होई ।
देते देव दया परवश हो ले सद्गुण गजले भल होई ॥
ले निशि दिवस नाम निष्ठायुत मलिनान्तः मजले भल होई ।
सूझे तत्व-लगाय नयन युग श्री गुरुपद रजले भल होई ॥
तन मन की शोभा शतगुन हो भक्ति रत्न सजले भल होई ।
जीवन सफल "शुक्ल" सद्यः हो देव-देव यजले भल होई ॥

मणि ५०

महादेव सा हुआ न होगा ॥

इन सा सचमुच सखा लोक द्वय दीन हीन का हुआ न होगा ।
सुनकर करुण पुकार किसी की तुरत पड़े धा हुआ न होगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाते त्राण आर्तजन जग के जासु शरण जा हुआ न होगा ।
श्रद्धा सहित परोसे जनके पत्र पुष्प खा हुआ न होगा ॥
सेवा करें सनेह सहित सब सुर सपत्नि आ हुआ न होगा ।
जो भी जो माँगे सो पावे करे नहीं ना हुआ न होगा ॥
भोगें भोग भक्तजन विधि-विधि जिससे ही पा हुआ न होगा ।
दानव-देव-नाग-नर जिसकी करें वाह वा हुआ न होगा ॥
हुलसाते पुलकाते सेवक जिसके गुन गा हुआ न होगा ।
मुझ सों को अपनावे ऐसा "शुक्ल" कभी था हुआ न होगा ॥

मणि ५१

महादेव क्या सरदी गरमी ॥

यह क्या वह इस्थिती देववर क्या कठोरता कैसी नरमी ।
भला कौन औ बुरा कौन वह कौन सुकरमी कौन कुकरमी ॥
ज्ञानी कौन कौन अज्ञानी कौन पाप्मा कौन सुधरमी ।
देशी कौन विदेशी को है चीनी कौन कौन वह बरमी ॥
तुम दुख बने तुम्हीं सुख सचमुच समझे बाद बात क्यों भरमी ।
"शुक्ल" अजान जान नहिं पावें जानें इसे तत्व के मरमी ॥

मणि ५२

महादेव की नीति जान लो ॥

अपने ढंग निराली जग में है सो इनकी रीति जान लो ।
कीरति कलित विश्व फैलाई सो सुंदर वर कीति जान लो ॥
एक बान त्रिपुरा सुर जारे जग जाहिर वह जीति जान लो ।
होती हमसे गये बितों पर भी वह पावन प्रीति जान लो ॥
गाते पुलकाती तन-मन को इनकी गुनमयि गीति जान लो ।
अभय बना देती की जाती इनसे अद्भुत भीति जान लो ॥
भरदेती गौरव गरिमा से इनकी मंजुल मीति जान लो ।
इनकी शरण "शुक्ल" होने से मेरी मुदमय बीति जान लो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५३

महादेव मोर का गति होई ॥
लखि आपन आचरन देववर हम संतुलन मानसिक खोई ।
चलूँ राह मनमानी सचमुच पूछन हार यथा नहिं कोई ॥
बतलाना विस्तार वृथा है तुमसे बात न कोई गोई ।
मेरा तो इतिहास जगत का बतला सकता पूछो सोई ॥
उसकी करूँ कल्पना मैं नहिं मेरी कथा न जाने जोई ।
थका हुँ पाप पहार भार से रही न शक्ति कौन विधि ढोई ॥
चपा जा रहा बुरी तरह से कौन सुने केसे हम रोई ।
"शुक्ल" सोच तुम काटोगे ही हम सच विविध बीज यह बोई ॥

मणि ५४

महादेव दुनिया दो रंगी ॥
रंगीनी जिसकी अति अद्‌भुत बतलाओ कैसे को रंगी ।
तुमसा ही था दक्ष रँगा जो या मुझसा बुद्धू जो रंगी ॥
निजी शक्ति दक्षता निजी से दिया कि तुमने बल सो रंगी ।
तुमसे रख अस्तित्व भिन्न निज की तुमसे अभिन्न हो रंगी ॥
रँगी सावधानी से याकी खुद की खुदी खूब खो रंगी ।
बेमन रँगा बेगार सरीखा शुचि सनेह रस मन मो रंगी ॥
रंग पुराने पर ही रंगा या भलिभाँति छेव धो रंगी ।
"शुक्ल" मिल गया भेद तुम्हारा बतला दूँ तुम ही तो रंगी ॥

मणि ५५

महादेव तज किसे सराहूँ ॥
नख से शिख गुन भरा आप में रंच नहीं कज किसे सराहूँ ।
इनका त्याग विभूति देख सब सुर समाज लज किसे सराहूँ ॥
फहराता इनका त्रिलोक में कलित कीर्ति ध्वज किसे सराहूँ ।
आदिकाल से आजतलक भल यश नगार बज किसे सराहूँ ॥
दानव-देव-नाग-किन्नर-नर सविधि इन्हें यज किसे सराहूँ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाते मनवांछित सबके सब इनको ही भज किसे सराहूँ ॥
सफल करें जीवन सब जग जन धारि चरन रज किसे सराहूँ ।
होते शरण "शुक्ल" इनकी, मम गई सुगति सज किसे सराहूँ ॥

मणि ५६

महादेव भज और न कुछ कर ॥
कब के भरे धरे संचितकर लेश न रख कज और न कुछ कर ।
बदले में लेले इनहीं से उर गुनगन गज और न कुछ कर ॥
पर निंदा-परधन-पर दारा-पर पीड़ा तज और न कुछ कर ।
अति अनर्थकारी कुसंग से हो सभीत भज और न कुछ कर ॥
शिष्टाचरण विरुद्ध काज कुछ करत हृदय लज और न कुछ कर ।
संत-स्वगुरु-द्विजदेव केर सिर धारु चरन रज और न कुछ कर ॥
हो विरक्त साधन विभिन्न से शुचि सनेह सज और न कुछ कर ।
पर पुलकित पद कंज "शुक्ल" वस जेहि पूजत अज और न कुछ कर ॥

मणि ५७

महादेव कल कहते थे जी ॥
प्रेमावेश में हि वे प्रभुवर भाव विविध विधि गहते थे जी ।
छन-छन बढ़े नेह सागर मम विसुध बने वे बहते थे जी ॥
होता कभी प्रतीत डूबकर प्रेम सिंधु जनु थहते थे जी ।
सानुराग मैं सुनूँ स्वस्थ हो मात्र यही वे चहते थे जी ॥
आदिकाल से ही मेरे वे वियोगाग्नि में दहते थे जी ।
कहना संभव नहीं मेरे बिन कष्ट यथा वे लहते थे जी ॥
सहना था अनिवार्य करें क्या हो लचार सब सहते थे जी ।
"शुक्ल" करी नहिं जाय कल्पना उदासीन जस रहते थे जी ॥

मणि ५८

महादेव भज बनी न कैसे ॥
छोड़ प्रमाद त्याग आलस सब भजन भाव मन ठनी न कैसे ।
सेवा सुयश गान संभव हो वह फनवन फिर फनी न कैसे ॥
चलने दे चित चिंतन संतत बने नाम कर धनी न कैसे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होने लगा संस्मरण सुंदर कृपा तान सिर तनी न कैसे॥
छूटा जो दुर्भाग्य कुफल से सुसंबंध फिर घनी न कैसे।
घन संबंध भये पर साथहि प्रतिदिन गहरी छनी न कैसे॥
संबंधित होते प्रियतम से मति सनेह शुचि सनी न कैसे।
"शुक्ल" सुलक्षण दीख रहे शुभ मिलन महोत्सव मनी न कैसे॥

मणि ५९

महादेव की दशा सुनो अब॥
पतितोद्धार निमित्त कमर दृढ़ रहे सदा ही कसा सुनो अब।
कभी भूलकर जो जीवन में पद पंकज सिर घसा सुनो अब॥
किसी जन्म में भी उसको फिर भव भुअंग नहिं डसा सुनो अब।
कुंठित शक्ति हो गई इससे मोह ग्राह नहिं ग्रसा सुनो अब॥
इनकी क्रूर दृष्टि पड़ने से सबल शत्रु दल चसा सुनो अब।
अनुकंपा से ही इनके वह दिखे भक्ति भल लसा सुनो अब॥
खुद मस्ती में झूमा करता चढ़ा इन्हीं का नशा सुनो अब।
वाह्य ज्ञान से शून्य "शुक्ल" वह रहे इन्हीं में वसा सुनो अब॥

मणि ६०

महादेव सतगुनी देवता॥
कौन नहीं जानता जगत का जैसे ये अति पुनी देवता।
भरे भूरि संपदा भवन में रहें यथा कोउ मुनी देवता॥
ऐसा संपतिवान व त्यागी हम न कान कोइ सुनी देवता।
इनकी जोड़ न दुनिया में ये अपनी धुन के धुनी देवता॥
इन विशेषताओं से ही तो बन बैठे ये दुनी देवता॥
श्रद्धाभक्ति समेत विश्व सब आराधे जुग जुनी देवता।
उसका भाग्य सराहूँ भलि विधि जो स्वइष्ट इन चनी देवता॥
"शुक्ल" पुजाते अन्य शीश पग आप पुजाते मुनी देवता।

मणि ६१

महादेव के घरे चलो सब॥
फल की चाह नहीं रख चित में करवावें सो करे चलो सब।
हैं टारना चाहते चटपट बुरे काम से टरे चलो सब॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देते हैं सद्भाव सुसद्गुण ले ले उर में भरे चलो सब ।
बदल दिया चाहते हैं जीवन नव साँचे में ढरे चलो सब ।।
पाले साँड़ सरिस चुप हो जब जिधर चरावें चरे चलो सब ।
सुमिरन कर धारा प्रवाह नित हृदय नाम धन धरे चलो सब ।।
करनी कहाँ बन रही वैसी तो भी तारें तरे चलो सब ।
"शुक्ल" कृतज्ञ बने मन में अति पद पंकज पर परे चलो सब ।।

मणि ६२

महादेव चल सोई पट्ठे ।।

हम तुम जब राजी हैं दोनों का करि काजी कोई पट्ठे ।
बाधक तत्व न रहे मध्य कोइ हों बस दो पर दोई पट्ठे ।।
पाय तोर प्रिय प्यार ततक्षण हम स्व हीनता खोई पट्ठे ।
भरि उमंग उर क्षेत्र प्रेमवर बीज ललकि ले बोई पट्ठे ।।
तरसि तरसि रहि जाय गौर से लखहि भाग्य मम जोई पट्ठे ।
लटूँ मिलनानंद अलौकिक विरह भार क्यों ढोई पट्ठे ।।
हुआ नसीब कभी जिनको है यह सुख जाने सोई पट्ठे ।
"शुक्ल" घरी देवता हो धन्य आज यह दोनो मिल इक होई पट्ठे ।।

मणि ६३

महादेव मुख बोल बिलैया ।।

शायद पता नहीं तुझको है वही तुझे यह देह दिलैया ।
इस तन संरक्षण हित तेरे रुचिकर तुझको खाद्य खिलैया ।।
कभी न भूलो बिल्लो रानी वे ही प्रियकर पेय पिलैया ।
जैसे रहें सुरक्षित रखकर वे ही हैं जग जीव जिलैया ।।
भरे छिद्र मन-पट में जितने वे ही उसके चतुर सिलैया ।
वे ही एकमात्र हैं मानो दोषों के दृढ़ खंभ हिलैया ।।
जीवन के दिन चंद चातुरी खतरनाक हो सिद्ध ढिलैया ।
पाते नहीं प्रमादी उनको बैठे बंडा "शुक्ल" छिलैया ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६४

महादेव मन बसे हमारे ।।
देखा करें कार्यविधि मेरी होंय जो मेरे द्वारा सारे ।
अंकित करें समुज्ज्वल को भी और कारनामें कुल कारे ।।
होंय तुष्ट लखि बने बनाये व्यथित देखि जो जाँय बिगारे ।
क्षमाशील होने से प्रायः क्षमा करें अघ अमित अघारे ।।
पर लख निम्न प्रवृत्ति हमारी परीशान से रहें विचारे ।
आराधक इनका इनके बल सकल शत्रुदल सद्य पछारे ।।
इनसे पाय प्रकाश पूर्णतः उर अंतर वर ज्योति पसारे ।
जीवन "शुक्ल" बिताता सुखमय प्रभु प्रसाद मुद मरन सँवारे ।।

मणि ६५

महादेव प्रतिकूल परिस्थिति ।।
बन चकरावें औ पुलकावें बन येई अनुकूल परिस्थिति ।
ये ही हैं कोइ और नहीं जब जाती अक्कल भूल परिस्थिति ।।
वह भी तो येई हैं समझो देती बढ़ा जो तूल परिस्थिति ।
लुंज बना देती सब विधि से जाता जब मैं झूल परिस्थिति ।।
रचके रचना खूब खतम कर देती मिला जो धूल परिस्थिति ।
छोड़ूं किसे गिनाऊँ किसको ये सब ऊल जुलूल परिस्थिति ।।
रंच कृपा की कोर करें बस बने शूल से फूल परिस्थिति ।
सौ की एक "शुक्ल" से सुन लो ये ही हैं सब मूल परिस्थिति ।।

मणि ६६

महादेव जिस रूप में आवें ।।
स्वागत को तैयार सदा मैं रुचिर भयानक दृश्य दिखावें ।
बनकर व्याघ्र फार डारें या गो बन मीठा दूध पिलावें ।।
हिंसक बन हत्या कर दें या बन माता मुद गोद खिलावें ।
उतरावें भद्रा अभद्र से सम्मानित से पाँव पुजावें ।।
शठ सिरताज सिद्ध कर देवें चाहे संत सुसिद्ध बनावें ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भेजें नर्क भोगावें भलिविधि नन्दनवन की सैर करावें ॥
आपति को स्थान कहाँ जब विविध वेष में आप सुहावें ।
जान गये जब इस रहस्य को "शुक्ल" न क्यों हम शीश चढ़ावें ॥

मणि ६७

महादेव कल आये थे जी ॥
बन प्रतिकूल परिस्थिति प्रभुवर चित मेरा चकराये थे जी ।
जबतक जी चाहा तबतक वे मन में द्वन्द मचाये थे जी ॥
करवट बदलाते थे कुछ छन नींद हराम कराये थे जी ।
आसानी से मुझ बुद्धू को माया मुग्ध कराये थे जी ॥
मनरंजन के लिए आपने क्रीड़ा पात्र बनाये थे जी ।
मैं बसन्त क्या समझूँ इसको वे खुद ही समझाये थे जी ॥
कटु प्रतीत होते भी इसमें हित सुस्पष्ट सुझाये थे जी ।
शिरोधार्य कर "शुक्ल" ईशपद शीश मुदित मन नाये थे जी ॥

मणि ६८

महादेव दिलदार दानिया ॥
देखा-सुना और कितने पर ऐसा नहीं उदार दानिया ।
किया नहीं कल्पना जा सके जैसा अमित अपार दानिया ॥
एकबार याचना किये पर देता यह बहुवार दानिया ।
दीनों दुखलीनों का ये ही है इकमात्र अधार दानिया ॥
अधिकारी अन अधिकारी का करता नहीं विचार दानिया ।
कर देता खुशहाल सभी को निज दृगकोर निहार दानिया ॥
आश्रित को अपने अयाच्य कर देता बड़ी बहार दानिया ।
"शुक्ल" न खाली होता मेरा दिया जो भर भंडार दानिया ॥

मणि ६९

महादेव दीदार दिवाना ॥
जँचते नहीं नजर में कोई देखे-सुने जो जाते नाना ।
तुलते नहीं पसंगे में भी इनके कोई सुनो सुजाना ॥
इनसा रूप अनूप विश्व में नहीं किसी का दिखा सुनाना ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनकी छवि इनकी शोभा को कह सकता नहिं कोइ मतिमाना ॥
इनके गुन इनके स्वभाव को संभव नहीं कभी बतलाना ।
लगता प्रान टानने बर बस इनका मन्द-मन्द मुसकाना ॥
होता श्रवन सुखद अत्यन्तहि इनका हँस-हँस बात बताना ।
"शुक्ल" बना हूँ तभी यार सच इसी शमाँ का मैं परवाना ॥

मणि ७०

महादेव कहता सो सुन लो ॥
रखता हो कोई परन्तु मैं हूँ जैसे रहता सो सुन लो ।
रुचता जो मन मित्र को मेरे पथ वोही गहता सो सुन लो ॥
चहते वे जो बिन ननुनच को ही मैं भी चुप चहता सो सुन लो ।
बहा देंय जिस धार आँख कर बन्द हुँ मैं बहता सो सुन लो ॥
फलस्वरूप तुम देख रहे खुद त्रिविध ताप दहता सो सुन लो ।
एक तरह नहिं तरह-तरह की मैं साँसत सहता सो सुन लो ॥
कभी प्राप्त होती है—यह ता-और कभी वह ता सो सुन लो ।
सौ की एक "शुक्ल" सचमुच नहिं क्षणिक शांति लहता सो सुन लो ॥

मणि ७१

महादेव कहता सो सुनलो ॥
रखते हो जैसे तुम मुझको मैं वैसे रहता सो सुनलो ।
जो गहाय देते अन्धे को पथ वो ही गहता सो सुनलो ॥
हितकारी जो समझ चहाते वस्तु वही चहता सो सुनलो ।
तुम्हरे प्रेम प्रवाह बहाये तुम्हरे ही बहता सो सुनलो ॥
तुम्हरे नाम समृद्ध अग्नि में दोष दुरित दहता सो सुनलो ।
तव विधान अनुसार दुःख-सुख आये हँसि सहता सो सुनलो ॥
समझाये तुम्हरे ही समझूँ मिथ्या यह वहता सो सुनलो ।
सौ की एक लहान "शुक्ल" का तुमसे सब लहता सो सुनलो ॥

मणि ७२

महादेव यह देन तुम्हारी ॥
कैसे कहूँ बताऊँ किस विधि सचमानो सर्वस्व हमारी ।
इसने तो तुम देख रहे खुद जीवन नव साँचे में ढारी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनायास मैं देख रहा हूँ दिल से कुल दुर्वृत्ति निकारी ।
पता नहीं ला कहाँ-कहाँ से सद्गुण की दि भीर-भरि भारी ।।
कौन भला कर सके कल्पना जैसी मेरी करी तयारी ।
कह सकना कैसहुँ सम्भव नहिं इसकी करामात सच सारी ।।
मुझको तो मैं क्या बतलाऊँ इसने है हैरत में डारी ।
"शुक्ल" बदौलत इसके मैंने बात-बात में बाजी मारी ।।

मणि ७३

महादेव पद परस अभागा ।।

आकर्षित खुब हुआ भोग प्रति इन प्रति अब आकरस अभागा ।
विषयों का आकर्षण देखूँ लिया तुझे है गरस अभागा ।।
इस रस का आस्वादन करते भूल जायगा छरस अभागा ।
हो ही नहिं सकता कुछ कोई दूजा इससे सरस अभागा ।।
पूर्ण देव अनुकंपा से ही मिलता इसका दरस अभागा ।
बहता है दिल अंदर तेरे रहा तो भि तू तरस अभागा ।।
पाते ही इस रस के ततछन पड़ता आनँद बरस अभागा ।
जीवन धन्य "शुक्ल" तेरा हो हर विधि हर छन हरस अभागा ।।

मणि ७४

महादेव पद का अभिलासी ।।

चहता नहीं मोक्षपद को भी उसकी सकल कामना नासी ।
उनपर निर्भर बना विचरता लगे समान मगह औ कासी ।।
संशय रहित सर्वथा वह तो बुद्धि विवेकमयी बनि खासी ।
नर्क-स्वर्ग, सुख-दुख समान तेहि देवमयी दुनिया भलि भासी ।।
जाता कहीं न आता कब हीं आत्मलोक का अहनिशि वासी ।
परिचर्या में रहें निरंतर उसके मुक्ति चारि बनि दासी ।।
दर्शनीय मुखमण्डल उसका खेले सतत अधर पर हासी ।
वंदनीय अभिवादनीय वह "शुक्ल" सेव्य शुभ आनँद रासी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ७५

महादेव का देख तमाशा ।।

सचमानो तुम मेरे मित्रवर रहता हूँ मैं छका-छका सा ।
कोई भोंड़ा-भद्दा-गन्दा कोई दीखे स्वकर रचा सा ।।
टूटी सी झोपड़ी किसी की कोई महल बनाता खासा ।
कोई रेंग रहा भूपर-पर कोई ऊँचे उड़े अकासा ।।
किसी कि खुब कौड़ी चित होती किसी का उलटा पड़ता पासा ।
करें मनोरथ भंग किसी का किसी कि करते पूरी आसा ।।
कोई मस्त बना मुझसा औ कोई जगदीखे उलझा सा ।
मनचाहे ढँग खेलें मुझको "शुक्ल" मैं कर कमलों का तासा ।।

मणि ७६

महादेव मम भुजा के बल हैं ।।

येही चेतन किये कायको सतत बिराजे अंतस्तल हैं ।
चतुराई से देहयंत्र के यही चलाते सारे कल हैं ।।
जिससे रहे शरीर सुरक्षित, यही अन्न ये निर्मल जल हैं ।
उठने और बैठने, चलने, बसने के भी ये ही थल हैं ।।
गनना के आधार काल की यही कल्पयुग ये घटिपल हैं ।
काम्य-अकाम्य निषिद्ध कर्म ये उसके यही शुभाशुभ फल हैं ।।
पुलकाते चमकाते ये ही बने परिस्थिति भल-अनभल हैं ।
सौ की एक "शुक्ल" यह समझो सभी समस्या के ये हल हैं ।।

मणि ७७

महादेव गुनगान गोमती ।।

सब साधन सिरमौर सदा से कहते वेद-पुरान गोमती ।
कहे बताये और जाँय सो तुलना के नहिं आन गोमती ।।
सुरुचिपूर्ण शुचि सर्व सुलभ तू इसको मन अनुमान गोमती ।
यह जीवन आधार भक्त का संतन का प्रिय प्रान गोमती ।।
प्रेम सहित करना प्रतिदिन तू बड़ भागिनि मन ठान गोमती ।
करते सुयश गान सद्यः ही भूल जाय तन भान गोमती ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर धनि धन्य-गन्य काया यह प्रेम सुधा करि पान गोमती ।
अनुकंपा पा "शुक्ल" देव की बन आनन्द निधान गोमती ॥

मणि ७८

महादेव सुख बर्धन संगी ॥

हुआ है शुभ संपर्क कि जब से कोई वस्तु न कबही खंगी ।
रहा न खाली पेट कभी भी रही न कबहीं देह ये नंगी ॥
संयमहीन प्रमादी हूँ मैं रहती तो भी काया चंगी ।
दिखलाता भंडार भरा सा दिखती कभी न कोई तंगी ॥
दिखते सभी पदार्थ गँजे से मैं मुँह खोल नहीं कुछ मंगी ।
पूर्णकाम कर दिया मुझे तो कभी न कोई आशा भंगी ॥
बिसरी वृत्ति हीनता वाली ऐसी नेह नवल रँग रंगी ।
अभेदत्व कर सिद्ध दिखाया "शुक्ल" रहा नहिं अंग न अंगी ॥

मणि ७९

महादेव सब बाल सुधारो ॥

दूषित वातावरण पायकर हैं घुस गये सो दोष निकारो ।
बाल बुद्धि है ही इनकी तो मत इनका अपराध बिचारो ॥
जाते फिसल बड़े फिसलन में क्या बिचार कुछ गलत हमारो ।
क्या गिनती फिर इन अबोध की यदि कोइ काज करें अबिचारो ॥
मेरी नम्र विनीत विनय यह इनको तुम निज करन सँवारो ।
पतन न होने पावे इनका इनको हर ! हर भाँति सम्हारो ॥
हैं आश्रित बनने को आतुर इनको देव ! शरण स्वीकारो ।
"शुक्ल" आशुहीं आशुतोष प्रभु ! इनको नव साँचे में ढारो ॥

मणि ८०

महादेव मम दशा विलच्छन ॥

टिक पाता नहिं कहीं कि जब से मैं निज पद से खसा विलच्छन ।
किससे कहूँ कौन सुनता है मैं दलदल में धँसा विलच्छन ॥
निकल नहीं पाता माया के अस फन्दे में फँसा विलच्छन ।
हिलना मुश्किल हाय राम ! है प्रकृति जाल अस कसा विलच्छन ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीलि लेय नहिं उगले दैया मोह-ग्राह है ग्रसा विलच्छन।
जीता नहीं न मरता दिखता महा-नाग भव डसा विलच्छन॥
दुर्बल जानि देव षट रिपु गन रगड़-रगड़ खुब घसा विलच्छन।
हटता नहीं हटाये हिय से दृढ़ अग्यान उर बसा विलच्छन॥
छन विनाशि जानते भि उतरे नहिं धन-जन का नशा विलच्छन।
विपति भई सब दूर "शुक्ल" तव दया दृष्टि जब लसा विलच्छन॥

मणि ८१

महादेव मम करें सो अच्छा॥

मेरी बला विशेष बढ़ावें या चाहे कम करें सो अच्छा।
बना देंय गमगीन या कि वे हमको बेगम करें सो अच्छा॥
पुण्य पुरुष कर देंय फेर क्या या अधमाधम करें सो अच्छा।
वांछनीय भर दें प्रकाश उर वृत्ति मयी तम करें सो अच्छा॥
डूबूँ उतराऊँ दुख-सुख में दृष्टि मेरी सम करें सो अच्छा।
"शुक्ल" जीव का जीव रहन दें जो वो सो हम करें सो अच्छा॥

मणि ८२

महादेव भज प्यारी कृष्णा॥

महादेव भजने से केवल बनती सभी बिगारी कृष्णा।
इस शिव सुमिरन से सच माने मिटती बुद्धि बिकारी कृष्णा॥
वेद पुराण करें वर्णन यह कहते संत बिचारी कृष्णा।
निरालस्य बन अप्रमाद हो कर इसकी तैयारी कृष्णा॥
होते तुष्ट आशु हीं इससे आशुतोष अघहारी कृष्णा।
अनुकंपा कर देव श्रेष्ठ वे दें नव साँचे ढारी कृष्णा॥
जीवन के दिन चन्द सहेली हस्ती क्षणिक हमारी कृष्णा।
"शुक्ल" लगा दिल देव-देव से दिल की मेरे दुलारी कृष्णा॥

मणि ८३

महादेव ही मौसम सारे॥

नव पल्लव संयुक्त करें तरु वनकर यही बसंत बिचारे।
तापित करें आप जड़-चेतन बन ग्रीषम उगलें अंगारे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारे मेघ बनें वर्षा में गरजें-तड़पें-झरें फुहारे ।
शरत काल कर दिशा स्वच्छ सब निर्मल नभ बन चमकें तारे ।।
शिशिर-हिमंत न अन्त शीतका सुखि सम्पन्न गरीब दुखारे ।
वन उपवन ये ही गिरि गह्वर वनकर यही बहें नद नारे ।।
यूँही बने विभिन्न परिस्थिति ये ही जग सुख-दुख विस्तारे ।
"शुक्ल" समझलो इतने ही में सब साँचे में ये ही ढारे ।।

मणि ८४

महादेव को सुमिरत रोई ।।

इस सुमिरन के सदृश साध व साधन और न दूजा कोई ।
इसकी महिमा अति अनंत है कहते संत शास्त्र श्रुति तोई ।।
मेरे तो जीवन अधार हैं सुमिरन औ शरणागति दोई ।
सुमिरन करते ही सनेह सह वाह्यज्ञान तुरंतहि खोई ।।
जनम-जनम के अंतरमल को केवल प्रभु सुमिरन कर धोई ।
सजे क्षेत्र उर में अपने हम सुमिरन बीज हर्षि हिय बोई ।।
सुमिरन करत कमाऊँ-खाऊँ सुमिरन करत शांतियुत सोई ।
"शुक्ल" सुसुमिरन करतहि-करतहि सचमानो जो वह हम होई ।।

मणि ८५

महादेव भुज दंड भले हैं ।।

लख शोभा कंदर्प करिन के शुचि-सुडौल शुभ शुण्ड टले हैं ।
देखत बनि आवत बरनत नहिं किस साँचे किस भाँति ढले हैं ।।
बल जल से भल भरे सिन्धु से निरखत ही अति खलन खले हैं ।
खेल-खेल में कितने ही ये दानव दुर्दमनीय दले हैं ।।
महामहा रणधीर वीर को पकरि-जकरि ज्यों मसक मले हैं ।
वे निर्द्वन्द विचरते निर्भय आश्रय में जो पुलकि पले हैं ।।
अनायास अनुकंपा कर ये उनके हित फल चारि फले हैं ।
उनका भाग्य सराहूँ किस विधि "शुक्ल" कि जिनके परे गले हैं ।।

मणि ८६

महादेव लख नगन मगन मैं ।।

विधि वैचित्र्य सृष्टि का स्वामी फिरता पनही बिनहि पगन में ।
एकमात्र येही न अन्य कोइ फैला कोटि अनंत जगन में ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यही जीव यह देह नाड़ि बन करे रक्त संचार रगन में।
सौतेला सबका सब ये ही गिना जाय सच यही सगन में॥
कहलाता सरदार अनूठा यह ठाकुर घुस यार ठगन में।
विश्वव्यापि ये ही चित चोरे चहकि रसीले राग खगन में॥
कोई और नहीं छा जाता बन बादल दामिनी गगन में।
"शुक्ल" तभी तो इससे ही बस रहूँ लगाये यार लगन में॥

मणि ८७

महादेव सुखसार सुशीला॥

सुखस्वरूप सुखदाता इनसे सुखपाता संसार सुशीला।
सुख के बीज मूल सुख के ये करते सुख विस्तार सुशीला॥
सुख की चाह तुझे हो सजनी कर इनसे व्यवहार सुशीला।
पाना इनके द्वारा निश्चित है फिर विविध बहार सुशीला॥
तू निहाल हो जाय सहज ही पाकर इनका प्यार सुशीला।
चन्द दिनों में चन्द सरीखा चमके तेरा लिलार सुशीला॥
देते ही तेरे तेरा ये ले लेंगे कुल भार सुशीला।
"शुक्ल" बना ले जल्द इन्हें तू निज जीवन आधार सुशीला॥

मणि ८८

महादेव सब जन सुख पावें॥

बड़ी साध है भरी हृदय में संसारी सब सुखी दिखावें।
बालक हों निरोग तगड़े सब-विद्या-बुद्धि विशेष बढ़ावें॥
युवा सुशील चरित्रवान हों वनि विनम्र कर्त्तव्य निभावें।
उद्योगी-साहसी-शूर सब सुन्दर धर्मनीति अपनावें॥
बूढ़े अनुभवयुक्त दिखें सब शुभ चर्चा में वयस बितावें।
विदुषी कार्यकुशल पतिभक्ता गृह-गृह गृहिणि सलज्ज सुहावें॥
दम्पति प्रेम स्वदेश प्रेमयुत ईश प्रेम करि भाग्य जगावें।
अन्न वस्त्र हो भरा सभी घर आभूषण आवश्यक लावें॥
गंगा-स्नान देव पूजन नित करें लोक-परलोक बनावें।
"शुक्ल" सुलभ हो सभी-सभी को अभी देव शरणागत आवें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८९

महादेव सुन्दर चरित्र दो ।।

किये नष्ट जीवन काया जो सद्यः मिटा सो दोष स्वित्र दो ।
जैसा हो ढालना सामने रख वैसा आदर्श चित्र दो ।।
ढलने में जो बने सहायक दुर्लभ ऐसा देव मित्र दो ।
साँचा शुचि निर्माण करें शुभ वे विचार अतिशय पवित्र दो ।।
शान्त शुद्ध हितकारी जग की रुचिकारी रहनी विचित्र दो ।
सुरभित करे अखिल आशायें "शुक्ल" रूह कर रूह इत्र दो ।।

मणि ९०

महादेव तुम सदा सुहावन ।।

तब तो और भले लगते हो जब लग जाता सुन्दर सावन ।
तभी दौड़ पड़ते हैं देखो सब नरनारी तुम्हें मनावन ।।
जाते कोई प्रभातकाल ही कोई साँझ शुभ गंग नहावन ।
मज्जन करि मन मुदित दिव्य जल पत्र पुष्प ले चलें चढ़ावन ।।
धूप दीप नैवेद्य पान अरु लिये सुरस रितुफल मनभावन ।
करि पूजा सानन्द सुजन सह सने सनेह सुगुनगन गावन ।।
काया करें कृतार्थ सहज ही पाय प्रसाद अपावन पावन ।
"शुक्ल" नित्यचर्या हो ऐसिहि चाहूँ यही लहान लहावन ।।

मणि ९१

महादेव मन मन्दिर बसते ।।

करते रहें निरीक्षण प्रतिछन में जाता हूँ कब किस रसते ।
लगालेंय अन्दाज झट्ट ये कौन विकार हमें कब ग्रसते ।।
खुली छूट दी है इन्द्रिन को या उनको हम हैं कुछ कसते ।
रहती कब अदीनता हममें कब बनि दीन पाँव सिर घसते ।।
कब रहते हैं निज पदस्थ हम कब परि कौन परिस्थिति खसते ।
रहते कब हम कमल यथा जल कब हैं मोह पंक में धसते ।।
ज्ञानारूढ़ रहें हम कब औ कब माया फन्दे में फसते ।
हमको "शुक्ल" रँगें जब जिस रँग तब हम तिसी रंगमय लसते ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९२

महादेव जब कृपा हैं करते ॥
अवढर ढरन हुई हैं जब भी निज जन जानि किसी पर ढरते ।
रहने दें नहिं शेष लेश भी उसका अहंकार हर हरते ॥
ताड़ित हो इनसे ही-उसके हिय से द्रुतहिं दोष दल टरते ।
प्रेरित हो इनके द्वारा ही उर अंतर सद्गुण भल भरते ॥
अनायास अनुकंपा से ही उनके काज सभी शुभ सरते ।
अर्थ धर्म युत काम मोक्ष भी बिनहिं प्रयास चारिफल फरते ॥
हो जाता निहाल सत्वर वह वरद हस्त उसके सिर धरते ।
लखि दृगभरि दयालुता इनकी "शुक्ल" पाँव इन-उनके परते ॥

मणि ९३

महादेव के जानत बाई ॥
पर उतनै करि कृपा कि जितनै हमके दिहेन बताय ई भाई ।
उहौ बतावत तोहसे भैया सिर हमार चकराय लगाई ॥
तब अब मीत बतावऽतोहईं कौनि भाँति हम तोहैं बताई ।
एक-एक इनकी विशेषता सोचे बानि मूक ह्वै जाई ॥
सुन्दर बड़े सुशील बड़े ये इनसा नहिं सुजान कहुँ पाई ।
वीर बड़े-रणधीर बड़े ये इनको पीर पराइ पिराई ॥
दानी बड़े-बड़े सनमानी अभिमानी नहिं इन्हें सुहाई ।
हो अतिभाव विभोर "शुक्ल" हम इनके चरन शीश नित नाई ॥

मणि ९४

महादेव सुख घड़ी न कोई ॥
इस जग जीवन की माला में लगी है सुख की कड़ी न कोई ।
दुःख-मुक्त सर्वथा परिस्थिति देखूँ सनमुख खड़ी न कोई ॥
दुखमिश्रित ही दिखी-शुद्ध सुख की लगती है झड़ी न कोई ।
देखा खूब गौर से मैंने मेरी नजर में गड़ी न कोई ॥
उमर बीत है चली एक भी मैंने अब तक तड़ी न कोई ।
न मैं और को लखा भोगता मेरे हिस्से पड़ी न कोई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आई भी सो स्वप्न सरीखी अल्पकाल भी अड़ी न कोई ।
दुखमारा ले "शुक्ल" सहारा ऐसी सुखमय छड़ी न कोई ।।

मणि ९५

महादेव सुख घड़ी सभी है ।।

सुख स्वरूप से सृष्ट-सृष्टि यह सुखाधार पर खड़ी सभी है ।
एक-एक को अलगावें क्या इसकी सुखमय कड़ी सभी है ।।
सुख सुवर्ण की बनी सुहावनि सुख रत्नों से जड़ी सभी है ।
दुख विकार से सदा अछूती सुख मुक्ता की लड़ी सभी है ।।
छोटी कोई दिखाती ही नहिं आप आपको बड़ी सभी है ।
सुख सूखा नहिं पड़े मघासी नित्य लगाती झड़ी सभी है ।।
आदिकाल से अद्यावधि यह सुख समस्त ले अड़ी सभी है ।
निर्भ्रम "शुक्ल" बताता मैंने एक साथ ही तड़ी सभी है ।।

मणि ९६

महादेव निज चरन दिखादो ।।

कर लूँगा संतोष सर्वथा महामोद मन भरन दिखादो ।
ललचाता हूँ बहुत जन्म से ललित लाल वर वरन दिखादो ।।
दृगभरि दोउ नवनीत कमल की कोमलता रदकरन दिखादो ।
अति शीतल हठि जो हीतल की जल्द मिटाते जरन दिखादो ।।
सहजबानि जिनकी सब दिन की सो शुभ अवढर ढरन दिखादो ।
सबविधि सुखद सहायक सुन्दर आरत आश्रित नरन दिखादो ।।
अर्थ धर्म कामादि दिव्य फल निज जन हित झट झरन दिखादो ।
"शुक्ल" आशुहीं आशुतोष अब हाय ! मेरे हिय हरन दिखादो ।।

मणि ९७

महादेव है तुम्हें मनाना ।।

लेना औ देना न किसी से क्यों नाहक दीनता दिखाना ।
है ही कौन समर्थ दूसरा जिसको हो कुछ गर्ज सुनाना ।।
दिये सभी पाते हैं तुम्हरे अनगिन कथा पुरान बखाना ।
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष भी तुमसे सभी सहज है पाना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब फिर क्यों किसलिये और की ओर भला हो नजर उठाना ।
आश्रय लिया तुम्हारा जिसने बन जाता वह तो मस्ताना ॥
उसकी दशा देख चकराते जोगीजन ग्यानी गुनवाना ।
मैं केवल अनुकंपा पाकर "शुक्ल" बना आनन्द निधाना ॥

मणि ९८

महादेव गुन गा गुनवंती ॥

गाने योग्य सनेह सहित नित सचमुच गुन इनका गुनवंती ।
तत्पर होने को ततछन ही हो आतुर तू धा गुनवंती ॥
इनके ही विशाल वैभव को निज उर पुर बिच छा गुनवंती ।
भलीभाँति साकार हुई है इनमें भगवत् ता गुनवंती ॥
गाते वेद-पुरान-शास्त्र गुन संत-महंत महा गुनवंती ।
हो जाते विभोर बरबस ही अति अनुपम रस पा गुनवंती ॥
कर लेते आस्वादन उनसे त्यागा फिर नहिं जा गुनवंती ।
"शुक्ल" कृतारथ कर जीवन को इन चरनन सिर ना गुनवंती ॥

मणि ९९

महादेव पर कर निर्भर मन ॥

अभी अभी सब भार मुक्त हो होजा इनपर गर निर्भर मन ।
इनको कुछ आपत्ति न इनपर करे जो तव सब घर निर्भर मन ॥
हुये भरोसे इनके ही फिर खुब अखंड खर चर निर्भर मन ।
कभी न तापित करें तापत्रय उतर जाय भव ज्वर निर्भर मन ॥
करे न संशय यत्किंचित् भी बात मेरी उर धर निर्भर मन ।
पाय सुभाव सुवृत्ति सुसद्गुण हिय अंतर भल भर निर्भर मन ॥
तन पुलकित मन मगन प्रेमघन पद पंकज पर पर निर्भर मन ।
फिर मरना नहिं परे "शुक्ल" तोहिं हो इनपर ही मर निर्भर मन ॥

मणि १००

महादेव भज मूढ़ मजा ले ॥

कर न और साधन सहस्र तू शुचि सनेह सज मूढ़ मजा ले ।
हो श्रद्धा संपन्न शीश निज धार चरन रज मूढ़ मजा ले ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर अनुमानि अपावन पावन पादपद्म यज मूढ़ मजा ले ।
सुमिरि नाम संतत हुलास भरि हिय स्वपात्र मज मूढ़ मजा ले ।।
बने जो जीवन संगी तेरे दोष तुरत तज मूढ़ मजा ले ।
करते काम अनैतिक कोई निपट निलज लज मूढ़ मजा ले ।
पा प्रसाद में दिव्य-दिव्य गुन उरगृह में गज मूढ़ मजा ले ।
"शुक्ल" शरण हो सद्य जिन्हें नित नमते हरि अज मूढ़ मजा ले ।।

मणि १०१

महादेव सुख खानी दीखे ।।

जो भी जो माँगे देने में करत न आनाकानी दीखे ।
बिन माँगे जगजीव मात्र को देते दानापानी दीखे ।।
अपने जन की अपने हाथों छाते छप्पर छानी दीखे ।
करना ही कल्याण विश्व का ठीक ठान के ठानी दीखे ।।
दर बैठे ही निखिल जगत की नीकि करत निगरानी दीखे ।
लिये भार ब्रह्माण्ड अखिल का रखे वृत्ति मस्तानी दीखे ।।
वंदनीय अभिवादनीय वर मोहिं भोला वरदानी दीखे ।
"शुक्ल" सूझती जोड़ मुझे नहिं आपहिं अपनी शानी दीखे ।।

मणि १०२

महादेव मैं दयापात्र हूँ ।।

परिचित बहुत पुराना तुम्हरा सचमानो नहिं नया पात्र हूँ ।
अपने पतितपने से प्रभुवर अनुकंपा का भया पात्र हूँ ।।
नहिं सामान्यतया देवेश्वर बिलकुल बीता गया पात्र हूँ ।
लाज पी लिया नाथ घोर कर जग जाहिर बेहया पात्र हूँ ।।
बुरी तरह बहु जन्म जन्म का ताप तीनि से तया पात्र हूँ ।
"शुक्ल" करो नहिं रोष रंच भी माननीय मैं मया पात्र हूँ ।।

मणि १०३

महादेव हैं भरे सृष्टि में ।।

बन निमित्त उपदानहु कारण बसे यहो हैं करे सृष्टि में ।
कंकन कुंडल में ज्यों कंचन त्यों ये ही हैं खरे सृष्टि में ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विविध ढंग के बनाके साँचे हैं खुद ही ये ढरे सृष्टि में।
तरुवर बने पल्लवित पुष्पित हो भल फल ये फरे सृष्टि में॥
पंछी बन फुदकें पिहकें प्रिय पशु बन येई चरे सृष्टि में।
खटमल मच्छर जीवजंतु ये बने घुसे घर घरे सृष्टि में॥
येई दानव देव नाग नर जड़ चेतन तन धरे सृष्टि में।
विहरें ये उर बसा उर्वशी स्वर्ग नर्क ये परे सृष्टि में॥
छुटे न आवाजाही इनकी करि साधन ये तरे सृष्टि में।
"शुक्ल" कहूँ सच-मत मानो तुम-ये नित जन्मे मरे सृष्टि में॥

मणि १०४

महादेव सुख नदी बह रही॥
छन प्रतिछन देखूँ यह सरिता सर्वेश्वर अतिवेग गह रही।
प्रखरधार से कुतरु वासना देखूँ मैं सहमूल ढह रही॥
आँख बंदकर कूद पड़ो बस हमसे कर संकेत कह रही।
ले जाकरके हमें पता नहिं पहुँचाना यह कहाँ चह रही॥
पहुँचे बिन तुम सुख सागर तक नहिं विश्रांति न शांति लह रही।
और कहीं नहिं "शुक्ल" निरंतर मम उर अंतर माहिं रह रही॥

मणि १०५

महादेव मन मरा नहीं ये॥
कहा बहुत समझाया कितना करना था सो करा नहीं ये।
कसा कसौटी पर जब इसको उतरा तब खर खरा नहीं ये॥
भोगा जड़ यंत्रणा विविध विधि पर कुटेव से टरा नहीं ये।
होने से अति धृष्ट आपके अधिकारिन से डरा नहीं ये॥
हृदयहीन होने के कारण लख दीनों को ढरा नहीं ये।
सुजनों से संग्रह करि अंतस भल भावों से भरा नहीं ये॥
लेकर नाम अकाम अहर्निशि दोष दुरित दल दरा नहीं ये।
जरा बहुत जगतीय विषय ले तव वियोग में जरा नहीं ये॥
परा जुगों से भवसागर में तभी तो अबतक तरा नहीं ये।
पाया "शुक्ल" प्रसाद देव नहिं पद पंकज पर परा नहीं ये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०६

महादेव दो मजा मजे में ॥

यह संभव तब ही हो सकता आप हों हमपर रजा मजे में ।
रजा आपके होते दिल में दीखे सद्गुण गजा मजे में ॥
फिर दिक्कत की बात नहीं कुछ जाय दोष दल तजा मजे में ।
सहना सहज विहँसते ही हो दी तव द्वारा सजा मजे में ॥
दें तब आप अहेतु कृपा करि शुचि सनेह से सजा मजे में ।
भरि अनुराग विराग युक्त हो जाय आपको भजा मजे में ॥
निर्भर हो निर्द्वंद आप पर करूँ भरे मुद कजा मजे में ।
फहरे "शुक्ल" बदौलत तुम्हरे कलित कीर्तिमयि ध्वजा मजे में ॥

मणि १०७

महादेव मम जानी दुश्मन ॥

पूर्वापर सब सोच समझकर तव हम इन्हें बखानी दुश्मन ।
जाना जबसे नीति आपकी तबसे इनको जानी दुश्मन ॥
लखकरके व्यवहार आपका पूर्ण रीति पहचानी दुश्मन ।
काम आदि प्रिय मित्र पुराने किया सबै बे पानी दुश्मन ॥
जन्म-जन्म का संचित अघ धन कर दी सबकी हानी दुश्मन ।
भोग समाप्त किये सब मेरे ऐसा किया नदानी दुश्मन ॥
करनेवाला दगा इस तरह दिखा न इनकी शानी दुश्मन ।
मिटा दिया अस्तित्व हमारा "शुक्ल" न कैसे मानी दुश्मन ॥

मणि १०८

महादेव तिरशूल सम्हारो ॥

घुस आना चाहते देश में आततायि दोनों को मारो ।
रहें न रहने देंय शांति से उन दुष्टों के दाँत उखारो ॥
नर संहार कराने पर जो तुले हैं उनकी जान निकारो ।
अत्याचार परायण जन का निर्दयता से उदर विदारो ॥
या उनको सद्बुद्धि देव दो उनके उर में प्रेम पसारो ।
दानवता करि दूर ततक्षण मानवता उसमें विस्तारो ॥
सूझे हित अनहित नहिं उनको दृष्टिदोष सो निपट निवारो ।
जिससे हो कल्याण विश्व का "शुक्ल" वही शभ बात बिचारो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०९

महादेव मणिमाला गाये ॥

कोई कहीं स्वस्थ चित होकर भावयुक्त मुद मनहिं लगाये ।
वर्णन जहाँ हुआ जैसा-निज चित्तवृत्ति तेहि रंग रँगाये ॥
बिला हिचक बे झिझक सभी ही इसमें कहे ढंग अपनाये ।
मिले कल्पनातीत उसे रस अविश्वास नहिं रंच दिखाये ॥
अथवा रुचि अनुकूल भाव करि ग्रहण उसी में लय हो जाये ।
प्रीति प्रतीति युक्त हो सत्वर सहजहिं भावानंद समाये ॥
प्राप्त करे उनको भले हि कल प्राप्त सरिस सुख आजहि पाये ।
बतवाये उनके हि "शुक्ल" यह सही सही सब बात बताये ॥

दोहा

हमसों की घुसपैठ जहँ वाह तेरा दरबार ।
करो कद्र नाकद्र की धन्य धन्य सरकार ॥
पा पा करके आपकी देन गया बहु दब्ब ।
यह भी तो बतलाइये दरसन दोगे कब्ब ॥
पाना जो कुछ चाहिये पाया तुमसे सब्ब ।
'शुक्ल' दरस पाये बिना रहा न जाता अब्ब ॥
करवाया सब आपने किया है हमने जौन ।
'शुक्ल' धरा वह सामने भला बुरा है तौन ॥

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशीधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
सत्रहवीं माला समाप्त ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवेनमः *

महादेव मणिमाला

अट्ठारहवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

आना है तुम्हें तो नहीं हमको यकीन होता,
तरह-तरह की बात बेशक बनाना है।
आते हो जलाते जुग आदि से जनाब आली,
बाभन बिचारे को सो वैसेहि जलाना है॥
मरते सभी हैं कोई लेकर निमित्त हमें,
तुम्हरे वियोग में अकाल मर जाना है।
"शुक्ल" बन भूत अब, धूत सिरताज सुनो,
तुमने सताया हमें तुमको सताना है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अट्ठारहवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मुद मंगल मूला ॥

इस मंगल तरु में ही फूलें मुद मंगल मय मंजुल फूला ।
मंगल रत्नाकर के बिखरे मंगल रत्न हैं रहते कूला ॥
पहुँचा जो मंगल सागर तक उसका भाग्य भलीविधि खूला ।
तुल सकता हरगिज कवहीं नहिं सच सुरेश भी उसकी तूला ॥
करो प्रतीति तिलोक संपदा उसकी दृष्टि में लगती धूला ।
बनता उसके लिये फूल सा महा भयानक यह भव शूला ॥
हो जाता हैं बोध यथारथ उसको निज स्वरूप का भूला ।
मेरा अति सौभाग्य "शुक्ल" है मुझे झुलाते मंगल झूला ॥

मणि २

महादेव सब जन सुख पावें ॥

मेरी विनय विशेष आप सुन सबको सुख की राह सुझावें ।
जिससे ये पावें असीम सुख ऐसी इनको बात बतावें ॥
झूठे सुख की ही तलाश में ये अपना नहिं बयस बितावें ।
अनुकंपा करके कृपालु वर सच्चे सुख का भान करावें ॥
करो इन्हें प्रेरणा आपकी सुन्दर गुनद् गुनावलि गावें ।
नाम निष्ठ निष्काम बनें सब शरणागत हो रहें सुहावें ॥
समझें रूप आपका सबको प्राणिमात्र को सुख पहुँचावें ।
"शुक्ल" प्रसाद प्राप्तकर प्रभु का जीवन का भल लाभ उठावें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव हल करें समस्या ॥

पारे इनके ही सचमानो परें सभी के गरें समस्या ।
मघा मेघ सी झरी लगाकर इनके चाहे झरें समस्या ॥
इनके ही संकेत सुनिश्चित बहु विभिन्नता धरें समस्या ।
चाहें जब ढालना आप जिस तब तिस साँचें ढरें समस्या ॥
अननुकूल अनुकूल इन्हीं के चाहे ही फल फरें समस्या ।
तब यह स्वाभाविक हो जाता टारे इनके टरें समस्या ॥
इनकी वक्र दृष्टि पड़ते ही अनायास सब जरें समस्या ।
इनके आश्रित "शुक्ल" नरन के आते सनमुख डरें समस्या ॥

मणि ४

महादेव भलकै भज बै हम ॥

बाधक तत्व भजन के जितने दे तलाक तृण सा तजबै हम ।
करते कुत्सित काम कोई भी मानि ग्लानि अतिशय लजबै हम ॥
दूरहि ते लखि दुर्वृत्तिन को वंदन करि सबेग भजबै हम ।
केवल नाम अकाम सतत ले अंतःकरन मलिन मजबै हम ॥
पाय प्रसाद सुसद्‌गुण प्रभु से भरि हुलास उर गृह गजबै हम ।
दिव्य देन में पाय देव से सत्वर शुचि सनेह सजबै हम ॥
परम प्रीति संयुक्त स्वमन करि पावन पाद पद्‌म यजबै हम ।
"शुक्ल" दिये इनके लख लेना पाउब निश्चित पद अजबे हम ॥

मणि ५

महादेव से करी दोस्ती ॥

दिन-दिन होती दिव्य मानलो जो होती है खरी दोस्ती ।
मिलना पर आसान नहीं है यह नरिअर की गरी दोस्ती ॥
मिल जावे जब कभी किसी को धन्य-धन्न्म वह घरी दोस्ती ।
इनकी कृपा अहैतुक से ही मेरे हिस्से परी दोस्ती ॥
शुष्क हृदय में प्रेम सुधा मधु मेरे भलिविधि भरी दोस्ती ।
भाव भले गुन भले-भले ये मघा वृष्टि सी झरी दोस्ती ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे हित अनयास आशु हीं चारु चारिफल फरी दोस्ती ।
जुग-जुग जिओ पुष्ट हो प्रतिपल "शुक्ल" सुआशिष अरी दोस्ती ।।

मणि ६

महादेव की दया रहे बस ।।
तब फिर और चाहिये ही क्या अनुकंपा इनकी हि लहे बस ।
सार्थकता सब भाँति बानि की शिव हर-शंकर-शंभु कहे बस ।।
तृण सम त्यागि त्रिलोक संपदा भव पद प्रति भलि भक्ति चहे बस ।
मानि विधान कल्यानकारि निज आये द्वन्द समस्त सहे बस ।।
आये बाढ़ प्रेम सरिता में विवश बना हो विसुध बहे बस ।
फलस्वरूप बेश्रम सहजहि तब तरु तटस्थ वासना ढहे बस ।।
कृपा दण्ड कर गहे चले, गो-खुर प्रमान भवसिंधु थहे बस ।
जीवनधन्य "शुक्ल" सद्यः हो सानुराग प्रभु चरण गहे बस ।।

मणि ७

महादेव सबकी रख लज्जा ।।
लखकर अति विपरीत काल यह करता विनय हुँ ई रख लज्जा ।
गतिविधि देखि आज की सारी घबराता है जी रख लज्जा ।।
अनुशासन आचरन हीन शिशु दिखलाते हैं छी रख लज्जा ।
पूर्ण स्वतंत्र नितांत निरंकुश बनीं विचरतीं ती रख लज्जा ।।
बैठी हैं वयस्क अविवाहित घर-घर दिखतीं धी-रख लज्जा ।
रहते हम मदान्ध होकर के महामोह मद पी रख लज्जा ।।
द्वेषपूर्ण-दुर्भावभरा अति मलिन हो रहा ही रख लज्जा ।
"शुक्ल" न अन्य उपाय देख कुछ शरण तुम्हारी ली रख लज्जा ।।

मणि ८

महादेव अति सुजन सुना है ।।
इनकी शानी सुने न देखे सुनने को कति सुजन सुना है ।
देते ये रहते हैं अहनिशि अगतिन को गति सुजन सुना है ।।
आते यही बचाते कब से पतितन की पति सुजन सुना है ।
आश्रित की होने नहि देते लोक द्वय छति सुजन सुना है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखें सुरक्षित सब विधि सेवक रिपुगन को हति सुजन सुना है।
द्रुत दुर्बुद्धि दुराय दास की करें विमल मति सुजन सुना है॥
कोटि अनन्त विश्व के स्वामी रहें यथा यतिसुजन सुना है।
करें भक्त सिरताज "शुक्ल" शठ दे निज पद रति सुजन सुना है॥

मणि ९

महादेव से जो मिलता है॥

मिलने की उत्कट अभिलाषा जिसको होती वो मिलता है।
वैसे मिल सकता कैसे-वे मिलना चाहें तो मिलता है॥
करके कर्म अकाम नाम ले अंतरमल को धो मिलता है।
जानी मानी बात सभी की अहंभाव को खो मिलता है॥
दास अनन्य न अन्य आपको जौन समझता सो मिलता है।
उर्वर क्षेत्र सु उर में अपने प्रेम बीज वर बो मिलता है॥
कर-कर उनको याद कोई बस उनके नाम को रो मिलता है।
जैसे भी जो मिलता उनसे "शुक्ल" वही वह हो मिलता है॥

मणि १०

महादेव सा देव देवरानी॥

देखा-सुना नहीं दुनिया में अस आराध्य कहूँ फ़ुरि बानी।
हो जाते प्रसन्न आशुहिं सच आशुतोष ये अवढर दानी॥
करने को संतुष्ट सहेली काफी इनको केवल पानी।
अधिक तुष्ट करने को कोमल बिल्वपत्र पड़ती है लानी॥
आक-धतूर चढ़ाय आपसे कोई पा सकता मनमानी।
यह रिझवार अनूठा रीझें सनमुख गाल बजाये रानी॥
लेकर नाम गुनावलि गाकर ले-ले चारि पदारथ प्रानी।
"शुक्ल" सकल कल्यान प्राप्तकर होकर इनकी शरण सयानी॥

मणि ११

महादेव घर जाव जेठानी॥

साधन और नहीं यत्किंचित् बस सेवा कर जाव जेठानी।
उर अन्तर भव भक्ति भलीविधि भले भाव भर जाव जेठानी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन मन्दिर में अपने-उनकर मृदुल मूर्ति धर जाब जेठानी ।
कर-कर याद अहर्निशि उनकी नयननीर झर जाब जेठानी ।।
जब तक प्राप्त न होंगे-उनके वियोगाग्नि जर जाब जेठानी ।
उन पर प्राण टाँगि उनके ही पास अवशि मर जाब जेठानी ।।
प्रणत कल्पतरु जानि प्रेमभर पद पंकज पर जाब जेठानी ।
"शुक्ल" वरेण्य जान उनको ही वरदायक वर जाब जेठानी ।।

मणि १२

महादेव क्या करैं पता क्या ।।

लगे रहें जो लगे जुगन से या कुटेव कुल टरें पता क्या ।
भरैं और या देव नाम ले दोष दुरित दल दरैं पता क्या ।।
बन उदंड बिचरें ऐसहि या हम गुरुजन से डरैं पता क्या ।
भरे कुभाव रहें ऐसे ही भक्ति भाँति भलि भरैं पता क्या ।।
ढरना था ढर चुके आप या अभी और भी ढरैं पता क्या ।
धरा हटालें लख करनी या सिर सप्रेम कर धरैं पता क्या ।।
मरैं आपकी गोद मुदित हम बुरी मौत या मरैं पता क्या ।
तारे तरैं आपके या हम जाय नर्क में परैं पता क्या ।।
भटकें भवाटवी या सीधे पहुँचें इनके घरैं पता क्या ।
कल मिलनेवाले या अबहीं हम वियोग में जरैं पता क्या ।।
मिल दें मिलनानंद मजे का या ऐसहि दृग झरैं पता क्या ।
फरैं समुद फलचारि "शुक्ल" हित या दी निधि सब हरैं पता क्या ।।

मणि १३

महादेव सखि सच मिठ बोलन ।।

इनसा इस त्रयलोक बीच में अन्य न कोई जच मिठ बोलन ।
परिजन प्रिया बोलकर इनके देंय शर्मांसा रच मिठ बोलन ।।
बोलन लगें मधुरिमा भरि जब जाय धूम सी मच मिठ बोलन ।
दासी दास "शुक्ल" इनका वह रहा न कोई बच मिठ बोलन ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १४

महादेव करवाँय तपस्या ।।
मेरे पाप पहाड़ देखकर मेरे गले पड़ाँय तपस्या ।
हम मौजी मनुष्य सब दिन के नाम सुने घबड़ाँय तपस्या ।।
मस्ती लेने से फुरसत नहिं हमको कहाँ सुहाँय तपस्या ।
सोचें किस उपाय करने से कैसे जान बचाँय तपस्या ।।
जिनके द्वारा आई सर पर उनसे विनय सुनाँय तपस्या ।
चली-चला की जब नहिं कोई हो लचार अपनाँय तपस्या ।।
मरता क्या नहिं करता बोलो इससे शीश चढ़ाँय तपस्या ।
"शुक्ल" शरण रह देव-देव के हँसहिं मजाक उड़ाँय तपस्या ।।

मणि १५

महादेव की आस सास जी ।।
करना ही श्रेयस्कर सब विधि जग से बनि अतिशय निरास जी ।
उनपर ही निर्भर करने की बन जाती वर वृत्ति कास जी ।।
परमानन्द प्राप्त करने की युक्ति जान लो इसे खास जी ।
अनुकंपा से ही उनके सब हो जाती दुर्वृत्ति नास जी ।।
पूर्ण काम बन जाता उनकी दयादृष्टि पड़ते हि दास जी ।
आकर्षित कस करे विश्व की लगती विविध विभूति घास जी ।।
द्वैतभाव मिट जाता उसका होता सब शिवमय हि भास जी ।
"शुक्ल" शरीर त्याग करते ही पहुँचे वह उनके हि पास जी ।।

मणि १६

महादेव पद गहूँ बहू जी ।।
उनका सुमधुर नाम निरंतर नित सप्रेम मैं कहूँ बहू जी ।
उनकी भक्ति भावना दिल से मैं केवल बस चहूँ बहू जी ।।
मनसा वाचा और कर्मणा शरणागत हो रहूँ बहू जी ।
लगा कुतरु वासना हृदय में उनका बल ले ढहूँ बहू जी ।।
मिलना हो जब तक नहिं उनसे विरह दाह मैं दहूँ बहू जी ।
आये बाढ़ प्रेम सरिता में विवश बनी मैं बहूँ बहू जी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनका दिव्य प्रसाद पाय सुख लहूँ यहूँ औ वहूँ वहू जी ।
तेरी सी कृतकृत्य सद्य ही होऊँगी सच महूँ बहु जी ।।
वढ़ने में इस पथ पर मेरे बने सहायक तहूँ बहू जी ।
"शुक्ल" दिये उनके अब तो में अवशि परम पद लहूँ बहू जी ।।

मणि १७

महादेव की बात अनोखी ।।

बड़ी गँभीर बड़े हि काम की होतीं एक-एक से चोखी ।
आवश्यक से अधिक न कमती सुखद सुनावें नापी-जोखी ।।
बोलें धार प्रवाह आप सच जैसे हों पहले से घोखी ।
अतिहि सरल सुस्पष्ट सुनिश्छल रंचमात्र नहिं धोखा धोखी ।।
अमृतमयी रसभरी-रसीली-रससानी-सु प्रेम परिपोखी ।
सुनने योग्य "शुक्ल" संतत पर सुन पावें नहिं मुझसे दोखी ।।

मणि १८

महादेव को लेकर चलिये ।।

खतरनाक अनसुनी होयगी ध्यान बात पर देकर चलिये ।
भरे भरोसा दिल में इनका मुद भरि मूछें टेकर चलिये ।।
इनके बल जर्जर बोझीली नैया निज खुश खेकर चलिये ।
इनके सिवा समर्थ कौन वह किये आश हम जेकर चलिये ।।
आवें ताल ठोंककर सनमुख कोई तो बन-तेकर चलिये ।
जान इन्हें इस योग्य इर्नाहि के हम सुप्रेम मति भेकर चलिये ।।
इनके चरन जुगल जग वंदित शुचि सनेह सनि सेकर चलिये ।
"शुक्ल" स्वामि शिरमौर जानकर हम सेवक बनि अेकर चलिये ।।

मणि १९

महादेव को आप बाप जी ।।

सुमिरो सहित सनेह सुसादर मुदित मगन हो आप बाप जी ।
पर पीड़ा अपवाद पराया तजो दोष दो आप बाप जी ।।
तृण सम त्यागि तत्त्व सबही वे हों बाधक जो आप बाप जी ।
लेकर नाम अकाम अर्हीनिशि अंतरमल धो आप बाप जी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके सविधि समर्पण निजको अहंभाव खो आप बाप जी ।
उपजाऊ उर क्षेत्र बना वर प्रेम बीज बो आप बाप जी ॥
उनकी छत्र छाँह में संतत सुख संयुत सो आप बाप जी ।
बिनु श्रम "शुक्ल" पदार्थ चारि इमि प्रिय प्रसाद लो आप बाप जी ॥

मणि २०

महादेव को वर के बेटा ॥

हो तो गया निहाल सद्य मैं इनको सुमिरन करके बेटा ।
मैं बन गया हुँ घर का इनके ये सच मेरे घर के बेटा ॥
मस्त साँड़ सा फिरता इनका दिया हि चारा चर के बेटा ।
दोष दुरित हो गये खाक सब अपन आप ही जरके बेटा ॥
जलन मिटा सब दिया देवने कृपावारि वर झरके बेटा ।
और सुनो पहुँचे इनके घर पितर मेरे सब तरके बेटा ॥
पुरखे पीढ़ी सात के कोई रहे नहीं अब नरके बेटा ।
अभय बना प्रभु दिया शीश मम सह सनेह कर धरके बेटा ॥
हो जाता अतिशय पुलकित मैं पद पंकज पर परके बेटा ।
पहुँचूं इनके पास समझलो "शुक्ल" तुरत मैं मर के बेटा ॥

मणि २१

महादेव संरक्षक मेरे ॥

कृपा पात्र बेजोड़ मैं इनका कोई नहिं जग कक्षक मेरे ।
चमत्कार से इनके वे सब-रक्षक बन गये भक्षक मेरे ॥
इनके भय से दंश करे नहिं सचमानो भव तक्षक मेरे ।
अति अबोध अपठित को सब विधि देव यही हैं दक्षक मेरे ॥
लोक और परलोक सब तरह सबल समर्थक पक्षक मेरे ।
करने पर हैं तुले सद्य ही "शुक्ल" पूर्ति ये लक्षक मेरे ॥

मणि २२

महादेव पर यकीं करो सब ॥

मन तन और बचन तीनों को एकली कर ,यकीं करो सब ।
हो जाओ निर्द्वंद अभी ही सचमानो गर यकीं करो सब ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आश्रय इनका ले पहुँचोगे इनके ही घर यकीं करो सब ।
इनसे ही पलते हैं जग के जीव अचर चर यकीं करो सब ॥
इनसे विलग होय तापों से रहे विवशजर यकीं करो सब ।
मघावृष्टि सी विपदा उनके रही शीश झर यकीं करो सब ॥
इनके जरा इशारे संकट जाते हैं टर यकीं करो सब ।
इनका नाम सुमिर पापी भी जाते हैं तर यकीं करो सब ॥
प्रेमिल इनकी गोद प्यार से पाते हैं दर यकीं करो सब ।
रहें छत्र छाया में इनकी सुखी नारि-नर यकीं करो सब ॥
पा जाते परधाम सहज ही चरनन सिर धर यकीं करो सब ।
दानव देव "शुक्ल" कहते हैं धन्य-धन्य हर यकीं करो सब ॥

मणि २३

महादेव तनि सुनतऽ हमरौ ॥

गने हयऽ केतनन के आपन अब हमके गनि सुनतऽ हमरौ ।
सुनतऽनाहिं अनर्गल क्यौकऽ हमहुँ बकीं जनि सुनतऽ हमरौ ॥
दिल दबाय के नाहीं तनिकौ अति उदार वनि सुनतऽ हमरौ ।
शरणागत स्वीकार "शुक्ल" कै करिदेतऽधनि सुनतऽ हमरौ ॥

मणि २४

महादेव सुख खूब लुटाया ॥

आई विविध बयार किन्तु सच सुख संपति नहिं कभी खुटाया ।
दुखदायी भी तत्व मेरे हित सुखकारी साधनहि जुटाया ॥
असामान्य दुख के कारण का दुखदातापन निपट झुठाया ।
इतना ही नहिं जन्म-जन्म को दुख से मम संबंध छुटाया ॥
मेरे आँगन में बैठाकर दुख से उसका शीश कुटाया ।
"शुक्ल' प्रसाद प्राप्तकर इनका फिरता हूँ अलमस्त मुटाया ॥

मणि २५

महादेव से बात कहूँ सच ॥

करते घोर घृणा मिथ्या से कहना इनसे चहूँ महूँ सच ।
गुजरूँ गली न झूठ कभी मैं अपना प्यारा पंथ गहूँ सच ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बकना झूठ न चाहूँ भूले निकले वाणी सदा चहूँ सच ।
आजाता मौका इसके हित-संकट विकट सहर्ष सहूँ सच ॥
सत्याराधन के प्रभाव से सर्वकाल निर्द्वन्द रहूँ सच ।
स्वाभाविक जो देन है इसकी सस्ते में सम्मान लहूँ सच ॥
इससे अति कल्याण दीखता मुझको यारों यहूँ वहूँ सच ।
आवे बाढ़ सत्य सरिता में चाहूँ होकर विसुध बहूँ सच ॥
उनके ही प्रसाद होता सब निज में मैं कुछ भी तो नहूँ सच ।
मेरी नेक सलाह "शुक्ल" सुन बन जा प्यारे दोस्त तहूँ सच ॥

मणि २६

महादेव कहिये जीजा जी ॥

वाणी की सार्थकता इससे कहूँ बात सहिये जीजा जी ।
पर चर्चा अपवाद पराया बकना नहिं चहिये जीजा जी ॥
उनका नाम गुणावलि गाकर दुरित दोष दहिये जीजा जी ।
छन विनाशि है जग जीवन यह थिर रहता नहिं ये जीजा जी ॥
जिस पथ मिलें देव देवेश्वर राह वही गहिये जीजा जी ।
बढ़े प्रेम नद में प्रभु के वस विवश बने बहिये जीजा जी ॥
भार डार उन पर ही सारा हो निशंक रहिये जीजा जी ।
सब सुविधा सुख "शुक्ल" लोक द्वय उनसे ही लहिये जीजा जी ॥

मणि २७

महादेव हैं सार सार जी ॥

जाना बात तुम्हीं से मैंने यह संसार असार सार जी ।
इनके सिवा विश्व का सब कुछ समझूँ वृथा विकार सार जी ॥
इनसे ही संबंधित करना जीवन का सत्कार सार जी ।
इनका नाम गान गुनगन का करता अति उपकार सार जी ॥
इनकी परिचर्या प्राणी का कर दे बेड़ा पार सार जी ।
इनकी शरणागति सद्यः ही देती सुगति सँवार सार जी ॥
मैं निर्द्वन्द बना हूँ आश्रय बस इनका स्वीकार सार जी ।
"शुक्ल" कल्पनातीत नित्य ही मिलता दिव्य बहार सार जी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २८

महादेव अति प्रेम परोसे ।।

जोरि लेंय संबंध यथाविधि मेरे जैसे खलन-खरों से ।
दोष-दुरित, दारिद दुख सब विधि भगा देंय भव भक्त घरों से ।।
अपने आश्रित जन की खेते किश्ती अपने कुशल करों से ।
रहते अति संतुष्ट आप हैं राग द्वेष दुर्भाव टरों से ।।
करते अति सनेह सचमानो निजी दास-गुरु-द्विजन-डरों से ।
मिलते हैं दिलखोल दौरकर अपने आप वियोग जरों से ।।
घुलिमिलि बातें करें नेह भरि सुमिरि-सुमिरि जल दृगन झरों से ।
एकात्मता करें संस्थापित "शुक्ल" भाव अद्वैत भरों से ।।

मणि २९

महादेव अपनाया तब से ।।

मिलती बड़ी बहार यार है इनने दृष्टि फिराया तब से ।
नये नये सुख नित्य लूटता शरण आपकी आया तब से ।।
तापित कर पाता त्रिताप नहिं कृपा वारि वरसाया तब से ।
शोक मोह नहिं पास फटकते इनने दया दिखाया तब से ।।
हस्ती ही कोई जचती नहिं इनका सुयश सुहाया तब से ।
अतिशय उर उमगाया रहता गुनगन इनके गाया तब से ।।
जचता योग न ज्ञान-प्रेम के नद विच देव बहाया तब से ।
कृत कृत्यत्व सु "शुक्ल" प्राप्त है चरण शीशधर पाया तव से ।।

मणि ३०

महादेव का चालू खाता ।।

बंद कर दिया और विश्व का सत्य शपथ खा चालू खाता ।
दानव मानव देव किसी से भी अपना ना चालू खाता ।।
रुचता ही नहिं और किसी का इनका ही भा चालू खाता ।
इनसे लिया विशेष बढ़ा हम नाम गुनहिं गा चालू खाता ।।
दृढ़तर उसे बनाया उर विच वर विभूति छा चालू खाता ।
ससम्मान घर उन्हें बुलाकर निज में भी जा चालू खाता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना सरबस इन्हें सौंपकर इनसे सब पा चालू खाता ।
"शुक्ल" बन्द हो किसी जन्म नहिं यह इनका हा चालू खाता ॥

मणि ३१

महादेव का चालू खाता ॥

इनको हो देता हुँ सौंप मैं सब अपना वह धूना काता ।
खुश्क-तरावट का सवाल नहिं दे देते सो खुश-खुश खाता ॥
अखिलेश्वर अनुमानि आपको वर वैभव हिय अंतर छाता ।
किसी और से नहीं कभी भी इनसे ही निज उर उरझाता ॥
इनका नाम सुशस्त्र ग्रहण कर षट रिपु के सुदुर्ग दृढ़ ढाता ।
समझूँ इन्हें बन्धुवर अपना इनको पूज्य पिता प्रिय भ्राता ॥
इतनहिं नहिं दुनिया के जितने होते हैं सब इनसे नाता ।
पाता "शुक्ल" प्रमोद विविध विधि ये मेरे अति अद्भुत दाता ॥

मणि ३२

महादेव मन बना दास है ॥

विषयों की दासता छोड़कर अब निज सेवक बना खास है ।
उच्च कक्ष के विषय आज तो दीखें इसको यथा घास है ॥
किसी प्रलोभन से भी अब यह रहे सजग फटके न पास है ।
जागरूक रहने से अहनिशि सकते कोई नहीं फास है ॥
खुली दृष्टि सुस्पष्ट देखता उनके द्वारा निजी नास है ।
चरण कमल में भ्रमर बना यह करना अब चाहता वास है ॥
सुख के मूल यही हैं इसको भलीभाँति यह गया भास है ।
"शुक्ल" दिखाया यह दिन तुमने मुझे देव तुम्हरीहि आस है ॥

मणि ३३

महादेव मन हँसता मेरा ॥

विषयमुक्त होने से किंचित् इसने आज स्वस्थ दिन हेरा ।
इन विषयों के फेर में पड़कर भव का खूब लगाया फेरा ॥
सरगे गया-नरक जा करके कोल्हू डाल गया अति पेरा ।
बार अनंत-अनंत योनि में जा-जा करके डाला डेरा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनके ही कारण बेचारा रहा सदा दुर्दिन से घेरा।
भोगा विविध भोग इसने पर बना रहा इनका ही चेरा॥
शुभ संकल्प-सु-भात्र, सुसद्गुण के भूले भी जाय न नेरा।
अब कृतार्थ हो गया "शुक्ल" सच देवेश्वर प्रसाद पा तेरा॥

मणि ३४

महादेव का भला मनाऊँ॥

होता भला इन्हीं से सब विधि नहिं रंचक अत्युक्ति बताऊँ।
हो जाता अनिवार्य इन्हीं के रोम-रोम से गुनगन गाऊँ॥
कह पाना संभव न दीखता मैं इनसे क्या-कितना पाऊँ।
श्रवणेच्छुक विशेष समझाते तो समास में तुम्हें सुनाऊँ॥
विद्या-बुद्धि विभूति-विशद बल मोद मंजु बहुमान अघाऊँ।
शुचि सद्गुण सद्भाव सुकृत शुभ बिन साधन नितमेव लहाऊँ॥
ज्ञान-विराग-भक्ति भव की भलि इससे अधिक झूठ पतिआऊँ।
"शुक्ल" बताओ तब मैं पंचों क्यों नहिं इन पर प्राण लुटाऊँ॥

मणि ३५

महादेव गोपाल बने हैं॥

नाम-रूप-गुण-गौरवादि में करना इनके भेद मने हैं।
सृष्टि स्थिति संहार कार्य में सम समर्थ ये दोउ जने हैं॥
वे उनके-वे उनके अंशी यूँ श्रुति-शास्त्र अभेद भने हैं।
वे उनके-उनके वे उपासक, आराधक अन्योन्य घने हैं॥
सेवक आप-स्वामि इनके वे-वे इनको निज स्वामि गने हैं।
जन कल्याण अहर्निशि करना दोउन के जिय ठान ठने हैं॥
हितकारी, जग मंगलकारी, फनवन नित्य नवीन फने हैं।
युगल चरण पंकज पर निज शिर धरते "शुक्ल" सनेह सने हैं॥

मणि ३६

महादेव सँग झूला झूलूँ॥

तब ही तो समकक्ष आपने बड़े-बड़े को मैं नहिं तूलूँ।
एकमेव हो करके इनसे मैं निज का निजत्व सब भूलूँ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते प्रेमालाप आपसे सत्य भीतरी तह तक खूलूँ ।
"शुक्ल" सुभग सौभाग्य निजी पर को समझे मैं कितना फूलूँ ॥

मणि ३७

महादेव वर बने हैं देखो ॥
वेष वर्णनातीत रूप लखि तुच्छ निजहि सब गने हैं देखो ।
वर वरीय वस्त्राभूषण औ सब विधि सजे घने हैं देखो ॥
वाहन बैल सजा नखशिख-शिर छत्र जड़ाऊ तने हैं देखो ।
पन्ने के सिलबट्टे की ध्वनि श्रवण मधुर खनखने हैं देखो ।
विविध मसाले भंग पीसकर धरे देव के कने हैं देखो ॥
छोटे बड़े प्रसाद प्राप्तकर छाने सबही जने हैं देखो ।
ब्रह्मा छाने, विष्णू छाने-छान के गणपति तने हैं देखो ॥
चली बरात बाजने बाजे घाव निशान हने हैं देखो ॥
इसकी जोड़ न दिखे विश्व विच प्रति पड़ाव पर छने हैं देखो ।
लगा पर्व सा आज किसी को वर्जित करना मने हैं देखो ॥
कौन करे कल्पना कि जैसे शुचि सनेह सब सने हैं देखो ।
भरे अमित उल्लास "शुक्ल" यह लीला प्रभु की भने हैं देखो ॥

मणि ३८

महादेव के भगत पियारे ॥
पत्नी नहीं, पुत्र नहिं उतना नहीं मित्र हो सकें दुलारे ।
तन नहिं, धन नहिं अन्य स्वजन नहिं जितने ये प्रियपात्र हमारे ॥
स्वाभाविक होता इनके प्रति प्रेम कुछक हो निकट निहारे ।
होते ये अनंत गुन के निधि गिने कहाँ वे जाते सारे ॥
सब जनहित स्वभाव इनका हो अपन-पराव विभेद बिसारे ।
अवगुन से अति दूर रहें ये पर अपवाद से निपट किनारे ॥
बरनी क्या विशेषता जावे नाचें जिनके देव इशारे ।
"शुक्ल" अतिहि पुलकित होता मैं इनके पद पंकज सिर धारे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३९

महादेव मुसकाय के बोलें ।।
जब मैं तब की बात बताऊँ मेरा मन अनयासहि मोलें ।
खिल जातीं मुरझाई कलियाँ हिय की जरा जहाँ मुख खोलें ।।
वार्तारिंभ करत लगता जनु कानों में अमृत रस घोलें ।
सुने बिना रह जाय न उनसे वानी मधुर सकृत सुन जो लें ।।
आते ही सामने व्यक्ति की ये चितवृत्ति ततक्षण टो लें ।
कुटिलन को अत्यन्त कुटिल हैं भोलन को अत्यन्तहि भोलें ।।
आश्रित नर के भार लोक द्वय बड़ी शौक से निज शिर ढो लें ।
"शुक्ल" उदार दानिया बाँटे विश्व विभूति भरे निज झोलें ।।

मणि ४०

महादेव कल कहने लग गये ।।
तुम चाहो मत चाहो पंडित हम तो तुमको चहने लग गये ।
तुम पथ गहो न गहो हमारा हम तुम्हारि गलि गहने लग गये ।।
तुम्हें समय नहि-पर तुम्हरे हम जिक्र फिक्र में रहने लग गये ।
सहो मत सहो तुम-हम तुम्हरे कटु प्रयोग सव सहने लग गये ।।
बहो-मत बहो तुम-तुम्हरे हम प्रेम सरित में वहने लग गये ।
जब तक मिलें नहीं तुमसे हम विरह दाह में दहने लग गये ।।
हो यथार्थ अनुकूल मित्र नहि तुम तो हमको डहने लग गये ।
सुनकर ऐसी बात "शुक्ल" हम अतिशय लज्जा लहने लग गये ।।

मणि ४१

महादेव बिन भला नहीं है ।।
इनकी शरण बिना माया से छुटता हरगिज गला नहीं है ।
कृपा कटाक्ष भये बिन उससे लगती कोई कला नहीं है ।।
कौन विश्व में जिसको उसने छका-छका कर छला नहीं है ।
बड़े-वड़े योगी-ज्ञानी का उससे चारा चला नहीं है ।।
उसके फन्दे फँसा बेचारा को सशोक कर मला नहीं है ।
उससे बना विमोहित-जाकर कौन नर्क में जला नहीं है ।।
देवाश्रय रहनेवाले को घेरे कोई बला नहीं है ।
"शुक्ल" परा पद पंकज प्रभु के कौन-कौन फल फला नहीं है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४२

महादेव विषयों से बचाओ ।।

पड़ा प्रलोभन में मन मेरा उसको सत्य स्वरूप सुझाओ ।
होगा अति परिणाम बुरा सच इसको भलीभाँति समझाओ ।।
बदले में देवेश्वर इसमें अपनी भलिविधि भक्ति भराओ ।
अहनिशि डूबा रहे भाव में ऐसी इसकी लगन लगाओ ।।
चरण शरण से हटे कभी नहिं ऐसी इसमें दृढ़ता लाओ ।
अपनाया जाता अपना जस तैसा ही इसको अपनाओ ।।
खतरनाक होगी मैं कहता ढीलाई यदि कुछ दिखलाओ ।
"शुक्ल" समाप्त होने ही वाला है जीवन कृतकृत्य कराओ ।।

मणि ४३

महादेव सखि मोर करमाती ।।

करि देला निहाल निज जन-करि तनिक कृपा कै कोर करमाती ।
लागेला अति नीक छबीली उनकर मुख भल गोर करमाती ।।
बतिआवेला बात बताई प्रेम सुधा मधु घोर करमाती ।
मंद-मंद मुसुकाइ हाइ रे! ले बरबस चितचोर करमाती ।।
तीनि लोक स्वामी सरनामी अति सुभाव कर भोर करमाती ।
गनेला नहिं सेवक कर अपने करल करावल खोर करमाती ।।
सुनलेस दीन पुकार आर्त कै परेला तुरतहि दोर करमाती ।
चाहीला हम "शुक्ल' हमहि दे नेह सिंधु निजबोर करमाती ।।

मणि ४४

महादेव में लीन है होना ।।

मन की तजि अधीनता सारी इनके अवशि अधीन है होना ।
भर दी अति अदीनता इनने इनके निकट दीन है होना ।।
इनका नाम अकाम सुमिर बस दोष दुरित से हीन है होना ।
करना कोई काम और नहिं सेवा इनकी कीन है होना ।।
रहता स्वस्थ रखे इनके ही इनके विरह छीन है होना ।
इनके किये बना बेगम हूँ इनके गम गमगीन है होना ।।
इनको पा पुलकित तन-मन से इनके बिन अतिखीन है होना ।
इनकी भक्ति सुधासागर की हमको "शुक्ल" मीन है होना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४५

महादेव को जान जाव तो ।।

अंतः करन विशुद्ध बेगि हो इनका सुयश बखान जाव तो ।
सार असार ज्ञान ततक्षण हो यदि इनको पहचान जाव तो ।।
वस इतने में ही सचमानो बन सद्यः सुख खान जाव तो ।
किसी तरह जाये ही जो नहिं ऐसी पा उमगान जाव तो ।।
जो न नसीब कभी सुरपति को पा वह दिव्य अघान जाव तो ।
सब संभव हो जाय शर्तिया इन्हें इष्ट मन भान जाव तो ।।
लुट जाओ इन पर बरबस ही पा इनका कुछ मान जाव तो ।
"शुक्ल" नहीं मैं कृष्ण कहाऊँ इनके हाथ बिका न जाव तो ।।

मणि ४६

महादेव गुन गाते हम तो ।।

सने सनेह सर्वथा संतत सुन्दर सुयश सुनाते हम तो ।
करके इनकी याद गुनावलि नैनन नीर बहाते हम तो ।।
सुनने का सुयोग मिलता जहँ श्रवणेच्छुक वन जाते हम तो ।
सुनकर सुखद चरित सच मानो उर अत्यंत अघाते हम तो ।।
जग-जन से कर बन्द इन्हीं से वर-व्यवहार बढ़ाते हम तो ।
गंगा-यमुना पहुँच न पाते इनके नेह नहाते हम तो ।।
पुरस्कार में प्रिय प्रसाद पा प्रतिपल अति पुलकाते हम तो ।
उमगाते-हुलसाते हर छन "शुक्ल" प्रेम मद माते हम तो ।।

मणि ४७

महादेव से तुम्हें दिला दूँ ।।

जो चाहे ले लेना खुद ही चलो तो उनसे तुम्हें मिला दूँ ।
करामात दिखलावे विधि-विधि उनसे उत्तम दिला तिला दूँ ।।
उनके चमत्कार से तुम्हरे मुर्दा मन को अभी जिला दूँ ।
मुरझाई जो पड़ीं बिचारी उर उद्यान की कली खिला दूँ ।।
खड़ा बज्रमय दिल में दृढ़ सा वह वासना का खंभ हिला दूँ ।
पड़े सुरक्षित बड़े पुराने रिपुगन जिसमें ढहा किला दूँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छूमन्तर कर भरे छिद्र सब बात-बात में अभी सिला दूँ ।
मस्त बना दे अब हीं तुमको "शुक्ल" प्रेममद दिव्य पिला दूँ ॥

मणि ४८

महादेव सा देव कहाँ जी ॥
सतुआ नून गाँठ-गठिआये खोजो चाहे जहाँ-जहाँ जी ।
जाओगे जिस ओर इन्हीं की कीर्ति सुनोगे तहाँ-तहाँ जी ॥
होकर के शतायु-भलिविधि से प्रथम शोध लें आप यहाँ जी ।
जाना है अनिवार्य-जाय के बाद ढ़ूँढ़ खुब लेंय वहाँ जी ॥
दृढ़ निश्चित ऐसा हि समझ मैं पद पंकज इनका हि गहा जी ।
सारी चाह चुकाकर केवल तन-मन से इनको हि चहा जी ॥
इनके प्रेम सरित में सादर बन करके मैं विसुध बहा जी ।
"शुक्ल" इन्हीं की अनुकंपा से मेरा दोनों लोक लहा जी ॥

मणि ४९

महादेव हम भले जो होते ॥
कितना करते प्यार भला तुम नहिं दुनिया को छले जो होते ।
दे करके पीड़ा विधि-विधि की नहिं जग जन को खले जो होते ॥
बचकर के कुपंथ से प्रभुवर ! राह तुम्हारी चले जो होते ।
घृणित-हेय नहिं-हाय देव ! हम सुन्दर साँचे ढले जो होते ॥
तुम्हरे बल बलिष्ठ बन षटरिपु दुर्दमनों को दले जो होते ।
दीन-हीन बंधुन को विधिवत ललकि लगाये गले जो होते ॥
जलन भूल संसार कि सारी विरह तुम्हारे जले जो होते ।
होते फले "शुक्ल" फल चारिहु तव आश्रय में पले जो होते ॥

मणि ५०

महादेव होना है हमको ॥
महादेव तो हैं ही हो हम ! भेदबुद्धि खोना है हमको ।
इसके लिये अकाम नाम ले अन्तरमल धोना है हमको ॥
करि भलि भाँति परिष्कृत उर को प्रेम बीज बोना है हमको ।
ढोया बहु भव-भार पार हम और नहीं ढोना है हमको ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करवाती है बोध भ्रमात्मक यह माया जो-ना-है हमको ।
हुई वात सुस्पष्ट है यह सब शास्त्र नहीं टोना है हमको ॥
भास रहा सब एक शिवहिं-शिव कहीं भी कुछ दो-ना-है हमको ।
एकमेव हो "शुक्ल" देव की सुखद् सेज सोना है हमको ॥

मणि ५१

महादेव तो हैं हीं हो हम ॥

होता यदि सन्देह तुम्हें तो बतलाओ तुम ही हैं को हम ।
हमको भी भ्रम था सो छोड़ा अहंभाव को मित्रो खो हम ॥
आसानी से अहं मिटाया सचमानो अन्तरमल धो हम ।
इसके हित उपयोग किया बस भाव अकाम-नाम-प्रभु-दो हम ॥
इसे सरस कर लिया सर्वथा उर बिच प्रेम बीज वर बो हम ।
फिर तो झट सुस्पष्ट हो गया हैं निर्भ्रान्ति वस्तुतः जो हम ॥
सब में सक्षम हुये सत्य ही देवेश्वर चाहा तब तो हम ।
दासोऽहं थे प्रथम कहाते अब वे "शुक्ल" बकाते सो हम् ॥

मणि ५२

महादेव पद पा मन हरसा ॥

तजि विपरीत दिशा सच मानो इन दिशि द्रुत गतिधा मन हरसा ।
जुग-जुग जन्म-जन्म बीते पर इनकी सन्निधि आ मन हरसा ॥
इतना तो नहिं सत्य बताता सत्यलोक भी जा मन हरसा ।
बहु विधि की विशेषता इनकी निज अन्तर मह छा मन हरसा ॥
गान योग्य श्रुति मधुर बड़े ही गुनगन इनके गा मन हरसा ।
सने सनेह विदेह बने वर इनपर निज सिर ना मन हरसा ॥
अति स्निग्ध जग वंदनीय-दृग इन रज अंजन ला मन हरसा ।
"शुक्ल" लगा अनुमान सके यह किमि कोउ कितना बा मन हरसा ॥

मणि ५३

महादेव पद पा मन हरसा ॥

कौन लगा अनुमान सके यह इनके लिये हुँ कितना तरसा ।
बीते जन्म अनंत तरसते इनकी झलक नहीं दृग दरसा ॥
जाने क्यों अनयास अहेतुक प्रभु के कृपा भाव उर सरसा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी अति दयनीय दशा लखि होकर द्रवित परा वह दरसा ।।
मेरे प्रति शुभ काम भावना से भलिभाँति गया हिय भरसा ।
फिर तो वन्धन मुक्त दयावर वारि विशेष बराबर बरसा ।।
आई बाढ़ सुभाग्य सिन्धु में लगा नहीं यत्किंचित अरसा ।
ला पटका झट "शुक्ल" चरन तट पुलकित परम हुआ सिर परसा ।।

मणि ५४

महादेव मम करें सुरक्षा ।।
कोई और न मेरे इससे पर गइ इनके गरे सुरक्षा ।
जंगल में घूमूँ जंगल में घर में रहूँ तो घरे सुरक्षा ।।
ऐसे वैसे नहीं कभी जी करें भाँति भलि खरे सुरक्षा ।
होती कभी न गफलत इसमें छनभर को नहिं टरे सुरक्षा ।।
जितनी ही दयनीय दशा हो उतनी ही यह ढरे सुरक्षा ।
आवश्यक होने पर तो यह मघावृष्टि सी झरे सुरक्षा ।।
अवसर आ जाता वैसा तो विविध वेष यह धरे सुरक्षा ।
मेरे दुख द्वंदों को देखूँ अतिद्रुत गति यह दरे सुरक्षा ।।
अपने संरक्षित जनके उर महामोद्र यह भरे सुरक्षा ।
उसके पाप ताप सब विधि के हो हर्षित हिय हरे सुरक्षा ।।
करना अन्य न साधन पड़ता चारो फल यह फरे सुरक्षा ।
"शुक्ल" न सीमा भाग्य की उसके जिसके हिस्से परे सुरक्षा ।।

मणि ५५

महादेव पाना है चटपट ।।
इनको पाये बिन हरगिज नहिं जा सकती दुनिया की खटपट ।
फिर जन्मो फिर मरो बराबर लगा रहेगा यह सब लटपट ।।
इसीलिये पाने को इनके मेरा मन करता है छटपट ।
जीवन का यह काम जरूरी "शुक्ल" मुझे करना है झटपट ।।

मणि ५६

महादेव से गाल फुलाकर ।।
रहोगे किस दुनिया में जाकर बतलाओ तो इन्हें भुलाकर ।
इनकी भूल ने ही तो तुमको झकझोरा खुब यार झुलाकर ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे वैसे विविध भाँति से हाय धर दिया तुम्हें घुलाकर ।
यत्र तत्र कर विवश उड़ाया तुमको तूल के सरिस तुलाकर ॥
कौन बता सकता है कितना थका दिया भव भार दुलाकर ।
व्यथित किया बेतरह बराबर तुम्हें रक्त के आँस रुलाकर ॥
अब इनसे संबंधित हो झट लूटो अति सुख भाग्य खुलाकर ।
ये तुमको निहाल कर देंगे "शुक्ल" सत्य निज गोद सुलाकर ॥

मणि ५७

महादेव की वहू कहूँ सच ॥

गहे राह पतिदेव जौन सी वो ही पथ की गहू कहूँ सच ।
चाहें जो श्रीमान चित्त से उसकी ही वह चहू कहूँ सच ॥
जिससे करें प्रेम-करती वह द्वेषिन को अति डहू कहूँ सच ।
उसका ही रुख ताका करते, सजग अहर्निशि यहू कहूँ सच ॥
अनुकंपा होते हि एक की दया दुहुन की लहूँ कहूँ सच ।
पाता दिव्य प्रसाद आपसे, उससे शुभ सुख महूँ कहूँ सच ॥
कर वात्सल्य प्राप्त-इनका ही आराधन कर तहूँ कहूँ सच ।
"शुक्ल" भाव अद्वैत दुहुन में कर निचिंत मैं रहूँ कहूँ सच ॥

मणि ५८

महादेव समझाऊँ कैसे ॥

कहते संत सिद्ध कोइ हमको बिना हुये बन जाऊँ कैसे ।
रंचक भक्ति न दिखती दिल में निज को भक्त लगाऊँ कैसे ॥
करने से इन्कार और ये कहते जान छुड़ाऊँ कैसे ।
है जो बात सही दिमाग में मैं इनके बैठाऊँ कैसे ॥
चकराती मम अकल बताओ यह उलझन सुलझाऊँ कैसे ।
मुझ पर कृपा अहैतुकि प्रभुकी यह इनको दरसाऊँ कैसे ॥
कृपा प्रसाद सिवा मेरे में है कुछ नहीं बताऊँ कैसे ।
"शुक्ल" उठाता लाभ आपसे इनका वही लहाऊँ कैसे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५९

महादेव जौनी विधि राखैं ।।

तरसैं रूखे सूखे को भी माल चकाचक नित प्रति चाखैं ।
ललचावैं कौड़ी कौड़ी को तिनका सरिस लखैं हम लाखैं ।।
मारैं दंड लगावैं बैठक पड़े खाटपर रहि रहि काखैं ।
देंय बिगाड़ बात-बातन में कारण बिनहिं बढ़ावैं साखैं ।।
चूमैं चरण सभ्य सम्मानित सोहृदे दपटि दिखावैं आँखैं ।
बनैं लबार सिरोमनि या हम हो ध्रुव सत्य जो कुछ मुख भाखैं ।।
विचरैं बन निर्द्वंद लोक द्वय एक न एक विषय ले झाखैं ।
"शुक्ल" करैं स्वागत सबका नहिं किसी परिस्थिति में मन माखैं ।।

मणि ६०

महादेव कोई क्यों रोवें ।।

रोता देख किसी को प्रभुवर हम संतुलन मानसिक खोवें ।
धोवें मुख सब गव्य दुग्ध से क्यों आँसुन से ये मुख धोवें ।।
करें सुदिन के शुभ दर्शन सब क्यों दुर्दिन दुख जग जन जोवें ।
सुख संपति सम्पन्न सकल हों विपति अपार भार क्यों ढोवें ।।
रागद्वेष का लेश रहे क्यों, क्यों नहिं प्रेम बीज वर बोवें ।
होकर विरत अधर्म बुद्धि से धर्म-सनेह मृजुल मति मोवें ।।
साधन संभव और न हितकर जानि देव शरणागत होवें ।
आवत जात थके बेचारे अबतो "शुक्ल" शांति युत सोवें ।।

मणि ६१

महादेव कहते ले केला ।।

विक्रय कर्ता बने वेचते पैसा-पैसा धेला-धेला ।
कोई नहीं विवशता इनको करते सभी शौकिया खेला ।।
गुरु बनि देंय यथार्थ ज्ञान ये सेवा करें सविधि बन चेला ।
ब्राह्मण बन पद पीठ पुजावें, करें सफाई बनकर हेला ।।
राजा बने राज सुख भोगें, बनि येइ, रंक मुसीबत झेला ।
साव बने सौवाइ बघारें चोर बने येइ जाते जेला ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बने किसान किसानी करते ठेलहा बने ठेलते ठेला ।
सौ की एक "शुक्ल" यह सुनिये इनके दम का ही सब मेला ॥

मणि ६२

महादेव ही कहें ले दही ॥

ग्वालिन बने धरे मटकी सिर फिरते यार बजार गलि गही ।
मीठी दही मलाई संयुत रंचक भी जिसमें न हो मही ॥
पड़ते ही आवाज कान में दौड़ें गाहक चाव से चही ।
हटने का अवसर न मिले तब लेकर ये जमजाँय जी जहीं ॥
लेनेवाले टूट पड़ें सब लेते हैं वे लूट बस तहीं ।
हो करके निराश रह जाते वेचारे सुनते जो हैं नहीं ॥
मेरी तो नितकी बंधी है देकर मुझको जाँय ये कहीं ।
मै हो गया निहाल "शुक्ल" झट मानो सत्य प्रसाद पा यही ॥

मणि ६३

महादेव प्राणाधिक प्यारे ॥

लुटसे परे प्राण इनपर हैं इनकर नीकि निकाइ निहारे ।
इनका रूप स्वभाव भलासा इनपर है जादू सा डारे ॥
हैं बन गये सर्वथा बेबस इनके हाथों बिके विचारे ।
नाचा करें निरंतर ये बस अति प्रमुदित इनके हि इशारे ॥
अपनी खबर नहीं इनको कुछ इनके ही मद के मतवारे ।
जीते ये इनके हि जिलाये मरेंगे ये इनके ही मारे ॥
दशा सुधार सके इनकी वह हालत इनकी जौन बिगारे ।
बस की बात न "शुक्ल" और के गौर करो चित चौर हमारे ॥

मणि ६४

महादेव जब चले बनाने ॥

मेरी बिगरी करनी सारी एकबार लखकर चकराने ।
लीपा तो खुब है पंडित ने ऐसा सोच मनहिं मुसकाने ॥
दहले हुए पश्त हिम्मत नहिं जरा नहीं जी में घबराने ।
जानें सभी जाननेवाले इसमें आप बड़े मरदाने ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ जाता हौसला है इनका मुझ जैसे जब कभी दिखाने ।
बिगरी तो बन गई कभी कीं अब निज हाथों लगे सजाने ।।
क्या से क्या कर दिया मगर सच अभी आप हैं नहीं अघाने ।
स्व स्वरूप कर देंय न जब तक "शुक्ल" कहाँ इनका मनमाने ।।

मणि ६५

महादेव को भूल न बच्चे ।।

वर्ना जन्म जन्म के तुझको पाप चबाय जायँगे कच्चे ।
होंगे नहीं सहायक किंचित हरगिज तेरे कक्के चच्चे ।।
इसी भूल के कारण ही तुम जाकर नरक बार बहु पच्चे ।
इस दुनियाँ में आकर के भी पाते हो गच्चे पर गच्चे ।।
इसी भूल से इस संसृति में बार अनंत यार तुम नच्चे ।
इसके ही कारण सर तेरे आफत जनम-मरण की नच्चे ।।
मतकर देर मानलें ततछन हित की बात तुझे यदि जच्चे ।
"शुक्ल" शरण ले देव-देव की सबके यही सहायक सच्चे ।।

मणि ६६

महादेव पद परस अभागा ।।

हतभागी होने से अबतक इनसे फिरा तु भागा भागा ।
पर इनकी अनुकंपा से सच अब तव भाग्य भलीविधि जागा ।।
देना ये चाहते तुझे सुख अनुपम अद्वितीय बे नागा ।
जो सुख सहसा देववृन्द को भी सच नहिं मिल सकता मागा ।।
रह तू इनके नेह नवल रस में ही निपट निरंतर पागा ।
टूटे तार नहीं छनभर को प्रभु से सदा रहे लव लागा ।।
सदा देवारी घर में तेरे बारह मास खेल तू फागा ।
बन निर्द्वन्द भरोसे इनके बिचरे "शुक्ल" साँड़ जिमि दागा ।।

मणि ६७

महादेव समता विस्तारो ।।

पीछे पड़ी विषमता को प्रभु अब हीं आप इसी छन मारो ।
मेरी मनस्थिती का इसने है सचमुच संतुलन बिगारो ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परीशान हो गया हुँ इससे इसको देव बलात् निकारो ।
है निर्मित तुम्हरीहि जानकर इसके प्रति न शील उर धारो ।।
हम जैसे कितनों को ही तो इसने हाय मोह मथि डारो ।
आश्रित अपना जान दयामय मेरी इससे जान उबारो ।।
मेरे बस की बात नहीं है सुनो कथन यह सत्य हमारो ।
"शुक्ल" बड़ी आशा ले करके देवेश्वर मैं बनो तुम्हारो ।।

मणि ६८

महादेव के माथे हैं हम ।।
और न देव न दानव मानव निज जीवन सँग नाथे हैं हम ।
वैसे तो कहना नहिं होगा मन भर गोबर पाथे हैं हम ।।
इनकी माया के इंगित पर नाचे ताथे ताथे हैं हम ।
कर्म माल में अधिकतया निज गंदे सुमनहिं गाथे हैं हम ।।
किंचित् भी सेवा इनकी सच किये न अपने हाथे हैं हम ।
कुशल यही है "सुकुल" लगे जो सब दिन इनके साथे हैं हम ।।

मणि ६९

महादेव को हम सब पायें ।।
करे प्रयत्न सभी मिल ऐसे देवेश्वर सबको अपनायें ।
जीवन का यह काम जरूरी जान, जान की बाजि लगायें ।।
प्राप्ति-हेतु सामूहिक सब मिलि अति विनम्र बन विनय सुनायें ।
सेवा करें सभी तन मन से प्रेम सहित प्रभु गुनगन गायें ।।
बनें अकाम सर्वथा सब ही दृढ़तर नामनिष्ठ बन जायें ।
सुनें सश्रद्ध कलित कीरति नित हो गदगद दृगनीर बहायें ।।
पहनें वस्त्र चढ़ाकर प्रभु को सब कुछ भोग लगाकर खायें ।
नायें शीश मनायें बहु विधि आत्यंतिक दीनता जनायें ।।
आश्रय ग्रहण आपका करके सद्यहि जीवन सफल बनायें ।
"शुक्ल" प्राप्तकर सर्वसरन को सब जन मुसरन ढोल बजायें ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ७०

महादेव ने भर दी मस्ती ॥

अनुकंपा परवश हो करके मघावृष्टि सी झर दी मस्ती ।
शरणागत होते ही केवल ला हाथों पर धर दी मस्ती ॥
लगता है मेरे तो मानो रोम-रोम में जर दी मस्ती ।
सेवर कहते हैं किसको जी मुझे देव खुब खर दी मस्ती ॥
जनम-जनम की लगी दीनता निखिल हीनता हर दी मस्ती ।
जिसकी जोड़ न दीखे जग में ऐसी अनुपम कर दी मस्ती ॥
जान सकोगे मजा तभी तो देव तुम्हें भी गर दी मस्ती ।
दीखे देवमयी दुनिया यह "शुक्ल" दिव्यवर वर दी मस्ती ॥

मणि ७१

महादेव सब तन में बसते ॥

कभी भूलिये नहीं बात यह जननायक जन-जन में बसते ।
गरजें यही बरसते ये ही कारे भूरे घन में बसते ॥
निर्णय काल करावें ये ही ये युग कल्प ये छन में बसते ।
बुरी तरह आकर्षित करते ये ही तो हैं धन में बसते ॥
पोषित करें दुग्ध बन शिशु को यही देव हैं थन में बसते ।
खूब मचाते मार काट हैं ये निर्दय बन रन में बसते ॥
भला बुरा करते करवाते ये ही हैं हर फन में बसते ।
मुझे नचाते नाच "शुक्ल" सब ये ही मेरे मन में बसते ॥

मणि ७२

महादेव निक लागं लल्ली ॥

बतलाती हूँ तुझे नेक सी झलक दिखी थी इनको कल्ली ।
फिर आँखों से ओझल होना कैसे कहूं कि कितनी खल्ली ॥
दिखते नहीं प्रयत्न किये भी फिरती रहती इनकी गल्ली ।
वरसन लगें नैन बादल बन जहाँ जरा भी चरचा चल्ली ॥
कैसे कहूँ बताऊँ कैसे जस मेरी मति गति है छल्ली ।
घूमूं चक्र सरीखी अहनिशि सच मेरी सुधि बुधि सब टल्लो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनकी जिकर फ़िक्र इनकी ही वृत्ति इन्हीं के साँचे ढल्ली ।
संभव "शुक्ल" मिलन कर सद्यहि तोहि बहुभाँति निहोरौं अल्ली ॥

मणि ७३

महादेव ये भाग्य के मारे ॥
देख दुखी होता इनको जी रहते तुमसे हाय किनारे ।
दोष नहीं रंचक इनका ये तव माया के छले विचारे ॥
उसने ही तो नहिं असत्य कुछ इनकी बुद्धि भ्रमित करि डारे ।
नाचें ये उसके इंगित पर थिरक थिरक कर बने लचारे ॥
लख इनकी दयनीय दशा को इनप्रति बने दया उर धारे ।
विषय विचारणीय देवेश्वर तुम बिन इनको कौन उबारे ॥
हारे ये हर भाँति सत्य ही नहिं कोउ इनकी ओर निहारे ।
हम भी इनमें ही हैं प्रभुवर "शुक्ल" शरण दो पाहि पुरारे ॥

मणि ७४

महादेव बल बहुत भरे हैं ॥
शारीरिक की कथा कहूँ नहिं आत्मशक्ति सम्पन्न करे हैं ।
संभव हुआ है तब ये जब की दयावृष्टि अनवरत झरे हैं ॥
हुआ ये तब मम दीन दशा लखि जब मुझ पर अत्यन्त ढरे हैं ।
शक्तिमान लख मुझे साहसी भी कहलाते शत्रु डरे हैं ॥
मेरे बिना प्रयत्न किये ही बेचारे चुपचाप टरे हैं ।
जिनको मिली जिधर की जबहीं वे उधरहि की राह धरे हैं ॥
हैं भी जो दुबके दुश्मन वे लगते मानो मरे परे हैं ।
"शुक्ल" शंभु की कृपा दृष्टि से सब कारज सब दिनहिं सरे हैं ॥

मणि ७५

महादेव भायेंगे जब तब ॥
उरझायेंगे उर उनसे हम उन्हें जान पायेंगे जब तब ।
उमगायेंगे हम अत्यंतहि उनका गुन गायेंगे जब तब ॥
बन जायेंगे अति अदीन हिय वर विभूति छायेंगे जब तब ।
मिट जाये सब दौड़ प्राप्ति हित इनके हम धायेंगे जब तब ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या नहिं पायेंगे बोलो तो हम इनको पायेंगे जब तब ।
कृत कृत्यत्व प्राप्त हो सहजहि चरण शीश नायेंगे जब तब ।।
अक्षय तृप्ति प्राप्त होगी सच उन उच्छिष्ट खायेंगे जब तब ।
हो जाये परिपूर्ण मनोरथ "शुक्ल" देव आयेंगे जब तब ।।

मणि ७६

महादेव कहँ जानब मानब ।।

है जो बात वास्तविक वो ही हम इनके निज सग पहिचानब ।
विश्व सृष्टि कर्ता भलभर्ता हर्ता जानि सविधि सनमानब ।।
गाउब उमगि उमगि गुन इनकर सुन्दर सुयश सप्रेम बखानब ।
बनब बेगि मुदमत्त सत्य हम इनकर शुचि सनेह मद छानब ।।
होना कभी विलग नहिं इनसे हितकर जान ठान दृढ़ ठानब ।
होती रहे नित्य परिचर्या शुभ फलदायि सुफनवन फानब ।।
लगे न ताप त्रिविध रंचक भी सिर प्रभु कृपा तान अस तानब ।
सिंहासन हिय मध्य बिठाउब "शुक्ल" न भूलि आन उर आनब ।।

मणि ७७

महादेव से बोले हम ये ।।

रखना था सो रखा सामने आज अजी दिल खोले हम ये ।
तुम्हरे सिवा न कोई अपना खुब दुनिया को तोले हम ये ।।
निर्विवाद है दिये तुम्हारे पाते सुन्दर चोले हम ये ।
पड़ परन्तु माया में तुम्हरी बैठे बंडा छोले हम ये ।।
बन उन्मत्त न झूठ रंच भी फिरते गहरी घोले हम ये ।
नर्क स्वर्ग इस ही प्रमाद बस कहाँ-कहाँ नहिं डोले हम ये ।।
भोगे भोग विभिन्न तरह के पाप पुण्य बस दो ले हम ये ।
"शुक्ल" चले चर्खा, यह कब तक पूछ रहे हैं भोले हम ये ।।

मणि ७८

महादेव में हर विशेषता ।।

भरी परी होने से ही तो बन बैठे हैं घर विशेषता ।
सारी की सारी मैं देखूं लिये ये निज में भर विशेषता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती अलग कभी नहिं इनसे छनभर को भी टर विशेषता ।
लगता है जैसे इनको ही बैठ गई है धर विशेषता ।।
प्राप्त होय चाहे जिसको भी इस तरुवर में फर विशेषता ।
फैली है दुनिया भर में यह इनसे ही तो झर विशेषता ।।
वन जावें तब तो महान सब पा जावें यह गर विशेषता ।
क्रय कर लिया "शुक्ल" मुझको इन देवेश्वर की वर विशेषता ।।

मणि ७९

महादेव भल भकुआ पावा ।।

बेला जूही चारु चमेली कमल गुलाब सुमन लइ आवा ।
विविध रंग बहु ढंग-ढंग के हार बनाय स्वमन बहलावा ।।
भूलिभान उमगान भलीविधि अति रुचि से रचि इनहिं सजावा ।
भरिगा भलि मस्तिष्क सुरभि से तरह-तरह के इत्र लगावा ।।
पहिरा हमहिं रेशमी सुन्दर भाँति-भाँति वर वस्त्र चढ़ावा ।
खावा हम पकवान्न रसीले इनके आगे धरि फुसलावा ।।
लाग गवास आन कुछ नाहीं इनकर सुरस गुनावलि गावा ।
ऐसहिं "शुक्ल" खेल खेलहि में इहौ लहावा उहौ लहावा ।।

मणि ८०

महादेव को जानो तुम भी ।।

जानें इन्हें जगत जन कितने ऐसा है तो जानो तुम भी ।
जानकार के जरिये ही सब जान सके सो जानो तुम भी ।।
जो भी युक्ति बतावें उस पर उचित ध्यान दो जानो तुम भी ।
बाधक जान जानकारी में अहंभाव खो जानो तुम भी ।।
वैसे जान सकोगे कैसे अंतरमल धो जानो तुम भी ।
करि उर विमल सुदृढ़ इनकर वर प्रेम बीज बो जानो तुम भी ।।
मनसा वाचा और कर्मणा शुचि सेवक हो जानो तुम भी ।
जो वे वही आप वह ही सब "शुक्ल" समझ लो जानो तुम भी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८१

महादेव लो जान युक्ति से ।।

जानकार से जान-जान के कर लो इनका ज्ञान युक्ति से ।
शास्त्र संत के द्वारा इनको लेते सब पहिचान युक्ति से ।।
संबंधित होने पर परिचय मिलता महा महान युक्ति से ।
परमानंद प्राप्त होता सच करके इनका ध्यान युक्ति से ।।
लगती स्वस्थ समाधि भूलता निज शरीर का भान युक्ति से ।
खिंचे चले आते-निज जीवन करते नाम प्रधान युक्ति से ।।
शरणागत होते हो जावें जन आनन्द-निधान युक्ति से ।
अनुकंपा परवश हो हमको "शुक्ल" मिले भगवान युक्ति से ।।

मणि ८२

महादेव पद पाया हरसा ।।

भटके बाद जन्म बहु तेरे चरण शरण में आया हरसा ।
दशा देख दयनीय-देव की होते निज पर दाया हरसा ।।
दिया कृपाकर जो कृपालु ने शीश नवा सो खाया हरसा ।
गान योग्य गुन भरे परे जो उन गुनगन को गाया हरसा ।।
स्वस्थ बैठ अनुराग सहित उर चरणाम्बुज को ध्याया हरसा ।
इह परलोकों का उन पर ही भल निर्भरता लाया हरसा ।।
पाकर के प्रसाद प्रभुवर का कर कृतार्थ यह काया हरसा ।
"शुक्ल" समुझि सर्वस्व सर्वथा पद पंकज शिर नाया हरसा ।।

मणि ८३

महादेव पद प्रान हमारे ।।

जीवन धारण करनेवाले हैं नहिं कोई आन हमारे ।
श्वास और प्रश्वास बने सच हैं हिय यही समान हमारे ।।
सुख की और तलाश न मुझको हैं ये ही सुख खान हमारे ।
इन्हें याद करके उमगाता हैं ये उर उमगान हमारे ।।
इन्हें लक्ष करके हितकारी होते हैं हरगान हमारे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनकी अनुकंपा पाने से नित नव होंय बिहान हमारे ॥
इनके ही संकेतों पर ये होंय पतन उत्थान हमारे ।
"शुक्ल" समाये हैं इनमें ही कुल के कुल अरमान हमारे ॥

मणि ८४

महादेव को पाय हिम्मती ॥
कायर से अनमने रहें ये इनको सदा सुहाय हिम्मती ।
बन जाता प्राणाधिक प्यारा इन पर प्राण लुटाय हिम्मती ॥
ले बटोर चित अन्य ओर से कर सेवा मन लाय हिम्मती ।
इनकी गुनद गुनावलि मुदभरि गाय-गाय उमगाय हिम्मती ॥
पाय प्रसाद आपका प्रतिपल उर अत्यंत अघाय हिम्मती ।
चमत्कार से पूर्ण देन लहि इन पर बलि-बलि जाय हिम्मती ॥
हो जाता निर्द्वंद ततक्षण दोनों लोक लहाय हिम्मती ।
"शुक्ल" नाय पद शीश ईश के जै-जै कार मनाय हिम्मती ॥

मणि ८५

महादेव पद पूज सुभागी ॥
कर प्रतीति अति देव कृपा से तेरी भलि तकदीर है जागी ।
घेरे थी जो जन्म-जन्म से सो दुम दाबि बला सब भागी ॥
जीवन में तेरे यह है सच आवश्यक कोइ वस्तु न खाँगी ।
बन तू बेगि बिसारि बात सब केवल देव चरन अनुरागी ॥
अंतर्वृत्ति अहर्निशि तेरी इकसी रहे प्रेम रस पागी ।
जला विराग आग उर अंतर भोगों का भल दे मुँह दागी ॥
चिंतन भी संभव न होय अस विषयों से बन विरल विरागी ।
दूर न करना पाद पद्म से "शुक्ल" देव से ले वर माँगी ॥

मणि ८६

महादेव को समझो अपना ॥
वस्तु व्यक्ति जो दीखे अपना सो तो है सब का सब सपना ।
हस्तामलक बात यह तो है इसमें लगा कहाँ कुछ ढपना ॥
छिन जाती जब चीज हाथ से पड़ता है की नहिं तब टपना ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृथा मोह के कारण इनके पड़े ताप तीनों से तपना ॥
इसने ही जारी कर रक्खा इस संसृति पथ का नित नपना ।
इनकी ही आसक्ति से जाकर जम सनमुख पड़ता अति कपना ॥
शासन कर स्वीकार विवश बन नरकों में जा जाकर खपना ।
निरासक्त निर्द्वंद "शुक्ल" तुम प्रभु का नाम निरंतर जपना ॥

मणि ८७

महादेव पद कंज कि लाली ॥
बतलाऊँ तुमको किस विधि से मुझको कितनी भाने वाली ।
सब जग से कर आँख बंद मैं देखा चहूँ इसे ही खाली ॥
आकर्षण कुछ अजब है इसमें मुझपर गजब मोहनी डाली ।
कौन लगा अनुमान सके कस है ये किस साँचे में ढाली ॥
शोभनीय जो जितने संभव सबकी इसने शोभा टाली ।
मेरे शुभ सौभाग्य भवन को खोलन की यह तत्पर ताली ॥
मेरे सर्व सुखों की सुन्दर दीखे मुझे परोसी थाली ।
एक झलक इसकी पा करके "शुक्ल" विश्व संपति सब पा ली ॥

मणि ८८

महादेव सब भेस धरे जी ॥
किसी अन्य की अनृत कल्पना दुनिया भर में यही भरे जी ।
सुन्दर साथहि साथ असुन्दर बने ये खोटे और खरे जी ॥
दानव मानव देव दैत्य के बहुविधि साँचे यही ढरे जी ।
गो गज सिंह भेड़िया भालू बन वनपशु सब यही चरे जी ॥
फुदकें पिहकें विविध पक्षि बन श्वेत पीत अरु लाल हरे जी ।
तरुवर बन पल्लवित सुपुष्पित काल पाय पुनि फरे झरे जी ॥
इनसे ही वाजार बसी यह हैं ये ही आवाद करे जी ।
"शुक्ल" न यह भूलें-रहते ये सब होते सव से हि परे जी ॥

मणि ८९

महादेव को जाना नहिं क्यों ?
जाना इन्हें उन्हें भी जाना पर इनको पहचाना नहिं क्यों ?
माननीय शिरमौर विश्व का उसको तू सनमाना नहिं क्यों ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसकी दी काया सब माया उसकी कीर्ति बखाना नहिं क्यों ?
खाया इनके दिये खाद्य को गाया इनके गाना नहिं क्यों ?
सेवा संभव होती इनकी फनवन ऐसे फाना नहिं क्यों ?
उलझा बुरी तरह इस जग में उर इनसे उलझाना नहिं क्यों ?
छाना मद्य विशेष विविध तू प्रेम भंग पर छाना नहिं क्यों ?
"शुक्ल" सना संतत विषयों में मति सनेह रस साना नहिं क्यों ?

मणि ९०

महादेव रस का ले लज्जत ॥
जिनका रस लेता है डूबकर लगने लगें वे तब गे लज्जत ।
तुझे बोध होता है भ्रांतिवश हैं हीं सबके सब बे लज्जत ॥
ऐसा भी नहिं अब हो ऐसा पहले उनमें भी थे लज्जत ।
है ही और न कहीं विश्व में रस तब कौन सके दे लज्जत ॥
मेरी मान सलाह मित्रवर लेना तुझे जो हो हे लज्जत ।
सेवा कर बन दीन प्रार्थना कर तब ये देंगे रे लज्जत ॥
रंच न बंचकता है इसमें हैं सच मूर्तिमान ये लज्जत ।
रस विग्रह हैं "शुक्ल" सो इनके राजे रोम-रोम में लज्जत ॥

मणि ९१

महादेव में अपना डेरा ॥
और ठौर कहिं मिला न इन बिन हेर सका मैं जितना हेरा ।
दिन चर्या कुल करूँ इन्हीं में इनमें करता रैन बसेरा ॥
सोऊँ सुख की नींद इन्हिं में होता इनमें शुभद सबेरा ।
उलझूँ भटकूँ ठोकर खाऊँ इनमें पा अत्यधिक अँधेरा ॥
दूर दूर की सूझ सूझती इनमें वांछित पाय उजेरा ।
जाकर स्वर्ग हिंडोला झूलूँ डाल नर्क में जाऊँ पेरा ॥
पुनरपि जननम् पुनरपि मरणम् होता है इनमें ही मेरा ।
बनकर "शुक्ल" बैल कोल्हू का इनमें रहूँ लगाता फेरा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९२

महादेव पद पूजक प्रानी ।।
कैसे बतलाऊँ क्या तुमसे बन जाता सब सुख की खानी ।
होना क्या जाने उदास वह उसकी वृति रहे उमगानी ।।
मस्ती कभी न जाती उसकी जैसे हो खुब गहरी छानी ।
अपने रंग मस्त दीखे पर होता नहिं किंचित अभिमानी ।।
दर्शनीय वह मुखपर उसके झलके देव कृपा का पानी ।
उसके द्वारा कभी किसी की होती है नहिं हरगिज हानी ।।
क्या करता क्या करना चहता उसकी गति नहिं जाती जानी ।
उसकी हालत पर सचमानो होती जग जन को हैरानी ।।
दशा देख उसकी चकराते कहलाते जो जोगी ज्ञानी ।
लेता नाम निरंतर प्रभु का बोले नहीं अनर्गल बानी ।।
इनके सुयश बखान गान में रहती उसकी बुद्धि समानी ।
कहीं रहे कुछ करे इन्हीं से चितवृत्ति सदा रहे उरझानी ।।
कौन कहे की कितना उसपर तुष्ट रहें भोला वरदानी ।
नाचे वह इनके हि इशारे कर न सके कुछ भी मनमानी ।।
रखतीं उस पर दया सहज ही मोहमयी माया महरानी ।
हम तो शुक्ल'' कहूँ सच उसको देव देव के तद्वत मानी ।।

मणि ९३

महादेव की चाह एक बस ।।
फैले पंथ अनेक अपन को रुचती इनकी राह एक बस ।
हो सुन्दर कोइ और नैन में नावें गिरिजा नाह एक बस ।।
बना करे कोइ बड़ा हमें ये जचते शाहंशाह एक बस ।
नहिं कोइ अन्य ममाश्रय जग में इनकर जुगवर बाँह एक बस ।।
लगता ताप न तीन रहे से इनके छत्रच्छाँह एक बस ।
मिट गई दाह अनेक जन्म की इन वियोग की दाह एक बस ।।
रही न कोई हाय हाय उर इन अभाव की आह एक बस ।
''शुक्ल''लाभ सब मिला शेष है इनहिं मिलनकर लाह एक बस ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९४

महादेव पद जो मन लागे ।।
तो समझो अत्यंत कृपाफल यूँ चित कहाँ चरन अनुरागे ।
इनसे पाय प्रेरणा सात्विक सद्यः शुचि सनेह रस पागे ।।
फिर तो बँधे पाद पद्मों से कौनिहुँ भाँति न टूटें तागे ।
उसके बिना प्रयत्न किये ही बाधक तत्व दशहुँ दिशि भागे ।।
सदा दिवाली घर में उसके बारह मास फलाने फागे ।
यह कहना क्या अभी शेष है उसका भाग्य भलीविधि जागे ।।
आवश्यक सब वस्तु उपस्थित नहिं कुछ खँगे न वह कुछ मागे ।
हो जाता सो पूर्ण मनोरथ "शुक्ल" कहूँ क्या इससे आगे ।।

मणि ९५

महादेव को कहें कृपा घन ।।
अधम अनाथ अकिंचन जन को खोज-खोजकर गहें कृपाघन ।
लेते हैं अपनाय कृपावश पाय जाँय जो जहें कृपाघन ।।
दीख पड़े कोइ गया बिता बस इसी ताक में रहें कृपाघन ।
मुझसा पतित पुराना पाते महामोद मन लहें कृपाघन ।।
उसके दोष दुरित दुर्गुण दुख हो दयालु द्रुत दहें कृपाघन ।
उसकी महाहरामी हरकत अति सहिष्णु बन सहें कृपाघन ।।
जो भी जहाँ पुकारे इनको प्रकट तुरत हों तहें कृपाघन ।
आवे शरण चैन पावे सब "शुक्ल" यही चित चहें कृपाघन ।।

मणि ९६

महादेव में शील भरी है ।।
नख से शिख तक कोइ देख ले तन में इनके शील जरी है ।
कर दी शोभा शतगुन इनकी मुक्तमाल सी शील लरी है ।।
कोई और न दिखे कि जिसके हिस्से ऐसी शील परी है ।
कभी किसी छन किसी काल नहिं मन से इनके शील टरी है ।।
कह सकता है कौन पतित वह कौन न जिसपर शील ढरी है ।
बड़े बड़े अपराधिन पर भी करुणामयि यह शील झरी है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वजनों को सुख देन हेतु सच विविध रूप यह शील धरी है ।
भवसागर तरने को सब विधि "शुक्ल" सुखद यह शील तरी है ॥

मणि ९७

महादेव आते तो आता ॥

ऐसे कहीं न जाता इकला महादेव जाते तो जाता ।
धीरे चलें चलूँ मैं धीरे महादेव धाते तो धाता ॥
खाता हो इन बिन कोई मैं महादेव खाते तो खाता ।
वैसे मुँह बोलना न चाहूँ महादेव गाते तो गाता ॥
हाथ हिलाना चहूँ न वैसे महादेव काते तो काता ।
किसी काम में भी कर हम तो महादेव नाते तो नाता ॥
बात कोई भी हो दिमाग में महादेव लाते तो लाता ।
वैसे कहाँ सुहाँय "शुक्ल" हम महादेव भाते तो भाता ॥

मणि ९८

महादेव के सनेह साना ॥

फिरता हूँ अलमस्त मजे में इनपर ही होकर दीवाना ।
सुधि बुधि भूला रहूँ हमेशा जैसे हो कोइ गहरी छाना ॥
हस्ती गई हिरा सी अपनी इनके कर अस्तित्व बिकाना ।
चलना पड़े इशारे इनके कर पाता नहिं कुछ मनमाना ॥
भला बुरा कोइ पूछे कैसे दे देते सो पड़ता खाना ।
जौन राग रागिनी जौन सी जिस विधि चाहें होता गाना ॥
नर्क स्वर्ग हमको क्या इससे जहाँ भेज दें हो चुप जाना ।
दिखता "शुक्ल" विलग बाहर से भीतर इनमें रहूँ समाना ॥

मणि ९९

महादेव पद परे भलाई ॥

जो ले जाय दूर इनसे सच उस दुष्पथ से टरे भलाई ।
इनसे इनके दास दास से बने भीरु भलि डरे भलाई ॥
लोक सुखद परलोक सँवारिनि हृदय भक्ति भव भरे भलाई ।
नके नाम चलत चाकी में दोष दुरित दल दरे भलाई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनसा वाचा और कर्मणा सेवा इनकी करे भलाई ।
कोई माँग न अपनी रखकर जो दे दें सो चरे भलाई ॥
जरना परे चहे जुग जुग तक इन वियोग में जरे भलाई ।
इन्हें याद करके प्रेमाकुल निज नैनन के झरे भलाई ॥
साधन और बने न बने क्या परे इन्हीं के गरे भलाई ।
नर्क स्वर्ग कहिं जाव भले पर पहुँचे इनके घरे भलाई ॥
त्यागि ईषणा तीनि इनहिं कर करते चिंतन मरे भलाई ।
विश्ववंद्य इन विश्वनाथ के "शुक्ल" चरन सिर धरे भलाई ॥

मणि १००

महादेव तुम कैसे सीधे ॥
कर नहिं सक्के कल्पना कोई किसी तरह भी जैसे सीधे ।
कहने से विश्वास करे नहिं यह जग जन हो तैसे सीधे ॥
सतुआ नून गाँठ गठिआये खोजे मिलें न ऐसे सीधे ।
सीधेपन की "शुक्ल" इति श्री हो जाती हो वैसे सीधे ॥

मणि १०१

महादेव हर लो हर इच्छा ॥
ऐसा करो उपाय बेगि ही हिय से मेरे जाय टर इच्छा ।
दपटो खूब जोर से इसको जिसमें देव जाय डर इच्छा ॥
पशुपति हो कह दो निज पशु से मेरी सभी जाय चर इच्छा ।
या दो खोल त्रिनेत्र आपना एकहि साथ जाय जर इच्छा ॥
दो या भोंक त्रिशूल कलेजे अबहीं मुई जाय मर इच्छा ।
लगता हो कुछ मोह तो लेकर निज झोले में लो भर इच्छा ॥
या तो फिर समूल इसको अब निज अनुकूल देवकर इच्छा ।
मन वच कर्म "शुक्ल" तुमको ही भलिविधि वरण करे वर इच्छा ॥

मणि १०२

महादेव चित से चहु चेला ॥
चाह रहा है जिसे चित्त से चंद दिनों का है वह मेला ।
कोई नहीं बतानेवाला कब हो जाय खत्म यह खेला ॥
जिस काया का कर गुमान तू वह कच्चा मिट्टी का ढेला ।
कमा कमा कर धरा खूब पर जाना नहीं संग में धेला ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोचा कभी न इन बाँतों को फलतः बड़ी मुसीबत झेला ।
नर्क स्वर्ग जा जा जुग-जुग से क्या नहिं सहे सहस्त्रन सेला ।।
विवश बना कह कौन सके यह कब से ठेल रहा भव ठेला ।
सब बन जाय ततक्षण अबहीं "शुक्ल" जो चेत लेहु यहु बेला ।।

मणि १०३

महादेव चित से चहु चेला ।।

बहुत बहा भव के बहाव में और नहीं अब तो वहु चेला ।
भटक चुका बहु भवाटवी में राजमार्ग इनकर गहु चेला ।।
लूटें लाभ पथिक इस पथ के जो स्वर्गीय लूट तहुँ चेला ।
देखी रंग बिरंगी दुनिया रहकर देख ढंग यहु चेला ।।
चाह और की चिता बनाकर लगा विराग आग दहु चेला ।
चर्चा बंद पराई कर सब मुख शिवनाम सुयश कहु चेला ।।
बन जा झट निर्द्वंद लोकद्वय होकर देव शरण रहु चेला ।
अर्थ धर्म शुभ काम मोक्ष भी इनसे "शुक्ल" सद्य लहु चेला ।।

मणि १०४

महादेव गुन गाकर गुरुजी ।।

हो सच गया कृतार्थ सद्य मैं श्रीचरणों तक आकर गुरुजी ।
होगा सुभग सुधार आपसे सदुपदेश अब पाकर गुरुजी ।।
मनसा वाचा और कर्मणा समझें मुझको चाकर गुरुजी ।
उल्लंघन आदेश करूँ नहिं कहूँ शपथ मैं खाकर गुरुजी ।।
कर लूँगा कल्याण बेगिही देव शरण में जाकर गुरुजी ।
बैठाऊँ हिय सिंहासन पर मैं इनको अब लाकर गुरुजी ।।
हो जाऊँ तल्लीन इन्हीं में इनसे उर उरझाकर गुरुजी ।
जीवन सफल "शुक्ल" कर लूँ मैं शंभु चरण शिर नाकर गुरुजी ।।

मणि १०५

महादेव के सँग खुलि खेलूँ ।।

ये अपने प्रिय पात्र पुराने इनसे करि मन चँग खुलि खेलूँ ।
कैसी हिचक झिझक क्यों होती होली का हुरदँग खुलि खेलूँ ।।
ऐसे मनहूसों सा क्यों जी छान छनाकर भँग खुलि खेलूँ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छूटें फबत फुहार शीश से नहा दिव्य जल गँग खुलि खेलूँ ।।
मलूँ गुलाल गाल गोरे में नाय नवाकर रँग खुलि खेलूँ ।
भोली भली प्रकृति है इनकी कर कर इनको तँग खुलि खेलूँ ।।
बड़ी सिधाई से सच खेलूँ खूब मचाकर जँग खुलि खेलूँ ।
भरि भलि भलमनसी से खेलूँ बन नंगा सँग नँग खुलि खेलूँ ।।
करि करि विविध विनोद मोद भरि नये नये रचि ढँग खुलि खेलूँ ।
"शुक्ल" न कोउ कर पाय कल्पना भरि उमंग अँग अँग खुलि खेलूँ ।।

मणि १०६

महादेव सा सखा लखा नहिं ।।
इनका आश्रय ले अपात्र भी पड़ अभाव में झखा लखा नहिं ।
कुटिल शिरोमणि को सनेह रस देंय नहीं ये चखा लखा नहिं ।।
जड़ को भी अद्वैत बोध का दें पढ़ाय नहिं कखा लखा नहिं ।
जन की सतत शरारत लख भी रंचक मनमें मखा लखा नहिं ।।
सेवक की की भूल भूलकर किंचित चित में रखा लखा नहिं ।
प्रिय सम्बोधन त्यागि "शुक्ल" को कभी शब्द कटु भखा लखा नहिं ।।

मणि १०७

महादेव पदकंज पियारे ।।
कोई और नहीं दुनिया में मेरे दिल के यही दुलारे ।
इनके आश्रय टिके प्राण मम येई मेरे प्राण अधारे ।।
दें जीवनी शक्ति मुझको ये जी न सकूँ मैं इन्हें बिसारे ।
अबहीं काम तमाम हमारा हो जावे यदि होउँ किनारे ।।
दीखें यही विश्व में अपने ये भी ऐसहि गनें बिचारे ।
इनकी याद मात्र हमको तो हर हालत में रहे सम्हारे ।।
मेरे सभी बिगारे कारज इनके द्वारा दिखें सँवारे ।
"शुक्ल" बने निर्द्वंद विचरते हम तो बस इनके हि सहारे ।।

मणि १०८

महादेव पद पर परदेशी ।।
मति भ्रम के कारण तू अपना भूल गया है घर परदेशी ।
स्व स्वरूप भी भूला तुझको ले यकीन तू कर परदेशी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारायण होते भी निजको समझ रहा है नर परदेशी ।
आशुतोष कहलाते हैं ये जाते आशुहि ढर परदेशी ।।
आराधन इनका कर विधिवत ध्यान हृदय निज धर परदेशी ।
इनकी अनुकंपा से तेरे जाँय पाप सब जर परदेशी ।।
आत्मज्ञान तुझे ततछन हो जा जीते जी मर परदेशी ।
"शुक्ल" देव के देव गोद में लें समोद निज भर परदेशी ।।

मणि १०९

महादेव मणिमाला धरकर ।।
शोभा कर सतगुनी सद्य लो सुकृत सींव अपने इस गर कर ।
साधन श्रम से बचो भलीविधि इसके विविध भाव उर भर कर ।।
मिले राह निश्चय ही तुमको सीधी सी उनके ही घर कर ।
हर लेवें हर ताप तुम्हारे कृपा वृष्टि तुम पर झट झर कर ।।
उनका दृष्टिकोन पड़ते ही होवें भस्म पाप सब जर कर ।
ताड़ित हो उनसे अनयासहिं हों द्रुत दूर दोषगन टर कर ।।
करें पलायन पलक मारते प्रबल पुरान आत्मरिपु डर कर ।
जीवन सफल "शुक्ल" कर लो तुम उनके पादपद्म में पर कर ।।

दोहा

बकते रहते हैं सदा हम जो अनाप सनाप ।
भर उदार भल भाव कुछ ख्याल करें नहिं आप ।।
क्या इसमें कुछ झूठ है बकवाते सब आप ।
फिर मेरे सिर पर भला क्यों मढ़ते हैं आप ।।
बनी रहे ऐसिहि सदा अनुकंपा सरकार ।
"शुक्ल" यही बिनती विनत करता बारंबार ।।
अति विचित्र अद्भुत अतिहि रचना यह सरकार ।
"शुक्ल" कराई तुमहि ने कर लो तुम स्वीकार ।।

मि० फाल्गुन शुक्ल १० शनिवार सं. २०२० दि. २२-२-६४

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशीधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
अट्ठारहवीं माला समाप्त ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवेनमः *

महादेव मणिमाला

उन्नीसवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कबित्त

आते हैं दिखाते या नहीं जी उस ओर देखो,
मंजुल प्रकाश दिव्य दश हूँ दिशि छाते हैं :
ब्रह्मा छत्र धारे विष्णु चमर डुलाते,
देव पुष्प बरसाते ऋषि अस्तुति सुनाते हैं ।।
गाते गंधर्व वाद्य किन्नर बजाते, आप
वृष पै विराजे मंद मंद मुसकाते हैं ।
दोऊ वर हाथे फलचार हैं लुटाते,
जो भी पास प्रभु आते 'शुक्ल' पाते पुलकाते हैं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्नीसवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मंगल नहिं को तब ।।

मूर्तिमान मंगल दीखें ये पूछूं मैं मंगल कहि को तब ।
निसंकोच कहि सको कहो किन कहि महान मंगल गहि को तब ।।
अशिव अमंगल कार्यकारि भी जानि हमें चित से चहि को तब ।
मेरी सतत शरारत निरखत किये नगण्य विहँसि सहि को तब ।।
सारी भूल भुलाय हमारी ले मोहिं गोद मोद लहि को तब ।
अनुकंपा परवश हो केवल मेरे दोष दुरित दहि को तब ।।
जुग के जमे वासना तरु को हो दयालु सद्यः ढहि को तब ।
मेरे इस गंदे उर गृह में सुख संयुक्त "शुक्ल" रहि को तब ।।

मणि २

महादेव की सेवा कर रे ।।

चखना है यदि मेवा अनुपम मेरी बात हृदय मधि धर रे ।
होना है निर्द्वन्द लोक द्वय परजा जल्द इन्हीं के गर रे ।।
हो जा झट संबंधित इनसे जाना है यदि इनके घर रे ।
मतकर कभी शिकायत-सुख से दिया इन्हीं का चारा चर रे ।।
लखकर दीन वेष इनका कोइ होकर दिल दयार्द्र द्रुत ढर रे ।
मिट जावे जिय जरनि अभी ही इनके ही वियोग में जर रे ।।
इनको सुमिर सुमिर कर संतत दृग दोउन सनेह जल झर रे ।
इनके नाम चलत चाकी में चटपट दोष दुरित दल दर रे ।।
इनकर भक्तिभाव भर हिय में बन जा निपट नीक सा नर रे ।
हो श्रद्धा संयुक्त भाँति भलि इनके पाद पद्म पर पर रे ।।
इनका ही आश्रय ले केवल निज इक्कीस पितर सह तर रे ।
इनकी अनुकंपा से सद्यः सुन्दर "शुक्ल" चारि फल फर रे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव सा और दिखा नहिं ॥

आश्रय लेनेवाला इनका किसी जन्म में कभी झिखा नहिं ।
बख्शें उसे सुराधिप पद भी जिसको विधि सुख स्वल्प लिखा नहिं ॥
प्रेमिल भक्त प्रधान बनावें जो कबहीं रस प्रेम चिखा नहिं ।
करें "शुक्ल" आचार्य उसे जो क ख ग भी मूढ़ सिखा नहिं ॥

मणि ४

महादेव कर भला सभी का ॥

तेरी माया ने देवेश्वर भलीभाँति मति छला सभी का ।
इसके ही टाले देखो तो सब विवेक है टला सभी का ॥
सतत चलाये इसके ही तो रहता चर्खा चला सभी का ।
इसके जुगन जलाये सचमुच खूब जिगर है जला सभी का ॥
छूटे नहीं छुटाये कैसेहुँ फाँसा ऐसा गला सभी का ।
हित तुम्हरे ही द्वारा पोषण पाकर सब दिन पला सभी का ॥
छुट पाता तुम्हरे हि छुटाये यह भव फंदा लला सभी का ।
"शुक्ल" न मेरा ही तुमसे भल भाग्य फलाने फला सभी का ॥

मणि ५

महादेव के लोक चलूँगा ॥

बीती दुर्दिन रैन सुदिन से मिलन बना मैं कोक चलूँगा ।
कह सुन ढोल बजाके सचमुच सुनो ताल मैं ठोक चलूँगा ॥
कौन है टाँग अड़ाने वाला बिला रोक बेटोक चलूँगा ।
इस उस दोनों ही लोकों का भार भार में झोंक चलूँगा ॥
आये विघ्न रूप धारणकर उसको बल्लम भोंक चलूँगा ।
अगर जरूरत पड़ी तो हँसतहि चढ़कर शूली नोंक चलूँगा ॥
इकले जाने का मुँह काला लिये भीड़ मैं थोक चलूँगा ।
"शुक्ल" देर कुछ नहीं जल्द ही हुआ विगत मैं शोक चलूँगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६

महादेव भजबै सब तजबै ॥

यजन योग्य अनुमानि भाँति भलि मन वच कर्म दत्त चित यजबै ।
मलिन परा जुग-जुग का अंतस ले निक नाम मसाला मजबै ॥
पाय प्रसाद सुसद्गुण सन्मति उत्साहित उर गृह खुब गजबै ।
रहकर दूर निखिल दोषन से दूषित काज करत कुछ लजबै ॥
जस बनना चहिये तस बेशक बनकर बेगि नीक नर बजबै ।
"शुक्ल" सावधानी से संतत इह पर लोक साज शुभ सजबै ॥

मणि ७

महादेव पग परूँ प्यार से ॥

धन्य भाग्य समझूँ अपना मैं पुर्नमिलन जो हुआ यार से ।
समझा सार असार कोहि सच हुआ जुदा जब सही सार से ॥
फल स्वरूप कुछ पूछो मत फिर जैसे बन्दर गिरा डार से ।
या जैसे फिसला हो कोई फिसलन वाली खड़ी ढार से ॥
मिला ठिकाना नहीं आज तक वह जो चला भव भीम धार से ।
अंग-अंग जर्जरित भये मम इसकी आह तरंग मार से ॥
दम-घुटता बेतरह बताऊँ दबता हूँ जब भँवर भार से ।
यह तो हुई खैरियत इनने किया इशारा उसी पार से ॥
पाते ही संकेत सुखद वह बच निकला मैं सभी वार से ।
मिलना संभव हुआ "शुक्ल" तब नीलकंठ प्रिय कंठ हार से ॥

मणि ८

महादेव मैं गजब गुनाही ॥

देख मुझे कहते सबके सब दिखलाता यह अजब गुनाही ।
पहुँच रहा है निकट मरन के दोष न जानै तजब गुनाही ॥
ललकि करे ललकार पाप यह क्या समझे फिर लजब गुनाही ।
माने यह बेकार बताऊँ शुचि लोक द्वय सजब गुनाही ॥
इस निलज्ज को सच कहता हूँ लगता है प्रिय बजब गुनाही ।
कभी सोच नहिं सके सोचाए यह दुष्पथ से भजब गुनाही ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकर नाम अकाम देव का अंतर्मल को मजब गुनाही ।
"शुक्ल" जरूरी क्यों स्वीकारे भव भवानि को भजब गुनाही ॥

मणि ९

महादेव मैं गजब गुनाही ॥

गुनहगार सरगना समझते सबके सब सचमुच हम काही ।
शासक बने गुनाही जन के जमदूतहु हमसे भय खाही ॥
हम इच्छित आचरण करें सच गहकर गैल सदा मन चाही ।
मनरंजन होता मेरा जब दीन दुखी जन को हम डाही ॥
कौन भला उत्पात कहे कोइ साँगोपांग किया हम नाही ।
देंय वाह वाही तब ही तो मेरे दिली दोस्त हम राही ॥
मिली परन्तु पता नहिं कैसे हमको देव कृपा की छाही ।
"शुक्ल" शरण में ठौर सद्य दो अशरण शरण पाहि प्रभु पाही ॥

मणि १०

महादेव को धन्य कहो सब ॥

कहता हूँ उस पर बिचार कर जचे बात तो धन्य कहो सब ।
कामधेनु काया दी इनने आभारी हो धन्य कहो सब ॥
विविध भोग भी दिये साथ-मन शुचि सनेह मो धन्य कहो सब ।
ले मन एक स्वजन का देते, भुक्ति-मुक्ति दो धन्य कहो सब ॥
इतनहिं नहिं इति नहीं देन की है इनके सो धन्य कहो सब ।
प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ नहीं-निज, अहंभाव खो धन्य कहो सब ॥
होगा ऐसे नहिं यथार्थतः अंतसमल धो धन्य कहो सब ।
"शुक्ल" भरे प्रेमाश्रु दृगन में, कपट रहित रो धन्य कहो सब ॥

मणि ११

महादेव मैं सच खल पूरा ॥

आदिकाल से भये आजतक मुझे जचें सबही खल कूरा ।
मैं खलत्व का गिरि गुरुवर हूँ मम समक्ष सब चूरा धूरा ॥
सब खलता बैठा समेट मैं और किसी को कहाँ ये जूरा ।
मुझपर मुसलधार बरसा यह तभी पड़ा अन्यत्र है झूरा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृढ़ संकल्प मेरा सुकृतों से रहना सदा नितांतहि दूरा ।
गरजूँ तभी गर्व भरि दिखता अन्य न जो इस क्षेत्र में शूरा ।।
उसे मान आचार्य अभी लूँ दिखला दे हमसा जो बूरा ।
"शुक्ल" समझ पाता परन्तु नहिं तुमको क्यों भाया यह घूरा ।।

मणि १२

महादेव आये थे घर कल ।।

कैसे तुम्हें बताऊँ बोलो जो पदार्थ लाये थे घर कल ।
बड़े प्रेम से रूखा सूखा रुचि समेत खाये थे घर कल ।।
गहरी छान नहाय निपट कर सरस गान गाये थे घर कल ।
बरसाकर रस बर बातों से दिव्य समाँ छाये थे घर कल ।।
मौज मजे की बाढ़ लायकर अजब गजब ढाये थे घर कल ।
फँस मैं गया फलाने उसमें जो फन्दा नाये थे घर कल ।।
भाते जन्म-जन्म से ये तो अतिहि अधिक भाये थे घर कल ।
भूलूँ मैं क्यों "शुक्ल" न वे ही जौन मजा पाये थे घर कल ।।

मणि १३

महादेव हर समय हर्षमय ।।

रहते औ रखते निज जन को महामोद मय बनय हर्षमय ।
अति नगण्य को भी कर देते अपने जन में गनय हर्षमय ।।
आश्रित रखें सुरक्षित सब विधि कृपा तान शिर तनय हर्षमय ।
दीनन की दीनता दरन कर अनुकंपा अति जनय हर्षमय ।।
सेवक को संतुष्ट करें शुचि सेवा फन्न वन फनय हर्षमय ।
दें रस बोर सनेही जन को मति सनेह रस सनय हर्षमय ।।
प्रेमिल को परितृप्त करें प्रभु प्रीति परस्पर घनय हर्षमय ।
कवि को करें कृतार्थ "शुक्ल" निज कीर्ति कलायुत भनय हर्षमय ।।

मणि १४

महादेव के फेर में परके ।।

लगता है कुछ ऐसा मानो रहे घाट के नहिं हम घर के ।
आप विचारवान बतलावें सुनकर बात गौर फिर कर के ।।
कर्म शुभाशुभ साफ कर दिया श्री पशुपति महराज ने चर के ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भस्म हो गया बीज बिचारा इनकी दया दृष्टि से जर के ।।
रौद्र मूर्ति इनकी लखि हिय से जिगरी दोस्त दोष सब टर के ।
नातेदार निराले प्यारे कामादिक भी सरके डर के ।।
लेते मजा पितर जन जो थे पहुँचे पास इन्हीं के तर के ।
हस्ती "शुक्ल" मिटा दी अपनी इनको वरके इनपर मर के ।।

मणि १५

महादेव की बानि बिचित्रै ।।
धूप दीप नैवेद्य न पूछें चहते केवल पानि बिचित्रै ।
एक बिल्व के पत्र मात्र से होते तुष्ट अघानि बिचित्रै ।।
अमृत पूछता कौन यहाँ विष भंग धतूरा खानि बिचित्रै ।
जाती नहीं किसी छन कबहीं अनुपमेय उमगानि बिचित्रै ।।
क्या देना नहिं देना क्या है सोच सकें नहिं दानि बिचित्रै ।
तुम्हरा हूँ कहते अपनाना मुझसे खल अपनानि बिचित्रै ।।
आश्रित जन के दूर करें द्रुत दोष दुरित करि हानि बिचित्रै ।
"शुक्ल" शरण स्वीकार किया प्रभु विविध भाँति सनमानि बिचित्रै ।।

मणि १६

महादेव को हँसी आ गई ।।
दी थी जो सुबुद्धि हमको सो गफलत में सब भेंड़ खा गई ।
रिक्त देख अस्थान ठाठ से आकर के दुर्बुद्धि छा गई ।।
खड़ी थी जो सद्वृत्ति इमारत आते ही इसके वो ढा गई ।
ढहते ही वह महल मान लो चिर संचित प्रिय शांति हा गई ।।
सहयोगिन सह गई कुशलता यह समझो वह शान्ति का गई ।
उसके ही आवेश ये वाणी गर्वभरे बदगीत गा गई ।।
हँसे गुरू तव तुम्हें बताऊँ तोभि देख भलि भाँति भा गई ।
इतनहि नहिं यह "शुक्ल" मजे में हमसे पोषण पुष्ट पा गई ।।

मणि १७

महादेव के राज सुखी हूँ ।।
सपरिवार अपने जीवन का रख इनके सर ताज सुखी हूँ ।
अहंभाव अपना सबका सब मिटा कोढ़ का खाज सुखी हूँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिनिधि बना शौक से इनका कर करके सब काज सुखी हूँ ।
इनके अप्रिय काममात्र से आकर भलि विधि बाज सुखी हूँ ।।
इनका नाम मसाला लेकर उर उत्तम तम माज सुखी हूँ ।
पाकर शुचि सद्भाव आप से हृदय भवन में गाज सुखी हूँ ।।
इनके द्वारा लोकद्वय के सकल सजाये साज सुखी हूँ ।
आदि काल का दुखी "शुक्ल" मैं सचमानो भा आज सुखी हूँ ।।

मणि १८

महादेव मम धन्य भाग्य है ।।

मिला सुखद सान्निध्य आपका मुझ जैसा किस अन्य भाग्य है ।
निज समक्ष समझूँ समझो मैं देवाधिप का वन्य भाग्य है ।।
तुमसे संबंधित जन का ही मेरी दृष्टि में गन्य भाग्य है ।
संभव नहीं सुकृत पुंजन अस कृपा अहैतुकि जन्य भाग्य है ।।
समता की जा सकती किससे महामहिम अति मन्य भाग्य है ।
किया जाय जितना थोड़ा है वर्णन यह भल भन्य भाग्य है ।।
जनम-जनम की लगी दीनता अखिल हीनता हन्य भाग्य है ।
"शुक्ल" मिला अनुकंपा से ही मुफ्त मुझे बहु पन्य भाग्य है ।।

मणि १९

महादेव सीधे से कहु बस ।।

भटका बहुत भलाई चहु जो तो अब पथ इनका ही गहु बस ।
और चाह सब पाप है जी की इनसे इनकी भक्तिहि चहु बस ।।
जुग-जुग से दृढ़ खड़ी इमारत दुर्वासन की बेगिहि ढहु बस ।
लेकर नाम अकाम आपका दोष दुरित दल को द्रुत दहु बस ।।
हो विचलित नहिं रंच-मंच से आये द्वन्द सहर्षहि सहु बस ।
इनका तो है ही बन इनका सादर शरण इनहि के रहु बस ।।
इनके प्रेमामृत वारिधि में विवश विसुध बन बेगिहि बहु बस ।
"शुक्ल" आशुहीं आशुतोष से अति पावन प्रसाद प्रिय लहु बस ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २०

महादेव गुन गाउब गोइयाँ ।।

सानुराग सानन्द-सुसादर इनकर सुयश सुनाउब गोइयाँ ।
करत गुनद गुनगान आपका तनकर भान भुलाउब गोइयाँ ।।
इत उतते बर जोरि मोरि चित सुभग सनेह सनाउब गोइयाँ ।
इनकर नाम अकाम अहर्निशि ले सब पाप नशाउब गोइयाँ ।।
रुचि इनकी रुचि में मिलाय निज भलिविधि इनकहँ भाउब गोइयाँ ।
बनि इनकी नहिं और किसी की आपन इनहिं बनाउब गोइयाँ ।।
प्राणेश्वर अपने ये ही हैं इनपर प्राण लुटाउब गोइयाँ ।
हँसने को हर जन्म "शुक्ल" हम हँसि-हँसि इनकहँ पाउब गोइयाँ ।।

मणि २१

महादेव जय-जय कहि जग जन ।।

होते पूर्ण काम सब दिन से इनसे निज इच्छित लहि जग जन ।
बन जाते निर्द्वंद सुनिश्चित इनकी शरणागत रहि जग जन ।।
जाते पहुँच पास तक बेश्रम इनकी सुखद राहगहि जग जन ।
हो जाते प्रिय पात्र आपके इनको एकमात्र चहि जग जन ।।
इनकी शुभ सन्निधि पाकर फिर होना अलग चहैं नहिं जग जन ।
सुख विशेष अनुभव करते हैं इनके प्रेम सिन्धु बहि जग जन ।।
वहा करे बन विवश सदा ही चहा करें चित् से यहि जग जन ।
पहुँचें पार "शुक्ल" गोखुर-सा यह संसृति सागर थहि जग जन ।।

मणि २२

महादेव जिनको नहिं भाते ।।

उनके सिर दुर्दिन सवार है हम नहिं झूठी बात बताते ।
भोगें विविध विपति इस जग में उस दुनिया में दुर्गति पाते ।।
होती बड़ी दुर्दशा उनकी इस संसृति में आते जाते ।
थक जाना संभव मेरा है होती उनकी हानि बताते ।।
रहें लगाये आश बिचारे सुख उनको मुख नहीं दिखाते ।
करके कृपा अहैतुकि कबहीं जब हैं देव दया दरसाते ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परमानंद मयी तब उनको अपनी सुन्दर राह सुझाते ।
फिर क्या देर "शुक्ल" सद्यः ही उनको परम धाम पहुँचाते ।।

मणि २३

महादेव हैं खड़े दिखाते ।।

कहाँ बताऊँ तुमको भैया जहाँ लखूँ तहँ यही सुझाते ।
इनसे पूर्ण विश्व है यह तो नहीं और को ठौर बताते ।।
बनकर सृष्टिरूप सच इनहीं उसके कन कन माँहि समाते ।
करते दया किसी पर जब हैं तब यह भेद उसे समझाते ।।
देखें दृष्टि उठा वह जिधरहि दीखें ये उधरहि मुसकाते ।
हर में लख अस्तित्व आपका इनके जन हरदम हरसाते ।।
करते नहिं अपकार किसीका सबसे सद्व्यहार बढ़ाते ।
"शुक्ल" विनम्र रहें बनकर वे देव देव को अतिशय भाते ।।

मणि २४

महादेव सचमुच ही भोला ।।

भोलेपन की हद हो जाती जब बैठता जमाकर गोला ।
नेक दृष्टि डालते हमारा सचमुच भाग्य भलीविधि खोला ।।
मेरे लिये सुलभ कर देता वह स्वर्गीय पदारथ को ला ।
है वह कौन वस्तु दुनिया की मेरे कर धर दे नहिं जो ला ।।
इसे खोजना ही पड़ता क्या सबतो भरे हैं अपने झोला ।
अपने जैसा ही कर रक्खा देखूँ मैं मेरा भी चोला ।।
शुष्क हृदय में मेरे कृपया अतिशय प्रिय प्रेमामृत घोला ।
कर व्यवहार सकल विधि सुन्दर "शुक्ल" हमें बे मोलहि मोला ।।

मणि २५

महादेव पद पंकज प्यारा ।।

वस्तु व्यक्ति नहिं अन्य-विश्व का मेरे दिल का यही दुलारा ।
किये इसीके होता है हल-सरल कठिन सब प्रश्न हमारा ।।
रुकता कोई काम न मेरा सबको, सबविधि करे सँवारा ।
लोक और परलोक सभी में है मेरा बस यही सहारा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आश्रय लेते ही इसने तो मेरा किया बुलंद सितारा ।
अनुकंपा करके अहेतुकी, जीवन नव सांचे में ढारा ॥
करदी लखूँ प्रवाहित मेरे हिय में प्रेम सुधा की धारा ।
"शुक्ल" बदौलत इसके ही हम बात बात में बाजी मारा ॥

मणि २६

महादेव मैं दास सदा का ॥

सेवक हूँ मैं देवेश्वर वर तव सेवक का खास सदा का ।
दिखता और समर्थ नहीं मैं रखता तुम्हरिहि आश सदा का ॥
तुम्हरे शरण भये ही हित है रहा ये हमको भास सदा का ।
किंचित किये किनारा तुमसे है निश्चित मम नाश सदा का ॥
किसी अन्य से नहीं आपसे पाता देव प्रकाश सदा का ।
पहुँचूँ मैं बेरोक आपतक मिला हमें है पास सदा का ॥
खेला करो खुशी से हूँ मैं कर कमलों का तास सदा का ।
करता "शुक्ल" भ्रमर बन तुम्हरेहि चरण कमल में वास सदा का ॥

मणि २७

महादेव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ॥

तुम्हें चिढ़ाना-विपुल बार हम चहा देव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ।
सहजहि सब चिढ़ जाँय वाक्य वह कहा देव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ॥
चिढ़ें सभ्य सब देख राह वह गहा देव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ।
नाम शस्त्र ले काम कुतरु नहिं ढहा देव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ॥
सुलगा सुमिरन आग दोष नहिं दहा देव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ।
बढ़े प्रेम नद में सादर नहिं बहादेव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ॥
तुम्हरा हो तुम्हरेहि शरण नहिं रहा देव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ।
प्राप्ति प्रसाद "शुक्ल" पामर नहिं लहा देव तुम चिढ़ते क्यों नहिं ॥

मणि २८

महादेव की ओर चल पड़ा ॥

चलते जिधर परम सुकृती जन उधर ये पापी घोर चल पड़ा ।
साहूकारी राह साह की उस पर कट्टर चोर चल पड़ा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकर के संकेत सत्य ही देवकृपा की कोर चल पड़ा ।
आकर्षण जितने हैं जग के सबसे ही मुँह मोर चल पड़ा ।।
बाधक सब सम्बन्ध जगत के तुरतहि तृण ज्यों तोर चल पड़ा ।
प्रेरित हो जिमि यंत्र आपसे दौर-दौर खुब जोर चल पड़ा ।।
चलना था सुनहरी शाम को सो होतहि भल भोर चल पड़ा ।
"शुक्ल" शिथिलता हो संभव नहिं प्रेम सुधारस बोर चल पड़ा ।।

मणि २९

महादेव पर भार हमारा ।।
निजी किसी संकट सकेत पर मैं क्यों करने लगा बिचारा ।
अपना किया बिचार देखता फेल भी हो जाता है सारा ।।
बनता सभी विधान बनाये इनके ही तो नीक नकारा ।
है वह कौन समर्थ विश्व में कर दे उसको अस्वीकारा ।।
तब फिर जाय हिलाया क्यों सिर सादर क्यों न जाय स्वीकारा ।
कर्म फलों के ही अधार पर अपने वह सब जाय सँवारा ।।
ननुनच करने को किंचित् तब अवसर कहाँ कहो सरदारा ।
"शुक्ल" सहर्ष किये स्वीकृत ये सहने में दें सविधि सहारा ।।

मणि ३०

महादेव की चाह एक बस ।।
और चुक चुकी सभी कभी की रही शेष ई चाह एक बस ।
मुई मुई सब की सब कब की जी में रही जी चाह एक बस ।।
हरली हरइक को इनने ही बची रहन दी चाह एक बस ।
जला रही थीं और जिगर सब रखे हरित ही चाह एक बस ।।
अमित चाह के बीच बिचारी दबी पड़ी थी चाह एक बस ।
गुनगन के वर्णन में इनके लगी रहे धी चाह एक बस ।।
मतवाली बन जाय वृत्ति मम प्रेम सुधा पी चाह एक बस ।
"शुक्ल" मरूँ पग शीश धरे प्रभु घुसी है यह भी चाह एक बस ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३१

महादेव को प्यार करूँ मैं ।।

दिखलाते प्रिय पात्र मात्र ये विश्व बीच सो प्यार करूँ मैं ।
हो जावे बलिदान प्रेम का कोई अन्य जो प्यार करूँ मैं ।।
ये महान मैं तुच्छ जीव हूँ अहंकार खो प्यार करूँ मैं ।
है इनका एहसान शीश बहु भूरि भार ढो प्यार करूँ मैं ।।
दूषित हो न प्रेम इस हित ही अन्तर्मल धो प्यार करूँ मैं ।
पुलकित परम परिष्कृत हिय में नेह बीज बो प्यार करूँ मैं ।।
सुमिर सुमिर हर छनहिं हृदयधन भरे विरह रो प्यार करूँ मैं ।
"शुक्ल" सौंपि अस्तित्व इन्हें ही इनका ही हो प्यार करूँ मैं ।।

मणि ३२

महादेव कर याद घड़ी भर ।।

स्वस्थ चित्त बैठे इकंत कहुँ तजि पूर्णतः प्रमाद घड़ी भर ।
सने सनेह विसारि देह सुधि त्यागे विपुल विषाद घड़ी भर ।।
अबसुख सोउ उतार भारसब लिया जो निज सिर लाद घड़ी भर ।
नर जीवन का वक्त "शुक्ल" यूँ मतकर तू बरबाद घड़ी भर ।।

मणि ३३

महादेव क्या करते देखूँ ।।

कभी लगाते रोक कि ऐसहि हम अखंड खर चरते देखूँ ।
टरे न दोषों से अब भी क्या टारे इनके टरते देखूँ ।।
ताका नहिं गुन ओर फुटे दृग अब संग्रह करि धरते देखूँ ।
बने उदंड रहे अब क्या हम द्विज गुरुजन से डरते देखूँ ।।
झुकता कहाँ शीश था अब क्या पुलकि पाँव हम परते देखूँ ।
अबतक तौं उपहास किया बस अब दीनों पर ढरते देखूँ ।।
बनि उदार धर्मावतार हिय भक्तिभाव सम भरते देखूँ ।
मेरे ठूँठ भाग्य में ये सब दिव्य सुफल क्या फरते देखूँ ।।
अगनित दिन की लगी दीनता हेय हीनता हरते देखूँ ।
संचित कर्म जन्म जन्मों के जारे इनके जरते देखूँ ।।
पाकर मनुज देह-इनके भी क्या हम तारे तरते देखूँ ।
निरखत मंजु मुखारविंद प्रभु "शुक्ल" मुदित मन सरते देखूँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३४

महादेव हमको जन जानें ॥

गनती का कुछ नहीं हुँ तो भी हमको निजी गन्य गन जानें ।
प्रेम शून्य हूँ तो भी हमको प्रेमिल परम प्रेमघन जानें ॥
याद करूँ नहिं बैठ स्वस्थ छन संबंधित पर छन-छन जानें ।
है पूर्णतः प्रमादी पर ये निज सेवक मेरा तन जानें ॥
अहंकार मैं करता पर ये ममसंचित अपना धन जानें ।
कीन कुचिंतन करे किन्तु ये अपने में हि लीन मन जानें ॥
बन पाया मैं कहाँ हुँ इनका ये भलि विधि मेरा बन जानें ।
"शुक्ल" बुलाये बिनहीं मम उर घुस आये मेरे अनजाने ॥

मणि ३५

महादेव तजि सब सपना है ॥

ऊर्ध्वबाहु कहता सचमानो दुनिया में नहिं कोइ अपना है ।
लादे फिरते जिस मिट्टी को इस मिट्टी में ही खपना है ॥
इनका आश्रय लेनेवाले को जमराज से नहिं कपना है ।
नहिं ग्रह भूत पिशाच गनों से ही उसको किंचित चपना है ॥
तुष्ट करन के लिये इन्हें नहिं आवश्यक कबहीं टपना है ।
बहिर्वास-जलशयन-ग्रीष्म में पंचागिन भी नहिं तपना है ॥
श्रम दायिनि तिमि विविध तीर्थ की राह कठिन भी नहिं नपना है ।
सने सनेह "शुक्ल" बस केवल निर्मल देव नाम जपना है ॥

मणि ३६

महादेव तुम प्रान हमारे ॥

जीवन धारन करने में सच हैं सक्षम नहिं आन हमारे ।
तुम्हरे प्रति अत्यधिक देववर अंतस में है टान हमारे ॥
सुनने को अकुलाया करते तव कलकीरति कान हमारे ।
तुम्हरी सेवा में रहते हैं ये तन-मन अरुज्ञान हमारे ॥
तुम तक ही सीमित हैं केवल सभी सूझ सोचान हमारे ।
चहूँ न मैं परलोक लोक सुख तुम सर्वस सुखखान हमारे ॥
बने उदार क्षमा करते तुम दोष जान अनजान हमारे ।
"शुक्ल" प्राप्तकर तुम्हें बताऊँ रोम-रोम पुलकान हमारे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३७

महादेव इकबार आव तो ॥
अकुलातीं आँखें देखन को दिव्य दरस अपना दिखाव तो ।
भरे परे इस विश्व बीच जो तेरे बिन नहिं कोउ सुहाव तो ॥
जीवन दायिनि चर्चा तेरी प्राण सरिस तव नाम भाव तो ।
उमगावतो अधिक मेरो मन जो कोउ तव कलगान गाव तो ॥
सो पावतो असीस हमारी तेरो शुभ सन्देश लाव तो ।
कर लेतो चिररिनी हमें वह तुमको जो झट ला मिलाव तो ॥
होतो पुण्य उसे बाभन के जाते प्राणन को बचाव तो ।
"शुक्ल" विरह गाथा यह मेरी कोऊ तो तुमको सुनाव तो ॥

मणि ३८

महादेव मन दास बन गया ॥
कोई दिक्कत हुई नहीं जो तुम्हरे सरस सनेह सन गया ।
तुम्हरे सत्य बनाये प्रभुवर बन तुम्हरा अनन्य जो जन गया ॥
किसी योग्य नहिं होते भी ये तुम्हरे गन में देव गन गया ।
तुम्हरे ही घनिष्ठ करने से इससे अति संबंध घन गया ॥
दिये तुम्हारे देवेश्वर वर मिल इसको निधि नाम धन गया ।
भूला यह रहता निज को जो मिला प्रसाद प्रेम मद छन गया ॥
रहता सदा सुरक्षित यह तो शिर तव कृपा वितान तन गया ।
"शुक्ल" कराये तुम्हरे मन जय यह विजयोत्सव मेरा मन गया ॥

मणि ३९

महादेव के मिले मजा है ॥
और मजा मानते हो जिसमें उसके अंदर छिपी कजा है ।
उसी मजा के फलस्वरूप ही मिलती तुमको विविध सजा है ॥
किया विचार कभी नहिं इस पर तबहीं अबतक नहीं तजा है ।
इनसे मिलते ही सचमानो जहँ देखो तहँ मजा गजा है ॥
बन जाते यजमान ये उसके जिसने इनको सविधि यजा है ।
राजी रखता उसे सब तरह रहता जिस पर देव रजा है ॥
उसकी मस्ती को सुरेन्द्र वह लखे ललकि ललचाय लजा है ।
"शुक्ल" ध्वजा फहराती उसकी जो भव को भरिभाव भजा है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४०

महादेव यह काहे होता ॥

देख विषय सामने उपस्थित मन संतुलन ततक्षण खोता ।
हो क्यों नहिं जब विषय सिंधु में संतत रहे लगाता गोता ॥
करके याद विराग वाक्य को बनने से होता क्या तोता ।
ब्रह्मज्ञान बघारे क्या हो ज्ञानी का बन करके पोता ॥
लेकर नाम तुम्हारा जबतक अंतःकरण नहीं निज धोता ।
अपने परम परिष्कृत हिय में सरस सनेह बीज नहिं बोता ॥
कर कर तुमको याद प्राणधन अविरल धार बहा नहिं रोता ।
राग हीन हो "शुक्ल" तब तलक कौन शांति संयुत है सोता ॥

मणि ४१

महादेव सब काज साज हैं ॥

इनके किये स्वजन के होते आसानी से सभी काज हैं ।
हो जाते अनुकूल कि जिस पर देते सब सुख भवन गाज हैं ॥
इनके हाथ सुरक्षित उनकी जा सकती नहिं कभी लाज हैं ।
अंग उघारा रखें न जनका ढकें बेगि बेढब बजाज हैं ॥
इनके अछत कभी आश्रित का हो सकता नहिं कुछ अकाज हैं ।
आदिकाल से सुर समाज के बने यही राजाधिराज हैं ॥
इनके ही सर सरदारी का सब दिन से ही सजा ताज हैं ।
"शुक्ल" रहे हैं-रहेंगे-ये ही-दास सहायक यही आज हैं ॥

मणि ४२

महादेव ने हद कर डाला ॥

देख न लो अपनी आँखों में हंस किया जो कौआ काला ।
रंग ढंग बदला सब का सब दी वह बदल उचक्की चाला ॥
भरे ऐब जितने थे उर में एक साथ सबके सब टाला ।
रखी न कोइ शिनाख्त पुरानी ऐसा नव साँचे में ढाला ॥
गुन भर दिये पता नहिं कितने कहे कौन यह कहाँ से लाला ।
किया सुसज्जित उसको सब ही साज सजा आला से आला ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते देख चकित जग जन ये ऐसा चमकाया भल भाला ।
"शुक्ल" विनत नित बना तभी तो फेरा करता इनकी माला ॥

मणि ४३

महादेव ललकार के लेबै ॥

लेने के कोई भी हम तो बिना किये उपचार के लेबै ।
अधिकारी पाते सुनते हैं हम बिन हीं अधिकार के लेबै ॥
केवल प्राण लुटाकर इनपर अपने प्राण अधार के लेबै ।
जीवन कर कुर्बान इन्हीं पर निज जीवन साकार के लेबै ॥
हो इन पर बलिहार हँसत ही हम अपने हियहार के लेबै ।
यारी फकत बढ़ाकर इनसे निजी पुराने यार के लेबै ॥
निराकार की चरचा छोड़ो हम सकार सरकार के लेबै ।
"शुक्ल" भरे आनन्द अपरिमित आनँद के अवतार के लेबै ॥

मणि ४४

महादेव तकरार करो मत ॥

कहता सो सुन लो सीधे से परीशान बेकार करो मत ।
मैं कुछ गलत कहूँ तो बरजो आप गलत इजहार करो मत ॥
कही सुनी बातों का फिर-फिर मैं कहता विस्तार करो मत ।
हार जावगे सच विवाद तुम हमसे हे हियहार करो मत ॥
बिना बिचार किये बातों पर हक नाहक इन्कार करो मत ।
जीवन भर की बनी बनाई नष्ट जीवनाधार करो मत ॥
थोड़े दिन की और जिंदगी कहता व्यर्थ विगार करो मत ।
"शुक्ल" करूँ मनुहार मान लो मजा किरकिरा यार करो मत ॥

मणि ४५

महादेव से करो चिन्हारी ॥

कोई काम नहीं आने की इस दुनिया से की गइ यारी ।
सभी तजर्बेकार बताते मतलब का यह जग व्यापारी ॥
गरज निकलना होय अगर तो कहते आप पिता महतारी ।
लगा जरा आघात स्वार्थ में जीवन भर की बनी बिगारी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनसे परिचय किये बताऊँ सभी बात बन जाय तुम्हारी ।
लोक दिखे शुभ सजा तुम्हारा दीखे गति परलोक सँवारी ।।
तुम निर्द्वंद बने बिचरो बस इन पर निजो भार सब डारी ।
हो जो सुख लूटना अलौकिक "शुक्ल" सलाह लो मान हमारी ।।

मणि ४६

महादेव शनि जी हैं आये ।।

साढ़ेसाती नाम धराकर आप देव तसरीफ हैं लाये ।
स्वागत को मन मचल रहा है कुछ बेचारा कर नहिं पाये ।।
परिचय देनेवाले इनको-महाभयानक हैं बतलाये ।
मैं कर रहा प्रतिच्छा पलपल कैसेहुँ इनकी झलक दिखाये ।।
अपलक राह निहारूँ इनको पथ में इनके पलक बिछाये ।
भेजा होगा सही आपने इनसे नये विधान बनाये ।।
खट्टा मीठा चटक चरपरा खोलें तो देखूँ क्या लाये ।
"शुक्ल" करूँ स्वीकार सभी को-सविनय सादर शीश नवाये ।।

मणि ४७

महादेव अज्ञानी बालक ।।

हूँ मैं तभी कर रहा देखो नित-प्रति नई नदानी बालक ।
दोष दुरित से भरा देश में है नहिं मेरो शानी बालक ।।
आजीवन, चलना, दुष्पथ से, यही ठान उर ठानो बालक ।
समझूँ इसमें शान कहूँ जो, निजको मैं अघखानी बालक ।।
गाऊँ गर्व भरे गीतों को महामोह मद छानो बालक ।
दीख नहीं सकता दुनियाँ में सच मुझसा अभिमानी बालक ।।
चर्चा कोइ कल्याणकारिनी, हम नहिं सुनी न जानी बालक ।
"शुक्ल" लाज है हाथ तुम्हारे, बकता झूठ न बानी बालक ।।

मणि ४८

महादेव तुम आये ही क्यों ।।

रुकना जब्र तुम्हें जब छन्न छन, तब तशरीफ को लाये ही क्यों ।
है दिखना दुर्लभ जब हमको, अपनी शक्ल दिखाये ही क्यों ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नफरत है हमसे यदि तुमको, हमको फन्द फँसाये ही क्यों ।
हम नहिं भाते हैं जो आपको, तब हमको तुम भाये ही क्यों ।।
रहा इस तरह तड़पाना तो, हमें देख मुसकाये ही क्यों ।
नजर बचाना रहा बाद में, हमसे नजर लड़ाये ही क्यों ।।
करना रहा किनारा हमसे, कर संकेत बुलाये ही क्यों ।
ठुकराना ही था अभीष्ट तो, अपना हमें बनाये ही क्यों ।।
मिलकर रहा हँसाना यदि नहिं, अपने विरह रुलाये ही क्यों ।
"शुक्ल" रहा अलगाना तो प्रिय हँसि हँसि गले लगाये ही क्यों ।।

मणि ४९

महादेव के माथे बाटी ।।

जबसे भये शरण इनके हम तबसे माल चकाचक काटी ।
खाते घी विशुद्ध-भरहिक-हम पीते दूध भैंस का खाटी ।।
ज्वर बिन कभी न लंघन करते-प्रिय पदार्थ से प्रतिदिन पाटी ।
जानी खूब आज या कल यह-माटी में मिलजाई माटी ।।
इनसे पाय आत्मबल बेहद-कामादिक दुश्मन के डाटी ।
नित नई मिले बहार-नये सुख "शुक्ल" न झूठ बड़प्पन, छाटी ।।

मणि ५०

महादेव पद निर्भय भाई ।।

पद पदार्थ प्राणी इस जग के, भय से ग्रस्त सबै समझाई ।
होते अवधि समाप्त-सुनिश्चित, सबहि काल के गाल समाई ।।
छोटा हो या होय बड़ा ही कोई यहाँ रहै नहिं पाई ।
कोई आज जाय, कोई कल, परसों कोइ बरसों में जाई ।।
जाने से ही छुटकारा नहिं, घूमि घामि के फिर यहँ आई ।
आया गया अनन्त बार औ, ऐसेहि तब तक आई जाई ।।
जब तक देव शरण होकर नहिं, इस चक्कर से जान छुड़ाई ।
"शुक्ल" प्रसाद प्राप्तकर प्रभु का, आशहि अभयानन्द अघाई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५१

महादेव सखि मोर मतवाला ।।

विचरेला अलमस्त मजे में पिये भंग भलि घोर मतवाला ।
लागेला बड़नीक बताई भल हँसोर मुँह गोर मतवाला ।।
कलित कपोल अधर बिम्बारुण नाक सुआ कै ठोर मतवाला ।
चितइ चुटीली सी चितवनि से लेला चट चितचोर मतवाला ।।
हरि लेला हिय हठि हरेक कै अवशि आशु हँसि थोर मतवाला ।
मीठे बोलि मनोहर बोलनि दे सनेह रस बोर मतवाला ।।
भरि दृग देखि लेय सजनी तहुँ ले सुधि बुधि तोर छोर मतवाला ।
चलु तौ चलि कल"शुक्ल"स्वबगिअन टहरत मिलि बड़ भोर मतवाला ।।

मणि ५२

महादेव कहुरे चुप चुप्पे ।।

तेहि पथ चले प्राप्त प्रियतम हो राह वही गहुरे चुप चुप्पे ।
पहुँचे बहु प्रभु प्रेम परायण पहुँच न क्यों तहुँ रे चुप चुप्पे ।।
ठौर नहीं-तू जाये भी क्यों देव शरण रहुरे चुप चुप्पे ।
मत कुछ और चाहचित चंचल जीवनधन चहुरे चुप चुप्पे ।।
नाम शस्त्र ले कुतरु वासना दृढ़ता से ढहुरे चुप-चुप्पे ।
अहनिशि सुमिरि स्वस्थ प्राणेश्वर दोष दुरित दहुरे चुप चुप्पे ।।
आये प्रेम बाढ़ उर सरिता विवश बना बहुरे चुप चुप्पे ।
अर्थ धर्म कामादि चारिफल "शुक्ल" सपदि लहुरे चुप चुप्पे ।।

मणि ५३

महादेव मन हरना मुन्ना ।।

गुन अवगुन देखे बिन मेरे सहजहि मुझपर मरना मुन्ना ।
अपने नहीं सदा ही सुखयुत मन की मेरे करना मुन्ना।।
मेरी रुचि नहिं लखि निज प्रिय से सपदि मुदित मन टरना मुन्ना ।
मेरी कही बात संकेतहु हर्षित निज हिय धरना मुन्ना ।।
हो मन भंग न मेरा कैसेहुँ संतत इससे डरना मुन्ना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहें जुड़ाते जी को मेरे बने प्रेम जल झरना मुन्ना ।।
भले भले भावों को भलिविधि मेरे उर मधि भरना मुन्ना ।
बिन साधन श्रम के ही ममहित "शुक्ल" चारिफल फरना मुन्ना ।।

मणि ५४

महादेव ने मिटा दिया सब ।।

जितने ये दुर्वर्ण लिखित विधि भाग्य मेरे वे मिटा दिया सब ।
मेटनहार कौन उनका ये निज अभाव से मिटा दिया सब ।।
जन्म-जन्म के किये कि जितने पाप मेरे थे मिटा दिया सब ।
भरे परे थे विविध भाँति के दोष हृदय में मिटा दिया सब ।।
वैरिवृंद बसते थे उर जो नाम निशाँ ये मिटा दिया सब ।
भरी परी थी जिती कामना शुभ अभीष्ट दे मिटा दिया सब ।।
भार लोक परलोक सभी का निज शिर पर ले मिटा दिया सब ।
तृषा जुगन की "शुक्ल" प्रेममय पिला मधुर पे मिटा दिया सब ।।

मणि ५५

महादेव पद प्रति रति चाहूँ ।।

सो सामान्यतया नहिं मिलो अधिकाधिक अति से अति चाहूँ ।
यह तो कह सकना संभव नहिं किसी भाँति कैसहु कति चाहूँ ।।
और नहीं कोइ लोक संपदा नहिं परलोक परमगति चाहूँ ।
रहे कोई कामना हृदय नहिं छन प्रतिछन इसकी छति चाहूँ ।।
स्वाधिकार करना अंतस पर काम आदि रिपुगन हति चाहूँ ।
गुनगन वर्णन में ही इनके लगी रहे संतत मति चाहूँ ।।
कर कमलों में बस इनके ही रहे सुरक्षित मम पति चाहूँ ।
"शुक्ल" सदैव देव चरणों में करता प्रकट रहूँ नति चाहूँ ।।

मणि ५६

महादेव चरनों में दर दे ।।

कर रजकन रहने को मेरे प्राणेश्वर पदतल में घर दे ।
बड़ी कृपा की है तूने तो इतनी और कृपानिधि कर दे ।।
हुई ढरनि तेरी अत्यंतहि रंचक और गौरकर ढर दे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की है दयावृष्टि खुब मुझपर लहरा एक झटिति यह झर दे ॥
कोई और कामना किंचित् हो तो शीघ्र हृदय से हर दे ।
भरा अखिल कल्याण इसी में मेरे हिये भाव दृढ़ भर दे ॥
करना क्या ले चारु चारिफल ममहित यह अभीष्ट फल फर दे ।
चाहूँ और न पाऊँ माँगे "शुक्ल" यही इक सुन्दर वर दे ॥

मणि ५७

महादेव सी करे साहिबी ॥
संभव नहीं और के द्वारा पर जावे यदि गरे साहिबी ।
हो सकती ही कैसे ऐसी बैठे-बैठे घरे साहिवी ॥
निज प्रभाव से प्राणिमात्र पर अहनिशि इनकी झरे साहिबी ।
हुआ न हो सकता समर्थ कोइ टारे जिसके टरे साहिबी ॥
आवश्यक होते स्वाभाविक विविध रूप यह धरे साहिबी ।
उद्दंडों को देय दंड द्रुत दीन दुखित पर ढरे साहिबी ॥
स्वाश्रित की हर समय हर तरह हर विपत्ति को हरे साहिवी ।
मेरे हित बेश्रमहि "शुक्ल" सच चारु चारिफल फरे साहिबी ॥

मणि ५८

महादेव सुधि आते रो दूँ ॥
कब आनेवाले प्राणेश्वर कुछ दिन खबर न पाते रो दूँ ।
जाता समय विशेष बीत कोइ शुभ संदेश न लाते रो दूँ ॥
कोई प्रिय पदार्थ सचमानो इन बिन इकले खाते रो दूँ ।
करते प्रेम भरी जो प्रेमघन सुमिर-सुमिर उन बातें रो दूँ ॥
इनकी वर विशेषताओं को निज उर अंतर छाते रो दूँ ।
लगते भले पता नहिं फिर क्यों गुनगन इनके गाते रो दूँ ॥
आते कभी कृपाकर हियधन उठ करके फिर जाते रो दूँ ।
विदा काल में "शुक्ल" कहूँ कस पद पंकज शिर नाते रो दूँ ॥

मणि ५९

महादेव पद बंदन बिटिया ॥
अति पुनीत कर्तव्य जीव का सब साधन शिर चंदन बिटिया ।
आसानी से आशु सत्य ये मिटादेय कुल क्रंदन बिटिया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधु सरिस करि देय सद्य ही गिरेगर्त गति गंदन बिटिया ।
उर में भरे विकार निकारे दूर करे छल छंदन बिटिया ॥
द्रुतहिं दुराय देय कर्ता के दोष दुरित दुख द्वंदन बिटिया ।
चिक्कन कर देते षटरिपुगन रंदि-रंदि कर रंदन बिटिया ॥
बना देय बुध बुद्धि विशारद महा महामति मंदन बिटिया ।
"शुक्ल" करें कृतकृत्य कृपानिधि फारि भूरि भव फंदन बिटिया ॥

मणि ६०

महादेव अनुरागी अम्मा ॥
हैं अपार सागर सनेह के साथ विलक्षण त्यागी अम्मा ।
सत्य लगाये तेरे मेरी लगन ये इनसे लागी अम्मा ॥
जब से शरण भई हूँ इनके वस्तु न कोई खाँगी अम्मा ।
आवश्यक सब चीज उपस्थित रहती है बिन माँगी अम्मा ॥
वर्णन करी जाय कैसहुँ नहिं अस तकदीर है जागी अम्मा ।
जन्म-जन्म से लगीं जो जी को बिपति बला सब भागी अम्मा ॥
इनकी अनुपम अनुकंपा से मति सनेह रस पागी अम्मा ।
"शुक्ल" पाय प्रेरणा मातु तव हंसिनि बनि यह कागी अम्मा ॥

मणि ६१

महादेव की सारी संपत ॥
बड़ी भूल करते हैं हम जब कहते र्गाज हमारी संपत ।
हो जाना है सिद्ध यहीं पर मेरी अक्ल बिगारी संपत ॥
बन जाती है इससे ही बस मेरे लिये बिकारी संपत ।
दिन दूना चौगुना रात फिर अवशि लोभ विस्तारी संपत ॥
चाहे जो तब नाच नचावे हमें मोह मधि डारी संपत ।
कर देती ला खड़ी बिपति यह एक-एक से भारी संपत ॥
उनकी ही माने रहने से बनी रहे अविकारी संपत ।
देती सब सुख "शुक्ल" लोक के औ परलोक सँवारी संपत ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६२

महादेव की बड़की विल्डिग ॥

रहते हो तो रहो शौक से रहने को दी बड़की बिल्डिग ।
तुम मानो मतमानो निश्चित है उनकी ई बड़की विल्डिग ॥
कोई हुआ उपस्थित कारण जा सकती ली बड़की बिल्डिग ।
तुम अपने ही पूज्यपाद की समझ रहे जी बड़की बिल्डिग ॥
करने से ममता यह झूठी हर लेती धी बड़की बिल्डिग ।
अपनी ही कहने से बन्धन हेतु बने छी बड़की बिल्डिग ॥
कभी किसी की कभी किसी की कहलाती थी बड़की बिल्डिग ।
साथ समर्थ ले गये पर नहिं "शुक्ल" कोई भी बड़की बिल्डिग ॥

मणि ६३

महादेव के बेटा बेटी ॥

संततिवान बनाया तुमको सर्वेश्वर दे बेटा बेटी ।
मान रहे हो तुम तो भाई हैं हमरे ए बेटा बेटी ॥
करने में सत असत कर्म के सहयोगी थे बेटा बेटी ।
फल शुभ अशुभ साथ भोगन के हेतु वही भे बेटा बेटी ॥
हुआ समाप्त भोग उनका बस यत्र तत्र गे बेटा बेटी ।
तुम हँसते रोते हक नाहक मोह विवश ले बेटा बेटी ॥
उनके मान तटस्थ रीति तुम सुख संयुत से बेटा बेटी ।
बनें न बाधक "शुक्ल" हों साधक लोकद्वय में बेटा बेटी ॥

मणि ६४

महादेव किनके साथी हैं ॥

जिनका साथी नहिं कोइ जग में सचमानो तिनके साथी हैं ।
भाग्यमान के साथी शतशः ये सुभाग्य विन के साथी हैं ॥
सुदिन सहायक और अनेकों ये खोटे दिन के साथी हैं ।
आशुतोष बन जाँय आशुहीं स्नेह सिन्धु मिन के साथी हैं ॥
लगती कहाँ देर बनने में चरण कमल लिन के साथी हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनते तिनके जन्म-जन्म के किसी के नहिं छिनके साथी हैं ॥
सीमा कहाँ भाग्य की उनके बन जाते जिनके साथी हैं ।
लूटें मजा लोक दोनों में "शुक्ल" सत्य इनके साथी हैं ॥

मणि ६५

महादेव पद पाया हमने ॥
कैसे क्या यह भी बतला दूँ गुनगन इनके गाया हमने ।
जाना इनके जोभि जनाये वर विभूति उर छाया हमने ॥
रहना इनकी शरण सर्वदा शपथ सुदृढ़ सच खाया हमने ।
इनका नाम शस्त्र ले बिनश्रम काम कुतरु को ढाया हमने ॥
शुभ सुमिरन रंदे से रंदा षटरिपु किया न दाया हमने ।
इनकी सेवा किंचित् करके कर कृतकृत्य ली काया हमने ॥
बने विनम्र विशेष शीश निज पद पंकज नित नाया हमने ।
इनके "शुक्ल" बनाये बरबस मुक्ति बनाया जाया हमने ॥

मणि ६६

महादेव रस दाता दीखे ॥
देने को आतुर बैठे ये लेन न कोई आता दीखे ।
इतने से मिलने लगता पर गुनगन कोई न गाता दीखे ॥
भर जाता रस ही रस उर बिच वर वैभव नहिं छाता दीखे ।
पा जाता क्या नहीं आपसे शरण न कोई जाता दीखे ॥
बनती बात बात में तो भी बिगरी नहीं बनाता दीखे ।
पी मद मोह मत्त दीखे पर नेह नशे नहिं माता दीखे ॥
बटता दिव्यानंद अहर्निशि हा नहिं कोई पाता दीखे ।
मिलता है अनयास हाय दुख "शुक्ल" न पाय अघाता दीखे ॥

मणि ६७

महादेव रस दाता दीखे ॥
रस पाने का अधिकारी जो वही पास तक आता दीखे ।
यहाँ विभेद न होता कुछ भी जो आता सो पाता दीखे ॥
आनेवाले कोइ यहाँ से हो निराश नहिं जाता दीखे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पा जाता जो रंच मात्र भी वह प्रतिछन पुलकाता दीखे ।।
बाधक हो न परिस्थिति कोई हर हालत हुलसाता दीखे ।
कभी समाती हँसी न उसकी कबहीं अश्रु बहाता दीखे ।।
हो श्रद्धा संयुक्त इन्हीं के गुनगाता उमगाता दीखे ।
"शुक्ल" हजार वार दाता की जय जयकार मनाता दीखे ।।

मणि ६८

महादेव अति सीधे सादे ।।

यह अनुमान लगा सकता को हैं श्रीमन् कति सीधे सादे ।
कपटी विद्वेषी कदापि नहिं पाते पदरति सीधे सादे ।।
सोते सुख की नींद सदा ही सौंप इन्हें पति सीधे सादे ।
इनके बल निर्द्वंद विचरते षटरिपुगन हति सीधे सादे ।।
कृपा प्रसाद इन्हीं के इनसे पाते सन्मति सीधे सादे ।
समझें इनका रूप किसी की करते नहिं छति सीधे सादे ।।
लेकर नाम जोगि दुर्लभ जो प्राप्त करें गति सीधे सादे ।
"शुक्ल" स्ववश करि लेंय देव को करि केवल नति सीधे सादे ।।

मणि ६९

महादेव की जय जय कहिये ।।

हैं ही ये इस योग्य जगत में कहता बात अछरशः सहिये ।
तजि पूर्णतः प्रमाद मित्रवर इनके प्रियपद पंकज गहिये ।।
और चाह सब डार भार में इनसे बस इनको ही चहिये ।
इनके छत्र छाँह में संतत लोकद्वय निर्द्वंद हो रहिये ।।
कोई भी सुख से सुविधा से रखते वंचित आश्रित नहिये ।
उसके लिये बना देते हैं मंगलमयि महिमामय महि-ये ।।
इनसा लोक हितैषी होते सोचो क्यों कोइ साँसत सहिये ।
"शुक्ल" मिले देवेश्वर जहिये ममहित विपति बिहान है तहिये ।।

मणि ७०

महादेव को खोजो मिलि हैं ।।

मिलने की है चाह चित्त में मैं कहता तो खोजो मिलिहैं ।
कितनों को मिल चुके तुम्हें भी निष्प्रमाद जो खोजो मिलिहैं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलते नहीं प्रमादी को ये तुम तत्पर हो खोजो मिलिहैं ।
मिलने के साक्षी वहुतेरे करि प्रतीति सो खोजो मिलिहैं ॥
लेकर नाम निरंतर इनका अंतरमल धो खोजो मिलिहैं ।
मिलना यदि चाहते जल्द तो अहंभाव खो खोजो मिलिहैं ॥
प्रेमी हैं उर बिच अपने बस प्रेम बीज बो खोजो मिलिहैं ।
हँसते "शुक्ल" मिलें नहिं तो सच सह सनेह रो खोजो मिलिहैं ॥

मणि ७१

महादेव खोजा तिन पाया ॥
लगता भला प्रश्न नहिं जो तुम पूछ पड़े कहिये किन पाया ।
आदिकाल से आजतलक यह कौन बता सकता गिन पाया ॥
करें नाम निर्देश कहो कस तुमसे उन पाया इन पाया ।
जिसने भी खोजा वह हरगिज बाकी रहा नहीं बिन पाया ॥
वंचित रहा प्रमादी केवल तत्पर खोज अमित घिन पाया ।
सेवामें सुमिरन पूजन में कितने निर्जहिं किये लिन पाया ॥
आसानी से कितने निज को सरित सनेह वना मिन पाया ।
सनमुख खड़े स्वस्थ देखो तो देते साखि "शुक्ल" जिन पाया ॥

मणि ७२

महादेव ही कृष्ण कन्हैया ॥
जसुमति-लाल नंद-नंदन ये बलदाऊ के छोटे भैया ।
मोर मुकुट काछनी काछि कटि ग्वालन के सँग गाय चरैया ॥
लाखन गऊ तऊ मनराखन हित माखन गृह गोपि चुरैया ।
कालिंदी तट शरद शर्वरी वर मुरलीधर अधर बजैया ॥
आत्माराम कामजित होतेहु गोपवाम सँग रास रचैया ।
भृकुटि विलास नचाव विश्व सोई नाचत ताथेइ ताता थैया ॥
गोवर्धन धारन अहिमर्दन नित नव लीला ललित करैया ।
उद्धारक बक बकी आदि बधि कंस मातु पितु बंदि छुड़ैया ॥
आरत आह पुकारत ततछन द्रुपदसुता की लाज बचैया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत युद्ध हाँकि रथ निजकर पार्थ-सारथी नाम धरैया ॥
समरांगण में सर्वोपनिषद-सार सुगीता ज्ञान गवैया ।
"शुक्ल" करें गुनगान शंभु के भरे अभेद भावउर भैया ॥

मणि ७३

महादेव भजु बौरी बुढ़िया ॥
लिये लकुटि कूबर मटकाते फिरती दौरी दौरी बुढ़िया ।
तौ भी तो कबहीं कबहीं हा लगपाती है भौरी बुढ़िया ॥
पौरी पहुँच इन्हीं के अब तू विनय मान मम हौरी बुढ़िया ।
"शुक्ल" शरण हो देवदेव के प्राप्त करे गति गौरी बुढ़िया ॥

मणि ७४

महादेव ही हैं महादेवी ॥
महादेव का रूप धरे पर वास्तव में ई हैं महादेवी ।
महादेव का साज काज सब करते भी जी हैं महादेवी ॥
शक्तिमान पति महादेव हैं शक्तिरूप तो हैं महादेवी ।
इन्हें शक्ति संयुक्त सदा से करती ये थीं हैं महादेवी ॥
होता सिद्ध साफ इनको यह सब समर्थ दी हैं महादेवी ।
कौन कहे कस महादेव की सृष्टिरूप ली हैं महादेवी ॥
महादेव आधार देवि के महादेव की हैं महादेवी ।
"शुक्ल" अभिन्न तत्व ये दोनों प्रकृति पुरुष भी हैं महादेवी ॥

मणि ७५

महादेव जजमान हमारे ॥
मैं इनका पंडा काशी का निवसें ये अस्थान हमारे ।
पिता लेख लख बने बातपर भी देकर कुछ ध्यान हमारे ॥
सुख सुविधा संयुक्त रखें सच झखमारें मेहमान हमारे ।
कोई करे प्रयत्न करोरन करें घाट असनान हमारे ॥
कैसे उन्हें बताऊँ बोलो करें निमित्त जो दान हमारे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त विभूति देखकर सनमुख अमराधिपति लजान हमारे ।।
सचमानो शारदा शेष भी सकें न भाग्य बखान हमारे ।
पाना अब क्या रहा "शुक्ल" जब दाता भल भगवान हमारे ।।

मणि ७६

महादेव इक बात कहो तो ।।

बन विनीत मैं तात आज यह पूछ रहा संकुचात कहो तो ।
मेरी देख शरारत सौ सौ मन क्यों नहीं मखात कहो तो ।।
मुझ गंदे को पाय हाय तुम हौ कैसे उमगात कहो तो ।
मेरा चित चकरात मुझे क्यों पाये नहीं अघात कहो तो ।।
मुझ निष्ठुर-भाषी से तुम क्यों ऊबो नहिं बतरात कहो तो ।
छा जाती क्यों आह उदासी मम सन्निधि से जात कहो तो ।।
रहना क्यों चाहते पास तुम मेरे ही दिनरात कहो तो ।
दोषागार "शुक्ल" में तुमको है गुन कौन लखात कहो तो ।।

मणि ७७

महादेव सा दान को देई ।।

दीन हीन जनकी पुकार पर सद्यः संतत कान को देई ।
डूब रहे दुख के सागर को बना सर्व सुखखान को देई ।।
अधिकतया अधिकारिहि पाते अनधिकारि को जान को देई ।
याचक को निज मान्य सरीखा करते अति सनमान को देई ।।
मिट जावे याचना सदा को करि अस कहो सुजान को देई ।
जितनहि देता जाय किसी को उतनहि उर उमगान को देई ।।
मुझसे गये बिते को आशुहिं करि आनन्द निधान को देई ।
"शुक्ल" भिखारी अभिमानी को बिन भोला भगवान को देई ।।

मणि ७८

महादेव देते सुख लूटो ।।

सदा उदार इस समय तो कुछ हैं विशेष चेते सुख लूटो ।
ऐसे वैसे तरह-तरह के दें जेते तेते सुख लूटो ।।
रखे याद इनको हमेश ही लूटो तुम जेते सुख लूटो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम हीन जीवन क्या जीवन मति सनेह भेते सुख लूटो ।।
निरालस्य श्रद्धा सँयुक्त हो सतत नाम लेते सुख लूटो ।
हो काया कृतकृत्य सद्य ही चरन कमल सेते सुख लूटो ।।
सोओ पाँव पसारे तुम्हरी ये नैया खेते सुख लूटो ।
दोनों हाथ मरोर "शुक्ल" तुम मूछों को टेते सुख लूटो ।।

मणि ७९

महादेव देते सुख लेता ।।

बेढंगा यह प्रश्न तुम्हारा बतलाऊँ केते सुख लेता ।
बतलाना संभव हो सकता कैसे यह जेते सुख लेता ।।
तृप्ति कहाँ होती है इससे दें जेते तेते सुख लेता ।
जर्जर बोझीली नैया मम ये निजकर खेते सुख लेता ।।
नीरस हिय को मेरे प्रभुवर रस सनेह भेते सुख लेता ।
देते लगा सुयोग कृपाकर चरण कमल सेते सुख लेता ।।
सुख सागर लहराता जिसमें सतत नाम लेते सुख लेता ।
बतला दिया बतौर नमूने "शुक्ल" न बस येते सुख लेता ।।

मणि ८०

महादेव की कृपाकि हदनहिं ।।

सबकी ही हद है दुनिया में पर इनकी ई कृपाकि हदनहिं ।
बार हजार बुलंद स्वरों में कह सकता जी कृपाकि हदनहिं ।।
यह कुछ नई बात नहिं मित्रों कभी भि तो थी कृपाकि हदनहिं ।
सुरयाचित अनायास अयाचित नर काया दी कृपाकि हदनहिं ।।
सर्व अंग सम्पन्न साथ ही शुचि सुन्दर धी कृपाकि हदनहिं ।
हुआ प्राप्त अमरत्व प्रेममयि सुधा दिला पी कृपाकि हदनहिं ।।
शुभ सज्जन सहवास सदा ही सानुकूल ती कृपाकि हदनहिं ।
चरण शरण में "शुक्ल" अधमको मिलि स्वीकृति भी कृपाकि हदनहिं ।।

मणि ८१

महादेव जो चहें वही हो ।।

चहा करें कोई क्या इससे होने को इनकीहि चही हो ।
इनका चहा ततक्षण होता होनी चाहे कुछ भि रही हो ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोड़ देंय जब चहें जहाँ से होनी कोई गैल गही हो ।
बहुत दूर बढ़गई हो तो भी रोक देंय रुक जाय जहीं हो ।।
शतमंजिली ढह जाय तुरंतहि शतमंजिल झट खड़ी ढही हो ।
सही सिद्ध हो जाय गलत जी चाहें बिलकुल गलत सही हो ।।
मेरा चहा लहाना सब सो लही किसी की जस न लही हो ।
"शुक्ल" कभी हो सकता यह नहिं होनहार वश चही नहीं हो ।

मणि ८२

महादेव पद नख तो देखो ।।

दृश्यमात्र को इस दुनिया के अविष्कार कर्ता को देखो ।
लगने लगें दृश्य फीके सब एकबार इनको जो देखो ।।
अति ही सरल युक्ति देखन की अंतर्लीन अबहिं हो देखो ।
सुविधा होगी खुब देखन में सो अंतसमल को धो देखो ।।
फिर दिखने में देर भला क्या सद्यः अहंभाव खो देखो ।
अपन आप ही दीख पड़ें जी उर में प्रेम बीज बो देखो ।।
जी चाहे तब हँस-हँस देखो जी चाहे तब रो-रो देखो ।
फैला दिव्य प्रकाश हृदय में "शुक्ल" खड़े सम्मुख लो देखो ।।

मणि ८३

महादेव की धन्य बहू जी ।।

इनकी तुलना की इस जग में हो सकती नहिं अन्य बहू जी ।
इन्द्राणी ब्रह्माणी आदिक में येही हैं गन्य बहू जी ।।
सुर नर नाग सिद्ध तापस में आदिकाल से मन्य बहू जी ।
वेद शास्त्र इतिहास पुराणहु में सुभाँति भलि भन्य बहू जी ।।
इनकी प्रतिभा के समक्ष में लगती सगरी वन्य बहू जी ।
दानव दुष्ट आततायिन गनि हनतीं अहनिशि हन्य बहू जी ।।
आश्रित की हर लेतीं आशुहिं विपति बड़ी भव जन्य बहू जी ।
करतीं पुष्ट प्रतिक्षण मुझको "शुक्ल" पिला सुस्तन्य बहू जी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८४

महादेव की प्यारी पत्नी ॥
वैसे क्वचित अपत्नि विश्व में ये दुनिया से न्यारी पत्नी ।
गौरी नाम सुपाया इनने शेष हैं शायद कारी पत्नी ॥
गौरी इन्हें कहा जो मैंने समझें कोई न गारी पत्नी ।
हो भलेहि कोइ और गौरता सबकी ही इन टारी पत्नी ॥
कहाँ दीखती और बताओ अस साँचे की ढारी पत्नी ।
अपनी अनुकंपा से केवल पतित अनंतन तारी पत्नी ॥
इनका पा प्रसाद जाये तो इनसी बन जा थारी पत्नी ।
"शुक्ल" चरण सेविका इन्हीं की बनी तभी है म्हारी पत्नी ॥

मणि ८५

महादेव की बाट बटोही ॥
धर करके जल्दी से जल्दहि पहुँच तू इनके घाट बटोही ।
तुझे खबर है नहीं कि कबसे रहा तु मंजिल काट बटोही ॥
देख दर्द होता है हमको तेरा तलवा फाट बटोही ।
अभी पार करना है तुझको भवसागर का पाट बटोही ॥
शाम हो चली किन्तु राह की रहा धूल तू चाट बटोही ।
अवसर निकल गया तो बेशक बिगड़ जाय सब ठाट बटोही ॥
तेरी करें प्रतीक्षा हित की ललित लगाये हाट बटोही ।
"शुक्ल" पहुँचते ही सु देववर लें सीने से साट बटोही ॥

मणि ८६

महादेव चरनों चित रक्खा ॥
मिला और नहिं ठौर विश्व में ले जा इसे वहीं थित रक्खा ।
रहना इसे अभीष्ट रहा जित मैंने भी इसको तित रक्खा ॥
पड़ी अतिहि अनुकूल इसे वह ले जाकर मैं जिस छित रक्खा ।
टरना कहाँ सुहाता टारेहु प्रेरित देव गया जित रक्खा ॥
उनसे पा संतोष विविध विधि उनके ही गाता गित रक्खा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्याग न देंय कभी जीवन में अति इससे होता भित रक्खा ॥
सर्वश्रेष्ठ हितकारी शाश्वत इनको मान परम मित रक्खा ।
"शुक्ल" समाया इनमें ही सच अपना सभी समझ हित रक्खा ॥

मणि ८७

महादेव हम किसे कहूँ मैं ॥

हाथ पाँव मुखकान नासिका हमकहि अवयव कौन गहूँ मैं ।
या जो हम हो उसे बताओ कर उसके प्रति प्यार चहूँ मैं ॥
पड़ा अनादि काल से पीछे अब भी तो भ्रम भूरि ढहूँ मैं ।
इस भ्रम के ही दैव दहाये अति त्रिताप के दाह दहूँ मैं ॥
इसके ही तो आह बहाये भव प्रवाह बन विवश बहूँ मैं ।
कोई और नहीं सच संतत इस भ्रम में ही बना रहूँ मैं ॥
खूब इसे जानते आप हैं कभी शांति नहिं छनिक लहूँ मैं ।
"शुक्ल" मिटा यह भेद देव दें लूटूँ सुख मिल जल्द तहूँ मैं ॥

मणि ८८

महादेव देते पाता हूँ ॥

कोइ और निधि दे तो थूक दूँ माने इनको निज दाता हूँ ।
देता सौंप शौक से मैं भी अपना सभी बुना काता हूँ ॥
मजदूरी में आप जो देते वही दिव्य दाना खाता हूँ ।
समझूँ सत्य नगण्य इन्द्रपद इनका उर वैभव छाता हूँ ॥
सूझे और न ठौर न ताकूँ इनकी सुखद शरण जाता हूँ ।
निर्भय बना विचरता जग में समझे इन्हें निजी त्राता हूँ ॥
रस सँयुक्त भव-व्याधि रसायन इनके गुनगाना गाता हूँ ।
"शुक्ल" सश्रद्ध साध शत संयुत इनके चरण शीश नाता हूँ ॥

मणि ८९

महादेव को कैसे पावें ॥

कोई भी लक्षण अच्छे नहिं कैसे इनको आह सुहावें ।
सदाचार सम्पन्न साधुजन इनको तो बस वे ही भावें ॥
पामर पतित हमारे जैसे कब हीं पास न इनके आवें ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विमुख बने इनसे हतभागी इस संसृति में आवें जावें ॥
भोगें हाय यातना कितनी साँसत सहि दुख द्वंद उठावें ।
जो जो होय दुर्दशा उनकी किस विधि को अंदाज लगावें ॥
मेरे तो सर्वस्व यही औ हम इनका ही भला मनावें ।
"शुक्ल" अधम शिरमौर होत भी इस जगमें इनकेहि कहावें ॥

मणि ९०

महादेव की सेवा चहिये ॥

तृप्ति हुई नहिं इससे किंचित् इस हित चहूँ जन्म बहु लहिये ।
यही कर सकें पूर्ण मनोरथ इनसे ही विनीत बन कहिये ॥
लिये चाहचित मात्र यहीबस हो अति प्रणत चरन युग गहिये ।
हो जाता निहाल यत्किंचित् भी अवसर मिल जाता जहिये ॥
बहुत बड़ा त्यौहार पर्व त्यों परम पुनीत मानता तहिये ।
सब सुयोग सबही सुख साधन रहतहु यहि अभाव दिल दहिये ॥
मिला मुफ्त इन्द्रत्व व्यर्थ यदि प्राप्त हुई जीवन में नहिं ये ।
"शुक्ल" मुक्त मत करो देव मोहिं जनम-जनम बनि सेवक रहिये ॥

मणि ९१

महादेव के माने समझो ॥

समझा देंय सहज बिलकुल है वैसे कहाँ फलाने समझो ।
करना युक्ति काम है अपना सुनो जो कहें सयाने समझो ॥
करो अध्ययन स्वस्थ शास्त्र का हों जो विशद बखाने समझो ।
जानी बात निवेदन करता गाकर गुनगन गाने समझो ॥
आसानी होगी जानन में जो हों इनको जाने समझो ।
लेते नाम निरतर अंतर शुचि सनेह रस साने समझो ॥
प्रेमिल हृदय बनाकर अतिशय हों जो प्रेममद छाने समझो ।
"शुक्ल" समझ ही लिया-जो करते सेवा विविध विधाने समझो ॥

मणि ९२

महादेव ऐसा कर बैठे ॥

मैं न गया खोजने खोजते यही चले आये घर बैठे ।
शायद ऐसा ढरे किसी पर हों जैसा मुझपर ढर बैठे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये तो मघावृष्टि सी मुझपर देव दयाल दया झर बैठे ।
इनकी दृष्टिमात्र पड़ते ही झटपट षटरिपुगन जर बैठे ।।
पशुपति हैं मम दोष दुरित सब सस्यसरिस सद्यः चर बैठे ।
पाते दौड़ धूप कर कोइहि वह हमको देते दर बैठे ।।
मेरे बिना चहे अनयासहि मम हित फल चारो फर बैठे ।
"शुक्ल" करो कल्पना न इकले हम सह मित्र पित्र तर बैठे ।।

मणि ९३

महादेव पाने पर सब सुख ।।

करतल गत हो जाते सद्यः इन प्रति समुहाने पर सब सुख ।
लगते चरण चूमने सचमुच देव शरण जाने पर सब सुख ।।
बन जाते हैं क्रीत दास से इनका बन जाने पर सब सुख ।
मान लेंय निज शिष्ट इष्ट सा इष्ट इन्हें माने पर सब सुख ।।
खाकर शपथ सुसेवक बनते देवभुक्त खाने पर सब सुख ।
लुट पड़ने को उद्यत होते इनका गुनगाने पर सब सुख ।
फिरते बन प्रति छाँह अहर्निशि प्रेमसुमद छाने पर सब सुख ।
"शुक्ल" लगावें ध्यान हमारा देव चरण ध्याने पर सब सुख ।।

मणि ९४

महादेव का शासन सच्चा ।।

हुआ समर्थ न ऐसा कोई कर देता जो किंचित् कच्चा ।
इसकी कोशिश करनेवाला पड़ जाता खुद तुरतहि गच्चा ।।
पक्की बात सुसोच समझकर कह गये मेरे कक्का चच्चा ।
इच्छामात्र किये से केवल इनने इस दुनिया को रच्चा ।।
यथा काल पर्यंत जगत में इनके मोद मचाये मच्चा ।
तथा सभी इनके हि नाथ में अखिल विश्व का बूढ़ा बच्चा ।।
चाहा जिसे नचाना जिस विधि वह वैसेहि इंगित पर नच्चा ।
"शुक्ल" तरंग आते ही ततछन देते सच बिगाड़ सब ढच्चा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ९५

महादेव की सरन सुखद है ॥
निर्द्वंदता मुफ्त मिल जाती परना इनके गरन सुखद है ।
टर जाती सब बला ततक्षण अनरुचिकर से टरन सुखद है ॥
हर जाती ममता धन-जन की हृदय हृदय-धन धरन सुखद है ।
भर जाता आनंद हिये में भक्तिभाव भल भरन सुखद है ॥
मत विशेष की बात पूछिये सेवा किंचित् करन सुखद है ।
जरन कहाँ रह जाती जिय की इन वियोग में जरन सुखद है ॥
हो जाती छाती शीतल सी सुमिरि इन्हें दृग झरन सुखद है ।
"शुक्ल" चरन चूमती मुक्ति तब धरे चरन सिर मरन सुखद है ॥

मणि ९६

महादेव जो देंय सो खालूँ ॥
रूखा-तर सब दिया देव का शिरोधार्य कर रुचि से पा लूँ ।
भरे अमित अहसान आपका गुनगन उर उमगाये गा लूँ ॥
जो नगण्य इन्द्रत्व-विधित्वहिं करे विशद हिय वैभव छा लूँ ।
ये स्वामी मैं सेवक इनका गौरव मयि यह चरचा चालूँ ॥
करूँ सभी स्वीकार सहर्षित कभी न कोई आज्ञा टालूँ ।
जो अनुकूल सर्वथा इनके निज को उस साँचे में ढालूँ ॥
वस्तु इन्हीं की मान अपन को मैं इनके ही कोछे घालूँ ।
"शुक्ल" पुनीत पाद पद्मों में नित निज सिर निहाल हो नालूँ ॥

मणि ९७

महादेव तुमको विन पाये ॥
खूब यकीन हो गया हमको हरगिज जी की जरनि न जाये ।
कौन व्यक्ति वह वस्तु कौन सी जो मेरा जी जरा जुड़ाये ॥
जाती जो छन को नहिं तन को वह बेचैनी कौन मिटाये ।
देखूँ आँख पसार लोक त्रय मेरे नहीं नजर में आये ॥
मेरे सुखसाधन सर्वेश्वर दीखें तुममें सभी समाये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे जीवन के जीवन तुम मेरे प्राण के प्राण दिखाये ॥
बढ़ जाती व्याकुलता बेहद जब यह बात याद आ जाये ।
"शुक्ल" कूच की घड़ी आ रही हँसि हियहार न हृदय लगाये ॥

मणि ९८

महादेव की गुन गुनावली ॥

आकर्षित हो गया बेतरह इनकी मैं शुभ सुन गुनावली ।
वेद पुराण-सु संत-शास्त्रगन कहते नित नइ चुन गुनावली ॥
प्रतिदिन परमानँद लूटूँ मैं गा कर दोनों जुन गुनावली ।
नित नव रस मिलता सचमानो गाता जब पुन-पुन गुनावली ॥
रस इकसा बरसता विलक्षण गाऊँ जिस भी धुन गुनावली ।
चाहूँ "शुक्ल" सहस्र जन्म ले गान करूँ बस उन गुनावली ॥

मणि ९९

महादेव से कहा ये कल हम ॥

मालुम हुआ कि नहिं अब तक भी की हैं देव ! पुराने खल हम ।
अद्वितीय हैं बने विश्व में खासे खल साँचे में ढल हम ॥
बचा कौन सम्पर्की मेरा किया नहीं जी जिससे छल हम ।
परीशान तुमको कम करते क्या बोलो मनमाना चल हम ॥
कहे लाख समझावे कोई सकते कहाँ कुपथ से टल हम ।
प्रकृति विरुद्ध है पड़ता मेरे करने लगे भला क्यों भल हम ॥
यूँ अँधेर गर्दी करते हैं तुम्हरे संरक्षण में पल हम ।
करके अशुभ कर्म को मानी पाते हैं तुमसे शुभ फल हम ॥
गर्वीले हो गजब गुना ही गर्जा करते तुम्हरे बल हम ।
उलझी यही कराना चाहूँ "शुक्ल" समस्या तुमसे हल हम ॥

मणि १००

महादेव चितचोर हमारे ॥

रखा छिपा उर मंजूषा में इनसे अतिशय दूर किनारे ।
कब घुस गये किधर से कैसे केहि विधि घात लगाये सारे ॥
हमको खबर नहीं किंचित् भी कर बैठे अधिकार सकारे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम खो चित्त अचित्त भये ये बैठे लिये सुचित्त सम्हारे ॥
किससे कहूँ समर्थ को इनके दृढ़ चंगुल से जौन निकारे ।
कहाँ निकलना ही सो चाहता होना कहाँ चाहता न्यारे ॥
उसको तो अभीष्ट है प्रतिछन धरें और दृढ़ता से प्यारे ।
कर पाता फरयाद "शुक्ल" नहिं मैं इस असमंजस के मारे ॥

मणि १०१

महादेव का करैं का जानी ॥

हमरे मनकर जानब दुस्तर इनके मनकर को अनुमानी ।
लीला लख-लख करके इनकी हमको कुछ होती हैरानी ॥
देखो उम्र हमारी है या नहीं जल्द ही काया जानी ।
किन्तु अब तलक भी सचमानो बना हूँ अघ अवगुन की खानी ॥
पर बरसाते दया ये हमपर यथा मघा बरसाता पानी ।
ऐसी हालत में बोलो बुधि चहिये या कि नहीं चकरानी ॥
दिन-दिन, दिव्य-दिव्य, देते हैं देन देव भोला बरदानी ।
मैं पा "शुक्ल" अघाया दिखता इनकी तबियत नहीं अघानी ॥

मणि १०२

महादेव सब करैं तमासा ।

हम आश्रित इनके हैं हमरे दूजा कौन लगावे लासा ।
पुष्ट शिकारी के शिकार को दुर्बल कोइ कहाँ कब फाँसा ॥
हावी हो सकता को उस पर बना व्यक्ति जो इनका दासा ।
उसका तो हर समय हर तरह संरक्षण करते ये खासा ॥
इनका पा आदेश पास में उसके कोइ पासके निवासा ।
उसको रुचि अनुसार देववर खेलें खूब बनाकर पासा ॥
इनके अहनिशि व्यापि खेल से उसको कहाँ मिले अवकासा ।
भली भाँति सुस्पष्ट "शुक्ल" सच उसको बात करे यह भासा ॥

मणि १०३

महादेव का क्षोभ कहावै ॥

लालच से भर देता मन जो अपराधी का लोभ कहावै ।
पापमूल कहलाता है जो बतलाओ का क्रोध कहावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया किस तरह से जाता है देव-देव का द्रोह कहावै ।
लेता गला फँसा जीवों का वह फंदा क्या मोह कहावै ॥
स्वाभाविक आनंद बिगाड़े सर्वनाशि का सोच कहावै ।
कर्तापन से शून्य वृत्ति को फलस्वरूप का भोग कहावै ॥
निर्विकार के लिये सर्वथा कृशितकार का रोग कहावै ।
"शुक्ल" समर्पण सिवा आत्म के का यथार्थतः बोध कहावै ॥

मणि १०४

महादेव ने भर दी मस्ती ।
आई ऐसि तरंग आप में सो झट झर-झर-झर दी मस्ती ।
कृपासिन्धु हैं ही अहैतुकी कृपाबेलि में फर दी मस्ती ॥
बिना किये साधन-पाधन कुछ अवढर ढरन ने ढर दी मस्ती ।
कहाँ कहीं भी पड़ा न जाना बैठे ही निज घर दी मस्ती ॥
कर न सके कल्पना भि जैसी ऐसी अद्भुत कर दी मस्ती ।
दुर्लभ जो ज्ञानी-योगी को कर पर मेरे धर दी मस्ती ॥
दिखलाती क्या नहीं आपको रोम-रोम जो जर दी मस्ती ।
"शुक्ल" स्वभाव पड़ा देने का बिन याचे ही वर दी मस्ती ॥

मणि १०५

महादेव में महादेवता ॥
भली भाँति लखकर लाखों में महादेव तब कहा देवता ।
निकले चौदह रत्न सिन्धु में इनने एक न चहा देवता ॥
किन्तु हलाहल की ज्वाला ज़ग देखा जाता दहा देवता ।
होकर द्रवित दयाल दया बस आप गरल गुरु गहा देवता ॥
स्वाश्रित पर सेवक पर किंचित् देखा संकट जहाँ देवता ।
लगती कहाँ देर फिर इनको पहुँच जाँय झट तहाँ देवता ॥
आराधक अपराधी की भी देंय सुभग गति लहा देवता ।
"शुक्ल" न है नहिं होना ही है कभी न ऐसा रहा देवता ॥

मणि १०६

महादेव से बोला साहब ॥
कहना कब से रहा चाहता कल मैंने मुँह खोला साहब ।
दिया आपने मुझे दयाकर जो मानुस का चोला साहब ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदुपयोग कुछ किया न उसका बैठे बण्डा छोला साहब ।
दोष दुरित से भरा बता दूँ मैंने निज उर-झोला साहब ।।
तुम्हरा नहीं हाय जीवन भर इनका-उनका तोला साहब ।
कहा जिसे शुभ जाय किया कुछ तो बिलकुल ही पोला साहब ।।
गाया गुन जन-रंजन के हित रस में भी विष घोला साहब ।
किन्तु कराये यह सब तुम्हरी माया के ही होला साहब ।।
सुनकर सब इजहार हमारा विहँस दिया बस भोला साहब ।
"शुक्ल" इसी भोले स्वभाव से मुझे मुफत में मोला साहब ।।

मणि १०७

महादेव में डूब खूब तो ।
छनभर की भी देर भला क्यों अंतःकरन मलीन जाय धो ।
मिलने लगे महान महत्तम छिपा हुआ अन्दर प्रकाश जो ।।
भरा हुआ बहु जन्म-जन्म का अंधकार अज्ञान जाय खो ।
मतिभ्रम मिटे अवश्य आशु हीं वस्तु एक जिससे दिखाय दो ।।
सूझेव्यापक विश्व विशद वर शुद्ध सच्चिदानंद तत्त्व सो ।
"शुक्ल" थहाने चली नमक की पुतली जलनिधि सी गति तव हो ।।

मणि १०८

महादेव छाने बैठे हैं ।।
मैं क्यों बकता झूठ सबेरे बहुतेरे जाने बैठे हैं ।
उसके ही शुरूर स्वजनों के दोष-दुरित खाने बैठे हैं ।।
स्वाश्रित हो नहिं विफल मनोरथ यही ठान ठाने बैठे हैं ।
लागे तनिक त्रिताप न उसको वरद हस्त ताने बैठे हैं ।।
गाते हैं जो गुनगन अपना उसका गुन गाने बैठे हैं ।
करता ध्यान आपका जो जन उसे आप ध्याने बैठे हैं ।।
चरन शीश नाने वाले के देव शीश नाने बैठे हैं ।
"शुक्ल" इन्हें सर्वस्व समझता सर्वस तेहि माने बैठे हैं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०९

महादेव मणिमाल गान कर ॥
श्रद्धा औ विश्वास सहित प्रिय मेरी बातों को स्वकानकर ।
महादेव की प्राप्ति हेतु सच कर या साधन मत तु आनकर ॥
वर्णित विविध भाव को इसमें हृदयंगम सादर सुजानकर ।
सब संभव हो नहीं यथारुचि चुन कोई भी रस प्रधानकर ॥
उसी रंग में रँगे अर्हनिशि जीवन निज आनँद निधानकर ।
प्राप्त कराने में समर्थ है कलित कीर्ति केवल बखानकर ॥
उनका बन जा आप सर्वथा उनको अपना निजी मानकर ।
भूलभान तनका अघान तू "शुक्ल" बिचर मद प्रेम छानकर ॥

दोहा

बना हुँ जबसे आपका सुनिये मेरे बाप ।
विष अमृत सा भासता वर वरिष्ठ सा शाप ॥
मिले आप क्या हैं मुझे मिला विश्व का राज ।
होनेवाले हो चुके पूर्ण सभी शुभ काज ॥
में जब तुम्हरा हो गया मेरा बचा क्या कुच्छ ।
बनकर "शुक्ल" विनीत अति पूछ रहा यह तुच्छ ॥
मैं नहिं कुछ मेरा नहीं स्थिति यह है श्रीमान् ।
"शुक्ल" समर्पण क्या करूँ या मेरे भगवान् ॥

ज्येष्ठ शुक्ल ७ मंगल सं. २०२१ विक्रमी

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशीधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
उन्नीसवीं माला समाप्त ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* शंभवेनमः *

महादेव मणिमाला

बीसवीं माला

चन्द्रशेखर शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवित्त

माना आपको ही मैंने अपना समर्थ सेव्य,
सब भाँति से ही आपको ही सनमाना है ।
जाना नहिं और कोई है इस जहान बीच,
जान के समान आपको ही जिय जाना है ।
गाना रुचता ही नहीं कोई और कैसा भी हो,
गुनगन तुम्हारे गाय के ही उमगाना है ।।
"शुक्ल" तजि नाना प्रीति तुमसे घनाना,
दास तुम्हरा गनाना शीश तेरे पद नाना है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीसवीं माला

मंगलाचरण

मणि १

महादेव मंगल मनमाने ।
वस्तु व्यक्ति नहिं और कोई भी इनको ही मंगल जिय जाने ।
जग मंगल के लिये इन्हीं के मंगलमय शुभ सुयश बखाने ।।
मंगल की वासनापूर्ति हित गाता इनके मंगल गाने ।
मंगलमयी सुसेवा करके फिरता मंगल महा अघाने ।।
मूर्तरूप मंगल दीखे सब मंगल देव लगे जब ध्याने ।
अनुमाने निज को मंगल ही जब मंगल सनेह शुचि साने ।।
मस्त बना रहता हर हालत मंगल रूप प्रेम मद छाने ।
बिक जाता मंगल अपने कर "शुक्ल" सुमंगल हाथ बिकाने ।।

मणि २

महादेव की देन दंग कर ।
यह देती वह देती वह तो देते-देते देय तंग कर ।
देखो रखती है आश्रित की कस काया चौचक्क चंग कर ।।
कर देती विनष्ट वेवशकर द्रुत दुर्दिन दुर्भाग्य जंगकर ।
कर सकता है कौन कल्पना इसके नित्य नवीन ढंग कर ।।
मिली इसे प्रेरणा विलक्षण अवढर दानी देव नंग कर ।
आजन्महि नहिं जन्मान्तर तक तारतम्य नहिं तनिक भंग कर ।।
लेती नहिं तब तक दम जबतक लेती नहिं निज पूर्ण अंग कर ।
हैं यह "शुक्ल" स्वभाव जन्य या समझूँ इसे तरंग भंग कर ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ३

महादेव तुम सद्‌गुरु साँचे ॥
देखे और जो भी जाते हैं हमको समझ परें वे काँचे ।
क्षमा करें सब गुरुजन मुझको जिनके सुयश यहाँ-वहँ माँचे ॥
गुण गुरुत्व का ऐसहि-वैसहि बड़े-बड़े दिखलाते ढाँचे ।
खुल जाता सब पोल हमारा जब परचे सब जाते जाँचे ॥
मात्र तुम्हारा कृपापात्र हो अन्धा वेद विवेचन बाँचे ।
काट सकें नहिं महामनीषी वह जो रेख सहज ही खाँचे ॥
विद्या विनय विवेक कलायुत गुण-गौरव इंगित पर नाँचे ।
करतल धरी दिखाती उसके रिधि-सिधि "शुक्ल" बिना ही याँचे ॥

मणि ४

महादेव की यार जै कहो ॥
दुर्लभ देव देह इनने यह दी है कृपा अगार जै कहो ।
इनके दिये पदार्थ पुञ्ज नित रहे चकाचक झार जै कहो ॥
इनकी ही दी दिव्यशक्ति से कर पाते कुलकार जै कहो ।
इन कृत उपकारों का कैसहुँ पा सकता को पार जै कहो ॥
बोझिल बने झुकाये शिर निज अनुभव करि अति भार जै कहो ।
अतिशय बने कृतज्ञ देव के रोकर बाँधे धार जै कहो ॥
भरे प्रेम उर अंतर भलि विधि तन-मन इन पर वार जै कहो ।
इक-दो नहीं न सौ-पचास ही "शुक्ल" अनन्तन बार जै कहो ॥

मणि ५

महादेव मय प्रान हो गये ॥
इनको जाने बाद यथारथ निज से हम अनजान हो गये ।
इनकी ही चरचा केवल बस सुनने वाले कान हो गये ॥
इनका सुयश गुनावलि इनकी गाने के मम गान हो गये ।
किंचित् कृपा कोर करने से हम असीम सुख खान हो गये ॥
भले-बुरे मम जन्म-जन्म के सारे कर्म पयान हो गये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगता कहाँ त्रिताप तनक तन प्रभुकर शिरसि वितान हो गये ।।
समझ सकें या नहीं आप यह हम तो आन के आन हो गये ।
"शुक्ल" आशु हीं आशुतोष कृत अति आनंद अघान हो गये ।।

मणि ६

महादेव मुद दाता मामा ।।

हो जाता अति मुदित ततक्षण जो इनके गुन गाता मामा ।
करि इनकी किंचित् सेवा सच सेवक अतिहि अघाता मामा ।।
परमानन्द प्राप्तकर प्रत्यह पद-पूजक पुलकाता मामा ।
ध्यान योग्य बन जाता इनके सचमुच इनका ध्याता मामा ।।
अनुचर बन फिरते अपनाये देख प्रेम मद माता मामा ।
शरणागत होते बन जाते मम लोकत्रय त्राता मामा ।।
नातेदार गिनाता इनसे लगा के कोई नाता मामा ।
कृपा अहैतुकि का शिकार तो "शुक्ल" चरम सुख पाता मामा ।।

मणि ७

महादेव अति भले भानजा ।।

तुम से ही प्रिय पाय प्रेरणा हम इन साँचे ढले भानजा ।
मिले शकुन शुभ भले-भले बहु पथ पर इनके चले भानजा ।।
रहकर इनसे दूर हाय ! दुख अति त्रिताप से जले भानजा ।
जबसे शरण हुआ हूँ इनकी सोता हूँ खुब कले भानजा ।।
अति निर्द्वन्द हो गया हूँ मैं पड़कर इनके गले भानजा ।
लगता है आ गये हों जैसे कल्पवृक्ष के तले भानजा ।।
दीख रहे मम हित सच कहता चारों फल भल फले भानजा ।
प्रणतारति भंजन के द्वारा "शुक्ल" प्रतिक्षण पले भानजा ।।

मणि ८

महादेव को जाना नाना ।

मुझ पर अनुकंपा अपार कर भलिविधि आप बखाना नाना ।
देव कृपा भी भई साथ ही तभी विषय समझाना नाना ।।
प्रभु प्रसाद के बिन कदापि नहिं सम्भव समझ में आना नाना ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंच जानकारी होते ही बेहद उर उमगाना नाना ॥
कीरति कलित गान करते ही अति आनन्द अघाना नाना ।
भुला देय तन भान ततक्षण देवेश्वर को ध्याना नाना ॥
रोम रोम आह्लादित करदे पद पंकज शिर नाना नाना ।
प्राप्तव्य जब प्राप्त हो गया "शुक्ल" रहा क्या पाना नाना ॥

मणि ९

महादेव सुधि आती नाती ॥

जब तब की क्या बात बताऊँ उमगाती अति छाती नाती ।
कभी फुहारे छुटें हँसी के बिन कारण बे बाती नाती ॥
बिना मरे नानी कबहीं दृग बनें नदी बरसाती नाती ।
कभी-कभी मौजो मस्ती में बेहद बाढ़ है लाती नाती ॥
भुला भान तन का सचमानो उसमें मुझे बहाती नाती ।
करे कौन कल्पना विविध विधि जस बहार दिखलाती नाती ।
चहिये और नहीं कुछ मुझको रहे ये रंग दिखाती नाती ।
देव कृपा से "शुक्ल" ये आती रहे प्रतिक्षण भाती नाती ॥

मणि १०

महादेव करवायँ करूँ मैं ।

भल की चाह नहीं किंचित चित अनभल से नहिं रंच डरूँ मैं ।
प्रेरित करें उधर लगजाऊँ टारें तो ततकाल टरूँ मैं ॥
ज्ञान नहीं कुछ सुगम-अगम का राह जो ई धरवायँ धरूँ मैं ।
पाऊँ कहँ सद्भाव सुसद्गुण दे दें उर भलि भाँति भरूँ मैं ॥
इस उस जिस साँचे निजरुचि के ढार देंय सह हर्ष ढरूँ मैं ।
भेजें स्वर्ग मजा लूँ उसका पठादेंय जा नर्क परूँ मैं ॥
इनका पाला साँड़ सुरक्षा में इनकी हो अभय चरूँ मैं ।
लगता कहाँ त्रिताप तनक तन इनके सुभग वियोग जरूँ मैं ॥
कर-कर इनको याद दृगन जल झरवाये इनके हि झरूँ मैं ।
"शुक्ल" नहीं यम-काल किसी के मारे बस इनके हि मरूँ मैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ११

महादेव के गुन देखो तो ॥

आरत दुखियारे की दुखमयि लें पुकार झट सुन देखो तो ।
गये-बिते की गति सुधार हित लें मुझसों को चुन देखो तो ॥
चढ़ी उतरती नहीं देन की छनभर भी धनि धुन देखो तो ।
भरता ही नहिं पेट आपका देते भी पुन पुन देखो तो ॥
बाधक तत्व सभी साधक के दें त्रिनेत्र से भुन देखो तो ।
आनँद वृष्टि "शुक्ल" करते सच जन-गृह दोनों जुन देखो तो ॥

मणि १२

महादेव पर निर्भर करिये ॥

किसी और का नहीं मित्रवर इनका ही भरोस हिय धरिये ।
इनके माथे मस्त मजे में बन निर्द्वन्द विचरिये चरिये ॥
टारें ये बलात् दोषों से क्यों नहिं भला कहो हम टरिये ।
लाला धरें सामने सद्‌गुण शुचि सद्‌भाव न क्यों उर भरिये ॥
ढारें दिव्य नये साँचे में अहमक हैं क्या जो नहिं ढरिये ।
जरे बहुत तीनों तापों से अब क्यों जरा सोचिये जरिये ॥
करनी बिना किये ही हे हो तार रहे तो क्यों नहिं तरिये ।
इनसे प्रेरित "शुक्ल" चाहती वरना मुक्ति न क्यों तब बरिये ॥

मणि १३

महादेव मन मूढ़ महा है ॥

सुमिरन स्वस्थ करे तुम्हरा ही यह इससे बहुबार कहा है ।
पर इसने कण्टकाकीर्नं हा ! मन चाहा मग मूर्खं गहा है ॥
बढ़ता जाय मर्जं जिससे वह रोग नाशहित दवा चहा है ।
फलस्वरूप उसके अबोध यह जग यातना विभिन्न लहा है ॥
कर सकता प्रतिकार भला क्या नतमस्तक हो सबहि सहा है ।
आश्रयमान लिया जो तुम्हरा वह नहिं कभी त्रिताप दहा है ॥
बन प्यारा प्रभु द्वारा तुम्हरे सदा सुरक्षित दास रहा है ।
बेड़ा पार "शुक्ल" होता झट जो तुम्हरे नद प्रेम बहा है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १४

महादेव बिन बड़ी यातना ।।

जब से हुआ दुराव देव से तब से पीछे पड़ी यातना ।
हटी नहीं यह हठी तभी से डटी रहे हर घड़ी यातना ।।
जब देखो तब सतत सामने है मुँह बाये खड़ी यातना ।
सो भी कुछ ऐसी-वैसी नहिं एक-एक से कड़ी यातना ।।
खाली कहाँ जगह कोई भी रोम-रोम यह जड़ी यातना ।
निकले नहीं निकाले कैसहुँ जो दिल अन्दर गड़ी यातना ।।
अनुकंपा बिन भये देव की टूट सके नहिं लड़ी यातना ।
"शुक्ल" हटाये और किसी के हट सकती नहिं अड़ी यातना ।।

मणि १५

महादेव से ही हित अपना ।।

किसी और पर नहिं करता है इन पर ही प्रतीति चित अपना ।
होता है हित साधन देखूँ इनके ही द्वारा नित अपना ।।
दीखें यहि सर्वत्र सत्य ही जाता है मन जित-जित अपना ।
इनका जहँ अस्तित्व बोध हो जाता है झुक सिर तित अपना ।।
इनकी अनुकंपा से इनके चरन कमल में चित थित अपना ।
सब विधि सुखद समर्थ सहायक समझूँ इन्हें परम मित अपना ।।
सुयश भरे इनकेहि सुहावन गान करन को प्रिय गित अपना ।
इनसे सम्बन्धित होने से जीवन "शुक्ल" सुभग बित अपना ।।

मणि १६

महादेव की सुखद व्यवस्था ।।

समझ नहीं पाती परन्तु मम गइ नितान्त थी सुखद व्यवस्था ।
नयी नयी यह बात नहीं जी सब दिन ही थी सुखद व्यवस्था ।।
आदिकाल से इनके द्वारा होय रही ई सुखद व्यवस्था ।
कोइ ऐसी कोई वैसी नहिं होती है फी सुखद व्यवस्था ।।
होती है सुखमयी दिखाते दुःखमयी भी सुखद व्यवस्था ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाभ उठाता वह इससे जो समझ पाय जी सुखद व्यवस्था ।।
इनका पा संकेत करे यह सब इनकी ती सुखद व्यवस्था ।
"शुक्ल" बताकर भेद मुझे तो कर निहाल दी सुखद व्यवस्था ।।

मणि १७

महादेव ने ढाँचा बदला ।।

देखा खूब गौर से गुरुवर भलीभाँति फिर जाँचा बदला ।
रख करके परिपक्व सुरक्षित जो हिस्सा था काँचा बदला ।।
लिखे मेरे थे जो कि भाग्य में विधि-विधान को बाँचा बदला ।
किया शील नहिं पूज्य पिता का अननुकूल सब खाँचा बदला ।।
परम स्वतंत्र न शिर पर कोई जो इनको नहि राँचा बदला ।
सो नहिं पाता मैं सजीव था मोह विवश हो माँचा बदला ।।
मैं गदगद हो गया देखकर नये शिरे से साँचा बदला ।
"शुक्ल" परम पुलकित हिय हुलसित मोद मना मन नाचाँ बदला ।।

मणि १८

महादेव से मिलो कहो कुछ ।।

अपने हैं सौ इनसे तुमको मिलने में संकोच न हो कुछ ।
सेवा-पूजा भक्तिभाव भलि इनमें से जो जँचे चहो कुछ ।।
भरे अमित आदर्श आप में सको जो भि गह अवशि गहो कुछ ।
करि अनुभूति अभाव आपका वियोगाग्नि में मित्र दहो कुछ ।।
लाकर बाढ़ प्रेम सरिता में विवश बने बेखबर वहो कुछ ।
आये द्वन्द सामने सुखयुत संकटमीत परार्थ सहो कुछ ।।
ले खुब चुके मजा दुनिया का लेकर देखो मजा यही कुछ ।
रहते "शुक्ल" संत सज्जन जन जस उत्तम अस रहनि रहो कुछ ।।

मणि १९

महादेव ले चलें तस चलो ।।

कहने की नहिं बात किसी के तब मैं कैसे कहूँ कस चलो ।
चलता पराधीन पर प्रेरित होकर जैसे विवश अस चलो ।।
और करूँ सुस्पष्ट इसे क्या जीते जी ही आप चस चलो ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी कार से वायुयान से कभी त्राण बिन पाँव घस चलो ।।
अजसी बने कभी जस के तस कभी लूटते विमल जस चलो ।
धिग जीवन-नीरस जीवन है भलीभाँति उर भरे रस चलो ।।
पा करके प्रसाद में दैवी दिव्यगुनों से ललित लस चलो ।
सौ की एक "शुक्ल" यह समझो हर हालत हिय आप हँस चलो ।।

मणि २०

महादेव को भजकर भ्राता ।।
कर लो निज कल्याण भलीविधि इनसे सम्बन्धित हो ताता ।
बन्द करो सारी दुनिया से इनसे आजहि खोलो खाता ।।
मिले नहीं खोजे इस जग में इनसा कोइ दिल खोले दाता ।
जोरें जन सम्पन्नों से ही निष्किचन से तोरें नाता ।।
सग समझें समर्थ को ही सब असमर्थों से करे न बाता ।
प्रकृति परी इनकी अद्भुत ही दीन-हीन ही इनको भाता ।।
जो सर्वथा अकिंचन सचमुच स्नेहमयी उसकी ये माता ।
होकर केवल शरण आपकी "शुक्ल" आपसे सब कुछ पाता ।।

मणि २१

महादेव सिखलाया करते ।।
बात गूढ़ से गूढ़ तत्त्व की विश्वेश्वर बतलाया करते ।
हित के बड़े काम के अन्दर-अन्दर शब्द सुनाया करते ।।
दूर-दूर की सूझ सूक्ष्म से सूक्ष्म हैं आप सुझाया करते ।
खुल जाती है आँख जिसे लख वह सब दृश्य दिखाया करते ।।
प्रेरक बने प्रगति के पथ पर प्रमुदित आप चलाया करते ।
भरे उदार भाव अत्यन्तहि मेरी भूल भुलाया करते ।।
पता नहीं क्या पाकर मुझ पर अपना प्यार लुटाया करते ।
"शुक्ल" हरषि हृदयेश्वर हमको हँसि-हँसि हृदय लगाया करते ।।

मणि २२

महादेव हे बाही देख ऽ ।
थका भटकता भवाटवी में बैठा बर की छाहीं देख ऽ ।
ताकत राह ताहार कबहि कै बना गजब गुमराही देख ऽ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परेशान हो गैली दादा भोगत आवा-जाही देख ऽ ।
कौन पूछनेवाला समझे किया खूब मन चाही देख ऽ ।।
गहरे गोते लगा-लगाकर विषय सिन्धु हम थाही देख ऽ ।
छीन अधीन दीन दुर्बल लखि बनि निर्दय हम डाही देख ऽ ।।
करके दुर्व्यवहार विविध विधि दिल दुनिया कर दाही देख ऽ ।
देख्य अवशि अनेकन पापी हमरे ऐसन नाहीं देख ऽ ।।
सिर उठाय दृगफार गौर से गोहरावत बा ताही देख ऽ ।
बनि आरत अत्यन्त पुकारत "शुक्ल" पाहि प्रभु पाही देख ऽ ।।

मणि २३

महादेव मुसकान अनोखी ।।

थिरका करती है सचमानो अमियमयी अधरान अनोखी ।
सुनत बने सुन पाओ तबहीं समझ सको बतरान अनोखी ।।
जाती नहीं कभी छन को भी बनी रहे उमगान अनोखी ।
रीझे गाल बजावत केवल ये हि रिझवार रिझान अनोखी ।।
बेच देय बरबस सेवक कर विश्वेश्वर की बान अनोखी ।
करते "शुक्ल" अघान अहर्निशि कीर्तिगान सुखखान अनोखी ।।

मणि २४

महादेव के रहते भय क्या ।।

भयकारी तत्त्वहिं भयकारी शिव-शिव हर-हर कहते भय क्या ।
भय का लेश नहीं जिसमें वह निर्भय भव पथ गहते भय क्या ।।
पद पंकज प्रति प्रीति देव के जग जनहित चित चहते भय क्या ।
आये द्वंद सामने साथहि परहित संकट सहते भय क्या ।।
द्वेष कलह के सुदृढ़ दुर्ग को स्नेह शस्त्र ले ढहते भय क्या ।
दोष दुरित कण्टक सुनाम प्रभु दावानल में दहते भय क्या ।।
बाढ़े प्रेम सरित में बेसुध बने विवश हो बहते भय क्या ।
सहज उदार स्वामि के द्वारा "शुक्ल" दिव्य फल लहते भय क्या ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २५

महादेव हम क्या खुश होवें ॥
खुश करने के साधन जितने सब दिखते भ्रम क्या खुश होवें ।
सुन्दर-स्वस्थ-सुडौल देह को ताक रहे यम क्या खुश होवें ॥
लक्ष्मी चंचल पास किसी के रहती नहिं थम क्या खुश होवें ।
मोदक मेवा और मलाई प्रिय पदार्थ झम क्या खुश होवें ॥
होती कहाँ तृप्ति इनसे सो इन रमनिन रम क्या खुश होवें ।
बाल सुयोग्य स्वआज्ञाकारी कह इनको मम क्या खुश होवें ॥
एक न एक लगा ही रहता छोड़े नहिं गम क्या खुश होवें ।
"शुक्ल" आपकी परम कृपा बिन दृष्टि भये सम क्या खुश होवें ॥

मणि २६

महादेव की माया भाई ।
अति अलंघ्य अति प्रबल पुरातन मोहे सुर-नर-मुनि समुदाई ।
अपने दुष्प्रभाव से इनने इन जग-जन बेहद भरमाई ॥
वस्तु व्यक्ति सब जगकर्ता के यह उनमें ममता उपजाई ।
जन्मोत्सव में बजे बधाई मरते मचती महारुलाई ॥
उड़ते खुब गुलछर्रे देखूँ हो जाती कुछ जहाँ कमाई ।
तब की दशा कही नहिं जाई आना-पाई भये सफाई ॥
तन-जन शक्ति प्राप्त होते ही देती है इकदम बौराई ।
हीन भये अति दीन बनाकर द्वार-द्वार की खाक छनाई ॥
मूर्ख-मूर्ख है ही मैं देखूँ पढ़-पढ़ के पण्डित पगलाई ।
मानी का कर मान विमर्दन ज्ञानी को रगड़तीं सवाई ॥
होता हूँ हैरान देख मैं जो-जो इसने खेल देखाई ।
प्रभु का पा संकेत "शुक्ल" यह मुझ पर दया दिखाती माई ॥

मणि २७

महादेव निंदक निक राखौ ॥
लँगड़ा आम-मलाइ खिलावत मालपुआ मोदक घिक राखौ ।
करि जिमि सकें स्वस्थ निन्दा नित सबदिन ही तबियत ठिक राखौ ॥
दूर परे नहिं पूर परे प्रभु नेरे मेरे ही टिक राखौ ।
"शुक्ल" विनय इक और देव यह उनके कर हमको बिक राखौ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि २८

महादेव निंदक सुख पावें ॥

सहयोगी शतशः उनको मिल उनका खुब हौसला बढ़ावें ।
जिससे होय पुष्ट उनका मत उनको वह प्रमाण पहुँचावें ॥
आड़े कहें मजे में हँस-हँस खड़े सामने मुझे सुनावें ।
मिल करके दस-पाँच भद्रजन मेरी खिल्ली खूब उड़ावें ॥
मेरी भलि अपकीर्ति कथा को लेकर गली-गली फैलावें ।
बहुत बोझ बढ़ गया पाप का यूँ कुछ हलका उसे करावें ॥
पके कान मिथ्या अस्तुति से वह भी मेरी ऊब मिटावें ।
हम सुन "शुक्ल" विकारहीन हिय प्रभु से उनका भला मनावें ॥

मणि २९

महादेव कट गये पाप सब ।

बनकर चरचा विषय जगत के बात-बात बट गये पाप सब ।
यूँ घट-घट व्यापी हो करके मैं देखूँ घट गये पाप सब ॥
मेरे किये कथन से केवल जा उनसे सट गथे पाप सब ।
तुम्हीं उतारो तो उतरे वे जो सिर पर डट गये पाप सब ॥
तुम्हरे चित चाहत ही चाचा छटक-छटक छट गये पाप सब ।
तुम्हरी भृकुटि बंक लखते ही दुम दबाय झट गये पाप सब ॥
पड़ करके बलवान वायु ज्यों बादल से फट गये पाप सब ।
"शुक्ल" न करना पड़ा हमें कुछ हे-हो में हट गये पाप सब ॥

मणि ३०

महादेव दिन सब दिखलाओ ॥

यह दिखलाओ-वह दिखलाओ बेढब साथहि ढब दिखलाओ ।
बना मुझे द्रष्टा उत्साही दिखलाओ जो जब दिखलाओ ॥
मेरे रुचि की फिकर न करके निज रुचि के ही रब दिखलाओ ।
जो दिखलाना हो मैं कहता सो सब जल्दहि अब दिखलाओ ॥
कमर कसे हम खड़े जानको अब नहिं तो फिर कब दिखलाओ ।
जिन्दा हूँ जब तक मैं तबतक जब जी चाहे तब दिखलाओ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने-अपने ढँग की सबमें है फबती सो फब दिखलाओ ।
"शुक्ल" दिखाते दृश्य सभी में निजी झलकती छव दिखलाओ ।।

मणि ३१

महादेव हमको सम रक्खो ।।

वदला करे परिस्थिति नित नइ चित्तवृत्ति इक सी जम रक्खो ।
घटा करें घटना गम की नित हमसे किन्तु दूर गम रक्खो ।।
लेते रस रसना को मेरी करती शिव हर-हर बम रक्खो ।
विस्मृति हो इकदम नहिं तुम्हरी स्मृति ताजी दम पर दम रक्खो ।।
निज चिंतन में तैलधारवत् अहनिशि वृत्ति मेरी रम रक्खो ।
करि अनुकूल सर्वथा अपने जीवनधन जीवन मम रक्खो ।।
भर दो पूर्ण प्रकाश हृदय में किसी न कोने में तम रक्खो ।
तुम मय ही यह विश्व "शुक्ल" सब शेष लेश भी नहिं भ्रम रक्खो ।।

मणि ३२

महादेव बिन शान्ति नहीं है ।।

इक दो नहीं उपाय मित्र तुम कोटि करो किन शान्ति नहीं है ।
इनसे जो दूरस्थ व्यक्ति सो रहे सतत खिन्न शांति नहीं है ।।
रात प्रभात-सँझात देख लो कोई भी छिन शांति नहीं है ।
रहता है बेचैन बिचारा कभी रैन दिन शांति नहीं है ।।
फिरे भोगता यहाँ-वहाँ वह कहुँ तिलोक तिन शांति नहीं है ।
शोक मोह माया ममता में निपट रहे लिन शांति नहीं है ।।
बन पाता आदर्श न जीवन बीते अति चिन शांति नहीं है ।
"शुक्ल" सनेह सिन्धु शंकर के बने विनाभिन शांति नहीं है ।।

मणि ३३

महादेव से मन बहलाऊँ ।।

मन बहलाने लायक अपना और किसी को मैं नहिं पाऊँ ।
जो कुछ मुझे चाहिए सो सब इनमें पा एकत्र जुड़ाऊँ ।।
बतलावें फिर आप गौरकर और तरफ क्यों नजर उठाऊँ ।
हेर-हेर इनका मुख मण्डल लगत न देर सबेर हेराऊँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनि श्रवणामृत वाणी इनकी भलिविधि तन का भान भुलाऊँ ।
साध सहस्र जन्म की सञ्चित एक-एक कर सभी पुराऊँ ॥
रसकै लाभ यथार्थ रीतया कसकै सारी कसक मिटाऊँ ।
हुलसाऊँ पल-पल पुलकाऊँ "शुक्ल" सतत आनन्द अघाऊँ ॥

मणि ३४

महादेव हम भूल भरे हैं ॥

आज नहीं हम जनम-जनम से सचमुच भूलहि भूल करे हैं ।
दिखते जो पशु पुष्ट आपको भरहिक हम तृण भूल चरे हैं ॥
निर्भयता से किया सदा ही करत भूल नहिं कभी डरे हैं ।
कह सकता लखकर कोई भी नखशिख साँचे भूल ढरे हैं ॥
कौन सोच सकता है कितना कर संचित हम भूल धरे हैं ।
टर यह गई उम्र सबकी सब हम न भूल से भूल टरे हैं ॥
और भूल कर्ता इस जग के सब ही मेरे तरे परे हैं ।
खुशी यही है कहें लोग सब "शुक्ल" जी करतहि भूल मरे हैं ॥

मणि ३५

महादेव सखि ! लखि जो पाऊँ ॥

एकबार जीवन रहते तो निज को धन्य मान मैं जाऊँ ।
वर्णन मात्र सुने से इनका अलि ! अतिशय आनन्द अघाऊँ ॥
लेकर ललित नाम इनका मैं कौन कहे कितना पुलकाऊँ ।
करते ही गुनगान आपका भलिविधि तन का भान भुलाऊँ ॥
कर-कर इनको याद आलि! मैं सच छन-छन निज हिय हुलसाऊँ ।
इनकी जिकर इन्हीं की चरचा में यह अपना बयस विताऊँ ॥
इनकी प्राप्ति हेतु सजनी मैं कह सो जतन करूँ करवाऊँ ।
मिलें सपदि प्राणेश "शुक्ल" के निशि दिन मन-मन यही मनाऊँ ॥

मणि ३६

महादेव का नाम लला लो ॥

और करो मत करो फिकर नहिं इनसे निज चितवृत्ति लगालो ।
इनका बनकर अभी अभी ही इनको निज सर्वस्व बनालो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठो कहुँ एकान्त स्वस्थ तो करके इनका ध्यान मजालो ।
चार बीच जब रहो प्रेम से इनकी ही शुभ चरचा चालो ॥
अवसर काढ़ि सनेह सने नित इनकी गुनद गुनावलि गालो ।
हो जावे अपहरण हीनता इनकी वर विभूति हिय छालो ॥
उलझन कहाँ रहे इस जग की जो इनसे निज उर उर झालो ।
"शुक्ल" शरण हो देव-देव की विचरो दुनिया बीच निहालो ॥

मणि ३७

महादेव से सब पाया हम ॥

इनकी ही दी लिये विचरते वर्ण विशिष्ट मस्त काया हम ।
इनके दिये जिये जिसमें यह विविध पदार्थ सविधि खाया हम ॥
इनकी ही दी जगत जानता पाया मननुकूल जाया हम ।
बना हूँ अति निर्द्वन्द आपकी अनुभव करि निज पर दाया हम ॥
इनका पाँव पकड़ प्रवेश कर भलिविधि भवसागर थाया हम ।
हर गइ हिय हीनता हमारी इनका वर वैभव छाया हम ॥
सिद्ध भई गुनकारी गुनमयि देव गुनावलि जो गाया हम ।
हो सा गया निहाल "शुक्ल" सच पद नित नत मस्तक नाया हम ॥

मणि ३८

महादेव की कौन कथा कहुँ ॥

अचरज में डालती सभी हैं जी चाहे मैं जौन कथा कहुँ ।
अति महत्व से पूर्ण कौन नहिं मुख्य कहूँ या गौन कथा कहुँ ॥
वैसे हो रुचिकारो तुमको जौन कहो मैं तौन कथा कहुँ ।
नाशक सभी अभद्र तत्व को सविधि-भद्रता मौन कथा कहुँ ॥
हो रस वृष्टि अगार यार सच वह रसार्द्र बन पौन कथा कहुँ ।
समाश्रिस्य हो सुनें रसिक जन "शुक्ल" मूक बनि मौन कथा कहुँ ॥

मणि ३९

महादेव से सही बताई ॥

जाननहार आप घट-घट के झूठ न इनसे कही बताई ।
भलो-बुरो सीधी या टेढ़ी जबहिं जौन गलि गही बताई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह या वह ऐसा या वैसा जैसा चित से चही बताई ।
दुर्बल दीन-अधीन व्यक्ति को बनि निर्दय जो डही बताई ।।
हो स्वेच्छाचारी-व्यभिचारी गजब-अजब जो ढही बताई ।
गहरे गोता लगा-लगा खुब विषय सिन्धु जो थही बताई ।।
आँख बन्दकर टुटहे डोंगा अति निशंक बनि वही बताई ।
सत्वगुणी-रजमयी-तामसी चित्तवृत्ति जस रही बताई ।।
ऐसी कोई नहीं परिस्थिति जो इनसे हम नहीं बताई ।
"शुक्ल" रखें हमको जब जैसे जानें जो ये वही बताई ।।

मणि ४०

महादेव के चरन परूँगी ।
कर्म-अकर्म-विकर्म वोध नहिं करवावें बस वही करूँगी ।
जिसमें करें नियुक्त लगूँ झट टारें उससे सपदि टरूँगी ।।
पा इनसे सद्भाव-सुसद्गुण उर अंतर भलिभाँति भरूँगी ।
करूँ सुसम्पादन प्रिय इनका अप्रिय करि कल्पना डरूँगी ।।
रह इनके अनुकूल सर्वथा हिय इनका अनयास हरूँगी ।
अहनिशि करि संचित सुनाम धन मन मंजूषा माँहि धरूँगी ।।
इनकी बनि वियोगिनी बरबस विरह दाह विन आग जरूँगी ।
प्राणेश्वर को प्राण सर्मपित किये "शुक्ल" अति मुदित मरूँगी ।।

मणि ४१

महादेव मैं व्यभिचारी हूँ ।।
कौन नहीं जानता मुझे की कैसा दुष्ट दुराचारी हूँ ।
सतसंगति से शून्य कुसंगी-अज्ञ-अकोविद-अविचारी हूँ ।।
सतत कुचिन्तन करत रहे से बना सर्वथा सविकारो हूँ ।
विश्व विदित वेहया बहिर्मुख अति निलज्ज निंदित भारी हूँ ।।
पर पीड़क-पर निन्दक प्रभुवर ! पर-दारा प्रिय पथचारी हूँ ।
परहित हानि लाभ समझूँ निज पर सुख देखि दुःखकारी हूँ ।।
किन्तु तुम्हें तजि ओर और की दृष्टि पात समझत गारी हूँ ।
होत भये अति खोट "शुक्ल" मैं तुम्हरहि नाम ओट धारी हूँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ४२

महादेव अब बढ़ी खुशी है ॥
बाहर से कुछ मिला न मुझको अन्दर से ही कढ़ी खुशी है ।
जैसे जहर होय विषधर का नख से शिख यह चढ़ी खुशी है ॥
लगती है जैसे तुम्हरे ही कर कमलों की गढ़ी खुशी है ।
रखे जो आत्मविभोर बनाकर उन पाठों की पढ़ी खुशी है ॥
होती नहिं अंतर्हित कबहीं अहनिशि सम्मुख ठढ़ी खुशी है ।
"शुक्ल" देख सकता कोई भी रोम रोम में मढ़ी खुशी है ॥

मणि ४३

महादेव हिय हर्ष भरे हैं ॥
हिला-हिलाकर पात्र वार बहु भलीभाँति ठस ठोंक करे हैं ।
रह न जाय कोना खाली कोइ इसी फिक्र में आप परे हैं ॥
बिना किये प्रार्थना-याचना अपन आप परगये गरे हैं ।
कैसा कहीं भि जाना-आना खोजत पहुँचे आप घरे हैं ॥
हो परवश निज कृपा अहैतुकि सच ये अवढर ढरन ढरे हैं ।
तापित जानि त्रिताप ज्वाल से दयावारि अति झटिति झरे हैं ॥
बना निशंक दिया जबसे की बरद हस्त वर शीश धरे हैं ।
इनका पा संकेत सहज ही वाधक तत्व समस्त टरे हैं ॥
बड़ी बात यह हुई देखता बे प्रयास मुद्दई मरे हैं ।
"शुक्ल" किये बिन ही साधन कोइ सब महत्व के काज सरे हैं ॥

मणि ४४

महादेव कर निर्विकार मन ॥
निर्विकार होने से मन प्रभु सहजहि निर्विकार होवे तन ।
अनुकंपा तेरी से तब तो निर्विकार बीते जीवन छन ॥
हो स्विकार सविकार कहाँ फिर निर्विकार ही हो संग्रह धन ।
निज में निर्विकार होने से निर्विकार दीखे सब जग जन ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्विकार पशुपक्षि दिखें सब निर्विकार वन-जाँय नगर वन ।
निर्विकार चर-विचर अवर भी निर्विकार हो गिरि तरु रज कन ।।
निर्विकार बह वायु निरंतर निर्विकार जल वृष्टि करें घन ।
"शुक्ल" करे लज्जित द्यूतल को निर्विकार भो भव भूतल बन ।।

मणि ४५

महादेव गुन गान करो कवि ।।

अपने वर्णन का अब से बस ये ही विषय प्रधान करो कवि ।
पूरी प्रतिभा का प्रयोग करि इनका सुयश बखान करो कवि ।।
इनकी कलित कीर्ति का गायन नित्यहि विविध विधान करो कवि ।
विस्तृत क्षेत्र पड़ा है इसमें नित नव अनुसंधान करो कवि ।।
इनका वर वर्णन करते निज विस्मृत तन का भान करो कवि ।
इनसे सम्बन्धित कर अपना जीवन महा महान करो कवि ।।
बनी हुई अभिशाप जिंदगी को वरिष्ठ वरदान करो कवि ।
"शुक्ल" विनययुत कहता सादर बात काम की कान करो कवि ।।

मणि ४६

महादेव गुन गा सुख लूटूँ ।।

किसी और का नहीं विश्व में बन करके इनका सुख लूटूँ ।
अमृत मात करता स्वाभाविक देव उछिष्ट को खा सुख लूटूँ ।।
रह न रंच हीनता-दीनता वर वैभव हिय छा सुख लूटूँ ।
जाना स्वर्ग सुहाता किसको शरण इन्हीं के जा सुख लूटूँ ।।
उलझन कोई पास न फटके इनसे उर उलझा सुख लूटूँ ।
करता जिक्र न कभी पराई कर इनकी चरचा सुख लूटूँ ।।
स्वार्थ हेतु नहिं रूप इन्हीं का मान सबहि सिर ना सुख लूटूँ ।
"शुक्ल" प्रतिक्षणअतिहि विलक्षण प्रभु प्रसाद प्रिय पा सुख लूटूँ ।।

मणि ४७

महादेव की यह विशेषता ।।

हुआ नहीं कोई समर्थ अस जो इनकी सक कह विशेषता ।
यथा शक्ति वर्णन करते बस बेदशास्त्र भी गह विशेषता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाता कहाँ कोई भी देखूँ कितनहु ऐसी यह विशेषता ।
जान जो पाता यह विशेषता पा जाता कुछ वह विशेषता ॥
बन जाते विशिष्ट कितने ही इनके द्वारा लह विशेषता ।
इनकी दयादृष्टि होते ही दिल में पड़ती वह विशेषता ॥
इनसे संरक्षित होकर ही पास किसी के रह विशेषता ।
सेवक "शुक्ल" मुझे तो इनके दिखलाते सब सह विशेषता ॥

मणि ४८

महादेव की शानी को है ॥
दुख के मारे बेचारे को करता सुख की खानी को है ।
दीन मलीन-हीन स्वजनों का भलीभाँति सनमानी को है ॥
आर्त अधीन गये गुजरे से बोलें मधुरी बानी को है ।
याचक होय निराश कभी नहिं ठीक ठान यह ठानी को है ॥
तनक ताप नहिं लगे दास को कृपातान अस तानी को है ।
लंघन करे लाख वर्षों को धीरवान दृढ़ ध्यानी को है ॥
ज्ञानगम्य ज्ञानद ज्ञानार्णव ज्ञानेश्वर सा ज्ञानी को है ।
मनचाहा जो देय "शुक्ल" सब विश्व विदित वरदानी को है ॥

मणि ४९

महादेव की शानी को है ॥
होय प्रकट कोई सनमुख तो मैं भी जरा देख लूँ जो है ।
ऐसा दुस्साहस करके वह निश्चय निज मर्यादा खो है ॥
पड़ मिथ्याभिमान में बेशक अपनी बनी बात सच धो है ।
कलई खुले बाद कर मल ई खल ई खूब सो भल ई रो है ॥
इनकी लघु विशेषता सम्मुख सबकी सब विशेषता बो है ।
समता का इनकी संसृति में मैं कहता कोइ नो है नो है ॥
इनका रूप स्वभाव आपका वाणी मधुर विश्वजन मोहै ।
"शुक्ल" तभी तो आदिकाल से इनकी कलित कीर्ति जग सोहै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ५०

महादेव में ही सुख सारे ॥

जाने बिन बस इसी बातको आह दुःख हम हैं दुखमारे ।
जाते जहँ सुख की तलाश में दिखता दुःख खड़ा मुँह फारे ॥
होते फिर-फिर विफल मनोरथ मतिभ्रम निकले नहीं निकारे ।
इक दो नहीं हजारों इस विधि हमने अपने जनम बिगारे ॥
सुख का सदावर्त बटता जहँ पहुँच न पाते उनके द्वारे ।
वे उदार दाता देने को खड़े प्रतीक्षा माँहि विचारे ॥
पथ पर दृष्टि लगाये प्रतिपल चाहें प्रभुवर कोइ पधारे ।
मिलता "शुक्ल" चारु चारोफल संतत यह नहि साँझ सकारे ॥

मणि ५१

महादेव की घर-घर चरचा ॥

होती आती आदिकाल से शुचि सनेह से भर-भर चरचा ।
कौन कहे कल्याण कर चुके कितने केवल कर-कर चरचा ॥
इसीलिये तो सभी जानते होय तभी यह दर-दर चरचा ।
इनकी नीकि निकाई लखकर करते नीके नर-नर चरचा ॥
हैं अनंत गुन होती जग में एक-एक को धर-धर चरचा ।
कितने ही श्रद्धा सँयुक्त औ करते कितने डर-डर चरचा ॥
देती शाश्वत शांति सद्य ही शुभ श्रवणों में पर-पर चरचा ।
पूर्णकाम कर देय सभी को "शुक्ल" मनोरथ फर-फर चरचा ॥

मणि ५२

महादेव को योग्य जानकर ।

वर्णन यथा विधान वेद कर वर्णनीय इनको हि मानकर ।
वाणी सफल संत करते सब इनका रसमय यश बखानकर ॥
भक्त करे कृत कृत्य स्वजीवन गुण मण्डित इनका सुगानकर ।
श्रवण पवित्र करें श्रद्धायुत कलित कीर्ति इनकी स्वकानकर ॥
सेवक सुख लूटता विविध विधि सेवा कुछ इनकी अघानकर ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमी मस्त विचरता देखूँ स्वस्थ दिव्य मद प्रेम छानकर ॥
भूले रहें देह सुधि कितने इनका सुन्दर सतत ध्यानकर ।
बन जाते जो ये सो "शुक्ल" वे जो ये सो निज कोभि मानकर ॥

मणि ५३

महादेव से जाके बोला ।
जितनी संभव हुई दीन से निज दीनता दिखा के बोला ।
अति श्रद्धा संयुक्त बने हम चरण शीश निज ना के बोला ॥
रही जरूरत नहीं झूठ की सत्य शपथ मैं खा के बोला ।
सही बात जो थी उसमें मैं कुछ नहिं घटा बढ़ा के बोला ॥
घट घट की जाननवाले ये उर विशेषता छाके बोला ।
सुख निधान सुखरूप देव का सुखद इशारा पाके बोला ॥
दिल की बात यथारुचि हँसके रो के बोला गा के बोला ।
तुम हो कौन पूछनेवाले "शुक्ल" कहो तो काके बोला ॥

मणि ५४

महादेव दुख मिटा विश्व का ।
बार अनेक विनययुत मैंने कहा देव दुख मिटा विश्व का ।
मुख से ही नहिं चित से मैं सच चहा देव दुख मिटा विश्व का ॥
देखूं खुब त्रिताप दाहों यह दहा देव दुख मिटा विश्व का ।
अविदित नहीं आपको जग बहु लहा देव दुख मिटा विश्व का ॥
कौन नहीं यातना आजतक सहा देव दुख मिटा विश्व का ।
आफत पर आफत अपार सिर ढहा देव दुख मिटा विश्व का ॥
सहने का इनमें न और बल रहा देव दुख मिटा विश्व का ।
"शुक्ल" सश्रद्ध हृदय करि प्रभुपद गहा देव दुख मिटा विश्व का ॥

मणि ५५

महादेव पर मर मुँहझौसा ।
मरा बहुत इनपर-उनपर अब विरह इन्हीं के जर मुँहझौसा ।
टरा नहीं अबतक दोषों से टारें अब ये टर मुँहझौसा ॥
बेडर बना विचरता मूरख द्विज-गुरुजन से डर मुँहझौसा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीनों पर दुखियों पर निर्दय सदय हृदय कर डर मुँहझौसा ॥
इनसे माँग-माँगकर सद्‌गुण सद्‌भावन उर भर मुँहझौसा ।
प्राप्त विवेक-भक्तिकर इनसे वन झट नरसा नर मुँहझौसा ॥
कर सश्रद्ध हिय हर्षि कहूँ में पद पंकज सिर धर मुँहझौसा ।
लगा सुतार मजे का है अब "शुक्ल" पितर सह तर मुँहझौसा ॥

मणि ५६

महादेव वर वरन विलोको ।
ज्योतिर्मय कमनीय कान्तिभल दर दामिनि द्युति दरन विलोको ।
शोभासदन सुचारु वदन शुभ मन्द मदन मद करन विलोको ॥
कलित कपोल अमोल गोल ये बोल फूल जनु झरन विलोको ।
नयन विशाल त्रिपुण्ड भालसित वाल कलाधर धरन विलोको ॥
सुन्दर श्रवण सुनीकि नासिका अधर अरुण मुदभरन विलोको ।
दाड़िम दशन दिव्य दमकत अरु मंजुस्मित मन हरन विलोको ॥
नीलकण्ठ वक्षस्थल विस्तृत भुज प्रलम्ब करि करन विलोको ।
"शुक्ल" चारुचित हरन हमारे चिन्तामणि युग चरन विलोको ॥

मणि ५७

महादेव की प्यारी यारी ॥
बड़े भाग्यसे मिली हमें है शुभकारी संतत सुखकारी ।
बात-बात में ही बनाय दी जन्म-जन्म की मेरी विगारी ॥
यह वह मात्र नहीं देखो तो मेरी सारी दशा सुधारी ।
साफ-साफ दिखलाती क्या से क्या है हालत हुई हमारी ॥
हो क्यों नहिं आपही सोचिये जब इनने निज करन सँवारी ।
करना चहैं मुक्ति बाला वर करते उसकी लखूँ तयारी ॥
तुम भी लाभ उठाओ यारो विनती नम्र मेरी स्वीकारी ।
"शुक्ल" वनाकर सखादेव को विचरो संतत बने सुखारी ॥

मणि ५८

महादेव के गुन गाने से ।
मिलता जो सुख नहीं मिलेगा वह देवेन्द्रहु पद पाने से ।
वह पड़ता रस ही रस अन्दर सुनतहि कलित कीर्ति काने से ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मस्ती भर जाती बेहद सी इनकर प्रेम सुरा छाने से ।
अक्षय तृप्ति प्राप्त होती सच इनका प्रिय उच्छिष्ट खाने से ।।
जाना आना भव का मिटता इनके मात्र शरण जाने से ।
बन जाते अपने तुरंत ये अपना करि इनको माने से ।।
लगता कहाँ त्रिताप तनक तन कृपा तान सिर पर ताने से ।
"शुक्ल" भूलता भान देह का सुस्थिर पद पंकज ध्याने से ।।

मणि ५९

महादेव को दुनियावालो ।
जानो करके जतन जल्द ही देर न हो ओ दुनिया वालो ।
इनके ज्ञानमात्र से तुम्हरा अति कल्यान हो दुनियावालो ।।
जान सकोगे इन्हें किन्तु सच निज निजत्व खो दुनियावालो ।
हो निजत्व खोने में सुविधा सतत नाम लो दुनियावालो ।।
शर्त एक है लगी साथ में हो अकाम सो दुनियावालो ।
लेकर यूँ निष्काम नाम प्रभु अंतरमल धो दुनियावालो ।।
अपने आप प्रकाश भरे उर देव द्रवित तो दुनियावालो ।
लक्ष्यपूर्ति हो "शुक्ल" सद्य तब जीवन का जो दुनियावालो ।।

मणि ६०

महादेव मम परम सनेही ।।
करना चहूँ अशुभ प्रेरित कर करवावें शुभ करम सनेही ।
दुर्व्यवहार भये पर द्वारा करते प्रकृति न गरम सनेही ।।
उत्तेजित करने पर भी तो रखते हमको नरम सनेही ।
शरणागति ही मात्र आपनी बना दिया मम धरम सनेही ।।
विश्व रहस्य बताकर विधिवत मिटा दिया सब भरम सनेही ।
खुश कर दिया खोलकर हमसे अपना सारा मरम सनेही ।।
अनुकंपा से ही सम्पादित करते सब विधि शरम सनेही ।
"शक्ल" सनेह पात्र सब मेरे हैं परन्तु ये चरम सनेही ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ६१

महादेव मन मनहिं मनाऊँ ।।

नहीं किसी भी अन्य विषय में मति इनके सुस्नेह सनाऊँ ।
सुलभ हो सेवा सुयश गान प्रभु फनवन ऐसे फकत फनाऊँ ।।
करके कम क्रमशः दुनिया से इनसे घन सम्बन्ध घनाऊँ ।
किसी और से नहीं जगत में इनसे ही दीनता जनाऊँ ।।
गुन कोई नहिं होते निज में गनती गन में निजी गनाऊँ ।
लगे त्रिताप तनक तन में नहिं देव कृपा सिरतान तनाऊँ ।।
भयेभि भल अपराध त्याग नहिं संभव हो अस ठान ठनाऊँ ।
सेवक "शुक्ल" सदा का इनका विश्व स्वामि निज स्वामि बनाऊँ ।।

मणि ६२

महादेव बिन बनी भला कस ।।

सनी विषय रस में कुबुद्धि जो शुचि सनेह रस सनी भला कस ।
माता तन धन जन मद में ही दिव्य प्रेम मद छनी भला कस ।।
घना घृणित सम्बन्ध जगत से देवेश्वर से घनी भला कस ।
बना नगण्य तिरस्कृत फिरता गण्य जीव कोउ गनी भला कस ।।
टरना नहीं शरण से प्रभु के ठीक ठान यह ठनी भला कस ।
सेवा सुयश गान संभव हो शुभ फनवन अस फनी भला कस ।।
संतत सुमिरि नाम श्रद्धा सह बने नाम धन धनी भला कस ।
"शुक्ल" मिले बिन प्राणेश्वर के मिलन महोत्सव मनी भला कस ।।

मणि ६३

महादेव सुमिरो सुख सोओ ।।

थके बहुत भव भार ढोयकर मेरे बन्धु और मत ढोओ ।
भोगे बहुत यातना रोये पा सुयोग अब तो मत रोओ ।।
खोये जन्म अनेक हाय ! तुम यह जीवन अमोल क्यों खोओ ।
लेकर नाम अहर्निशि प्रभु का महामलिन अंतस मल धोओ ।।
परम पुनीत परिस्कृत उर में आशुहि प्रेम बीज वर बोओ ।
सने सनेह देह सुधि भूले प्रेमाश्रुन की माला पोओ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जड़-चेतन-जग जीव सभी को जगदीश्वर कर ही जिय जोओ ।
शिवमय सुभगविश्व को लखकर तुम भी "शुक्ल" सदा शिव होओ ॥

मणि ६४

महादेव को जान जरूरी ॥

जानदार मानव को रखना चहिये इनका ज्ञान जरूरी ।
जाने बिन हो सकता ही नहिं होना जस सनमान जरूरी ॥
करना भी संभव मत समझो इनका विशद बखान जरूरी ।
क्या लेकर कर सकता कोई करना जो गुनगान जरूरी ॥
भुला देय जो भान देहकर कर सकता कस ध्यान जरूरी ।
जानन हित जा जानकार ढिग विनत शीश पग नान जरूरी ॥
आदेशानुसार उनके है करना यत्न विधान जरूरी ।
"शुक्ल" प्रार्थना परमेश्वर से करना समझ प्रधान जरूरी ॥

मणि ६५

महादेव पग पर परते ही ॥

परमानन्द प्राप्त हो ततछन देव चरन पर सिर धरते ही ।
मिलता सुख कल्पनातीत झट सेवा किंचित भी करते ही ॥
टर जाती सब विपति बला सब दोषयुक्त पथ से टरते ही ।
भर जाता शुभ सद्‌गुण सब ही हिय भलि भक्ति भाव भरते ही ॥
मिट जाती जिय जरन सभी ही इनके वर वियोग जरते ही ।
हो जाता हीतल शीतल सा याद इन्हें कर दृग झरते ही ॥
परती गले मुक्ति अनयासहि मुखशिवनाम लेत मरते ही ।
वरती शाश्वत शांति "शुक्ल" सच वरन योग्य प्रभु को वरते ही ॥

मणि ६६

महादेव सखि मोर मजाकी ॥

इसके जैसे दिखलायेंगे दुनिया में अति थोर मजाकी ।
करता है मजाक हर इक से नेह सुधा रस घोर मजाकी ॥
यूँ मजाक करते-करते ही प्रेमार्णव दे वोर मजाकी ।
करता पर विरले से ही कर परम कृपा की कोर मजाकी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीखें नहीं विश्व में ऐसे अलि ! अति सुन्दर गोर मजाकी ।
बोलनि-मिलनि-बैपरनि विधि-विधि से लेता चितचोर मजाकी ॥
चलु तौ चलि विचरत उद्यान में मिलि हैं वे बड़ भोर मजाकी ।
होंगे "शुक्ल" प्रसन्न अतिहि वे करके स्वागत तोर मजाकी ॥

मणि ६७

महादेव से बिन बतिआये ॥

चली न कैसौ काम यार अब इनसे बिना बात फरिआये ।
देखा था अपनी आँखों से उस दिन आप वहाँ पे आये ॥
पर मुझको बरसों से समझो रहते बातों में भरमाये ।
वे सुयोग्य सच्चरित बड़े ही उनपर आप कृपा फरमाये ॥
जचता यदि मैं गया-बिता नहिं तब मुझको क्यों हैं लटकाये ।
कह दें साफ पतित तुमसे पर कैसे कौन दया दरसाये ॥
हाँ-हूँकी नहिं नीकि नीति से कैसहुँ जान छुड़ा कोइ पाये ।
"शुक्ल" सवाल यही टेढ़ा है द्वार दूसरे कैसे जाये ॥

मणि ६८

महादेव सा दानी देवता ॥

देखा-सुना न मैंने दूजा सचमुच इनकी शानी देवता ।
कोई कुछ भी माँगे इनसे करे न आनाकानी देवता ॥
चहिये जो-जो भी जाचक को देता है मनमानी देवता ।
दुखियारे अनन्त को इसने बना दिया सुखखानी देवता ॥
दीख कहाँ पड़ता दुनिया में दीनों का सनमानी देवता ।
हो जाता संतुष्ट सत्य ही सिर्फ चढ़ाते पानी देवता ॥
शरणागत की होने देता कभी न किंचित् हानी देवता ।
देता बख्श "शुक्ल" आश्रित को वृत्ति महा मस्तानी देवता ॥

मणि ६९

महादेव की दासी मैं तो ॥

इनकी टहल छोड़कर जाउँ नहिं मथुरा नहिं कासी मैं तो ।
कोटि अनन्त विश्व स्वामी कर वर वैभव उर छासी मैं तो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वं सुहृद अनुमानि भाँति भलि शरण इन्हीं के जासी मैं तो ।
भरे अमित अनुराग सदा ही गुनगन इनके गासी मैं तो ॥
लेकर नाम अकाम निरंतर दोष दुरित दल नासी मैं तो ।
अनुकंपा बल पाय सहज ही काटी जम की फाँसी मैं तो ॥
निर्भर हो इन पर बस केवल बन गइ आनँद रासी मैं तो ।
"शुक्ल" परिस्थिति प्राप्त सभी में हर हालत हिय हाँसी मैं तो ॥

मणि ७०

महादेव हम हो गये हे हो ॥
होने में बाधक जो तत्व थे, अंतरिक्ष में सो गये हे हो ।
पता नहीं लगता कुछ उनका दिशा कौन सी को गये हे हो ॥
बहुरे नहीं न बहुरि सकें अब भली घड़ी से जो गये हे हो ।
कृपावारि वर्षा से प्रभु की उनके मूल भी धो गये हे हो ॥
चाहत ही इन देव-देव के सपरिवार सब वो गये हे हो ।
जो थे धृष्ट लगाते निज को डाँट बताई तो गये हे हो ॥
कुछ हँसते ही हँसते सरके कुछ कबाहती रो गये हे हो ।
"शुक्ल" अशांति हमारि मिटी सब शांति सेज सुख सो गये हे हो ॥

मणि ७१

महादेव हिय हरे हमारा ॥
पता नहीं क्या देख है पाया बड़ा प्यार यह करे हमारा ।
करता नित स्वीकार सुस्वागत आ करके मम घरे हमारा ॥
लोक और परलोक सभी का लिया बोझ निज गरे हमारा ।
होकर अति दयाल दाता यह दोष दुरित दल दरे हमारा ॥
शुभ सद्‌गुण सद्‌भाव भले से उर भँडार भल भरे हमारा ।
कृपाकोर पड़ते ही केवल सकल काज सच सरे हमारा ॥
इसकी अनुकंपा लतिका में हर प्रकार हित फरे हमारा ।
"शुक्ल" लहान समस्त सत्य ही लहा दिया यह अरे ! हमारा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ७२

महादेव सब सुख देता है ॥

किसी तरह अनुमान लगा सो बता कौन सकता केता है ।
हिचके नहीं जरा देने में देता जो चाहे जेता है ॥
देता है जितनाहि किसी को खुद यह खुश होता लेता है ।
इसीलिये तो आदिकाल से बना निशिष्ट विबुध नेता है ॥
इन दिन की तो पूछो मत कुछ कौन कहे कैसा चेता है ।
आश्रित की अपने ही हाथों भरे शौक किश्ती खेता है ॥
हो जाता निहाल है जिस पर मति सनेह शुचि रस भेता है ।
"शुक्ल" भरोसे इसके ही तो बन्दा बैठि मूँछ टेता है ॥

मणि ७३

महादेव गुन गाओ शीला ॥

देव देव के गुन गा करके अति आनन्द अघाओ शीला ।
जन्मान्तर कृत पाप पुंज को लेकर नाम नसाओ शीला ॥
कोटि अनंत विश्व स्वामी का वर वैभव उर छाओ शीला ।
बिठा इन्हें निज मन मन्दिर में रुचि अनुसार सजाओ शीला ॥
होकर नमित नित्य श्रद्धा सह देव चरन सिर नाओ शीला ।
भर हिय भले भक्ति भावों को देवेश्वर को भाओ शीला ॥
सम्बन्धित कर सर्वेश्वर से जीवन सफल बनाओ शीला ।
बिन आयास प्रयास "शुक्ल" यूँ परमेश्वर को पाओ शीला ॥

मणि ७४

महादेव पर बिके-बिके हम ॥

डोला करें बजार यार सच या कि रहें घर बिके-बिके हम ।
फिरें कुभाव भरे या सुन्दर सद्भावन भर बिके-बिके हम ॥
भला बुरा जो कुछ भी कहिये रहे सभी कर बिके-बिके हम ।
दिखलायें अनुरक्त किसी में चहे जाँय टर बिके-बिके हम ॥
त्याग करें कुछ कभी किसी को अथवा ले धर बिके-बिके हम ।
होना जस चहिये हम हों या अति निकृष्ट नर बिके-बिके हम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखलाते जिन्दा भी शायद गये हैं जी मर बिके-बिके हम ।
"शुक्ल" समाये रहते उनमें यूँ हालत हर बिके-बिके हम ।।

मणि ७५

महादेव का करे भरोसा ।।
होता है कल्याण अकल्पित सचमानो जिय धरे भरोसा ।
चिथरू और पवारू जी का जी से ततछन टरे भरोसा ।।
निश्चय अति सौभाग्य शालि वह जिसके हिस्से परे भरोसा ।
द्रुत दीनता-हीनता सारी दुख दारिद दल दरे भरोसा ।।
आवश्यक पदार्थ सब जनके बन कामदघन झरे भरोसा ।
लोक और परलोक सभी का सद्य सोच सब हरे भरोसा ।।
होकर द्रवित दास हित अपने सपदि चारिफल फरे भरोसा ।
विचरूँ मैं निर्द्वन्द "शुक्ल" सच भलीभाँति उर भरे भरोसा ।।

मणि ७६

महादेव मम सुनो जीवनी ।
सुन पाओगे सत्य बताऊँ मेरी सी कम सुनो जीवनी ।
उकताना मत जराभि जी में धीर धारि जम सुनो जीवनी ।।
सुने प्रकाशमयी होगे बहु घिरी हुई तम सुनो जीवनी ।
मोह ग्रस्त मदमस्त दशा में बीते हर दम सुनो जीवनी ।।
खान पान पहरान भोग में रहूँ सदा रम सुनो जीवनी ।
मेरी हरकत लख हैरत में पड़ते हैं यम सुनो जीवनी ।।
सुने शास्त्र सज्जन संगत की गया नहीं भ्रम सुनो जीवनी ।
किन्तु भरोसे तुम्हरे विचरूँ छोड़ सभी गम सुनो जीवनी ।।
सभी परिस्थिति में मैं देखूं रखते तुम सम सुनो जीवनी ।
करते हैं सब "शुक्ल" तुम्हारे करवाये हम सुनो जीवनी ।।

मणि ७७

महादेव हर जग की पीड़ा ।
अपन बिरान हिरान भुलानहु सब सौतेले सग की पीड़ा ।
साधु-असाधु नारकी-स्वर्गी सब ठाकुर औ ठग की पीड़ा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करो निवारन हे जग कारन रोगिन के रग-रग की पीड़ा ।
रह न जाय रंचक बेचारों थके हुओं के पग की पीड़ा ।।
गो-गर्दभ, गज़-श्वान, शूकरी-अजा, आदि मृग-खग की पीड़ा ।
"शुक्ल" समाप्त करो सद्यः ही सर-तरुवर, वन-नग की पीड़ा ।।

मणि ७८

महादेव का चहूँ भला हो ।
करते भला भलीविधि उसको शरणागत जो आनि घला हो ।
पुष्ट करें दे अतिहि आत्मबल जौन कृपा की पोस पला हो ।।
जरनि मिटा दें जी की उसके बन विरही इनका जो जला हो ।
प्यार करें प्राणाधिक उसका जो जन साँचे भक्ति ढला हो ।।
चाह करें चित से निष्ठायुत जो नर इनकी राह चला हो ।
चाहूँ तभी तहे दिल से मैं इनकी सारी दूर बला हो ।।
जैसा फला न होय किसी का ऐसा इनका भाग्य फला हो ।
"शुक्ल" मजा लूटें जीवन भर उन्नति इनकी पूर्ण कला हो ।।

मणि ७९

महादेव मन भरा खुशी से ।
जब से आप अहैतुकि अपनी कृपा देववर करा खुशी से ।
आशातीत आपका आशुहि अमित अनुग्रह झरा खुशी से ।।
अनायास द्रवि आप शीश मम वरदहस्त प्रभु धरा खुशी से ।
दोष दुरित दुख दारिद का दल दुम दबाय द्रुत टरा ख़ुशी से ।।
पड़तहि वक्रदृटि सरकारी रिपु समूह जड़ जरा खुशी से ।
मैं भलि भेंड़ आपकी बनकर जिधर चराया चरा खुशी से ।।
अनुकंपा लतिका में ममहित चारु चारिफल फरा खुशी से ।
आभारी अति बने विनययुत "शुक्ल" चरन पर परा खुशी से ।।

मणि ८०

महादेव पग परे परम सुख ।
सुख की भ्रांति भरे दुःखमय जो उन दुष्पथ से टरे परम सुख ।
दुर्गुण असद्भाव बाहर करि उर शुभ सद्गुण भरे परम सुख ।।
अभयप्रद अविलम्ब यथारथ द्विज गुरुजन से डरे परम सुख ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्त अनाथ अधीन दीन लखि सहज भाव से टरे परम सुख ।।
परे पता नहिं कबसे जिसमें भवसागर से तरे परम सुख ।
स्वर्ग लोक नहिं सत्यलोक नहिं पहुँचे इनके घरे परम सुख ।।
आती निर्द्वन्दता अचानक परतहि इनके गरे परम सुख ।
शत-शत भाग्य सराहत सब विधि सेवा इनकी करे परम सुख ।।
कर बकवास बन्द सारी ही जपत हरे शिव हरे परम सुख ।
अनुभव कर्ता ही जाने यह हर वियोग में जरे परम सुख ।।
कर-कर इनको याद अहर्निशि दृग दोउन के झरे परम सुख ।
"शुक्ल" किये हृदयस्थित इनको मँजु मुदित मन मरे परम सुख ।।

मणि ८१

महादेव भल भरता बाटन ।
झरी लगाकर मघावृष्टि सी आश्रित जन हित झरता बाटन ।
सेवक के निमित्त कामद-तरु बनि मनोर्थं फल फरता बाटन ।।
नामो पासक पर निहाल हो देनहार निक नरता बाटन ।
यह देलन-वह देलन हमके "शुक्ल" हमार तौ धरता बाटन ।।

मणि ८२

महादेव भर प्यार चूमते ।
वर्धन हित उत्साह हमारा कर अति दिली दुलार चूमते ।
आनन्दित करने को अतिशय आनँद के आगार चूमते ।।
हो मेरा कल्याण मात्र रख मनमें यही विचार चूमते ।
इक दो दस की संख्या कैसी देवेश्वर बहु बार चूमते ।।
आवश्यक इनको इकन्त नहिं ये तो सरे बजार चूमते ।
छूता कहाँ बिकार सर्वथा रह करके अविकार चूमते ।।
जाता मैं तन भान भूलि सच जब मेरे हियहार चूमते ।
"शुक्ल" असीम करें अनुकंपा तभी किसी को यार चूमते ।।

मणि ८३

महादेव सखि लखि ठगि जाई ।
इनकर रूप अनूप देखते मैं ततछन तन सुधि बिसराई ।
वर्णन कर इनकी सुन्दरता कहु अलि हम कैसे बतलाई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंग-अंग इनका लखते ही आलि अनंग अतिहि सकुचाई ।
यथा स्वरूप मनोहर सजनी तथा स्वभाव परम सुखदाई ।।
बोलनि मिलनि बैपरनि इनकी मृदु मुसकानि मोहिं अति भाई ।
चितवनि अतिहि चुटीली चितवन लेते बरबस चित्त चुराई ।।
लेइ निहार बार इक ही तू तौ फिर कस न जाइ बौराई ।
"शुक्ल" सतत सहवास प्राप्त हो प्रतिछन मन-मन इहै मनाई ।।

मणि ८४

महादेव मन स्वस्थ करें झट ।।
चंचलता इसकी सचमानो चाहत ही हृदयेश हरें झट ।
वर्तमान इसमें सबके सब पा संकेत विकार टरें झट ।।
इनका कड़ा निहार यार रुख पुनरपि आवत पास डरें झट ।
लख इनकी अनुकंपा उस पर माया हो अनुकूल ढरें झट ।।
फिर तो सुविधापूर्ण ढंग से वेश्रम दोष समुद्र तरें झट ।
बदले में सद्भाव सुसद्गुण चिरस्थायि शुभ शांति भरें झट ।।
जिससे होय सफलता इसकी जीवन का वह काज सरें झट ।
जाती बदल परिस्थिति सारी जीते जी ही "शुक्ल" मरें झट ।।

मणि ८५

महादेव में मन उलझाओ ।।
यहाँ वहाँ की उलझन इसकी यथाशक्य सद्यः सुलझाओ ।
सुलझाये बिन अन्य उलझनें इनसे कैसे उलझा पाओ ।।
उलझन सुलझाने को सारी इनपर निर्भरता उपजाओ ।
निर्भर होते ही इनपर बस उलझन सब सुलझी ही पाओ ।।
निर्भरता लाने को इन पर इनकी वर विभूति उर छाओ ।
इनका नाम स्मरण करो खुब इनकी दिव्य गुनावलि गाओ ।।
शरणागत हो करके इनके इन प्रति अति अनुराग बढ़ाओ ।
"शुक्ल" करो कृतकृत्य स्वजीवन आशुहिं अति आनन्द अघाओ ।।

मणि ८६

महादेव मत झूठ कहाओ ।।
होती अति पीड़ा कहने में इससे मुझको देव बचाओ ।
हो नहिं कभी कल्पना इसकी मन से भी इसको बहिराओ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी न कोई लाभ दिखाकर इससे मेरी बुद्धि छलाओ ।
बदले में दुख तरह-तरह के चाहे जितने हमें सहाओ ।।
सहने में कमजोर पड़ूँ कुछ तो आत्मिक बल और बढ़ाओ ।
सत्यरूप हैं आप देववर अपना आश्रय मुझे गहाओ ।।
इसकी रक्षा के निमित्त प्रभु मर मिटना भी पड़े मिटाओ ।
"शुक्ल" मेरी विनती ऐसी है वैसे जो तुम करो कराओ ।।

मणि ८७

महादेव मन हरें हमारा ।।
जानत भी भलिभाँति निकम्मा अतिशय आदर करें हमारा ।
करें तुच्छ स्वागत स्वीकार सच आकरके मम घरे हमारा ।।
हम धर पाते कहाँ कभी जी सतत ध्यान ये धरें हमारा ।
सद्गुण सद्भावन से सादर उर भँडार भल भरें हमारा ।।
करने को निर्द्वन्द हमें ये लिये भार निज गरे हमारा ।
बनकर कामदघन हित साधन मघावृष्टि सी झरें हमारा ।।
अपनी कृपावेलि में विभुवर मंजु मनोरम फरें हमारा ।
आभारी बन "शुक्ल" शीश प्रभु पद पंकज पर परे हमारा ।।

मणि ८८

महादेव सरकार हमारे ।।
पूरे करते रहते हैं जी हो दयाल दरकार हमारे ।
इनकी कृपा सहारे ही तो होते हैं कुलकार हमारे ।।
द्रुत दुर्गुण दुर्भाव दोष सब दिल से दिये निकार हमारे ।
पुनः प्रवेश नहीं कर पाते हिय में कोई विकार हमारे ।।
अभय हस्त सर पर धर सादर बन गये निर्भरकार हमारे ।
करते रहते ये हित साधन देखूँ विविध प्रकार हमारे ।।
इनकर नाम गान गुन इनकर हैं सुभाग्य साकार हमारे ।
"शुक्ल" सहस्र प्रणति श्रद्धासह करैं देव स्वीकार हमारे ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि ८९

महादेव पग धैली तोहरै ॥

जानि न राह आन कै हम तौ वचपन से गलि गैली तोहरै ।
पूछै के हृदयेश्वर हमके मन-वच-क्रम हम भैली तोहरै ॥
हीन अधीन दीन अपनावन मन भावन भलि शैली तोहरै ।
श्रद्धा सहित सनेह सने नित सेवा सुखमयि कैली तोहरै ॥
रूखा-सूखा, खूब तरातर दिहल देववर खैली तोहरै ।
ताका नहीं विभूति आन कै खनिआवा बस थैली तोहरै ॥
गावा सुयश तोहार सुना हम कलित कीर्ति प्रभु फैली तोहरै ।
शत-शत भाग्य सराही आपन "शुक्ल" शरण तकि अैली तोहरै ॥

मणि ९०

महादेव कै गोड़ धरी जब ॥

तब कै सुख कस कहीं कहे कोइ पद पंकज पर पुलकि परी जब ।
उस सुख की समानता कैसी सेवा किंचित करन करी जब ॥
लग जाती आनन्द झरी सी सुमिरि इन्हें जल दृगन झरी जब ।
टर जाती सब बला साथ ही कृपा प्रसाद कुराह टरी जब ॥
ढर जाते अति आशु देववर दीन दुखी जन देखि ढरी जब ।
जल विहार साधन भव सरिहो मिल जाती निक नाम तरी जब ॥
क्यों काहे की फिक्र रहे तब कृपाबेलि हित फलनि फरी जब ।
"शुक्ल" मुक्ति का करी लेइ हम देवमूर्ति मन धरे मरी जब ॥

मणि ९१

महादेव मैं मोह ग्रसा हूँ ॥

इसके बंधन में अखिलेश्वर नख शिख मैं कस लखो कसा हूँ ।
दलदल में इसके क्रमशः करि आज आह आकण्ठ धसा हूँ ॥
इसके ललित गुणों से लखिये कैसा मैं सर्वांग लसा हूँ ।
इसके किये दुर्दशा देखो पहुँच गया मैं कौन दसा हूँ ॥
नाममात्र अस्तित्व शेष है इसके द्वारा अतिहि घसा हूँ ।
नाचूँ जो इसकेहि इशारे द्वारा दुनियादार हँसा हूँ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हें भूल बैठा इसका ही पिये जो मैं मदकारि नसा हूँ ।
सको निकाल निकाल "शुक्ल" लो इसके फन्दे बुरा फँसा हूँ ॥

मणि ९२

महादेव की दाया खुब है ।
देखें आप दिया जो इनने कान्तिमयी यह काया खुब है ।
बतलाती स्थूलता इन्हीं के दिये पदारथ खाया खुब है ॥
मेरी तो इनने सचमानो लुटती लाज बचाया खुब है ।
इतना ही क्यों पाकर इनसे जन आनन्द अघाया खुब है ॥
तब ही तो देखो तुम मुझपर प्रभु प्रभाव भी छाया खुब है ।
स्वाभाविक ही गुनगन सादर खाया जिसका गाया खुब है ॥
दिलो जान से मैंने इनकी जग दुन्दुभी बजाया खुब है ।
इनप्रति इनकी अनुकंपा से "शुक्ल" स्वउर उरझाया खुब है ॥

मणि ९३

महादेव गुनगान न भावे ।
कब से है सवार शिर पर जो तब कैसे वह दुर्दिन जावे ।
लालायित जिसके निमित्त हौ कैसे सो शुभ दिन दिखलावे ॥
कैसें बने विगारी सारी कैसे दोष दुरित विनशावे ।
कैसे होय आचरन अच्छे कैसे अच्छा संग सुहावे ॥
कैसे हो कल्याण यथाविधि कैसे विशद बुद्धि उर छावे ।
आवा जाही से संसृति के कैसें कोइ छुटकारा पावे ॥
अनुकंपा बिन इनकी जग का कोई काम नहीं वन पावे ।
"शुक्ल" तभी इनके गुनगावे इनके चरण शीश नत नावें ॥

मणि ९४

महादेव भरदेव सभी गुन ।
पहले दुर्गुन दूर करो तब कर खालीघर देव सभी गुन ।
दिया सभी कुछ देव दयावश अब विशेष ढर देव सभी गुन ॥
जानूँ नहिं कुछ कद्र गुनो की जाँच रहा पर देव सभी गुन ।
विनत बद्धकर माँगूहूँ मैं वरदेश्वर वरदेव सभी गुन ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देने में मुश्किल क्या तुमको लगा झरी झर देव सभी गुन ।
है आसान तुम्हें जो मेरे रोम-रोम जर देव सभी गुन ।।
अनुकंपा लतिका में अपनी मेरे हित फर देव सभी गुन ।
"शुक्ल" टरें टारे नहिं कैसहुँ दृढ़ रक्षित धरं देव सभी गुन ।।

मणि ९५

महादेव सुनते नहिं अम्वा ।
गरज भरी निज अरज बार बहु हार गये इनसे कहि अम्वा ।
अनुनय-विनय सुनाया सादर चरन कमल इनके गहि अम्बा ।।
लोक नहीं परलोक भूति कुछ इन पद प्रीति मात्र चहि अम्बा ।
रहते सुजन सुसेवक जैसे वैसेहि चही रहनि रहि अम्वा ।।
भक्तिमान बनजावें हम भी इनकी विमल भक्ति लहि अम्बा ।
आवे बाढ़ सनेह सिंधु में बने विवश बेसुध बहि अम्बा ।।
हो नहिं प्राप्ति आपकी जबतक तबतक विरह दाह दहि अम्बा ।
और न "शुक्ल" विनम्र विनय बस स्वीकृत सद्य करो यहि अम्वा ।।

मणि ९६

महादेव में खोया रहता ।
गहरे जलमें डूवा कोई सचमानो जस गोया रहता ।
गहरी छान छनक्कढ़ कोई भूला तनको तोया रहता ।।
गहरे जोते हुए खेत में बीज यथा कोइ बोया रहता ।
इनके प्रेमसुधा सुन्दर रस में मन मेरा मोया रहता ।।
गोता इनमें लगता है सो अपन आप दिल धोया रहता ।
मेरे सिर का बोझ सभी जी इनके द्वारा ढोया रहता ।।
मेरे हित का काज सभी ही किये इन्हीं के होया रहता ।
इनकी गोद सुखद शय्या में "शुक्ल" शांति सह सोया रहता ।।

मणि ९७

महादेव अस रहनि रहाओ ।
रहते जस पद रसिक आपके हमको भी भाती है अहाओ ।
जिस पथ चलें तुम्हारे प्रेमी हमको भी वहि गैल गहाओ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अविचल प्रीति चरनप्रति अपने तजि नहिं कोई वस्तु चहाओ ।
मुख से मात्र नाम गुन अपना और न कोई कथा कहाओ ।।
आये सभी दुःख द्वन्दों को सदा शानसे हमें सहाओ ।
अपनी कृपावारि वर्षा से नित्य निरंतर नीक नहाओ ।।
लाकर बाढ़ प्रेम सागर में विवश बनाकर बेगि बहाओ ।
"शुक्ल" जो लहता कभी किसी का मेरा वही लहान लहाओ ।।

मणि ९८

महादेव कर कृपा कोर झट ।

ढेर करै में देर हो शायद तो कर दे देवेश थोर झट ।
बहता जो विषयोन्मुख बरबस उर प्रवाह निज ओर मोर झट ।।
तापित है अतिशय त्रिताप से प्रेम सिन्धु मन मोर बोर झट ।
मेरे इस नीरस हिय घट में शुचि सनेह शुभ सरस घोर झट ।।
टूटा सा सम्बन्ध पड़ा है जोर स्वप्रति मम प्रीति डोर झट ।
लगे ताक में कई चोर हैं चित्त रत्न ले तुही चोर झट ।।
मिलि इकबार हाय हृदयेश्वर विरह रैनि कर करहि भोर झट ।
"शुक्ल" लगी लालसा यही हिय लखि पाइत मुँह तोरगोर झट ।।

मणि ९९

महादेव को भज मैं कहता ।

महादेव को भजते हैं सब सुर-सुरेश हरि-अज मैं कहता ।
मानें धन्य मुनीश्वर निजको शिर धरि प्रभु पद-रज मैं कहता ।।
हो जाते कृतकृत्य भक्तजन सादर इनको यज मैं कहता ।
आराधक सकाम पाते धन धरनि धाम रथ गज मैं कहता ।।
साधक नाम सुमिरि इनका बस मलिनान्तः लें मज मैं कहता ।
निर्मल बन जाते सद्यः ही दोष दुर्गुणहि तज मैं कहता ।।
साधु सुजन हो जाँय आशु हीं शुभ सद्भावन सज मैं कहता ।
हो नहिं पाया तू कुछ अबतक "शुक्ल" निलज जिय लज मैं कहता ।।

मणि १००

महादेव निधि दिया अजब ही ।।

किये कृपा अनगिनतों पर हैं पर मुझ पर कुछ किया अजब ही ।
कृपापात्र इनका बनने से निज जीवन में जिया अजब ही ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनकी ही दी कहना होगा मिली मुझे है तिया अजब ही ।
यथानाम गुन तथा दिखाती अति सुभागिनी धिया अजब ही ।।
पाकर के प्रसाद में इनसे प्रेम भंग हम पिया अजब ही ।
बोया है हिय में इनने ही शुचि सनेह वर बिया अजब ही ।।
हँसता ही रहता हर हालत दिया है कर कुछ हिया अजब ही ।
अपने ढंग के खूब निराले दिखलाने ये भिया अजब ही ।।
पता नहीं कब कैसे इनने चुरा मेरा मन लिया अजब ही ।
बना लिया बीबी बरबस ही "शुक्ल" मिले ये मिया अजब ही ।।

मणि १०१

महादेव के नाम अनेकों ।।
गुण विशेषता परक हैं कितने परे हैं लखकर काम अनेकों ।
शोभाशील सुभाव सुभगता संबंधित शुभ धाम अनेकों ।।
बर्ण विलक्षणता वरीयता विषयक हैं वर नाम अनेकों ।
सब सार्थक समर्थ सब सिद्धिद सबहि निवारक धाम अनेकों ।।
पाते हैं मनकाम सुसाधक सुमिरि सुबह शुचि शाम अनेकों ।
सुखवाता सर्वस्व "शुक्ल" के दुःख दुरावन माम अनेकों ।।

मणि १०२

महादेव को समझ जो पाओ ।।
तो मैं दावे से कह सकता उनके हाथ तुरत बिक जाओ ।
बिना हिचक बे झिझक मान लो उन पर अपने प्राण लुटाओ ।।
शतशः करो उपाय प्राप्ति हित आतुर बनि जो जौन बताओ ।
जब तक मिलें नहीं मैं कहता बिरही से रोते दिखलाओ ।।
कुछ अचरज मत मानो इसमें जो तुम खानपान बिसराओ ।
डूबे सदा याद में उनकी कितनों को पागल समझाओ ।।
उनकी जिकर उन्हीं की चरचा उनके गुन गा वक्त बिताओ ।
रँगे उन्हीं के "शुक्ल" रंग में भर मस्ती मुरचंग बजाओ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणि १०३

महादेव दुर्गुण दुराय दो ॥
कब से पीछे पड़ा है यह तो इससे मेरा जी छुड़ाय दो ।
रहे नहीं अस्तित्व रंच भी जड़ से ही इसको मिटाय दो ॥
फिर अंकुरित-पल्लवित हो नहि आप बीज इसका नसाय दो ।
उसके सबल सहायक हैं जो कामादिक को विष दिलाय दो ॥
कहो गनों से ले जा इसको मरघट में अबहीं जलाय दो ।
हमसे पितृपक्ष में इनका गया श्राद्ध भलिविधि कराय दो ॥
है क्या तुम्हें मुसीबत इसमें बदले में सद्‌गुण भराय दो ।
"शुक्ल" मनोरथ मेरा यह तो हे पुरारि ! आशुहि पुराय दो ॥

मणि १०४

महादेव में रम मन मेरे ॥
संभव यह हो सकता तब ही इधर-उधर जा कम मन मेरे ।
होकर स्वस्थ काल कुछ अपने हृदयेश्वर में जम मन मेरे ॥
आवे विविध ववण्डर तो भी यथास्थान रह थम मन मेरे ।
लखि प्रतिकूल परिस्थिति कोई कर मत किंचित् गम मन मेरे ॥
पाकर यूँ अनुकूल परिस्थिति कर उसमें मत मम मन मेरे ।
जानि इन्हें आगमापायि बस रह हर हालत सम मन मेरे ॥
भक्ति रत्न इनका धारन कर चमक उठे चमचम मन मेरे ।
हित की बात साफ शब्दों में कहते "शुक्ल" हैं हम मन मेरे ॥

मणि १०५

महादेव देवत्व मुझे दो ॥
ऐसा कुछ करने में बेशक होगी नहीं मुसीबत तुमको ।
सर्वं प्रथम दानवता मेरी देवेश्वर ततकाल देव खो ॥
मानवता विकाश करिये तब पहुँची होय चरम सीमा जो ।
नाम स्मरण अकाम कराकर अन्तःकरन मलिन मेरा धो ॥
कर उर क्षेत्र परिष्कृत भलिविधि अपना प्रेम बीज सुन्दर बो ।
निर्भर कर अतिशय अपने पर मेरा सभी बोझ खुद ही ढो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भरे भरोसा मन में तुम्हरा विचरूँ मैं निर्द्वन्द बना हो ।
"शुक्ल" कृपा कर दो ऐसी की देख मुझे देवत्व पड़े रो ।।

मणि १०६

महादेव सा दयालु दाता ।।

आँख दिखाना क्या कहलाता मेरे सुनने में नहिं आता ।
बता सको बतला दो तुमहीं कोई नजर होय दिखलाता ।।
करता कौन प्यार अधमों को कौन दीन से खोले खाता ।
सुनकर आर्त पुकार किसी की कौन भला ततछन है धाता ।।
पड़ी नाव मझधार हो जिसकी कौन कहो है उसका त्राता ।
आश्रित और अनाथ अनेकों किससे पा आनन्द अघाता ।।
आदिकाल से आजतलक यह किसकी वेद गुनावलि गाता ।
"शुक्ल" सुझाता मुझे यही बस इस पर ही मैं प्रान लुटाता ।।

मणि १०७

महादेव में प्यार बहुत हैं ।।

अपने प्रेमिल भक्त सुजन का करते दिली दुलार बहुत हैं ।
सेवक का त्यों ही सचमानो करते ये सत्कार बहुत हैं ।।
आराधक के लिये वस्तु की आप लगाये बजार बहुत हैं ।
आश्रित को देते रहते हैं नित नित नई बहार बहुत हैं ।।
नामोपासक के निमित्त तो देने को उपहार बहुत हैं ।
करता जो गुनगान उसे ये देते सद्य सुधार बहुत हैं ।।
बन जाता इनका उसको निज कर लेते स्वीकार बहुत हैं ।
"शुक्ल" नहीं मैं कुछ भी तो भी खुश मुझ पर सरकार बहुत हैं ।।

मणि १०८

महादेव मम भाग्य बड़ाई

शेष गणेश शारदा देवी के द्वारा भी कही न जाई ।
तब फिर और दूसरा को है जो इसको कह सकता भाई ।।
पाई अनुकंपा जो आपकी अति अनुपम असीम सुखदाई ।
फलस्वरूप जीवन में मेरे अलमस्ती अजीब सी आई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रही फिकर नहिं रंच लोक की नहिं परलोक सोच निअराई ।
देखूं मैं अहनिशि रहती है बृत्ति मेरी आनन्द समाई ।।
तुम्हरी जिकर तुम्हारी चरचा तव गुनगान सुनाम सुहाई ।
शतमुख "शुक्ल" सराहत तुमको तुम्हरी जै जै कार मनाई ।।

मणि १०९

महादेव मणिमाल गानकर ।
निज जीवन कृतकृत्य करूँगा इनका अनुपम यश बखानकर ।
भरे विभिन्न भाव जो इसमें निज रुचि का कोई प्रधानकर ।।
अथवा सभी रंग में रँग के सब,कुछ अपना इन्हें जानकर ।
सब रस का आस्वादन करता सब सुख का भलिभाँति भानकर ।।
विचरूँगा अलमस्त मजे में भरहिक मैं मद प्रेम छानकर ।
इनकी जिकर इन्हीं की चरचा इन सेवा की सरस बानकर ।।
लोक और परलोक फिक्र से निज को अति निश्चित मानकर ।
"शुक्ल" सर्वथा निर्भर इनपर सोऊँ सुन्दर पाँव तानकर ।।

दोहा

हमको ये अच्छे लगें इनको लगते हम्म ।
कह सकता यह को भला कौन है किससे कम्म ।।
इनमें मैं रमता सदा रहे ये मुझमें रम्म ।
"शुक्ल" परिस्थिति यह सुखद रहे परस्पर सम्म ।।
पाया जो तुम्हरे दिये मेरे प्राण अधार ।
"शुक्ल" समर्पण सो करत आती हँसी है यार ।।
परम्परा से है चला आता शिष्टाचार ।
"शुक्ल" करालो हृदयधन वह पूरा व्यवहार ।।

मि० भाद्र शु० ९ मंगलवार सं० २०२१ वि० दिनांक १५-९-६४

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल वंशीधरात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर'
विरचित श्री त्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप
बीसवीं माला समाप्त ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ शंभवेनमः ॥

❋ आरती श्री महादेव मणिमाला जी की ❋

आरती श्री मणिमाला जी की ।
जो सब विधि सुखदायक ही की ॥

नाथ त्रिलोचन प्रेरित की थी । श्री गुरुदेव ने जिसे रची थी ।
विविध भाव से जो कि भरी थी । प्रति शीर्षक महादेव से की थी ॥
धन्य धन्य उन रचना जो की ॥ आरती० ॥

महादेव मणि एकतिस माला । ज्ञान विराग भक्ति रस ढाला ॥
तरह तरह के शब्द निराला । जो प्रभु तक पहुँचावन वाला ॥
भुक्ति मुक्ति सहज ही धरी की ॥ आरती० ।

जो नित प्रेम से पाठ करेंगे । शिव उनके दुख दोष हरेंगे ॥
जनम जनम के पाप जरेंगे । बिनु श्रम सुकृत समूह भरेंगे ॥
भाग्यशालि जिन कण्ठ करी की ॥ आरती० ॥

जो लोकहु परलोक बनावन । सब जनके मनको अति भावन ॥
आषुतोष को आष मनावन । 'दास बद्रि' की लाज बचावन ॥
'आनन्दमयि, आनन्द झरी की ॥ आरती० ॥
आरती श्री मणिमाला जी की ।
जो सब विधि सुखदायक ही की ॥

दास बद्रीनारायण धवन,
ए. २/५२, त्रिलोचनघाट, वाराणसी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री शंकरजी की आरती

नमः पारवती पते हर हर महादेव

जय शंकर भोले, शिव हर शंकर भोले,
अखिलेश्वर प्रभु तुमको संतत श्रुति बोले ॥
हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥ १ ॥
तुम सब सृष्टि बनाओ तुम पालो स्वामी, शिव तुम० ।
छिन में पुनि विनशाओ बिनु श्रम वृषगामी ॥ हर० ॥ २ ॥
तुमरो आदि न अंता तुम गिरिजा कंता, शिव तुम० ।
तुमरे ही गुण गावें सुर मुनि सब संता ॥ हर० ॥ ३ ॥
तुम करुणागुण आगर भवसागर तारी, शिव भव० ।
नाम अखिल अघ हारी सुकृत भरन भारी ॥ हर० ॥ ४ ॥
निरंकार तुम देवा हौ पुनि साकारा, शिव हौ० ।
भक्त जनों के कारण लेते अवतारा ॥ हर० ॥ ५ ॥
कर्पूर द्युति गौरं निज जन मन चौरं, शिव निज० ।
तड़ित प्रभा भल खौरं मंजु जटा मौरं ॥ हर० ॥ ६ ॥
शुभ त्रय नेत्र विशालं शशियुत भल भालं, शिव शशि० ।
शिर सुरसरि जल जालं जनु मालति मालं ॥ हर० ॥ ७ ॥
मुख छबि विधु अकलंकं कर रति पति रंकं, शिव कर० ।
मातु उमा लहि अंकं राजति निःशंकं ॥ हर० ॥ ८ ॥
फणि मणि भूषण धारं गजमुक्ता हारं, शिव गज० ।
आनन हास्य मुदारं शोभा अवतारं ॥ हर० ॥ ९ ॥
नित्य नवल वर वासं कैलाशं वासं, शिव कैलाशं० ।
बहु रवि ज्योति प्रकाशं तम राशि नाशं ॥ हर० ॥ १० ॥
पद तल करुणा कंदं दश नख दश चन्द्रं, शिव दश० ।
मेटन सब दुख द्वंदं काटन भव फंदं ॥ हर० ॥ ११ ॥
ब्रह्मा आरति धारी, विष्णु स्तुतिकारी, शिव विष्णु० ।
किन्नर वाद्य प्रचारी

नृत्य करत सुर नारी इन्द्र चमर ढारी ॥ हर० ॥ १२ ॥
देव सुमन झर लावें 'शशिशेखर'' भावे, शिव शशि० ।
प्रमुदित प्रति दिन गावें मनवाञ्छित पावे ॥ हर० ॥ १३ ॥
जय शंकर भोले शिव हर शंकर भोले ।
अखिलेश्वर प्रभु तुमको संतत श्रुति बोले ॥ हर० ॥ १४ ॥

रचयिता—पं० चन्द्रशेखर जी शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri